Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरते महल

गुरुदत्त

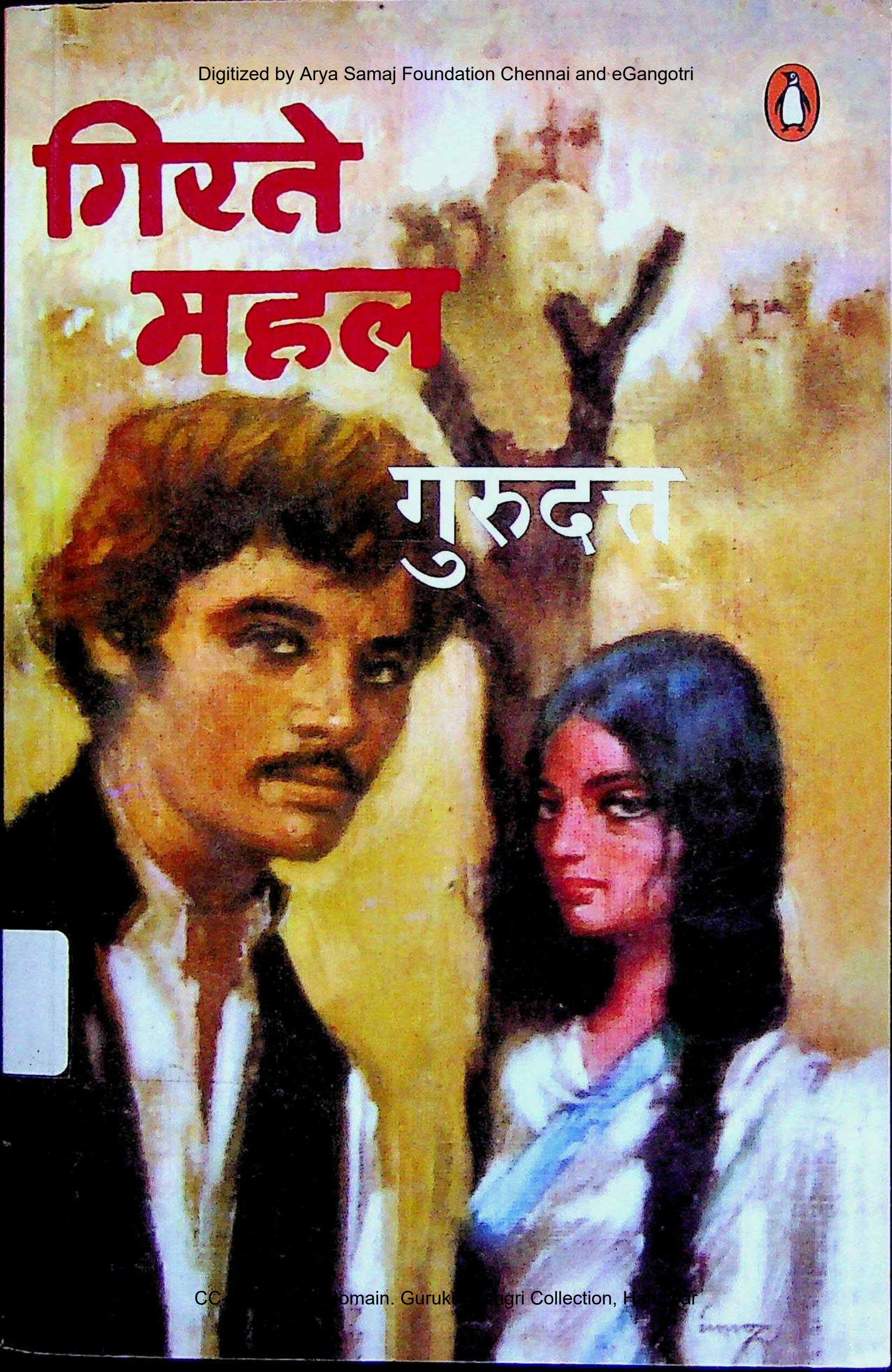

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167899
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्द पॉकेट बुक्स

गिरते महल

गुरुदत्त स्वतंत्रता सेनानी और समाजसेवी के साथ-साथ हिन्दी के महान उपन्यासकार थे। विज्ञान के विद्यार्थी और पेशे से वैद्य होने के बावजूद वे बीसवीं शती के एक ऐसे सिद्धहस्त लेखक थे, जिन्होंने लगभग दो सौ उपन्यास, संस्मरण, जीवनचरित आदि का सृजन किया और भारतीय इतिहास, धर्म, दर्शन, संस्कृति, विज्ञान, राजनीति और समाजशास्त्र के क्षेत्र में भी अनेक उल्लेखनीय शोध-कृतियाँ दीं। राष्ट्रसंघ के साहित्य-संस्कृति संगठन यूनेस्को के अनुसार गुरुदत्त 1960-1970 के दशकों में हिंदी साहित्य में सर्वाधिक पढ़े जानेवाले लेखक रहे हैं।

गुरुदत्त को क्रांतिकारियों का गुरु भी कहा जाता है। जब वे लाहौर के नेशनल कॉलेज में हेडमास्टर थे, तब सरदार भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु इनके सबसे प्रिय शिष्य थे।

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो पीढ़ियों के संघर्ष में टूटते हुए
पारिवारिक संबंधों की मार्मिक कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरते महल

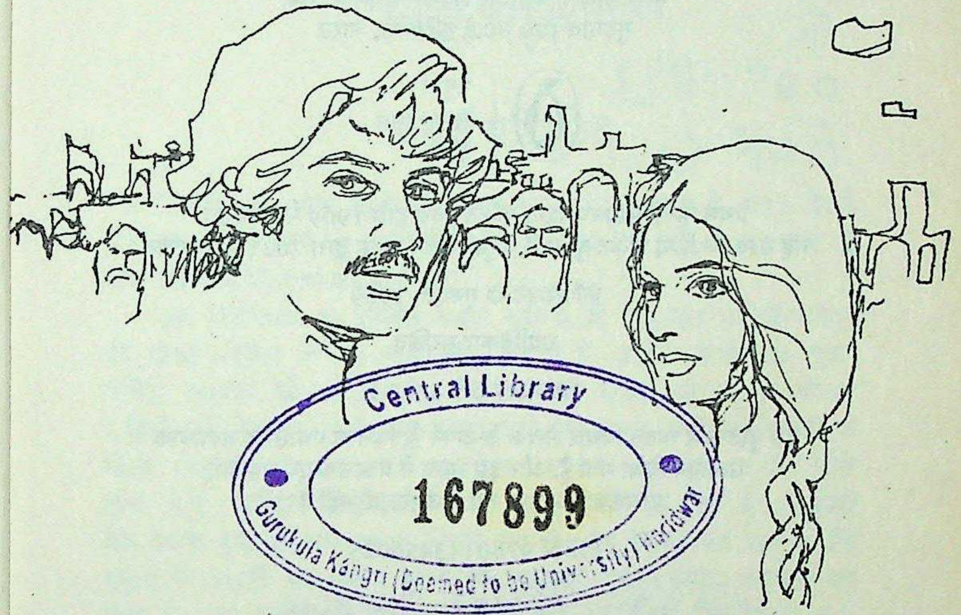

Central Library
167899
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

गुरुदत्त

081
167899

हिन्द पॉकेट बुक्स
पेंगुइन रैंडम हाउस इम्प्रिंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्द पॉकेट बुक्स

यूएसए | कनाडा | यूके | आयरलैंड | ऑस्ट्रेलिया
न्यू ज़ीलैंड | भारत | दक्षिण अफ्रीका | चीन

हिन्द पॉकेट बुक्स, पेंगुइन रैंडम हाउस ग्रुप ऑफ़ कम्पनीज़ का हिस्सा है,
जिसका पता global.penguinrandomhouse.com पर मिलेगा

पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्रा. लि.,
चौथी मंजिल, कैपिटल टावर -1, एम जी रोड,
गुड़गांव 122 002, हरियाणा, भारत

R
089.9143
GUR-G

पेंगुइन
रैंडम हाउस
इंडिया

प्रथम हिन्दी संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा 1969 में प्रकाशित
यह संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स में, पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा 2021 में प्रकाशित

कॉपीराइट © गुरुदत्त, 1969

सर्वाधिकार सुरक्षित

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, जिनका यथासंभव तथ्यात्मक सत्यापन किया गया है, और इस संबंध में प्रकाशक एवं सहयोगी प्रकाशक किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं हैं।

ISBN 9780143456025

250/-

मुद्रकः रेप्रो इंडिया लिमिटेड

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर विक्रय या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंद अथवा किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के ख़रीददार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं।

www.penguin.co.in

MIX
Paper from responsible sources
FSC® C047271
FSC www.fsc.org

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web: aarshsahitya.com

गिरते महल

प्रथम परिच्छेद

"प्रकृति का खेल न्यारा है। क्या-क्या रंग बदलती है यह! देखने वाले इस बहुरूपवती के बनते-बिगड़ते रूप देख-देख चकित रह जाते हैं और अपने को विस्मरण कर बैठते हैं।"

एक प्रौढ़ावस्था का व्यक्ति कनाट सरकस में एक दस मंज़िले मकान की दसवीं मंज़िल के एक कमरे की खिड़की में खड़ा आसपास के एक-मंज़िले क्वार्टरों को और उनके बीच जा रही सड़क पर चलती मोटर-गाड़ियों को देख रहा था। उस सबसे ऊंचे स्थान पर खड़ा वह अपने में गौरव अनुभव कर रहा था। वह ऐसा अनुभव कर रहा था कि नीचे लोग और गाड़ियां कीड़े-मकोड़ों की भांति रेंगते जा रहे हैं। इसीको देख उसके मुख से उक्त वाक्य निकल गए थे। वह विचार कर रहा था कि मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर इसपर शासन करना आरम्भ कर दिया है। वह आगे कह रहा था, "परन्तु जो अपने को विस्मरण न कर, अपने स्वामित्व को इसपर बनाए रखता है, वह इसका भोग करता हुआ इसपर शासन करता है। वह ही वास्तव में गौरव और यश का भागी होता है।"

उस व्यक्ति का मुख बाहर को था और पीठ कमरे की ओर। जब वह यों बुड़बुड़ा रहा था, कोई उसके पीछे से बोला, "भापा, किससे बातें कर रहे हैं?"

वह पुरुष अतीत की बातों को स्मरण करने लगा था और पुनः उसके मुख से निकल गया, "कहां से कहां पहुंच गए हैं हम?"

पुनः पीछ खड़े हुए व्यक्ति ने पूछ लिया, "भापा, कौन है?" इस बार उसने पुरुष की बांह को हिलाकर पूछा। इससे पुरुष का ध्यान भंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुआ। उसके पास एक सात-आठ वर्ष का कुमार खड़ा था। पुरुष ने पूछा, "क्या कहा है तुमने?"

"भापा, आप बातें कर रहे थे न? मैंने पूछा था कि यहां कोई है नहीं और आप किसको क्या कह रहे थे?"

"ओह! मैं किसीको कुछ कह रहा था।"

"और वह कहां है?"

"मेरे भीतर है। उसे मन कहते हैं।"

"वह कहां है? दिखाई तो देता नहीं।"

"तुम्हारी माताजी कहां हैं?"

"वे साथ के कमरे में हैं।"

"दिखाई तो देतीं नहीं?" पुरुष ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

कमरे में मेज़-कुर्सी लगी थीं। एक ओर अलमारियां थीं। वहां दो रैक भी लगे थे। इस सब सामान से यह प्रकट होता था कि कमरा कार्यालय के लिए बनवाया गया है। मकान सर्वथा नवीन था और इस कमरे में कागज़-पत्र नहीं थे। वह पुरुष लड़के की ओर मुस्कराते हुए उक्त बात कह कुर्सी पर बैठ गया। लड़का समीप खड़ा था।

लड़के ने कह दिया, "पिताजी, बीच में दीवार है। इस कारण माताजी दिखाई नहीं देतीं और वे आपको भोजन के लिए बुला रही हैं।"

पिता को स्मरण आ गया कि वह उस मकान को देखने आया था। उसने दस मंज़िला मकान बनवाया। इसके बनवाने में उसे एक ओर म्युनिसिपल कमेटी से और दूसरी ओर अपने परिवार के लोगों से भारी संघर्ष करना पड़ा था और जब यह बनकर तैयार हो गया तो अपने व्यवसाय के कार्यालय के लिए मकान की सबसे ऊपर की मंज़िल के एक फ्लैट को उसने सुरक्षित रखा हुआ था। आज वह अपने परिवार के साथ इसे देखने आया था कि वहां कार्यालय को कैसे लाएगा और कहां-कहां क्या-क्या काम होगा।

उसके साथ उसकी पत्नी और बच्चे भी थे। वे भी फ्लैट में अन्य कमरे देख रहे थे। यह निश्चय था कि मकान देखकर गेलार्ड में मध्याह्न का भोजन लेंगे। तदनन्तर वे पुनः इस फ्लैट में दो-तीन दिन रहेंगे। वे नये मकान का सुख-स्वाद लेना चाहते थे।

फ्लैट में दो बेडरूम थे, एक ड्राइंगरूम था। किचन, डाइनिंगरूम और एक बाथरूम था। इसके साथ दो बड़े-बड़े कमरे कार्यालय के लिए थे। कार्यालय के एक कमरे में बैठा पुरुष लड़के को पूछने लगा, "तो अब मेरा मन दिखाई दे गया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दिखाई तो नहीं दिया। पर जो दिखाई नहीं देता उससे आप बातें कैसे कर रहे थे?"

पुरुष ने इस कुमार को समझाने में कठिनाई अनुभव करते हुए कह दिया, "चलो, चलें। भोजन करना होगा।"

"पर मेरी बात का उत्तर तो आपने दिया नहीं!"

"कुछ हानि नहीं हुई। चलो, चलें।"

वह पुरुष कुर्सी से उठ उस कमरे की ओर चल पड़ा जिधर उसकी पत्नी और दूसरे बच्चे थे। साथ चलता हुआ कुमार विस्मय में पिता का मुख देख रहा था। वह विचार रहा था कि हानि हो भी सकती थी क्या?

कार्यालय वाले कमरे से निकल वे फ्लैट के ड्राइंग रूम में जा पहुंचे। वहां उसकी पत्नी और दो अन्य बच्चे बैठे थे। उसके सब तीन बच्चे थे। दो लड़के और एक लड़की। लड़की दो लड़कों के बीच की थी।

ज्योंही वह पुरुष ड्राइंग रूम में पहुंचा तो लड़की ने कहा, "पिताजी, हम तीन बजे रीगल में पिक्चर देखने जा रहे हैं।"

पिता ने कुछ उत्तर नहीं दिया और वह पत्नी के समीप सोफे पर बैठ गया। विनोद ने पिताजी को बहिन के कहने का उत्तर न देते देख कह दिया, "दीदी, कुछ हानि नहीं हुई।" इतना कह वह पिता की ओर देख हंस पड़ा। इसपर बड़ा लड़का प्रमोद अपने छोटे भाई को डांटते हुए बोला, "विनोद, हंसे क्यों हो?"

"देखो, दादा," विनोद ने तुरन्त उत्तर दिया, "जब किसी बात का उत्तर न देना हो तो यह कह दिया जाता है कि कुछ हानि नहीं हुई। यह पिताजी ने कहा है।"

प्रमोद प्रश्न भरी दृष्टि से पिता के मुख पर देखने लगा। इसपर पिता ने कहा, "विनोद हंसा है तो ठीक ही किया है। सरस्वती ने बेमतलब की बात की। इसके कहने का अर्थ मैं भी नहीं समझा। बेमतलब की बात सुन न तो कुछ लाभ होता है और न ही कुछ हानि। इस कारण इसने कहा है कि कुछ हानि नहीं हुई और मैं कहता हूं कि कुछ लाभ नहीं हुआ।"

"पर पिताजी, लाभ तो होगा। हम पिक्चर देखेंगे।" सरस्वती ने कहा।

"मैं अपनी बात कह रहा हूं।"

"पर आप भी तो चल रहे हैं। पांच टिकट खरीदे गए हैं।"

"हां, अब ठीक है। पर सरस्वती, तुम किस श्रेणी में पढ़ती हो? तुम्हें तो बात करने का ढंग भी नहीं आया।"

"मैं हायर सेकण्डरी में पढ़ती हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम्हारी अध्यापिका ने तुमको कुछ नहीं सिखाया। देखो, मुख्य बात पहले स्पष्ट कहनी चाहिए। तुमको कहना चाहिए था, 'पिताजी, आप पिक्चर देखने चलेंगे और हमें भी साथ ले चलेंगे?'

"तुमने कहा है, 'हम पिक्चर देखने चलेंगे।' इसका मुझसे सम्बन्ध नहीं। अतः मेरे साथ बात करने का कुछ भी लाभ नहीं था। तुमको यह ज्ञात होना चाहिए था कि मैं एक व्यस्त व्यक्ति हूं। मेरे साथ बात संक्षेप में और अर्थयुक्त होनी चाहिए...

"देखो। जानती हो कि इस मकान बनाने में कितना रुपया व्यय हुआ है?"

"जी, नहीं।"

"देखो, बीच में मत बोलो। मैं बताने योग्य बात स्वयं बता दूंगा। इसपर तीन करोड़ रुपया व्यय हुआ है। यह सब रुपया मैंने एक पैसा भी ऋण लिए बिना व्यापार से एकत्रित कर लगाया है और ऐसा करने के लिए बहुत भाग-दौड़ करनी पड़ी है। यदि मैं व्यर्थ की बातें सुनने लगता तो यह सब कुछ इतने थोड़े काल में बन न सकता। यह तो तुम्हारी अध्यापिका ने बताया होगा कि समय ही धन है। जब समय व्यर्थ नहीं जाता तो मैं कह देता हूं कि कोई हानि नहीं हुई।"

अब प्रमोद ने कह दिया, "पिताजी, और भी कई लोगों ने इतने-इतने बड़े मकान बनवाए हैं।"

"कुछ तो मकान बनाने के लिए ही कम्पनियां बनी हैं। कुछ किरायेदारों से अग्रिम किराया लेकर बनाए गए हैं और अधिकांश लोगों ने ऋण लेकर इमारतें बनाई हैं। मैं इस प्रकार के उपायों में विश्वास नहीं करता। सब मेरी कार्य में कुशलता और परिश्रम का फल है।"

"पर हमारी भी तो कम्पनी है?" प्रमोद का अगला प्रश्न था।

"कम्पनी है? कैसी कम्पनी है?" पिता ने पूछ लिया।

"पिताजी, संयुक्त परिवार भी एक कम्पनी के तुल्य ही होता है। हमारा संयुक्त परिवार है। इसमें पन्द्रह पुरुष भागीदार हैं। दस लड़कियां हैं जो अब देश के कानून से भागीदार बन गई हैं। कुछ बच्चे भी हैं। सब मिल-मिलाकर पचास के लगभग भागीदार हैं।"

"इसपर भी यह न तो लिमिटेड कम्पनी है और न ही साझेदारी की कम्पनी।"

"तो यह क्या है?"

"यह एक समाज है।"

"तो हम समाजवादी हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत खूब! समाज से समाजवादी हो गए! जैसे मनुष्य से मानवता नहीं भी हो सकती, वैसे ही समाज से समाजवादिता नहीं भी हो सकती। तुम तो अब कालेज में पढ़ते हो। तुमको इतना ज्ञान होना बाहिए के समाजवाद एक पारिभाषिक शब्द है। इसके विशेष अर्थ हैं।

"परन्तु संयुक्त परिवार तो सामान्य अर्थों में समाज ही है। इसमें समाजवाद दिखाई नहीं देता?"

प्रमोद इस सूक्ष्मता पर विचार कर ही रहा था कि सरस्वती ने पूछ लिया, "तो संयुक्त परिवार समाजवाद नहीं है? हमारी अध्यापिका ने यह बताया है कि प्राचीन काल में भारत में समाजवाद था और समाजवाद का ही विकृत रूप यह संयुक्त परिवार की प्रथा है।"

"महामूर्ख है तुम्हारी अध्यापिका। भला, यह बताओ कि तुम परिवार की सदस्या और भागीदार हो अथवा नहीं?"

"जी, हूं।"

"और तुम परिवार छोड़ना चाहो तो छोड़ सकती हो अथवा नहीं?"

"विवाह के पीछे तो मैं छोडूंगी ही। विवाह के पूर्व छोड़ने की बात मैंने विचार नहीं की।"

"तो वह भी विचार कर लो। यदि तुमने अभी तक विचार नहीं किया तो इस कारण कि तुममें परिवार से बाहर रहने की अभी योग्यता नहीं। जब योग्यता प्राप्त हो जाएगी और तुम माता-पिता से स्वतन्त्र रूप में रहने की इच्छा प्रकट करोगी तो यह संयुक्त परिवार तुमको सहर्ष ऐसा करने देगा। परन्तु जानती हो कि समाजवादी किसी भी समाज के सदस्य को समाज से बाहर जाने की स्वीकृति नहीं देता। स्वेतलाना की कहानी स्मरण है अथवा नहीं? और भी सुन लो पूर्वी जर्मनी से लोग पश्चिमी जर्मनी में जाना चाहते थे। उन्हें जाने नहीं दिया जाता था। जो जाते थे उनको गोली से उड़ा दिया जाता था। सैकड़ों मोत के घाट उतारे जा चुके हैं।"

"तो फिर अध्यापिका ने यह क्यों कहा है?"

"इसलिए कि वह महामूर्ख है। बात इसके उलट है। प्राचीन संयुक्त परिवार-प्रथा का विकृत रूप वर्तमान समाजवाद है।"

अब प्रमोद ने बात कर दी। उसने कहा, परन्तु आजकल के संयुक्त परिवार की प्रथा प्राचीन काल की संयुक्त परिवार-प्रथा का विकृत रूप नहीं है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष का नाम भागीरथलाल था और उसकी पत्नी का नाम था लक्ष्मीदेवी। पिता का स्वभाव था कि जब भी कभी तथ्य की बात होने लगती थी तो वह यत्न से उस वार्तालाप में भाग लेता था। व्यर्थ की बात में मौन रहता था और जब कोई उसके मौन रहने पर विस्मय करता था तो वह कह दिया करता था, 'कुछ हानि नहीं हुई।'

भोजन का समय हो गया था और उस समय भागीरथलाल के विचार से रुचिकर बात आरम्भ हों गई थी, परन्तु बच्चों की मां खाने के लिए चलने का स्मरण कराने के लिए कहने लगी, "आपने पूछा नहीं कि रीगल में कौन-सी पिक्चर लगी हुई है?"

भागीरथलाल बात को समझ उठ खड़ा हुआ और मकान से नीचे उतरने के लिए लिफ्ट की ओर जाते हुए बोला, "देवीजी, तुम बुद्धिवाद की बातों से घबराती हो। बात भी ठीक है कि लक्ष्मी और बुद्धि का संयोग होता नहीं, परन्तु प्रमोद, विनोद और सरस्वती का योग तो होता है। होना भी चाहिए। जहां होता है वहां स्वर्ग आ विराजमान होता है।

"मैं इन्ही के कल्याण के लिए कहता हूं कि न तो वैदिक काल का शुद्ध संयुक्त परिवार समाजवाद है और न ही संयुक्त परिवार का वर्तमान विकृत रूप समाजवाद है। दोनों में वही अन्तर है जो दिन और रात में है।"

सरस्वती ने पुनः अपनी बुद्धि का परिचय दिया और कहने लगी, "पिताजी, दिन और रात में संयोग होता है—सायं-प्रातः।"

"हां।" भागीरथलाल ने लिफ्ट में सवार होते हुए कहा, "यह संधिकाल कहा जाता है, परन्तु यह एक अति अल्पकाल के लिए होता है।"

अब विनोद ने अपनी बुद्धि का परिचय दे दिया। उसने कहा, "पर पिताजी, दिन के उपरान्त रात और रात के उपरान्त दिन होते हैं। फिर चिन्ता किस बात की है?"

भागीरथलाल ने मुस्कराते हुए कहा, "चिन्ता इस बात की है कि रात होने पर प्रकाश कैसे किया जाए? विद्युत् से दिल्ली, टोकियो अथवा न्यूयॉर्क जैसे महान नगरों को जगमगा देने की आवश्यकता है। मनुष्य चाहता है कि जहां भी वह हो, रात हो जाने पर कामचलाऊ प्रकाश कर ले।"

"यह तो सब करते हैं।" सरस्वती ने कह दिया।

वे लिफ्ट से भूमितल पर जा पहुंचे थे और सामने पार्क की हुई मोटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाड़ी की ओर चल पड़े। भागीरथलाल ने मोटर में बैठते हुए कहा, "नहीं। पशु नहीं करते। वे कर सकते भी नहीं। उनमें ऐसा कर सकने की बुद्धि भी नहीं। यही बात वर्तमान युग के समाजवादियों की है। रात आ रही है कालचक्र से। समाजवादी इसे स्वाभाविक और सुखकारक समझते हैं वे प्रकाश करना नहीं चाहते। कुछ धूर्त लोग हैं। वे रात के अन्धकार में डाके डालने के लिए प्रकाश करने को वर्जित कर रहे हैं। वे कहते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं, वही सुनो। जो कुछ वे लिखते हैं, वही लिखो और छापो। जो कुछ वे पढ़ाएं, वही पढ़ो, वही विचार करो और उसीका प्रचार करो। वे अन्धकार का प्रचार और प्रसार चाहते हैं।"

बात समाप्त हुई जब वे रेस्टोरां में जाकर बैठ गए।

2

भागीरथलाल पंजाब के एक समृद्ध परिवार का कर्ता था। उसका बाबा ब्रजलाल अभी जीवित था। उसकी वयस इस समय अठासी वर्ष की थी और वह पाण्डीचेरी में विरक्त जीवन व्यतीत करते हुए रहता था। परिवार का वर्तमान कर्ता बाबा ब्रजलाल की सम्मति से ही कार्य चला रहा था और जब कभी कोई कठिनाई उपस्थित होती थी तो वह उसके पास जा पहुंचता था और सदैव उसकी सम्मति का आदर और सम्मान करता था।

ब्रजलाल ने परिवार का कार्य पाकिस्तान बनने के उपरान्त छोड़ा था और डाक्टरों की सम्मति से सागर-तट पर रहने का स्थान बनाया था। उस समय पाकिस्तान बनने से ब्रजलाल के परिवार का कार्य ऐसे विनष्ट हुआ था जैसे कोई भव्य महल किसी भयंकर भूकम्प से भूमि के समतल हो गया हो। ब्रजलाल उस समय उनहत्तर वर्ष की अवस्था का था।

परिवार का पूर्ण व्यवसाय और सम्पत्ति पंजाब के उस भाग में थी, जो अब पाकिस्तान में चला गया था और पूर्ण परिवार, जिसमें स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध सब मिलाकर पचास प्राणी थे, प्रायः नग्नावस्था में हिन्दुस्तान में पहुंचा था। निकलते हुए परिवार के तीन युवक मारे गए थे और दो युवा लड़कियों का अपहरण हुआ था।

26 अगस्त, सन् 1947 को परिवार के सब लोग जालन्धर की एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धर्मशाला में एकत्रित हो परिवार की अवस्था पर विचार करने लगे थे। ब्रजलाल लाहौर से दो अगस्त को हवाई जहाज़ द्वारा दिल्ली पहुंचा था। वह अपने साथ सब नकदी, जो उस समय घर पर तथा दुकान में थी, ले आया था। यह सब तीन लाख रुपये के लगभग थी। सरकारी नोट थे, स्त्रियों के भूषण थे और कुछ सोना था। नकदी बैंक में जमा करा दी गई थी और सोना तथा भूषण बैंकों के लाकरों में रख दिया गया था।

दिल्ली में ब्रजलाल को पता चला कि परिवार जालन्धर में एकत्रित हो गया है तो वह वहां जा पहुंचा और परिवार के भविष्य पर विचार-विनिमय होने लगा।

पारिवारिक गोष्ठी में पूर्ण परिस्थिति से सदस्यों को अवगत करने के लिए ब्रजलाल ने परिवार के आरम्भ की कथा सुनाई थी। उसने बताया था, "आज से तैंतालीस वर्ष पूर्व भी एक ऐसा भूचाल-आया था। यह मानव-कृत भूचाल है और वह प्राकृतिक था। यह अत्यन्त क्रूरता-पूर्ण था और वह इसकी तुलना में सीमित था। परन्तु परिवार की दृष्टि से यही स्थिति उत्पन्न हुई थी जो आज हुई है।

"उस समय मैं पचीस वर्ष का था। मेरा विवाह हुए अभी एक वर्ष ही हुआ था और तुममें से कोई उत्पन्न नहीं हुआ था। परिवार में पन्द्रह भागीदार थे और यह संयुक्त परिवार ही था। परिवार के कर्ता बाबा मूलचन्द थे।

"परिवार ने मोहल्ला सत्थां में एक सातमंज़िला हवेली बनवाई थी। उसमें अठारह कमरे थे और पूर्ण परिवार उस हवेली में ही रहता था। दादी प्रातःकाल सबको जेबखर्च देती थी और एक-दो को छोड़कर शेष सब सदस्य दुकान पर काम करते थे। दुकान रसद-पानी की थी और पुरानी अनारकली में थी।

"परिवार में कुछ बच्चे थे। वे स्कूल में पढ़ते थे और मेरे बड़े भाई उत्तमचन्दजी रेल के कार्यालय में नौकर थे। एक दिन बहुत प्रातः काल भयंकर भूचाल आया। बाबा मूलचन्द हवेली की सबसे ऊपर की मंज़िल पर बरसाती में सोए हुए थे और भूचाल में वह गिरी तो वे उसमें दब-कर स्वर्ग सिधार गए। घर के सब प्राणी हवेली की दीवारें हिलती और फूटती देख, भाग हवेली की सीढ़ियों में जा खड़े हुए। पूर्ण हवेली जर्जर हो गई, परन्तु ईश्वर की कृपा से बाबा के अतिरिक्त सब बच गए। हवेली इतनी खस्ता हो गई थी कि सब गिरानी पड़ी।

"जब बाबा का क्रिया-कर्म हो चुका तो इसी प्रकार की गोष्ठी हुई थी और मेरे बड़े भाई उत्तमचन्दजी ने बंटवारे की मांग उपस्थित कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी। उत्तमचन्दजी को परिवार के अन्य सदस्यों पर विश्वास नहीं था और वे समझते थे कि क्योंकि वे दुकान पर काम नहीं करते, इस कारण उन्हें दुकान पर काम करने वाले लोग ठग लेंगे।

"इसपर हमारे तायाजी ने भाई साहब से पूछ लिया, 'उत्तमचन्द! अपने भाई पर विश्वास करते हो अथवा नहीं?'

"भाई साहब ने कह दिया, 'वह अभी बच्चा है। तुम सब मिलकर उसे ठग लोगे।'

"सब हंस पड़े। वस्तुस्थिति यह थी कि उत्तमचन्द मुझसे केवल दो वर्ष बड़ा था और मैं दुकान पर सबसे अधिक कार्यकुशल और ईमानदार समझा जाता था। जब उत्तमचन्द नहीं माना तो कुछ अन्य सदस्य भी बंटवारे की मांग करने लगे और उत्तमचन्द के श्वसुर को पंच बना बंटवारा हो गया।

"प्रत्येक सदस्य को सात-सांत हज़ार रुपया मिला। दुकान का दाम पगड़ी सहित सात हज़ार आंका गया। दुकान मैंने ले ली। इसके लिए मुझे आठ हज़ार रुपया ऋण लेना पड़ा। यह सन् 1904 की बात है और आज फिर राजनीतिक भूचाल आया है और हम यहां हैं।

"उत्तमचन्द के पोते आज भी रेल के कार्यालय में नौकरी करते हैं। वे दिल्ली पहुंच गए हैं और अभी उनको भारत सरकार ने काम पर नहीं लगाया। मैंने उनको पुनः परिवार में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया था, पर बड़ा दिनेशचन्द्र कहता था कि हमारा परिवार संयुक्त नहीं रह सकता। अतः मेरा निमंत्रण निरर्थक है।

"मैंने सन् 1904 में लाहौर में पुरानी अनारकली बाज़ार वाली दुकान पन्द्रह हज़ार में ली थी। उसके लिए मुझे आठ हज़ार ऋण लेना पड़ा था। ईश्वर ने कृपा की और तुम सबको मेरी सहायता के लिए भेज दिया है।

"अब स्थिति यह है कि हमारा दस लाख रुपया पंजाब के व्यापारियों से लेना बनता है जिसकी वसूली संदिग्ध है। तीन लाख रुपया नकद और सोने के रूप में मैं यहां ला सकने में सफल हुआ हूं। उसको सबमें बांटा जा सकता है अथवा संयुक्त परिवार की ओर से कोई व्यवसाय भी किया जा सकता है।

"बांटने पर प्रत्येक घटक को छः हज़ार के लगभग मिलेगा।"

इसपर विचार होने लगा कि क्या किया जाए। सब अपने-अपने मन की बात कहने लगे। अधिकांश सदस्य सम्पत्ति बांटकर पृथक्-पृथक् हो जाना चाहते थे। राजनीतिक स्थिति अस्थिर समझी जा रही थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और प्रायः सदस्य अपने-अपने भाग को लेकर स्वतन्त्र कार्य करना चाहते थे।

बंटवारा करने वालों के नेता डिप्टीलाल, ब्रजलाल के सबसे बड़े लड़के, थे। डिप्टीलाल के तीन बच्चे थेः दो लड़के और एक लड़की। बड़ा लड़का था मोहनलाल और उससे छोटा लड़का था भागीरथलाल। बहिन अभी छोटी और अविवाहित थी।

भागीरथलाल उस समय सत्रह वर्ष की वयस का था और लाहौर में एफ़० ए० की द्वितीय श्रेणी में पढ़ता था। अभी वह किसी भी कालेज में प्रवेश नहीं पा सका था। भागीरथ के पिता डिप्टीलाल का कहना था कि ज़माना बदल रहा है। लिमिटेड कम्पनियों और साझेदारी की कम्पनियों की रजिस्टरी होने से साझे परिवारों की आवश्यकता नहीं रही। इस कारण सबको पृथक्-पृथक् हो अपना भला-बुरा विचार करना चाहिए।

भागीरथलाल पिता की युक्तियां सुनता रहा था। जब परिवार को विखण्डित करने वाले अपनी बात कह चुके तो भागीरथलाल ने इसके विपरीत युक्तियां देनी आरम्भ कर दीं। इसपर सब सदस्यों को विस्मय हुआ। पुत्र पिता के विपरीत कहने लगा था। उसने कम्पनी और परिवार में अन्तर बताया और यह कहा कि रक्त का सम्बन्ध धन से अधिक सहानुभूति उत्पन्न करने वाला होता है, इस कारण परिवार की महिमा विलक्षण और श्रेष्ठ है।

भागीरथलाल ने कहा, "इस कारण मैं समझता हूं कि संयुक्त परिवार तो एक प्रकार का समाज है। यह व्यवसायमात्र नहीं। धन-सम्पद् तो पारिवारिकता में सहायक साधन हैं। ये साधन भी एक स्थान पर एकत्रित होकर ही सहायक हो सकते हैं। खण्डित हो जाने पर शक्ति-विहीन हो जाएंगे।

"जैसे एक जलाशय में एकत्रित जल बहुत काम कर सकता है और वही जल यदि छोटे-छोटे गड़हों में हो तो व्यर्थ हो जाता है। इसी तरह पारिवारिकता समाज है और धन उसमें सहायक है। कम्पनियों में यह बात नहीं होती।"

भागीरथलाल के वक्तव्य ने संयुक्त परिवार के पक्ष को प्रबल कर दिया, परन्तु उसका पिता, पुत्र और पुत्र के विचार का घोर विरोधी हो गया। मतदान हुआ और बंटवारा हो गया, परन्तु भागीरथलाल ने साहस नहीं छोड़ा। उसने कह दिया, "जो भाई और वृद्धजन संयुक्त परि-वार के पक्ष में हैं वे तो पुनः अपने भाग की सम्पत्ति को एकत्रित कर एक नये परिवार को संगठित कर सकते हैं; जो पृथक् होना चाहते हैं वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपना-अपना भाग लेकर पृथक् हो सकते हैं।"

ब्रजलाल ने भागीरथ से पूछ लिया, "परिवार का कर्ता कौन होगा?"

"बाबाजी, यह अब नया परिवार बन रहा है। जो इसमें सम्मिलित होंगे वे अपना कर्ता नियुक्त कर लेंगे।"

"यह नहीं, भागीरथ, परिवार-संगठन में प्रजातन्त्रात्मक पद्धति से कार्य नहीं चल सकता। पहले परिवार के बड़े-माननीय का ज्ञान हो तो पीछे उसमें सदस्य आ सकेंगे। बड़े, माननीय और न्यायप्रिय व्यक्ति पर ही परिवार की नींव रखी जानी चाहिए। यह नहीं कि परिवार के सिर पर किसीको लाद दिया जाए।

"परिवार का प्रबन्ध एक बुद्धिशील राजा के प्रबन्ध की भांति चलता है। एक प्रजातन्त्रात्मक प्रधानमन्त्री के प्रबन्ध की भांति नहीं।"

भागीरथलाल का कहना था, मैंने यह प्रस्ताव आपको परिवार का पुरखा मान ही किया है।"

"पर मैं तो अब कर्ता बनूंगा नहीं। मैं वृद्ध हो गया हूं। अब आराम करना चाहता हूं।"

इसपर भागीरथ मौन हो गया। वह कुछ कह नहीं सका। परिवार को संयुक्त बनाए रखने वाले प्रायः युवक ही थे और किसीके विषय में वह कह नहीं सका कि वह कर्ता बनने के योग्य है। कर्ता बनने के लिए परिवार को उसपर श्रद्धा और विश्वास होना चाहिए।

उसे चुप देख ब्रजलाल ने कहा, "देखो, भागीरथ, यदि तुम कर्ता बनना स्वीकार करो तो मैं तुम्हारे परिवार में सम्मिलित हो जाऊंगा और तुम्हारी कार्य में सहायता भी कर दूंगा। मैं तुमपर विश्वास कर सकता हूं।"

"परन्तु बाबा, मैं अनुभवविहीन और अल्पायु बालक मात्र हूं।"

"मेरा मन कहता है कि पूर्ण परिवार में तुमसे अधिक समझदार और परिवार के हित की भावना रखने वाला अन्य कोई नहीं। तुमको काम सिखाने के लिए मैं कुछ समय तक तुम्हारी सहायता भी कर सकता हूं।"

"हां, यदि बाबा मेरे सिर पर हाथ रखें तो मैं कार्य करने के लिए तैयार हो सकता हूं।"

"पढ़ाई छोड़ काम में लगना होगा।"

"यह तो करना ही होगा।"

इस आश्वासन पर ब्रजलाल ने कह दिया, "सब सुन लो! भागी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रथलाल अपना परिवार चलाएगा। मैं उसके परिवार में सम्मिलित हो रहा हूं और जो कोई भी सम्मिलित होना चाहे हो सकता है। जब तक यह कर्ता के कार्य में दक्षता प्राप्त नहीं कर लेता, मैं इसका पथ-प्रदर्शन करूंगा। मैं समझता हूं कि इसमें एक वर्ष से अधिक नहीं लगेगा।"

एक-एक कर भागीरथलाल के परिवार में सदस्य सम्मिलित होने लगे। पन्द्रह में से दस सदस्य सम्मिलित हो गए। दस सदस्यों के परिवार के लोग मिलाकर भागीदार पचीस हो गए। दस सदस्य प्रायः युवक और कुछ अविवाहित भी थे।

भागीरथलाल का पिता, डिप्टीलाल, अपना भाग लेकर पृथक् होने का विचार रखता था पुत्र ने पिता से पूछा था, "पिताजी, आप सम्मिलित नहीं होंगे?"

"नहीं, मैं तुम्हारे परिवार में नहीं हो सकता। तुम मेरे परिवार में हो सकते हो।"

"एक ही बात है पिताजी, आप सम्मिलित हो जाइए। परिवार तो बाबा के नाम से ही चलेगा।"

"नहीं भागीरथ, मैं नहीं सम्मिलित हो सकता।"

समीप भागीरथ की माता राधा बैठी थी। उसने कहा, "भला, यह क्यों? आपको अपने पुत्र पर भी विश्वास नहीं?"

"मुझे अपने पिता पर विश्वास नहीं रहा। वह अपने सबसे छोटे लड़के रामलाल से अधिक प्रेम करते हैं और सब कुछ उसको ही दे देंगे।"

"पर रामलाल तो आपकी भांति परिवार में सम्मिलित नहीं हो रहा।" भागीरथ ने बताया, "न ही बाबा ने उसे सम्मिलित होने के लिए कहा है।"

"यही तो बात है। वे तुम सबको मूर्ख बनाकर रामलाल को सब कुछ दे देंगे।"

बात बुद्धि की थी और वह डिप्टीलाल के पास थी नहीं।

3

भागीरथलाल को परिवार का कर्ता बने उन्नीस वर्ष हो चुके थे और इन उन्नीस वर्षों में उसने दो लाख रुपये से कम की सम्पत्ति से आठ करोड़ रुपये से ऊपर संचय कर लिया था।

परिवार में भागीरथलाल का पिता तो सम्मिलित नहीं हुआ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
परन्तु उसका बड़ा भाई मोहनलाल सम्मिलित हो गया था। उस समय पिता ने बड़े लड़के मोहनलाल को भी समझाया था, परन्तु उसने पिता को कह दिया, "पिताजी, मैं संघ में शक्ति समझता हूं। संघ में संस्कार रखने वाले ही सम्मिलित हो सकते हैं। परिवार से अधिक समान संस्कारों वाला कोई गुट नहीं हो सकता। इस कारण मैं पारिवारिक संगठन में सम्मिलित हो रहा हूं।"

"तुम पिता को छोड़ छोटे भाई के साथ जा रहे हो?"

"मुझे वह आपसे अधिक समान विचारों वाला समझ आया है। साथ ही अधिक संख्या में सदस्य भागीरथ के परिवार में सम्मिलित हो रहे हैं।"

भागीरथ ने व्यवसाय का केन्द्र दिल्ली बनाया था। उसने अलीपुर रोड पर एक बड़ी-सी कोठी किराये पर लेकर परिवार को वहां एकत्रित कर दिया और सब सज्ञान सदस्यों को भिन्न-भिन्न कार्यों पर लगाने की योजना बनाने लगा था।

अक्तूबर के आरम्भ तक चांदनी चौक की पटरियों पर और कनाट प्लेस के बरामदों में दस स्टाल लगा दिए गए थे। किसीमें हौजरी का सामान किसीमें फाउण्टेन पेन, पेन्सिलें इत्यादि, कहीं कपड़ा और कहीं पुस्तकें लगा दी गईं। कुछ को माल खरीदने और कुछ को बेचने पर लगा दिया। भागीरथलाल ने अपनी 'फर्म' को सरकार के निर्माण-विभाग में ठेकेदारों में रजिस्टर करा दिया। छोटे-मोटे ठेकेदारी के कामों को करने लगा।

समय पाकर भागीरथलाल ने लायलपुर के एक विस्थापित परिवार की लड़की लक्ष्मी से विवाह कर लिया और परिवार में वृद्धि करने लगा। भागीरथ का पिता डिट्टीलाल अपनी पत्नी और लड़की को लेकर बम्बई चला गया और वहां सोने का व्यापार करने लगा।

भागीरथलाल जानता था कि जीवन-भर पटरियों और बरामदों में दुकानदारी नहीं हो सकेगी। इस कारण वह मार्केट में दुकान लेने का यत्न करता रहा। म्युनिसिपल कमेटी की आज्ञा आने से पूर्व ही उसने चांदनी चौक और कनाट प्लेस में दुकानें ले ली थीं और दो वर्ष के भीतर काम चलने लगा था।

सन् 1967 में परिवार की पांच दुकानें दिल्ली में थीं। तीन कारखाने थे कलकत्ता, कानपुर और फरीदाबाद में। एक दुकान और छापाखाना बम्बई में था और एक दुकान मद्रास में। मिल-मिलाकर कई करोड़ रुपये की सम्पत्ति बन गई थी। इसी वर्ष कनाट सरकस से कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हटकर इसने एक बहुतल वाला मकान बनवाने की स्वीकृति ले ली थी और एक ही वर्ष में मकान तैयार हो गया था। मकान में दस तल थे। प्रत्येक तल में छोटे-बड़े दस-दस फ्लैट थे। इनमें रहने योग्य फ्लैट थे और व्यापार के लिए भी थे। बनते-बनते ही फ्लैट किराये परे चढ़ रहे थे। एक फ्लैट परिवार के कार्यालय के लिए सुरक्षित रखा गया था। इसी फ्लैट को एक दिन भागीरथलाल अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ देखने आया था। वे दिन-भर वहां रहे थे और रात के भोजन के उपरान्त ही अलीपुर वाली कोठी में लौट गए थे। आए थे दो-तीन दिन के लिए और वे कुछ घण्टे ही उसमें रहकर ऊब गए थे।

सायंकाल रीगल से पिक्चर देखकर आए तो फ्लैट के ड्राइंग रूम में बैठे हुए भागीरथलाल ने पत्नी से पूछ लिया, "रात यहां ही रह जाए तो कैसा रहे?"

लक्ष्मी के उत्तर देने से पहले विनोद बोल उठा, "तो हमारी कैद की अवधि बढ़ जाएगी।"

"कैद! कैसी कैद?"

"इस मकान में रहने की।"

"तो यह जेलखाना है?"

"हां, पिताजी। ये छोटे-छोटे कमरे, न लॉन खेलने के लिए, न सड़क घूमने के लिए। नीचे जाओ तो मोटर-बसों की भीड़ और ऊपर आओ तो छोटे-छोटे कमरे। फिर आने-जाने के लिए सीढ़ियों से जाएं तो घूमते-घूमते सिर चकराने लगता है और लिफ्ट से जाएं तो इसके नीचे-ऊपर आने की प्रतीक्षा। नहीं, पिताजी! हम अभी चलेंगे।"

लक्ष्मी ने कह दिया, "विनोद ठीक कहता है। यह सभ्य प्राणियों के रहने योग्य स्थान नहीं।"

भागीरथलाल विचार कर रहा था कि बात ठीक ही है। ये सभ्यता के लक्षण नहीं। यह वर्तमान युग की दासता के लक्षण हैं। मनुष्य ने उद्योगीकरण के इन्द्रजाल में फंसकर अअपने लिए शिकंजा निर्माण किया है, जिसे वह सभ्यता कहता है, वास्तव में वह बन्धन है।

उसने कह दिया, "तब ठीक है। कर्मफल में शेष दण्ड फिर किसी दिन भोग लेंगे।"

अलीपुर वाली कोठी दो एकड़ भूमि में थी। बहुत खुले-खुले लॉन थे। फूलों का बगीचा था, साग-भाजी का खेत था। दो माली दिन-रात वहां रहते थे। दो चपरासी थे और दो ही रसोइये थे। कोठी में आठ सेट कमरों के थे। कोठी दोमज़िला थी और तीसरी मंज़िल पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बरसाती थी। कोठी में अपना ट्यूब-वेल लगा था और जल के बाहुल्य के कारण सब ओर हरियाली थी।

भागीरथ स्वयं दो सेटों में रहता था। शेष परिवार के सदस्यों के आने-जाने के लिए तैयार रहते थे। परिवार के सदस्य भी व्यापार-सम्बन्धी कामों से आते-जाते रहते थे।

एक दिन-भर नये मकान में रहकर भागीरथ और बच्चे कोठी में लौट आए थे। दिन-भर की डाक कार्यालय का क्लर्क भागीरथ के देखने के लिए मेज़ पर रख गया था। यह भागीरथ का स्वभाव था कि डाक रात को सोने से पूर्व देखता था और उसीपर उचित आज्ञा लिखकर वह रख छोड़ता था जिससे अगले दिन कर्मचारी आते ही काम करने लगें।

डाक में सामान्य व्यावसायिक पत्न थे। दस मिनट में पढ़कर उसने उनपर आज्ञा लिख दी थी। दो पत्न सामान्य से विलक्षण थे। एक बम्बई पुस्तक-विक्रय और प्रकाशन-केन्द्र के मैनेजर नवलकिशोर का और दूसरा उसके ड्राइवर भुवनेश्वरप्रसाद का।

नवल का पत्न था कि कर्ता ने कनाट सरकस में बड़ा मकान बनवाकर परिवार के धन का अनुचित निवेश (इन्वेस्टमेंट) किया है। इस कारण परिवार की असाधारण बैठक बुलाकर इस विषय पर विचार किया जाए।

इसके पहले कानपुर से यह शिकायत आई थी कि कनाट सरकस के मकान में इतनी अधिक पूंजी लग गई है कि दूसरे कामों में पूंजी का अभाव अनुभव होने लगा है। इसपर भी इस प्रकार का आवेदन नहीं आया था कि परिवार की विशेष बैठक बुलाई जाए।

भागीरथलाल ने इस पत्न को पृथक् रख लिया। अब वह ड्राइवर का पत्न पढ़ने लगा।

ड्राइवर ने लिखा था, "मैं दो सौ रुपये महीना में निर्वाह नहीं कर सकता। इस कारण मुझे अपनी कठिनाई दूर करने के लिए मौखिक अर्ज़ी करने का अवसर दिया जाए।" अतः भागीरथ ने मेज़ पर रखी घण्टी बजाई तो कोठी का चपरासी आ गया। उसने कहा, "भुवनेश्वर को बुलाओ।"

चपरासी ने बताया, "वह घर चला गया है।"

इसपर भागीरथ ने दोनों पत्न प्रातः विचार करने के लिए, शेष डाक से पृथक कर रख लिए।

भागीरथलाल के पास तीन गाड़ियां थीं। एक उसके अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रयोग के लिए थी। दूसरी उसके ठेकेदारी के कार्य के लिए रहती थी। इसपर उस काम के अधिकारी आते-जाते थे और तीसरी मेहमानों के लिए थी। इनके अतिरिक्त तीन ट्रक और एक जीप थी।

भुवनेश्वरप्रसाद उसकी अपनी गाड़ी का ड्राइवर था। अगले दिन प्रातःकाल ही जब ड्राइवर आया तो उसकी पेशी हो गई,। जब वह लालाजी के सामने उपस्थित हुआ तो लालाजी ने पूछ लिया, "भुवनेश्वर, तुम वेतन में बृद्धि चाहते हो?"

"जी, चाहता तो हूं। परन्तु वृद्धि से अधिक मैं यह जानना चाहता हूं कि मैं कुछ अन्य काम नहीं कर सकता। बात यह है कि मेरा दो सौ रुपये में निर्वाह नहीं होता। साथ ही विचार करता हूं कि आप वेतन में कितनी वृद्धि कर सकेंगे। यहां दिल्ली में रहते हुए तो ड्राइवर की कमाई से भले आदमियों की भांति रहा नहीं जा सकता।"

"और भले आदमियों की भांति रहने के लिए कितना कुछ चाहिए?" भागीरथलाल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"लालाजी, दूसरे ड्राइवर यहां रहते हैं। उनकी पत्नियां गांवों में विधवाओं का-सा जीवन व्यतीत करती हैं। बच्चे बिना शिक्षा के गांवों में आवारा हो जाते हैं। और ड्राइवर महाशय यहां अकेले रहते हुए तीस-चालीस रुपये खाने पर व्यय कर, दस-बीस सिगरेट-बीड़ी पर व्यय कर और दस-बीस किसी स्त्री से मुख काला करने के लिए व्यय कर शेष एक सौ रुपया घर भेजते रहते हैं। मैं इसे भले लोगों का जीवन नहीं समझता। मैं पत्नी को यहां साथ रखने के लिए लाया हूं। मेरे तीन बच्चे हैं। मकान का किराया तीस रुपये देता हूं। लड़की दसवीं श्रेणी में पढ़ती है। एक लड़का आठवीं श्रेणी में है और सबसे छोटा पांचवीं श्रेणी में है। लड़की का व्यय बीस रुपये महीना पड़ता है, बारह रुपये बस का भाड़ा देना पड़ता है। लड़के का व्यय दस रुपये है और वह पैदल स्कूल जाता है। छोटे लड़के का भी पढ़ाई का व्यय पांच रुपये पड़ जाता है। खाने का व्यय एक सौ बीस रुपये महीने के लगभग होता है। इसके साथ कपड़ा और फुटकर व्यय भी होता रहता है। बिजली, पानी पर भी व्यय होता है। प्रति मास दुकानदार से उधार लेकर निर्वाह कर रहा हूं।

"जब परिवार को यहां लाया था तब डेढ़ सौ में से बचा लेता था। अब प्रत्येक वस्तु महंगी होती जाती है और भूखा रहता हुआ भी दस-बीस ऋण लेना पड़ता है। दुकानदार के तीन सौ के लगभग देने हो गए हैं और वह अब घूर-घूरकर देखने लगा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-G
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागीरथलाल ने बात सुनी और कह दिया, "तुम और क्या काम कर सकते हो?"

"कुछ जानता तो नहीं, परन्तु सीख सकता हूं।"

भागीरथ ने एक मिनट तक विचारकर कहा, "मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूं। शर्त यह है कि तुम और तुम्हारे परिवार के लोग उसमें सहयोग दें।"

"बताइए।"

"सुनो। जहां कमाई कम हो, और व्यय अधिक हो, वहां दो दिशाओं में कार्य किया जा सकता है। आय बढ़ाने का यत्न करना चाहिए और व्यय कम करना चाहिए। जहां तक एक ड्राइवर के वेतन का सम्बन्ध है वह तो बढ़ सकता नहीं। न मैं अधिक दूंगा और न ही तुम इससे अधिक कहीं पा सकोगे। नया काम सीखने की बात है, वह तुम वर्तमान नौकरी करते हुए सीख नहीं सकोगे।

"एक बात कर सकते हो। परिवार में काम करनेवाले हाथ बढ़ा सकते हो। तुम्हारे घर में कुछ हाथ तो और हैं। उनको भी काम पर लगा दो।"

"लालाजी, मैं पत्नी को किसीके घर जाकर काम करने के लिए नहीं कह सकता। मुझे आज दिल्ली के रहने वालों के आचार-विचार पर विश्वास नहीं रहा।"

"इसका प्रबन्ध करने में तुम एक बात कर सकते हो। वह यह कि उसे किसी के घर में जाना न पड़े। उसका अपना घर ही बड़ा कर दिया जाए जिसमें उसको हाथों से काम करने को मिल जाए और सहज ही वह तुम्हारी आय में वृद्धि कर सके। साथ ही तुम्हारे व्यय में कमी हो जाए।

"देखो! तुम अविलम्ब इस कोठी में चपरासियों के साथ आकर रहना आरम्भ कर दो। उनके क्वार्टरों के साथ एक क्वार्टर खाली है। वह मैं मरम्मत और सफेदी करवा दूंगा। किराया कुछ नहीं लिया जाएगा। साथ ही तुम्हारी पत्नी प्रमोद की माताजी की सहायता कर दिया करे तो वे उसका उचित वेतन नियत कर देंगी।

"जहां तक बच्चों के स्कूल जाने का सम्बन्ध है, जो गाड़ी प्रमोद इत्यादि को स्कूल-कालेज छोड़ने और लेने जाया करती है, वे भी उसमें आ-जा सकते हैं।

"यदि तुम चाहो तो एक बात और कर सकते हो। तुम्हारी स्त्री चपरासियों की पत्नियों के साथ भोजन बनाने में साझेदारी कर

Central Library
167899
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है। उन्होंने पहले ही अपनी रसोई इकट्ठी की हुई है। तुम्हारी पत्नी भी उनमें सम्मिलित हो सकती है। मेरा मुंशी उनके किचन का हिसाब-किताब रखता है। वह अब भी रखेगा और सब खर्चा तुम तीनों में बांट दिया करेगा।

"यदि तुम चाहो तो कल ही मकान बदल सकते हो। सोहनसिंह ओवरसीयर को कहकर मैं सायंकाल से पहले क्वार्टर को ठीक करवा देता हूं।"

"पर तालाजी," भुवनेश्वर ने कह दिया, "उस मकान को छोड़-कर आने लगूंगा तो मोहल्ले का दुकानदार अपने ऋण की अदायगी मांगेगा और मार्ग रोककर खड़ा हो जाएगा।"

"कितना देना है उसका?"

"तीन सौ अस्सी रुपये दस आने हो चुके हैं।"

"यह रकम तुमको अग्रिम मिल सकती है। वेतन में से किस्तों में कटवा देना।"

भुवनेश्वर मुख देखता रह गया। उसने कह दिया, "मध्याह्न से पूर्व मैं अपनी पत्नी से पूछकर बता सकता हूं।"

"ठीक है। हाथ काम करते हैं तो धनोपार्जन होता है। व्यय कम होता है तो बचत होती है। बचत को ठीक ढंग पर पूंजी के रूप में प्रयोग करें तो आय में वृद्धि हो सकती है।"

"पर लालाजी, यह मैं नहीं करूंगा।"

"क्यों?"

"मैं पूंजी द्वारा किसीका शोषण नहीं कर सकता।"

"किसीका शोषण करने के लिए तो मैंने कहा नहीं। बिना शोषण किए भी पूंजी आय दे सकती है।"

"कैसे?"

"जो योजना मैंने बताई है, उससे तुम सहज ही चालीस-पचास रुपये प्रति मास बचा सकोगे। वह तुम सेविंग बैंक में जमा करा दिया करना। वर्ष में पांच-छः सौ एकत्रित हो जाएगा। प्रथम वर्ष ही तीस से पैंतीस रुपये ब्याज के बैंक वाले देंगे। बैंक तुम्हारे रुपये को किसी ज़रूरतमन्द को देगा जो खुशी से बैंक को चालीस-पचास रुपया प्रति वर्ष का दे सकेगा। जिसमें से पैंतीस तुमको मिल जाया करेंगे। कुछ वर्ष ऐसा करते रहे तो तुम्हारे वेतन के बराबर वह रुपया ही आय देने लगेगा। फिर यदि तुम लड़की के विवाह इत्यादि के लिए रुपया चाहोगे तो वापस भी ले सकोगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब विचार करो कि जिसको तुम्हारे रुपये मिलेंगे और जो प्रसन्नता से उसपर ब्याज देगा, भला उसकी तुम सहायता करोगे अथवा उसका शोषण करोगे?"

"पर लालाजी, वह व्यक्ति तो उससे मज़दूर, नौकर रखकर उसका शोषण करेगा?"

"उससे मज़दूर निबट लेंगे। तुम्हारा भी तो मैं शोषण कर रहा कहा जाऊंगा। तुम मुझसे निबट सकते हो। तुम मेरा काम छोड़कर किसी अच्छे वेतन वाले स्थान पर जा सकते हो।"

भुवेनेश्वर विचार करने लगा। वह घरेलू नौकरों की यूनियन का सदस्य था। यूनियन में शोषण का शब्द उसने सीखा था। आज वह विचार करने लगा था कि जहां तक उसका सम्बन्ध है, वह शोषण नहीं करेगा। बैंक से केवल ब्याज लेगा। जब उसका रुपया किसीका भला करेगा, तब ही तो उसका ब्याज मिल सकेगा। तीसरा व्यक्ति रुपया लेकर क्या करता है और क्या नहीं करता, इसपर वह मस्तिष्क खराब क्यों करे? सरकार और उसका काम करने वाले मज़दूर विचार कर लेंगे।

इसपर वह अपने और लालाजी के सम्बन्धों पर विचार करने लगा। क्या उसे वेतन अधिक मिलना चाहिए? कितना? और क्या? वह इसका उत्तर विचार नहीं कर सका। एक बात वह समझ गया था कि लालाजी की योजना से उसके पास रुपये एकत्रित हो जाएंगे और वह लड़की का विवाह सहज ही कर सकेगा।

उसने कहा, "लालाजी, मैं मध्याह्न के समय भोजन करने जाऊंगा तो पत्नी से पूछकर बता सकूंगा।"

भागीरथलाल ने अब नवलकिशोर के पत्र का उत्तर विचार किया और लिख दिया। उसने लिखा, "यह मकान परिवार के प्रायः सभी सदस्यों से पूछकर बनवाया गया है। तुम्हें स्मरण होना चाहिए कि तुमसे भी पूछा था और तुमने किसी प्रकार का उत्तर नहीं दिया था। मैंने इस मकान को परिवार के लिए एक भूषण की भांति शोभा और प्रतिष्ठा के रूप में बनवाया है। भूषण किसी प्रकार की आय में तो वृद्धि नहीं करते, इसपर भी पहनने वाले की प्रतिष्ठा में वृद्धि करते हैं। औद्योगिक क्षेत्र में परिवार की शोभा, प्रतिष्ठा और प्रभाव बढ़ेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4

भागीरथ के पत्न का उत्तर नवल ने नहीं दिया, परन्तु कुछ अन्य सदस्यों का आवेदन आ गया। नवीन मकान के विषय में विचार करने के लिए परिवार की एक आपत्कालीन सभा बुलाई जाए। वर्त-मान मन्दी के काल में परिवार को विघटित करना ठीक क्यों नहीं, यह विचार कर लिया जाए।

इसपर भागीरथलाल समझ गया कि मकान के अतिरिक्त कुछ अन्य बातें भी हैं। वे इस मन्दी के काल में इकट्ठे रहकर अधिक सुग-मता से इसका प्रतिशोध कर सकते थे। परिवार को इस समय विघटित करना वह उचित नहीं मानता था, परन्तु जब कई सदस्यों ने एक ही प्रकार की मांग की तो वह परिवार की एक आपत्कालीन गोष्ठी बुलाने का विचार बना बैठा। इस नई स्थिति में वह बाबा ब्रजलाल से सम्मति करने चल पड़ा।

वह पांडीचेरी जा पहुंचा। ब्रजलाल इस समय अठासी वर्ष की अवस्था में पहुंच चुका था। इसपर भी वह चलता-फिरता था। प्रातः-साय सागरतट तक घूम आता था। शेष समय वह घर में भगवद्भजन अथवा भगवान की लीला श्रवण करने में व्यतीत करता रहता था।

परिवार के लोग घर के पुरखा के दर्शन एवं सेवा करने के लिए वहां पहुंचते रहते थे और ब्रजलाल ने एक बड़ा-सा मकान ले रखा था जिसमें घर के प्राणी आकर उसके पास रह जाया करते थे।

कभी कोई स्वराज्य कालोत्पन्न युवक अपने पर-बाबा के दर्शन करने आता तो वह बाबा का कार्यक्रम देख समझ नहीं सकता कि बाबा घरवालों से दूर अकेला वहां रहता हुआ क्या लाभ प्राप्त कर रहा है। कभी कोई साहस कर कह भी देता, "बाबा, आप हमारे साथ बम्बई चलकर रहिए। वहां हम तुम्हारी सेवा करेंगे।"

ब्रजलाल कह देता, "यहां भी तो तुम ही सेवा कर रहे हो।"

"पर बाबा, मैं सदा तो यहां रह नहीं सकता!"

"तो तुम्हारा भाई, चाचा अथवा कोई अन्य आ जाएगा। तनिक उसकी सेवा का आनन्द भी तो प्राप्त करना चाहिए।"

"पर यहां क्या लाभ है रहने का?"

"यहां एकान्त में रहने से चित्त को शान्ति मिलती है। वृद्धि को स्थिरता प्राप्त होती है।" नवीन युग के युवक को शांति और स्थिरता की बात समझ नहीं आई। वह शांति का अर्थ शीतलता और चित्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का अर्थ मस्तिष्क समझता था। उसने कह दिया, "आप ग्रीष्म ऋतु में किसी ठण्डे स्थान पर चलकर रह सकते हैं। वहां अनायास ही शांति मिल जाया करेगी।"

"वह शांति तो मैं यहां भी प्राप्त कर लिया करता हूं। कभी गर्मी अधिक हो जाती है तो पानी से भीगा कपड़ा सिर पर रख लिया करता हूं, परन्तु उससे चित्त को शांति नहीं मिलती। देखो, रघुवीर, यदि वायुमण्डल की ठण्डक से शांति मिल सकती तो मास्को में रहने वाले रूसी अधिकारी अमेरिका की उन्नति देख उद्विग्न न हो उठते। अथवा हिटलर और स्टालिन दूसरे देशों पर आक्रमण करने का दुस्साहस न करते। तुम शांति का अर्थ ठण्डक समझ रहे हो और यह अर्थ है नहीं।"

"तो बाबा, शांति कैसे होती है?"

"पहले पूछो, किसको होती है?"

"किसको होती है, बाबा?"

"मनुष्य में एक आत्मा नाम की वस्तु है। वह शरीर की सब क्रियाओं पर अधिकार रखती है। वह मस्तिष्क में स्थित एक गुहा में रहती है। वहां बैठी वह पूर्ण शरीर पर नियंत्रण रखती है और कार्य लेती है।

इस नियंत्रण और कार्य लेने के लिए शरीर में ही इसको हथियार उपलब्ध हैं। इन हथियारों को करण करते हैं। ये करण दो प्रकार के हैं। बाहरी और आभ्यन्तरिक। आभ्यान्तरिक करण हैं मन और बुद्धि। बाह्य करण हैं दस इन्द्रियां।

"मन, बुद्धि दोनों आत्मा के साथ उसी गुहा में रहते हैं जहां आत्मा रहती है। मन, बुद्धि और आत्मा चित्त कहलाते हैं। इनकी शांति शरीर को ठण्डक पहुंचाने से पृथक बात है।

"मन और बुद्धि निर्विघ्न काम करें तो ये शांति कहलाते हैं। इनको अशान्त करने के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार विघ्नकारक हैं। इन्हीं विचारों ने हिटलर को अशान्त कर रखा था और इन्हींके कारण स्टालिन बेचैन और भयभीत रहता था।"

ब्रजलाल कहता-कहता रुक गया। सामने बैठा युवक ऊंघने लगा था। बाबा समझ गया कि सूअर को खाने के लिए मेवा डाला जा रहा है। इस कारण वह चुप कर गया।

बाबा के कहते-कहते रुक जाने से रघुवीर को चेतना हो गई। उसने सिर को झटका दे सतर्क हो कहा, हां, बाबा, फिर क्या हुआ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजलाल की हंसी निकल गई। उसने कहा, "तब रघुवीर को जगाने के लिए स्वर्ग की अप्सराएं आईं और अपने कोमल हाथों से उसके गालों पर थपकियां देने लगीं।"

रघुवीर समझ गया कि उसका बाबा जान गया है कि उसे झपकी आ गई थी। इससे वह लज्जा अनुभव करता हुआ कहने लगा, "तो बाबा, वे अवश्य उससे प्रेम करती होंगी।"

"हां, परन्तु इससे रघुवीर की नींद खुल नहीं रही। इस कारण उसे जाकर सो जाना चाहिए।"

रघुवीर बोला, "बात तो ठीक है।" वह उठा और अपने कमरे में जाकर सो गया।

इस प्रकार पुराना काल बदलता हुआ नवीन काल आने लगा था। यह स्पष्ट हो रहा था कि नई पीढ़ी उन्नति नहीं, ह्रास को प्राप्त हो रही है। वर्तमान युवक-मन केवल उन बातों को सुनने में रुचि रखता है जिनको वह पहले ही जानता है। वह किसी प्रकार की नई बात सुन नहीं सकता।

एक दिन भागीरथलाल वहां आ पहुंचा। जब वह एकान्त में मिलने आया तो बाबा ने कह दिया, "मैं तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहा था।"

"सत्य, बाबा?"

"मुझे भी नवल और उसके भड़काए अन्य सदस्यों के पत्र आए हैं। वे अब परिवार को विखण्डित करना चाहते हैं।"

"हां, बाबा, मैं इसी विषय में सम्मति लेने आया हूं।"

"परिवार में बंटवारा कर इसे विखण्डित कर दो।"

"क्यों?"

"इस कारण कि इस परिवार की पारवारिक आयु समाप्त हो गई है। अब इस बरगद के पेड़ की शाखाएं भूमि को छूने लगी हैं और वे अब नये-नये पेड़ों को बनाएंगी। नये परिवार स्थापित होंगे। तना, जो खोखला पड़ गया है, वह ईंधन के कामों में आएगा।"

भागीरथ ने समझा कि बाबा उसके कार्य में दोष समझता है। इस कारण उसने जिज्ञासा के भाव से पूछ लिया, "बाबा, इसमें यह वही कहां से आ गया है? मैंने अपनी जानकारी में तो कोई भूल की नहीं।"

"मैं तुम्हारी बात नहीं कह रहा। मैं परिवार की बात कर रहा हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
परिवार एक भावना है। पूर्वजों के नाम की मर्यादा और प्रतिष्ठा इस भावना का स्वरूप है। यहां अब वह नहीं रही। इसी कारण कहता हूं कि परिवार का तना खोखला हो गया है। ब्रजलाल के परिवार के लोग अब ब्याज और भाड़े की आय में तुलना करते हुए परिवार की मान-प्रतिष्ठा को तुच्छ मानने लगे हैं। जब यह स्थिति है तो परिवार नहीं रह सकता है।

"संयुक्त परिवार के बहुत लाभ है। लाभ के पीछे भावना मान-प्रतिष्ठा की होती है। जब यही गौण हो गई और धन का लाभ मुख्य हो गया तो समझ लो कि परिवार-रूपी पेड़ का तना खोखला हो गया है। अब शाखाओं को भूमि में अपनी जड़ें स्थापित करनी चाहिए और नवीन परिवार स्थापित होने चाहिए।

"भागीरथ, अब तुम भी कहीं भूमि पकड़ अपना पेड़ खड़ा करो।"

"तो अब कोई आशा नहीं?" भागीरथ ने निराश हो पूछ लिया।

"किस बात की आशा लगा रहे थे?"

"परिवार चलाने की।"

"परिवार तो चलेगा। जहां पुरुष और स्त्री इकट्ठे होंगे वहीं परिवार बन जाएगा और ये इकट्ठे हुए बिना रहेंगे नहीं—विवाह हो अथवा न हो। संयोग होगा और परिवार बनेंगे।

"सुना है कि विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है और ऐसे यंत्र निर्माण हो गए हैं कि संयोग होने पर भी संतान न हो। मैं समझता हूं कि सन्तान तो होगी। यदि शत-प्रतिशत स्त्रियां भी सन्तान-निरोध करने लगेंगी तब भी बच्चे होंगे। वे ऐसे होंगे जैसे नदी-तट पर दूब और सरकंडे उत्पन्न होते हैं।

"आदिसृष्टि में भी तो जीव-जन्तु बने थे, फिर भी हो सकते हैं। एक बात और है: परिवार के लिए तो केवल पुरुष और स्त्री का इकट्ठे रहना पर्याप्त है। परन्तु वे परिवार मौसमी पौधों की भांति अल्पकालीन होंगे और अल्पविस्तार वाले होंगे। ऐसे संसार में बरगद के पेड़ पैदा नहीं होंगे। अब एरण्ड ही पेड़ माने जाएंगे और वे भी फल-फूलविहीन ही रहेंगे।"

भागीरथ बात समझ गया और एक सप्ताह तक बाबा की सेवा में रह दिल्ली लौट आया। दिल्ली पहुंचने पर उसे पता चला कि एक ओर तो बहुसंख्या में सदस्यों ने परिवार को विघटित कर देने का प्रस्ताव किया है और दूसरी ओर कलकत्ता की टूल-फैक्टरी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हड़ताल हो रही है।

भागीरथ विचार करता था कि यह हड़ताल भी तो विघटन की सूचक ही है। कलकत्ता से घेराव की सूचनाएं आ रही थीं और वह समझता था कि यह विघटन के लक्षण ही हैं। यहां परिवार नहीं, वरंच राष्ट्र का तना खोखला पड़ गया प्रतीत होता है।

बाबा ब्रजलाल की बात का समर्थन ही मिला जब कलकत्ता कारखाने के मैनेजर मोहनलाल से यह सूचना मिली कि हड़तालियों का नेता उसका बड़ा लड़का कान्तिलाल ही है।

भागीरथलाल ने अविलम्ब परिवार की सभा बुला ली। यह सूचना भेज दी गई कि क्योंकि परिवार में आमूल-चूल परिवर्तन होने वाले हैं, इस कारण सब सदस्य अपने अधीन सज्ञान सदस्यों से प्रॉक्सी (प्रतिपत्र) लेते आएं।

भागीरथलाल यह समझ रहा था कि कलकत्ता से सोहनलाल कदाचित् अपनी पत्नी को ही प्रतिपत्र देकर भेज देगा, परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब सभा की निश्चित तिथि से पूर्व ही कान्तिलाल अकेला वहां आ पहुंचा।

भागीरथ ने सबको सभा के दो दिन पूर्व बुलाया था। वह काम बन्द करना चाहता था। इस कारण सब स्थानों की स्थिति और हिसाब-किताब पृथक्-पृथक् जानना चाहता था। अतः जब कान्ति-लाल चाचा भागीरथलाल के सामने आया तो उसने पूछ लिया, "कान्ति, तुम्हारे पिता नहीं आ रहे क्या?"

"चाचाजी, मैं नहीं जानता।"

"तो तुम कहां से आ रहे हो?"

"आ तो कलकत्ता से ही रहा हूं, परन्तु पिछले पन्द्रह दिन से मैं उनसे पृथक् रहता हूं।"

"क्यों? झगड़ पड़े हो उनसे?"

"झगड़ा तो नहीं हुआ। मैंने विवाह किया है और पत्नी की सम्मति है कि हमको पृथक् ही रहना चाहिए।"

कान्तिलाल के कर्मचारियों की यूनियन के मंत्री होने की बात भागीरथ को पता चली थी, परन्तु कान्तिलाल के बात बनाकर करने पर भागीरथ को सन्देह हो गया कि कहीं उसकी सूचना मिथ्या ही न हो। इस कारण उसने कान्ति की बात पर विश्वास करने का भाव बनाए रखा और उससे कहा, अच्छा, आराम करो। मैं तुमको कल पूर्ण स्थिति से अवगत करूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चाचाजी, मैं भी एक प्रस्ताव लेकर आया हूं।"

"वह मैं कल ही सुनूंगा। अभी तक तुम विचारों को अन्य उपस्थित सदस्यों को बताकर उसपर उनकी सम्मति जान लो।"

उसी दिन सायंकाल के हवाई जहाज़ से मोहनलाल की लड़की रजनी और छोटा लड़का बिहारीलाल आ गए। इसपर तो भागीरथ-लाल उत्सुकता से पूछने लगा, तुम्हारे पिताजी क्यों नहीं आए?" बिहारीलाल ने बताया, "पिताजी ने हवाई जाहाज़ में चार सीटें रिज़र्व कराई हुई थीं। रजनी को अपने ससुराल से सीधा ऐयरोड्रॉम पहुंचना था और मुझे अपने कालेज होस्टल से। माताजी और पिताजी को घर से वहां पहुंचना था। हम दोनों पहुंच गए और हवाई जहाज़ चलने तक हम माता-पिता की प्रतीक्षा करते रहे हैं, परन्तु वे नहीं आए। हमने ऐयरोड्रॉम से घर टेलीफोन किया था, परन्तु टेलीफोन बिगड़ा प्रतीत होता था और घर से सम्पर्क नहीं हो सका।"

"यह तो अत्यन्त चिन्ता का विषय है।"

"चाचाजी," रजनी ने कहा, "बिहारी तो वहां ही रह जाना चाहता था, परन्तु मैंने यह ही उचित समझा था कि यहां से जांच की जाए। कारखाना तो पिछले पन्द्रह दिन से बन्द है।"

भागीरथलाल ने कलकत्ता टेलीफोन से मोहनलाल से सम्पर्क बनाना चाहा। इसपर ऐक्सचेन्ज से पता चला कि टेलीफोन बिगड़ा है। इस कारण सम्पर्क नहीं हो सकता।.

भागीरथलाल को ज्ञात था कि मोहनलाल का राज्य के गवर्नर से घना परिचय है, अतः उसने गवर्नर के पी॰ ए॰ से सम्पर्क बनाया और उसको मोहनलाल, मैनेजर भागीरथलाल एण्ड ब्रदर्ज़, से सम्पर्क नहीं हो रहा, बताया। उसने कहा कि हमें भय है कि भाई साहब के साथ कुछ घटना घटी है। कृपया गवर्नर महोदय को सूचित कर दें।

पी॰ ए॰ नहीं जानता था कि मोहनलाल कौन है, इसपर भी उसने गवर्नर महोदय को बताया तो उन्होंने राज्य के सेक्रेटरी से टेली-फोन कर मोहनलाल का पता करना चाहा इसपर सूचना मिली कि मोहनलाल के मकान का कर्मचारियों ने घेराव किया हुआ है।

गवर्नर ने अपने विशेष गार्ड भेज मोहनलाल और उसकी पत्नी स्नेहलता को घर से निकलवाया और रात-भर उनको अपनी कोठी में रखा। प्रातःकाल के हवाई जहाज़ से दिल्ली भेज दिया।

साढ़े नौ बजे मोहनलाल अलीपुर रोड कोठी पर पहुंच गया। भागीरथलाल को यह विदित हो गया था कि मोहनलाल और भाभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्नेहलता हवाई जहाज़ से आ रहे हैं और वह उनको पालम हवाई अड्डे पर लेने गया हुआ था।

मार्ग में आते हुए ही मोहनलाल ने कलकत्ता की पूर्ण परिस्थिति से अवगत कर दिया था। मोहनलाल ने बताया, "लगभग एक वर्ष हुआ था कि कान्तिलाल एक बंगाली लड़की को घर ले आया था और उसको पत्नी के रूप में अपने साथ रखने लगा था। लड़की का नाम मोहिनी है। कुछ ही दिनों में लड़की ने स्नेहलता को राज़ी कर लिया कि हम उसे बहू के रूप में स्वीकार कर लें।

"पीछे पता चला कि कान्ति कम्युनिस्ट दल का सदस्य है और दल में ही उसका मोहिनी से परिचय हुआ है और फिर विवाह हुआ है। इसके उपरान्त बात बनी रही। मोहिनी घर में हिल-मिल गई, परन्तु जब हड़ताल हुई तो मैंने कान्ति से कहा कि तुम मज़दूर यूनियन के सेक्रेटरी हो, फिर हड़ताल कैसे हो गई है? यदि कुछ बात थी तो मुझे बता दी जाती, मैं वह बात पूरी कर देता। हम तो सबसे अधिक वेतन और सुविधाएं देने वाले मालिक हैं।

"इसपर उसने कहा, 'पिताजी, उनकी कोई मांग नहीं। उनको कोई असुविधा भी नहीं। वास्तविक बात यह है कि आपको कुछ तंग करना है। सो किया जा रहा है।'

"पर तुम बिल्कुल गधे हो जो इस प्रकार की बेसिर-पैर की बात करने वाली यूनियन के सेक्रेटरी बन गए हो।"

"इसपर कान्ति ने कहा, 'मैं कल आप दोनों में सुलह करा दूंगा। आपको कुछ तो देना पड़ेगा।'

"'पर यह गधापन किया ही क्यों?'

"वह बोला, 'पिताजी, मैं कल आपसे बात करूंगा।'

"अगले दिन वह और उसकी पत्नी घर से लापता हो गए। इसके उपरान्त परिवार की इस गोष्ठी की सूचना आई। तीन दिन पहले मैंने अपने लिए और रजनी तथा बिहारी के लिए हवाई जहाज में चार सीटें रिज़र्व करवा ली थीं। रजनी तो कलकत्ता से दिल्ली आना चाहती थी। वह अब दिल्ली में ही रहने का विचार कर रही है। बिहारीलाल के कालेज में विद्यार्थी हड़ताल करना चाहते थे। इस कारण उसे मैंने कुछ दिन के लिए दिल्ली चले जाने की सम्मति दे दी। हम दोनों तो आने ही वाले थे।

"कल हम घर से हवाई अड्डे पर चलने ही वाले थे कि कर्मचारियों ने घेराव डाल दिया। हमने टेलीफोन से सम्पर्क बनाना चाहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो उसका तार काट दिया गया था। हम हवाई जहाज़ पकड़ नहीं सके और न ही यह जान सके कि रजनी और बिहारीलाल का क्या हुआ।

"रात के बारह बजे कुछ सैनिक आए। घेराव डालने वालों से उनका झगड़ा हुआ और अन्त में हमको वहां से निकाला गया और गवर्नर की कोठी पर पहुंचा दिया गया। यह तो हमको वहां से पता चला है कि रजनी और बिहारीलाल यहां पहुंच गए हैं ओर तुमने गवर्नर से सम्पर्क बना हमें छुड़ाया है।"

"पर कान्ति तो कल प्रातःकाल का यहां आया हुआ है।"

"सत्य? हमने तो उसे यहां की मीटिंग की बात बताई नहीं।"

"पर वह पता पा यहां चला आया है।"

"यह विस्मयजनक है।"

5

घर पहुंच जब स्नेह और मोहनलाल स्नातादि कर रहे थे, भागीरथलाल ने कान्तिलाल को बुलाकर उसके पिता के घेराव में रह जाने और गवर्नर की सहायता से छूटकर दिल्ली पहुंच जाने की बात बता दी।

कान्तिलाल ने अपनी सफाई दे दी, "चाचाजी, मैं तो परसों प्रात:काल का चला हुआ कल यहां पहुंच गया था। यह घेराव की बात मुझे विदित नहीं।"

"परन्तु मैं पूछता हूं कि तुमने यह हड़ताल कराई ही क्यों? यदि कर्मचारी तुम्हारा कहा मानते नहीं थे तो तुमने मंत्रीपद छोड़ क्यों नहीं दिया?"

कान्तिलाल कुछ काल तक आंखें मूंद विचार करता रहा, फिर आंखें खोल कहने लगा, "वास्तव में यह हड़ताल न तो कर्मचारियों की इच्छा से हुई है और न ही मेरे आदेश से। यह दल का निर्णय था। मैं, मोहिनी और दल के अन्य सदस्य, जो कर्मचारी भी हैं, दल के आदेश के विपरीत नहीं जा सके। कदाचित् दल भी विवश था। यह सब योजना अधिकारियों के आदेश से चलाई गई है।"

"और यह घेराव भी?"

"अवश्य उनसे ही चलाया गया होगा। इसके निर्णय से पूर्व ही मैं वहां से चला आया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो, कान्ति, तुमने परिवार से दगा किया है। इस अवस्था में परिवार तुम्हारे विषय में यह विचार करने का अधिकार रखता है कि तुमको परिवार से बाहर कर दिया जाए।"

"पर चाचाजी, आप मुझे सम्पत्ति में से मेरा भाग तो देंगे?"

"यह भी परिवार निश्चय करेगा।"

"पर अभी तक आपका निश्चय ही परिवार का निश्चय माना जाता है।"

"परन्तु ऐसी स्थिति पहले कभी आई नहीं। इस कारण इसके विषय में परिवार की सम्मति लेनी ही पड़ेगी।"

"पर आप क्या समझते हैं?"

"मेरा विचार कुछ इस प्रकार है। तुम समाजवादी हो। इसमें परिवार आपत्ति नहीं कर सकता। प्रत्येक सदस्य अपने विश्वासों में स्वतंत्र है। तुम हड़ताली कर्मचारियों के मंत्री हो। वे परिवार को हानि पहुंचा रहे हैं। इस कारण तुम दो नौकाओं में सवार दिखाई देने लगे हो। यह न तुम्हारे लिए हित की बात है और न ही परिवार के लिए। इस कारण तुम एक नौका में हो जाओ। परिवार का सदस्य रहना है तो कर्मचारी यूनियन का मंत्रीपद छोड़ना पड़ेगा।

"रही बात सम्पत्ति में भाग की, मैं समझता हूं कि जब तक तुमको परिवार अपने से बाहर निकाल नहीं देता तब तक परिवार को अर्जित सम्पत्ति के तुम भागीदार रहोगे। इसका अभिप्राय यह है कि जब भी तुमको निकाला जाएगा, तुम्हें सम्पत्ति में से तुम्हारा भाग देकर निकाला जाएगा।"

"चाचाजी, बहुत-बहुत धन्यवाद है। एक बात और बता दीजिए। मैं कल होने वाली मीटिंग में भी आ सकता हूं अथवा नहीं?"

"जब तक तुमको नोटिस नहीं दिया जाता और तुमको परिवार से बाहर नहीं किया जाता तब तक तुम भी मीटिंग में आ अपनी सम्मति दे सकते हो।"

कान्तिलाल ने खड़े हो हाथ जोड़ धन्यवाद करते हुए कहा, "चाचाजी, अब मैं जाऊं?"

"परन्तु तुम्हारी पत्नी का भाग नहीं माना जाना चाहिए।"

"क्यों?"

"वह इस घर में बहू के रूप में स्वीकार नहीं की गई।"

"यह तो अन्याय हो जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"नहीं, अन्याय नहीं। अन्य सदस्यों के साथ न्याय होगा। विवाह विधिवत् नहीं हुआ।"

कान्तिलाल को भागीरथलाल की युक्त में सार प्रतीत हुआ तो वह मौन हो अपने कमरे में चल दिया।

सबसे विस्मयजनक बात हुई मीटिंग के दिन ब्रजलाल का हवाई जहाज़ से दिल्ली पहुंच जाना। बाबा मद्रास से हवाई जहाज़ में आया था। भागीरथलाल ने पूछ लिया, "बाबा, आप इस कीचड़ में लिप्त होने के लिए किसलिए आए हैं?"

"मैं यह देखने आया हूं कि भागीरथ किस प्रकार वर्तमान कठि-नाई को पार करता है। मैंने कई सदस्यों से आग्रह कर यह परिवार निर्माण कराया था, अत: उनके हितों की रक्षा के लिए मैंने स्वयं मीटिंग में उपस्थित होना उचित समझा है।"

भागीरथलाल ने मोहनलाल के लड़के की करतूत सुनाई तो ब्रजलाल ने पूछ लिया, "तुमने उसके विषय में क्या विचार किया है?"

"बाबाजी, उसके विषय में तीन समस्याएं हैं। एक तो यह कि उसने किसी लड़की से गांधर्व विवाह कर लिया है। यह विवाह आज न तो प्रथा से विवाह रहा है और न ही कानून से। इस कारण कान्ति की पत्नी परिवार की सदस्या नहीं हो सकती।

"बाबा, मैंने जब पति के बराबर पत्नी के भाग की प्रथा चलाई थी तो उसमें युक्ति यह थी कि मैं एक सदस्य की पत्नी को परिवार का अंग मान परिवार की सम्पत्ति का भागीदार समझता था। पत्नियों को परिवार में भागीदार मान लेने से अन्तर केवल यह पड़ा था कि परिवार की सम्पत्ति में विवाहित सदस्यों का भाग अविवाहितों से दुगुना हो गया था भौर, अपनी मूर्ख सरकार के लड़कियों के भाग देने से, लड़कियों का भाग आधा हो गया था। उनका भाग तो विवाह के पहले ही उनको दिया जाता है।"

ब्रजलाल हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "पर एक बात बताओ। तुम पति से रूठी हुई पत्नी को क्या दिलाते हो?"

"पत्नी का भाग तो पति के द्वारा ही होता है। पति का भाग दुगुना हो जाता है। इस कारण पति ही उसको, जो वह चाहे अथवा जो न्यायालय दिलवाए, देता है।"

ब्रजलाल भागीरथ की सूझ-बूझ पर विश्वास करने लगा था। इसपर भी वह कान्तिलाल की पत्नी को कुछ न दिए जाने पर विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करता था कि इसमें पत्नी का दोष है अथवा पति का। यदि तो विवाह न करने की बात पत्नी ने प्रेरणा देकर की है तो दोषी वह है, और यदि पति ने पत्नी को विवश किया है तो पत्नी निर्दोष होने से क्यों सम्पत्ति से वंचित की जाए?

ब्रजलाल ने पूछ लिया, "पर गांधर्व विवाह होने के पीछे भी यदि वे अग्नि के चार चक्कर काटकर विधि-विधान पूरा कर लेते तो वह सम्पत्ति में भागीदार बन सकती थी न?"

"हां, बाबा।"

"कब हुआ था उनका विवाह?"

"एक वर्ष के लगभग हो गया है।"

"परन्तु विवाह की रस्म तो वे पीछे किसी समय भी पूरा कर सकते थे। फिर क्यों नहीं की? लाखों का लाभ हो जाता।"

"कदाचित् वे इसमें कोई तथ्य नहीं समझते।"

"मैं समझता हूं कि तुम कान्तिलाल से कह दो कि वह अपनी पत्नी को यहां बुला ले और सब परिवार के सम्मुख विवाह-संस्कार करा ले तो उसको पत्नी सम्पत्ति में भागीदार बन जाएगी।"

"पर बाबा, क्या यह विवाह-प्रथा से स्वीकार हो सकेगा?"

"विधवा-विवाह स्वीकार होता है अथवा नहीं? यह माना जाएया कि कान्तिलाल मूर्ख की विधवा पत्नी कान्तिलाल बुद्धिमान से विवाह कर रही है।"

भागीरथ इस युक्ति को समझ चकित रह गया। उसने कह दिया, "बाबा; उससे आप स्वयं ही बात कर लो।"

"बुलाओ उसे।"

कान्तिलाल आया तो बाबा मै पूछ ने पूछ लिया "क्यों बे बच्चू! अपने विवाह की मिठाई क्यों नहीं खिलाई।"

"बाबा, विवाह ही नहीं कराया। हम पति-पत्नी नहीं हैं। जीवन के साथी हैं।"

"ठीक है, अपनी साथिन को विवाह कर पत्नी बना लो तो तुम्हारा सम्पत्ति में भाग दुगुना हो जाएगा।"

"सत्य?"

"हां, उसे तार देकर यहां बुला लो। परिवार के सामने वेदमंत्र पढ़, अग्नि के चार चक्कर काट लो। पिता को कह सबको मिठाई खिला दो। बस, दुगुने के भागीदार हो जाओगे।"

कान्तिलाल को आशा नहीं थी कि मोहिनी मानेगी वह यह तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वीकार कर लेगी कि झूठ बोल दिया जाए कि विवाह की रस्म पूरी हो गई है, परन्तु सब परिवार के सामने वह यह अग्नि के चारों ओर नृत्य करना स्वीकार नहीं करेगी । इसपर भी उसने कुछ उत्तर नहीं दिया । उसने कहा, "मैं उसे तार भेज देता हूं । यदि वह इस काम के लिए तैयार हो गई तो बाबा का आशीर्वाद उसे मिल जाएगा ।"

"ठीक है। उसको कहो कि कल हवाई जहाज़ से यहां आ जाए। मैं परसों यहां से जाने का विचार रखता हूं । मैं तुम्हारे विवाह की मिठाई खाकर ही जाऊंगा ।"

कान्ति विचार कर रहा था कि भागीरथलाल के परिवार के लोग भी महामूर्ख हैं । ये भावुक लोग परिवार की भावना को एक सत्य विचार मान उसके लिए लाखों इधर से उधर कर देते हैं। इसपर भी बाबा के प्रस्ताव में अपना लाभ समझ वह कलकत्ता टेलीफोन करने लगा। मोहिनी से सम्पर्क नहीं बन सका ।

दिन के ठीक ग्यारह बजे परिवार के सज्ञान सदस्यों की बैठक हुई । पन्द्रह सदस्य उपस्थित थे। बम्बई से नवल स्वयं आया था और उसने भागीरथलाल पर अविश्वास का प्रस्ताव रख दिया ।

भागीरथ इसकी आशा नहीं करता था । वह समझता था कि नवल परिवार भंग करने की बात करेगा, परन्तु अविश्वास से वह क्या प्रयोजन सिद्ध करना चाहेगा, वह समझ नहीं सका । ब्रजलाल सम-झता था। उसने पूछ लिया, "तो तुम कर्ता बनना चाहते हो ?"

"कुछ हानि नहीं होगी, बाबा ।"

"कैसे बनोगे ?"

"सदस्यों को अपने पक्ष में सम्मति देने के लिए कहकर ।"

"कर्ता का प्रधानमंत्री की भांति निर्वाचन होगा क्या ?"

"क्या हानि है?"

"है । परिवार एक प्रजातन्त्रात्मक संस्था नहीं है। यह तो एक राजा का राज्य होगा। राजा प्रजा की सम्मति जानकर राज्य करता है, परन्तु वह प्रजा की दया पर रहकर कर्ता नहीं रहेगा ।

"देखो, नवल जब परिवार की स्थापना हुई थी तब मैंने यह बात कहीं थी कि परिवार के पुरखा पर परिवार चलता है। परिवार की इच्छा पर पुरखा नहीं बनता ।"

"पर बाबा, यदि पुरखा कोई खराबी करे तो क्या हो ?"

"तब पुरखा नहीं रहेगा और परिवार विघटित हो जाएगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तब कोई भी पुरखा बन अपना परिवार चला सकेगा।

"बाबा, यही तो कह रहा हूं। मेरे प्रस्ताव में विशेषता यह है कि परिवार विघटित इस कारण किया जाएगा कि पुरखा ने परिवार के धन का इन्वेस्टमेंट (निवेश) ठीक नहीं किया।"

"देखो, बरखुरदार, पहले यह विचार उपस्थित करो कि अमुक कार्य में धन का निवेश गलत हुआ है। जब यह निश्चय हो जाएगा तब ही भविष्य में पुरखा न रखने की बात कर सकते हो।"

"मैं दोनों बातों को एकसाथ करना चाहता था।"

"परिवारों में ऐसा नहीं चल सकता। कुछ लोग हो सकते हैं जो निवेश को गलत मान भी पुरखा बदलना न चाहें। कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं कि धन के निवेश को ठीक मानकर भी परिवार को विघटित करना चाहें; कर्ता के कार्य को सराहनीय मान भी वे परिवार को न रखना चाहते हों।"

"भला, फिर वे ऐसा क्यों चाहेंगे?" नवल बाबा की युक्ति न समझते हुए पूछने लगा।"

उत्तर भागीरथ ने दिया, उसने कहा, "मैं चाहता हूं कि पहले यह निश्चय हो जाए कि कनाट सरकस वाले मकान पर लगा धन ठीक है अथवा नहीं।"

आखिर नवल मान गया और उसने यहीं बात विचारणीय रखी। भागीरथ का उत्तर था, "मैं जानता हूं कि इस मकान से उतनी आय नहीं हो सकती जितनी किसी उद्योग अथवा व्यवसाय से हो सकती है, परन्तु मैं इसे परिवार की शोभा और प्रतिष्ठा का कारण मानता हूं। परिवार की शोभा के लिए कितना ही धन कांग्रेस को दान दे चुका हूं और किसीने आपत्ति नहीं की। उस दान से केवल सत्ताधीश राजनीतिक दल में प्रतिष्या बनी थी, इस निवेश से सम्पत्तिधारियों में प्रतिष्ठा बनी है। इससे हमारा बैंकों में ओवर-ड्राफ्ट बढ़ गया है। लोग हमारा पहले से अधिक विश्वास करने लगे हैं। हमको फैक्टरियों की एजेन्सियां सुगमता से मिलने लगी हैं। लाखों रुपये का माल वे अनायास ही भेज देते हैं और हमारे काम में इससे वृद्धि हुई है और भविष्य में अधिक होने की संभावना है।"

नवलकिशोर की युकति तो केवल यह थी, "किसी घटिया से घटिया व्यवसाय में भी पन्द्रह-बीस प्रतिशत का लाभ हो जाता है और इस मकान पर लगे रुपये से दो ढ़ाई प्रतिशत से अधिक लाभ नहीं होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सदस्यों को भागीरथ की युक्ति अधिक पसन्द आई और पनद्रह में से केवल तीन सदस्य नवल का समर्थन कर सके।

इसके उपरान्त कलकत्ता के कारखाने की हड़ताल का प्रश्न विचारार्थ उपस्थित किया गया। मोहनलाल ने ही यह विचार उपस्थित किया था, "मेरे लड़के कान्ति ने यह हड़ताल कराई है। हड़ताल अकारण है, अनियमित है। इससे अभी तक कारखाने की व्यापार-सम्बन्धी पचास हज़ार की हानि हो चुकी है। हो यदि कर्मचारियों को का देना पड़ा तो हानि एक लाख से ऊपर हो चुकी मानी जानी चाहिए।

"यह सब हानि कान्तिलाल की नालायकी के कारण हुई है। इस कारण कान्ति को परिवार की सदस्यता से निकाल दिया जाए और इसके भाग में से हो रही हानि की पूर्ति की जाए।"

नवल ने इस प्रस्ताव का समर्थन कर दिया। भागीरथ ने कहा, "प्रस्ताव के दो भाग हैं। दोनों पर पृथक्-पृथक् विचार करना चाहिए। पहला भाग यह है कि कान्तिलाल को परिवार से बाहर कर दिया जाए। प्रस्ताव का दूसरा भाग है कि इसके सम्पत्ति के भाग में से हड़ताल से होने वाली हानि पूरी की जाए।

"मैं पहले भाग का समर्थन करता हूं और दूसरे भाग का विरोध करता हूं। मेरे इस व्यवहार में युक्ति यह है कि यह एक समाजवादी दल का सदस्य है। समाजवादी दल सम्पत्तिधारियों का विरोधी है। अतः दो भिन्न-भिन्न दिशाओं में जा रही नौकाओं पर इसे सवार नहीं होना चाहिए। न ही इसे सवार होने देना चाहिए। इसीमें इसका और इसीमें परिवार का हित मानता हूं।

"साथ ही मैं समझता हूं कि हड़ताल कराना इस अकेले के बस की बात नहीं थी। इसने कराई भी नहीं। इससे भूल यह हुई है कि इसको हड़ताल का निश्चय होते ही परिवार की सदस्यता छोड़ देनी चाहिए थी। यह भूल है। यह नीयत से किया गया अपराध नहीं। इस कारण उस हड़ताल का प्रतिकार इससे नहीं लेना चाहिए।

"हमने भी तो इसे अभी तक परिवार से निकाला नहीं। अर्थात् हम समझते रहे थे कि इसका कर्मचारियों की यूनियन का मंत्री होने से हमारे कारखाने का हित है।"

नवल ने इस अवसर पर भी भागीरथ का घोर विरोध किया, परन्तु युक्ति से वह अपनी बात सिद्ध नहीं कर सका। इसपर ब्रजलाल ने इस समस्या पर अपना मत कह दिया कि भागीरथ ने यह निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया है कि वह इस परिवार का पुरखा नहीं रहना चाहता। परिणामस्वरूप 'भागीरथलाल एण्ड ब्रदर्ज़' का परिवार विघटित होगा। अब नया परिवार अथवा कई परिवार संघटित होंगे। वे अपने नये कायदे, नियम बनाएंगे। नया नाम होगा, नये खाते चलेंगे।

भागीरथ के कर्तापन से त्यागपत्र देने के उपरान्त यह प्रस्ताव कर दिया गया कि परिवार का विघटन-सम्बन्धी प्रबन्ध करने के लिए एक तीन व्यक्तियों की समिति बनाई जाए। उस समिति को पूर्ण अधिकारसम्पन्न कर देना चाहिए और कान्तिलाल का काम भी उस समिति के हाथ में दे देना चाहिए।

अब पुनः मत लिया गया और १३ मतों से यह निश्चय हुआ कि कान्तिलाल को सदस्य न रखा जाए और उसको क्या दिया जाए अथवा न दिया जाए, यह वह उपसमिति निर्णय करे, जो भागीरथ का त्यागपत्र स्वीकार किए जाने पर बनी और जिस समिति में भागीरथ, सोमदेव और परमानन्द सदस्य हुए।

उपसमिति के संगठित होते ही परिवार के व्यवसाय को और सम्पत्ति को विभक्त करने का कार्य आरम्भ हो गया।

6

कान्तिलाल को मीटिंग का समाचार नवल ने ही भेजा था। नवल का प्रथम पत्र तो कान्तिलाल को हड़ताल आरम्भ होने से पूर्व ही मिला था। यह पत्र कान्ति के पिता के घर के पते पर आया था। कान्ति ने नवल से पूछा था कि क्या करना चाहता है और परिवार की बैठक क्यों बुला रहा है। इस पत्र का उत्तर उसने कम्युनिस्ट दल के कार्यालय में मंगवाया था। इसपर नवल ने उसे अपनी पूर्ण योजना बता दी थी और कान्ति से आग्रह किया था कि अमुक तिथि को वह दिल्ली में अवश्य आए।

दिल्ली में आकर दोनों में बातचीत हुई थी और कान्तिलाल ने नवल का समर्थन करने का वचन दिया था। परन्तु सभा में न नवल ने कान्ति का और न कान्ति ने नवल का समर्थन किया।

अतः मीटिंग के उपरान्त कान्ति और नवल परस्पर मिले और पूछने लगे कि दोनों के मत भिन्न-भिन्न दिशाओं में क्यों गए हैं? कान्तिलाल ने कह दिया कि यदि मैं नवल चाचा की बात का समर्थन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करता तो क्या नवल मुझे मेरे भाग का धन दिलवाते? पीछे उसके मेरे विषय में प्रस्ताव का विरोध करने पर मेरा सन्देह सत्य सिद्ध हुआ है।

नवल हंस पड़ा और बोला, "कान्ति, पहले तुमने विरोध किया "तो फिर मैंने भी विरोध कर दिया। तुम महादुष्ट हो। वचन देकर भी बदल गए थे।"

"चाचा, बात इस प्रकार समझो। मैं इतनी सूझ-बूझ रखता हूं कि मैं जान गया था कि यदि भागीरथ चाचा के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पास हो जाता तो तुम कर्ता बनते अथवा बंटवारा उपसमिति में सदस्य बन जाते। तब तुम मुझे कुछ भी न दिलवाते।"

"बहुत बुद्धिमान हो तुम, जो तुम मेरी बात पहले से ही जान गए थे!"

"हां, चाचा।"

इस वार्तालाप का परिणाम यह हुआ कि दोनों में घोर वैमनस्य उत्पन्न हो गया। दोनों अगेले दिन बंटवारा कमेटी के सामने उपस्थित होकर एक-दूसरे की घोर निन्दा कर आए।

नवल ने कहा था कि कान्ति कम्युनिस्ट दल का सदस्य है। इसको यदि इसके भाग का धन मिला तो यह सब धन दल को दे देगा और दल उस धन का क्रांति उत्पन्न करने में प्रयोग करेगा।

कान्तिलाल ने बंटवारा कमेटी को बताया कि नवल चाहता था कि मैं उसके प्रस्ताव का समर्थन करूं। उसका पूर्ण प्रस्ताव तो यह था कि चाचा भागीरथ पर अविश्वास प्रकट कर कर्तापद से हटा दिया जाए और नवल को कर्ता बनाया जाए। उसने यह वचन दिया था कि जो-जो सदस्य उसको कर्ता बनाने के लिए मत देंगें, वह एक-एक लाख रुपया परिवार के साझे कोष में से उन्हें देगा।

भागीरथ का मत था कि ये दोनों दुष्ट व्यक्ति हैं ओर दोनों की बात को छोड़कर स्वतंत्र रूप से विचार करना चाहिए, परन्तु बंटवारा कमेटी के एक सदस्य सोमदेव ने कह दिया, "कुछ भी हो, सबसे पहले नवल का हिसाब-किताब देखना चाहिए। हमारे व्यवसाय-कक्ष में नवल का काम सबसे बड़ा है। चालीस-पचास लाख की वार्षिक बिक्री का व्यवसाय वहां चल रहा है। यदि भागीरथजी की बात मान भी ली जाए कि यह दुष्ट है, तो इस दुष्ट के व्यवसाय पर सबसे पहले अधिकार करना चाहिए।"

जब सोमदेव ने अपनी बात पर बल दिया तो उसे नवल के व्यव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साय का प्राप्ता नियुक्त कर बम्बई में उसके काम पर अधिकार करने और हिसाब-किताब देखने के लिए भेज दिया गया।

मोहनलाल को लड़के से सचेत रह कलकत्ता जा वहां का काम समेटने का आदेश दे दिया गया। मोहनलाल आया तो था हवाई जहाज़ से, परन्तु जाते समय हवाई जहाज़ में स्थान न मिलने पर वह रेलगाड़ी से गया। घटनावश पिता-पुत्र दोनों एक डिब्बे में स्थान पा गए।

मोहनलाल अपनी पत्नी तथा लड़की और छोटे लड़के को साथ नहीं ले जा रहा था। स्नेहलता और रजनी तो अब यह निश्चय कर आई थीं कि वे दिल्ली में ही रहगी। हड़ताल और घेराव से डरकर स्नेह ने अपने पति को कह दिया कि कलकत्ता का काम वे न लें। कलकत्ता व्यापारी और उद्योगपति समाज के लिए उपयुक्त स्थान नहीं रहा।

रजनी का विवाह हुए डेढ़ वर्ष के लगभग हुआ था। परिवार ने उसे उसके भाग का धन देकर ससुराल भेजा था, परन्तु विवाह के छः मास उपरान्त वह विधवा हो गई थी। रजनी ने विधवा हो जाने के उपरान्त पुनः अपना धन परिवार में लगा देने की इच्छा प्रकट की तो यह स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार रजनी को विधवा हुए एक वर्ष हो चुका था और उसे परिवार में पुनः भागीदार बने दस महीना हो चुके थे।

मोहनलाल का लड़का बिहारीलाल का कालेज विद्यार्थियों के हड़ताल करने के कारण बन्द होने का समाचार मिला तो वह भी कलकत्ता नहीं गया। उस समय नक्सलबाड़ी में कम्युनिस्ट उपद्रव मचा रहे थे।

मोहनलाल ने जब अपनी सीट पर सामान रखा तो उसे पता चला कि उसके ऊपर के बर्थ पर कान्तिलाल का नाम लिखा है। वह उसका नाम पढ़ मुस्कराया। कान्तिलाल गाड़ी छूटने से दस मिनट पहले आया और पिताजी को भी जाते देखकर हंस पड़ा।

"हंसे क्यों हो, कान्ति?"

"इस कारण कि आप आए थे हवाई जहाज़ से और जा रहे हैं रेलगाड़ी से।"

"तो यह हंसने की बात है? हवाई जहाज़ में स्थान नहीं था। अब कल दस बजे मैं कलकत्ता पहुंच जाऊंगा। कल प्रातःकाल के हवाई जहाज़ में स्थान मिलता था। उससे भी तो साढ़े दस बजे ही वहां पहुंचता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो आपके कष्ट का विचार कर रहा था। मैंने समझा था कि परिवार का एक हड़ताल से ही दिवाला पिट गया है और अब हवाई जहाज़ों से याला बन्द हो गई है।"

"एक हड़ताल से कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा। साथ ही अब तो मैं फैक्टरी बन्द करने जा रहा हूं। इस कारण कुछ जल्दी नहीं।"

"अन्त में परिवार का दिवाला पिटने वाला ही था।" कान्ति ने कह दिया, "जहां नवल जैसे बेईमान सदस्य व्यवसाय के सदस्य हों वहां दिवाले के अतिरिक्त तो कुछ हो सकता ही नहीं था।"

"तुम उसके विषय में क्या जानते हो?"

"उसने मुझे विशेष पत्न लिख बुलाया था। उस पत्न में उसने लिखा था, 'यदि मुझे कर्ता बना दिया तो जो-जो मेरे पक्ष में मत देंगे, मैं उनको एक-एक मत के लिए एक-एक लाख रुपया दूंगा।' वह आठ लाख रुपया फोकट में ही व्यय करने वाला नहीं था। अवश्य इससे कई गुणा अधिक आय वह करने वाला था।"

"पर तुम तो कर्मचारी यूनियन में चौधरपन में लगे थे। तुम भला किसलिए दिल्ली आए थे?"

"मैं आया तो था नवल के निमंत्रण पर। मेरा विचार था कि यदि नवल के पक्ष में बहुमत हुआ तो मैं भी उसे अपना मत देकर एक लाख ऐंठ लूंगा, परन्तु दिल्ली पहुंचकर पता चला कि उसका कोई भी विश्वास नहीं करता। साथ ही सोमदेवजी ने बताया था कि परिवार विघटित होगा। भागीरथलाल कर्ता का कार्य करना नहीं चाहता और परिवार के लोग किसी अन्य पर विश्वास नहीं करते। अतः बंटवारा होगा।"

"खैर, तुम्हारा आना सफल हुआ। अब तो तुमको भी सम्पत्ति में से पूरा भाग मिलेगा।"

पिताजी, बाबाजी ने मुझे एक और सुझाव दिया है।"

"क्या?"

"उन्होंने कहा है कि यदि मैं मोहिनी को दिल्ली लाकर उससे विधिवत् विवाह कर लूं तो उसके भाग के विषय में भी विचार हो सकता है। मैं उसे लेने जा रहा हूं।"

"पर अब यह कैसे हो सकेगा?"

"बाबा का कहना है कि यदि विवाह हो जाए तो उसका रिट्रोस्पेक्टिव (पूर्व प्रभावी) प्रभाव माना जाएगा।"

"बाबा बूढ़े हो गए हैं। वह बात को ठीक समझ नहीं सकते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ भी हो, यह बात करने योग्य है। परिवार के बंटवारे से रुपये की होली होने वाली है और मैं इसमें अपना भाग लेना चाहता हूं। यदि मोहिनी मान गई तो भाग दुगुन्ना हो जाएगा।"

"यदि मैं उपसमिति में होता तो तुमको एक पैसा न दिलवाता।"

"यह मैं अपना सौभाग्य समझता हूं कि आप उस कमेटी में नहीं हैं।"

मोहनलाल, जब से हड़ताल हुई थी, कान्ति और मोहिनी का घोर विरोधी हो गया था। इससे उसे अपने बंटवारा कमेटी में स्थान न पाने पर भारी निराशा हुई थी। अब अपने पुत्र को इसपर प्रसन्न होते देख वह मौन हो गया।

गाड़ी चल पड़ी थी। डिब्बे में और कोई था नहीं, इस कारण दोनों अपने-अपने विचारों में लीन बैठे थे। शाहदरा स्टेशन पार करते-करते कान्तिलाल ने पूछ लिया, "पिताजी, भअब आप कलकत्ता में क्या करने जा रहे हैं?"

"कारखाना बन्द कर दूंगा। फैक्टरी डिस्मैण्टल (तोड़) करवा दूंगा। कर्मचारियों को वेतन तथा प्रॉविडेण्ट फण्ड देकर छुट्टी कर दूंगा और सब कुछ लेकर बंगाल से बाहर किसी स्थान पर ले जाऊंगा।"

"और वहां कम्युनिस्ट नहीं पहुंचेंगे क्या?"

"कम्युनिस्ट तो पहुंचेंगे, परन्तु बंगाल के मिनिस्टर नहीं पहुंच सकेंगे।"

"दूसरे स्थानों पर भी यही कुछ होगा। वहां के मिनिस्टर भी विवश हो यही करेंगे जो बंगाल में किया जा रहा है।"

"तो फिर क्या करूं? तुम क्या कहते हो?"

"मेरी सम्मति मानिए। अपने भाग का नकद रुपया लेकर कहीं विदेश में चले जाइए। भारत में तो भट्ठी अधिक और अधिक गरम होती जाएगी।"

"और तुम अपने भाग का रुपया लेकर यहां ही बैठे रहोगे?"

"मैं तो मोहिनी को कह रहा हूं कि हमें कहीं विदेश में चलकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए।

"वह अभी तक तो मानी नहीं, परन्तु अब परिवार से भाग मिल जाने पर मान जाएगी। लाखों रुपये रखते हुए तो कम्युनिस्ट दल में नहीं रहा जा सकेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ता पहुंचकर तो एक अन्य गुल खिला। कलकत्ता स्टेशन पहुंच पिता ने पुत्र को पूछा, "किधर चलोगे?"

"मोहिनी दल के कार्यालय में है। वहां तो जाना ही होगा। यदि आप आपत्ति नहीं करेंगे तो उसे लेकर अब घर आ जाऊंगा।"

"अब घर में आओगे तो अपने कर्मचारियों की सहायता ही करोगे। उनके क्लेम शीघ्र दिए जा सकेंगे।"

"तब अवश्य आऊंगा।"

मोहनलाल घर पर पहुंचा तो उसने देखा कि चौकीदार इत्यादि सब परेशानी में उसके आकर खड़े हुए हैं। चौकीदार थे, रसोइये थे और घर के काम-काज करने वाले नौकर थे। मोहनलाल ने सबके मुख पर चिन्ता की रेखाएं देखीं तो पूछ लिया, "क्या हुआ है, नर्मदाप्रसाद?"

नर्मदाप्रसाद बिहार का रहने वाला एक चौकीदार था। उसने कांपते हुए कहा, "आप आ गए हैं तो हम अब निश्चिन्त होकर यहां रह सकते हैं। अन्यथा हम सब विचार कर रहे थे कि मकान बन्द कर चाबियां मुन्शी भट्टाचार्य को देकर अपने-अपने घर को चल दें।"

"ठाकुर, कुछ बताओ भी तो! हुआ क्या है जो इस प्रकार भय-भीत हो रहे हो?"

"लालाजी, कारखाने को आग लगाकर फूंक डाला गया है और आज प्रातःकाल से यहां भी संदिग्ध रूपराशि के लोग घूमते दिखाई देने लगे हैं।"

कारखाने को आग लगने की बात सुन तो मोहनलाल भी स्तब्ध खड़ा रह गया। उसके मुख से एक शब्द भी नहीं निकला। उसके मुख का रंग उड़ गया और टांगें लड़खड़ाने लगीं। वह एक भी शब्द बोले बिना, भीतर चला गया और पाचक को चाय लाने के लिए कह सोफा पर धम्म से बैठ गया। नर्मदाप्रसाद चौकीदार उसके पीछे-पीछे वहां जा पहुंचा और धीरे से बोला, "लालाजी, रात यहां रहना भय से रिक्त नहीं।"

"समझ रहा हूं। पर तुम अपना काम करो और मैं रक्षा का प्रबन्ध करता हूं।"

नर्मदाप्रसाद जानता था कि चार दिन पूर्व घेराव के समय गवर्नर बहादुर ने सहायता भेजी थी और अब भी लालाजी उनसे रक्षा के लिए कहेंगे। इससे कुछ आश्वस्त हो वह बाहर चला आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहनलाल विचार कर रहा था कि गवर्नर ने कहा था कि उसने संविधान का विरोध कर एक मिनिस्टर के कार्य के विरुद्ध अपने बॉडी गार्ड भेजे हैं। एक बार तो वह यह कर सका है, परन्तु बार-बार वह ऐसा कर नहीं सकेगा।

मोहनलाल समझा नहीं था कि एक नागरिक की गुण्डों से रक्षा करना भला कैसे संविधान के विपरीत हो सकता है। यदि किसी पड़ोसी नागरिक के पास वे साधन होते जो गवर्नर बहादुर के पास थे, तो इतना तो वह भी कर सकता था। अतः वह गवर्नर बहादुर का मुख देखने लगा था।

उसे परेशान देख गवर्नर ने प्रजातन्त्रात्मक पद्धति का आधारभूत सिद्धान्त बता दिया था। उसने कहा था, "संसद केन्द्र में और राज्य की विधान सभा राज्य में अपने-अपने क्षेत्र में सर्वोच्च सत्तासम्पन्न संस्थाएं हैं और यह कानून बन चुका है कि किसी भी कारखाने अथवा उद्योग के कर्मचारी अधिकारों के लिए सब मिलकर कार्यवाही सकते हैं।"

यद्यपि मोहनलाल की सामान्य बुद्धि में इसके अर्थ यह नहीं निकलते थे कि वे मिलकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए दण्ड-विधान के भी विपरीत कार्य कर सकते हैं, परन्तु गवर्नर के उसकी रक्षा में कार्यवाही करने पर वह कृतज्ञता से भरा हुआ धन्यवाद कर चुप रहा।

वह समझ रहा था कि अब उससे सहायता मांगेगा भी तो मिलेगी नहीं। जब सरकार शांतिप्रिय लोगों की रक्षा नहीं कर सकती तो यह लोगों का अपना अधिकार हो जाता है कि वे अपनी रक्षा का स्वयं प्रबन्ध करें। वह अब इस दिशा में विचार करने लगा। उसे तुरन्त यह समझ आया कि उसे कलकत्ता छोड़ देना चाहिए। जहां गवर्नर भी उसके जान-माल की रक्षा नहीं कर सकता वहां रहने में कुछ प्रयोजन नहीं।

इस विचार के आते ही वह उठा। जाने में जा नित्य कर्मों से निवृत्त हो वह वस्त्र पहन अल्पाहार लेने बैठ गया। अल्पाहार लेते हुए उसने पाचक सीताराम से कहा, "पण्डित, मध्याह्न का भोजन तैयार कर रखना। मैं एक बजे के उपरान्त आऊंगा।"

"तो आप कहीं जा रहे हैं?"

"रक्षा का प्रबन्ध करने का यत्न कर रहा हूं। देखो, तुम सब लोगों को भयभीत नहीं होना चाहिए। ये लोग तो हमारे विरुद्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम लोगों से इनको किसी प्रकार का द्वेष नहीं। अतः तुमको हानि नहीं पहुंचाएंगे। तुम यहां डटे रहना और यदि कोई पूछ तो कह देना कि लालाजी कलकत्ता से बाहर गए हुए हैं।"

अल्पाहार ले मोहनलाल समीप के सार्वजनिक टेलीफोन बूथ में गया और हवाई जहाज़ की एजेन्सी पर टेलीफोन करने लगा। वहां से यह पता कर कि सायंकाल के हवाई जहाज़ में स्थान है, वह एजेन्सी में जा पहुंचा और अपने लिए दिल्ली जाने का टिकट ले, रेल के वेटिंग रूम में जा बैठा। वहीं स्टेशन के रेस्टोरां में भोजन किया और पांच बजे के प्लेन में दिल्ली के लिए चल पड़ा।

7

कान्तिलाल दल के कार्यालय में पहुंचा तो दल के अधिकारियों की बन्द कमरे में बैठक हो रही थी। वह उस कमरे में चला गया जो उसे मोहिनी के साथ रहने को मिला हुआ था। मोहिनी भयभीत थी। उसे कान्तिलाल को आया देख सान्त्वना मिली। कान्तिलाल ने अपना बिस्तर रखाया और कुली को विदा कर द्वार बन्द कर मोहिनी से पूछ लिया, "चिन्तित प्रतीत होती हो, मोहिनी?"

"बात यह हुई है कि जिस दिन आप दिल्ली के लिए गए थे, दल के अधिकारियों ने यह निश्चय किया कि आपके कारखाने को आग लगा फूंक दिया जाए। मैं वहां विशेष आज्ञा से उपस्थित थी। यह तो आप जानते हैं कि जब से इस फैक्टरी की हड़ताल के विषय में विचार और कार्य होने लगा है, मुझे और कभी-कभी आपको भी बुलाया जाता रहा है।

"मैंने उनके निश्चय को गलत बताया। मैंने समझा कि कारखाना फूंक देने से तीन सौ कर्मचारियों की जीविका छिन जाएगी। प्रायः कर्मचारी अपने-अपने काम में शिक्षाप्राप्त हैं। वे किसी अन्य फैक्टरी में काम कर नहीं सकेंगे। अतः फैक्टरी को आग लगाने से कर्मचारी-वर्ग को हानि होगी। घेराव और हड़तालें तो मालिकों को पीड़ित करते हैं, परन्तु कारखाने को ही फूंक देने से तो कर्मचारियों को पीड़ित करना हो जाएगा।

"इसपर सेक्रेटरी ने मुझे बताया, 'यह निर्णय उच्चाधिकारियों का है और न तो दल और न ही यूनियन इसका विरोध कर सकती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है।'

"मैं मौन थी। उसी रात कारखाने को आग लगा दी गई थी और उस रात और अगले दिन-भर कारखाना जलता रहा। दमकलें आई थीं, परन्तु वे कारखाने की आग को बुझा नहीं रहे थे, वरंच आग को पड़ोस में फल जाने से रोकने का प्रयत्न कर रहे थे।

"मेरे उस दिन के विरोध पर कल भी और आज भी मीटिंग हुई है और मुझे उसमें बुलाया नहीं गया। इस समय मीटिंग हो रही है। यूनियन के मुहम्मददीन आए हुए हैं। इससे मैं यह तो समझ रही हूं कि मीटिंग में विचार का विषय तो अपना कारखाना ही है, परन्तु कुछ योजना बन रही है जो वे मुझसे चोरी रख रहे हैं।"

"चिन्ता छोड़ो। मैं दिल्ली से एक प्रस्ताव लेकर आया हूं।"

"क्या?"

"परिवार में बंटवारा होगा। बंटवारा उपसमिति बना दी गई है। ऐसे लक्षण हैं कि मुझे मेरा भाग मिलेगा। परिवार की सम्पत्ति में तुम्हारा भी भाग हो सकता है, यदि तुम और मैं दिल्ली चलकर विधि-वत् विवाह कर लें।"

"वह क्या होता है?"

"वेदमंत्र बोलकर और अग्नि के चक्कर काटकर।"

"ओर इस मूर्खतापूर्ण बात करने पर क्या मिलेगा?"

"ठीक-ठीक तो बता नहीं सकता, परन्तु प्रत्येक सदस्य को लाखों मिलने वाले हैं।"

मोहिनी की आंखों में रोशनी द्विगुण हो गई। वंह आंखें फैला पूछने लगी, "लाखों!"

"हां, एक सदस्य बता रहा था कि दस-बारह लाख से कम नहीं होंगे।"

"कितने भागीदार हैं आपके परिवार में?"

"सज्ञान-अज्ञान, पुरुष-स्त्री—सब मिलाकर पचास के लगभग हैं।"

"तो इसका मतलब यह है कि आपके परिवार की सम्पत्ति छः-सात करोड़ की है।"

"इससे कुछ अधिक ही होगी।"

"बहुत बड़ा प्रलोभन है। केवल एक बात विचार करती हूं कि यह सब हराम की कमाई है। इसे लेने से मैं भी हरामखोर हो जाऊंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हरामखोर क्या होता है?"

"जो मेहनत न करे और संसार के सुख-भोग प्राप्त करता रहे।"

"मेहनत तो मैं कर रहा हूं।"

"क्या मेहनत कर रहे हैं आप?"

"मैं पहले कारखाने में टाइपिस्ट था। परिश्रम करता था। अब मैं दिल्ली गया था और वहां अपने कर्ता के विरुद्ध प्रस्ताव का विरोध कर उसे प्रसन्न कर आया हूं। आते हुए रेलगाड़ी में मैंने पिता-जी से सुलह कर ली है और घर चलकर रह सकने की स्वीकृति प्राप्त कर ली है।"

"मैं भी?"

"हां, हम दोनों चल सकते हैं।"

"मुझे तो अब इस कार्यालय से भय लग रहा है।"

"क्या भय लग रहा है?"

"ये लोग हमारे विपरीत होते जा रहे हैं। क्यों? मैं समझ नहीं सकी। अपनी जानकारी में तो मैंने प्रोलिटेरियेट वर्ग के भले की ही बात की है।"

"मज़ेदार बात यह है," कान्तिलाल ने कह दिया, "कि हमारे परिवार के लोग यह जानते और समझते हैं कि हम कम्युनिस्ट होने से पूंजीपतियों के शत्रु हैं, परन्तु वे हमारा परिवार की पूंजी में भाग स्वीकार करते हैं। मैं उनके इस विचार से सुख अनुभव करता हूं।"

"सुख तो मैं भी अनुभव करती हूं।"

"एक बात और। हमारे परिवार के पुरखा हैं एक ब्रजलाल। वे इस समय अठासी वर्ष के हैं। वे समझते हैं कि हमारा विवाह तो धर्मानुकूल है, केवल उसकी धार्मिकता को प्रकट करने के लिए हमें कुछ 'पब्लिक' कार्यवाही करनी चाहिए। वह यह है कि पण्डित मंत्र बोल दे और हम दोनों आगे-पीछे हो अग्नि के चक्कर काट लें।"

"बहुत मज़ेदार हैं आपके पुरखा!"

"हां, वे चाहते हैं कि तुम वहां चली चलो और विवाह की रस्म उनके सामने हो जाए तो वे आशीर्वाद दे देंगे। तब परिवार के लोग हमें सम्पत्ति में से दुगुना भाग दें देंगे।"

"तो मैं चलूंगी।"

"पहले अपने घर चलना चाहिए। मेरे पास सब रुपया चुक गया है।"

"मेरे पास भी कुछ नहीं रहा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो चलो।"

दोनों उठे और चलने की तैयारी करने लगे। कान्तिलाल ने स्नान किया और अल्पाहार लिया। पार्टी में एक कॉमन किचन था। वहां रहने वालों को भोजन, चाय इत्यादि वहां से मिलता था।

अल्पाहार ले दोनों दल के कार्यालय से निकल पिता के घर को चल पड़े। दोनों पैदल ही चले थे। वे जो थोड़े-से रुपये उनके पास बचे थे, उसे सुरक्षित रखना चाहते थे।

मार्ग में चलते हुए मोहिनी ने बताया, "मैं दल के कार्यों में बुद्धिहीनता ही देख रही हूं।"

"आज क्या बुद्धिहीनता प्रतीत हुई है तुम्हें जो पहले नहीं थी?"

"रही तो पहले भी होगी, परन्तु जब अपने सिर पड़ी तो सुगमता से समझ आने लगी है। मुझे यह पता चला है कि कारखाने के कर्मचारी वेतन न मिलने के कारण परेशान हैं। वे समझ रहे थे कि शीघ्र ही सुलह हो जाएगी। हड़ताल से लाख दो लाख की हानि तो मालिकों को हुई हुई है, परन्तु जब कारखाने को आग लगी तो मैं यूनियन के कार्यालय में गई थी और सब पीतमुख मेरी ओर देखते थे और पूछते थे, कि उनका अब क्या होगा?

"मैं कुछ उत्तर नहीं दे सकी थी। जब उनको यह पता चलेगा कि कम्पनी ही लिक्विडेशन में हो गई है तो वे समझ जाएंगे कि अब उनकी नौकरी लगे रहने की कोई आशा नहीं है। अब तो मेरा मन उनके सामने जाने से डरता है।"

"और जब उनको यह पता चला कि हम स्वयं लाखों रुपये कम्पनी से पाने वाले हैं और कर्मचारी बेरोज़गार हो भूखे मरने वाले हैं तब तो उनके क्रोध का पारावार नहीं रहेगा।"

"यही तो भय की बात है।" मोहिनी कह रही थी।

"तो हम धन न लें। धन को दूषित मान छोड़ दें।"

"मेरे तो सिर में बवण्डर उठ रहा है।"

"क्या बवण्डर उठ रहा है?"

"हम लखपती बनेंगे—यह ऐसा उन्माद उत्पन्न कर रहा है कि मुझे कुछ सूझ ही नहीं रहा है कि क्या करूं।"

"सब कुछ त्याग दें?"

"चित्त नहीं करता।"

"तुम बुर्जुआ मानसिक अवस्था रखती हो।"

"नहीं, मेरी पूंजीविहीन कर्मचारियों से वैसी ही सहानुभूति है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जैसी पहले थी और यदि मैं वह सब धन पा गई तो निस्सन्देह निर्धनों की भरसक सहायता करती रहूंगी।"

कान्तिलाल इस सहायक होने और निर्धन होने में अन्तर देखने लगा था। वह विचार कर रहा था कि दोनों स्थितियों में कौन-सी स्थिति ठीक है। वह कल्पना करने लगा था कि उनको मिलने वाला बीस-पचीस लाख रुपया यदि दल को दे दिया जाए तो ठीक रहेगा अथवा वे उसे स्वयं ले लें और उसके ब्याज में से बेकारों, बेरोज़गारों और अपाहिजों की सहायता करें तो ठीक रहेगा।

दल के अपव्यय वह देख रहा था। यह बीस-पचीस लाख उनके अपव्यय के सामने गरम तवे पर जल की बूंद के समान ही समझता था। एक बात दल की और थी; वह यह कि दल देश को क्रांति के लिए तैयार कर रहा है। वर्तमान निर्मित को गिराकर भूमिसात् कर दिया जाएगा। तब ही नव निर्माण हो सकेगा और बने महल को गिराने के लिए ही यह सब व्यय हो रहा है।

इसपर उसका ध्यान बने महल की ओर गया था। परिवार ने भी एक उद्योग और व्यवसाय-केन्द्र निर्माण किया था। वह केन्द्र न बनता तो क्या इतना कुछ उनके अधीन कर्मचारी निर्माण कर सकते? वह पूंजी और सुप्रबन्ध की महिमा नहीं है क्या?

दल का समाघोष था कि पूंजी व्यक्ति के अधीन नहीं होनी चाहिए। यह समष्टि के अधीन होनी चाहिए। समष्टि सरकार है, परन्तु विचार था कि क्या बंगाल सरकार का श्रम मंत्री व्यक्ति नहीं है? वह भी तो अपनी निजी सूझ-बूझ से ही कार्य करता है।

अब उसे अपने कारखाने के साथ मंत्री का व्यवहार विवेचना के लिए स्मरण हो आया था। वह देख रहा था कि कम से कम उनके कारखाने के विषय में मंत्री महोदय की सूझ-बूझ गलत सिद्ध हुई है। इतना विचार कर वह एक बन्द गली में पहुंच गया अनुभव करता था।

एकाएक मोहिनी ने चलते-चलते पूछ लिया, "आप क्या विचार कर रहे हैं?"

"यही कि मज़दूरों का सहायक होना ठीक है अथवा स्वयं मज़दूर बन दूसरों से सहायता मांगना।"

मोहिनी हंस पड़ी। हंसते हुए उसने कहा, "कम्युनिस्ट 'फिलॉसफी' यह कहती है कि राज्य गलती नहीं करता। न ही कर सकता है। राज्य भी दल के अधीन होना चाहिए, परन्तु मैं यहां देख रही हूं कि दल मंत्री के अधीन है और मंत्री अपने पूर्वग्रहों के अधीन है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"परिवार के पुरखा बाबा ब्रजलाल जी कुछ आय का भाग परिवार से पाते हैं, वह सब दान कर देते हैं। इससे मैं यह समझा हूं कि व्यक्तिवाद में भलाई करने की भी तो स्वतंत्रता है। समष्टिवाद में तो समष्टि नियम-उपनियमों से ही चलती है, परन्तु नियम-उपनियम मानव-निर्मित होने से छिद्र-रहित नहीं हो सकते। परिणाम यह होता है कि उन छिद्रों को वे पूरा करते हैं जो न तो श्रम करने वाले हैं और न ही पूंजी निर्माण करने वाले। श्रम और पूंजी से सम्बन्ध रखने वाले सरकारी अधिकारी नहीं होते। इस स्थिति से तो मालिक जो पूंजी निर्माण करता है और श्रम का संगठन करता है, अधिक उत्तरदायी होगा और दान-दक्षिणा भी करेगा तो अपना भला-बुरा विचारकर ही करेगा।"

इस समय वे अपने पिता के घर पर पहुंच गए। दोनों पति-पत्नी लगभग बीस दिन के उपरान्त घर आए थे। चौकीदार नर्मदाप्रसाद उनको आते और भीतर जाते देख विस्मय में मुख देखता रह गया। एक बार तो उसके मन में आया कि उनको भीतर न जाने दे, परन्तु यह विचारकर कि मालिक का लड़का और पतोहू है, वह चुप रहा।

कान्तिलाल भीतर गया तो चौकीदार उनके सामने उपस्थित हो कहने लगा, "लालाजी प्रातः दस बजे आए थे, स्नानादि से निवृत्त हो और अल्पाहार ले वे पौने बारह बजे कहीं काम से मोटर में गए हैं।"

"भोजन घर पर करने के लिए कह गए हैं अथवा नहीं?"

सीताराम पण्डित को बुलाया गया और उससे पता चला कि लालाजी मध्याह्न के भोजन के लिए घर आने वाले हैं।

"ठीक है, पण्डित। हम भी खाएंगे। हमारे लिए भी तैयार होना चाहिए।"

इतना कह वे मकान के ड्राइंग रूम में बैठ गए। अभी बैठे ही थे कि जगदीश भट्टाचार्य, लालाजी का मुंशी, आ गया। वह लालाजी की अनुपस्थिति में प्रायः नित्य मकान पर देख-रेख करने आया करता था। आज वहां कान्तिलाल और मोहिनी को बैठे देख वह नमस्कार कर सामने बैठ पूछने लगा, "छोटे बाबू, घर लौट आए हो?"

"हां, मुंशीजी, पिताजी ने दिल्ली में बहुत आग्रह किया तो इनकार नहीं कर सका।"

"तो आपके पिताजी भी लौट आए हैं?"

"प्रात: हम इकट्ठे ही आए थे।"

"ठीक है, कान्तिलाल। तुम्हारा स्थान यहां ही है। देखा है न,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्या कर दिया है उन्होंने? भले लोग उनमें नहीं रह सकते।"

इसमें कुछ उत्तर देने को नहीं था। कान्तिलाल चुप रहा। इस-पर मुंशीजी ने पूछ लिया, तुम्हारे पिताजी कहां हैं?"

"हम वहां से अभी आए हैं जहां रहते थे। हमारे आने से पूर्व पिताजी कहीं चले गए हैं। सुना है कि भोजन के लिए आने वाले हैं।"

पर मोहनलाल नहीं आया। दो बजे तक उनकी प्रतीक्षा कर कान्तिलाल, मोहिनी और कान्ति के कहने पर मुंशी ने भोजन वहीं किया। मुंशी तो यह कह कि वह सायंकाल आकर पता करेगा, चला गया और कान्ति याला की थकावट दूर करने के लिए अपने कमरे में जा विश्वाम करने लगा।

मोहिनी अपने कमरे में जा दल के अधिकारियों के व्यवहार पर विचार करने लगी। आग लगाए जाने के प्रस्ताव का विरोध करने पर उसे यह समझ आया था कि सब लोग उससे रुष्ट हो गए थे।

8

कान्तिलाल आराम कर चार बजे ड्राइंग रूम में आया तो मोहिनी उसके पास आ गई। कान्ति ने पूछा, "पिताजी आए?"

"नहीं, अभी नहीं आए।"

"कहां गए होंगे?"

"मैं समझती हूं कि आग लगने का समाचार गवर्नर साहब को देने गए होंगे।"

"फिर भी इस समय तक तो लौट आना चाहिए था।"

कान्तिलाल ने घण्टी बजाई और चाय का एक प्याला मंगवा लिया। वे चाय पी ही रहे थे कि ड्राइवर मोटर लेकर आ गया। कान्ति ने उसे बुलाकर पूछा, "पिताजी नहीं आए?"

"साहब, वे हवाई जहाज़ से दिल्ली गए हैं।"

"ओह! कुछ कह गए हैं?"

"नहीं। यह कहा है कि चौकीदार और रसोइयों को कह दूं कि वे शीघ्र ही लौटेंगे। ये लोग अपने काम पर डटे रहें।"

कान्तिलाल विचार करने लगा था कि पिताजी दल से डरकर भाग गए हैं। कारखाने को आग लग जाने से नई परिस्थिति उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो गई है। उसने ड्राइवर को कुछ कहने के लिए कह दिया, "शायद तुमको भी दिल्ली चलना पड़े। तैयार रहो।"

"अच्छी बात है। मैंने लालाजी से भी कहा था कि मोटर भी दिल्ली ले चलें; अब यहां क्या रखा है।"

कान्ति मुस्कराया और बोला, "तुम भी चाय पी लो। हम अभी मुंशीजी की ओर जाने वाले हैं।"

जब ड्राइवर बाहर गया तो मोहिनी ने पूछा, "अब क्या होगा?"

"किस विषय सें क्या होगा?"

"व्यय के लिए कुछ रुपये हैं?"

कान्ति ने जेब में हाथ डाल कहा, "दस रुपये का एक नोट बचा है।"

"मेरे पास तो इतना कुछ भी नहीं।"

"देखो, मुंशीजी से कुछ रुपये मांगेंगे।"

"मैं आपको सदा कहती रहती थी कि जेब में कुछ रुपये रखने चाहिए।"

"रखे हुए तो थे। जब हम दल के कार्यालय में रहने गए थे तो मेरे पास दो हज़ार रुपया था। सब व्यय हो गया है।"

"वैसे तो मेरे पास भी सात सौ रुपया था। दल में तो सब भूखे-नंगे हैं। कहीं होटल में खाने चले जाओ तो साथ जाने वाले सबको खिलाना पड़ता है।"

"सब हमारी भांति लखपतियों के पुत्र नहीं।"

"इसी कारण तो मैं दल से उचाट हो गई हूं।"

"सत्य? पर ऐसा किसीसे कह नहीं देना। अन्यथा हत्या हो जाएगी।"

"मैं समझती हूं कि दिल्ली चले चलें। वहां विवाह करवा लें और फिर सुख का जीवन व्यतीत करें।"

"इसी प्रयोजन से मैंने ड्राइवर को तैयार रहने के लिए कहा है। दिल्ली में बिना मोटर के बहुत कष्ट होता है।"

चाय समाप्त हुई तो ड्राइवर को बुला पति-पत्नी मोटर में मुंशी के घर पहुंचे। वहां उन्होंने पिताजी के पुनः दिल्ली चले जाने की बात बता व्यय के लिए कुछ रुपये मांगे तो मुंशीजी ने कह दिया, "सरकार ने सब बैंकों के खाते फ्रीज़ (अनुपलभ्य) करा दिए हैं और मैं मध्याह्न के समय लालाजी से कुछ रुपया लेने ही घर पर आया था।"

कान्तिलाल वहां से निराश लौटा तो यह निश्चय हुआ कि मोहिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कार्यालय से जो कुछ भी मिले, मांग लाए और वह यूनियन के कार्यालय से कुछ लाने का यत्न करे। यदि दो सौ रुपया भी मिल गया तो मोटर से दिल्ली चले चलेंगे। अन्यथा कल थर्ड क्लास में जाने योग्य तो मिल ही जाएगा।

दोनों गाड़ी में यूनियन के कार्यालय से कुछ अन्तर पर पहुंचे तो गाड़ी खड़ी कर कान्तिलाल गाड़ी से उतर पड़ा। मोहिनी ने यह कह कि वह आधे घण्टे में इसी स्थान पर प्रतीक्षा करेगी, गाड़ी ले दल के कार्यालय को चल पड़ी।

कान्तिलाल यूनियन के कार्यालय में पहुंचा तो कार्यालय के कमेटी रूम में मीटिंग हो रही थी और बहुत ऊंचे-ऊंचे किसी विषय पर विवाद हो रहा था। कान्ति मंत्री होने के नाते कमरे में घुस गया, परन्तु उसके वहां जाते ही सब चुप कर गए और परेशानी में कान्तिलाल का मुख देखने लगे। मुहम्मददीन खड़ा-खड़ा अन्य उपस्थित सदस्यों को कुछ बता रहा था।

कान्तिलाल ने मुहम्मददीन को कहा, "कामरेड, मुहम्मददीन, चुप क्यों कर गए हो? क्या विचार हो रहा है?"

मुहम्मददीन ने कहा, "साथी कान्तिलाल, हम कुछ प्राइवेट बात कर रहे हैं।"

"यूनियन के विषय में अथवा उससे किसी भिन्न विषय में?"

"यूनियन के विषय में।"

"मैं यूनियन का मंत्री हूं।"

"नहीं, साथी। तुम मंत्रिपद से हटा दिए गए हो।"

"किसने हटाया है?"

"दल ने।"

"परन्तु कब?"

"आज सुबह।"

कान्तिलाल के मन में आया कि वह कह दे कि यह दल का अधिकार नहीं। परन्तु उसकी नियुक्ति भी तो दल के बल पर ही हुई थी; यह स्मरण कर वह चुपचाप वहां से बाहर निकल आया।

जब वह कमरे से निकला तो मुहम्मददीन ने द्वार बन्द कर भीतर से कुण्डा लगा लिया; इसपर तो भीतर ठहाका मार सबके हंसने का शब्द सुनाई दिया। वह कार्यालय से निकल उसी स्थान पर पहुंच गया जहां मोहिनी को उसकी प्रतीक्षा करनी थी। अब वह मोहिनी की प्रतीक्षा करने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मोहिनी नहीं आई। इस कारण वह पैदल ही घर को चल पड़ा। वह घर पर गया तो मोहिनी वहां भी नहीं आई थी। उसे मोहिनी से पृथक् हुए अब एक घंटा से ऊपर हो चुका था।

वह परेशान था कि उसके पास दिल्ली जाने के लिए थर्ड क्लास रेल का भाड़ा भी नहीं था। यूनियन के मंत्रिपद से हटाए जाने का अभिप्राय यह था कि उसपर विश्वास नहीं रहा। विश्वास के अभाव में तो उसकी हत्या भी की जा सकती है। वह दल और यूनियन में एक कड़ी था। इस कारण वह बहुत भेद की बात जानता था।

उसके घर पहुंचने के उपरान्त मोहिनी मोटर में वहां आई। उसके माथे पर चोट लगी थी और उसमें से खून बह रहा था। कान्तिलाल ने उसे देखा तो लपककर उठा और पूछने लगा, "क्या हुआ है?"

"मुझे रुपये मांगने में वहां देरी हो मई थी। प्रफुल्ल से बहुत आशा थी परन्तु वह दल के कार्यालय में था नहीं। जब एक घण्टा-भर की प्रतीक्षा करने पर भी वह नहीं लौटा तो मैं वहां से लौटी। वहां पहुंची जहां आपको प्रतीक्षा करने के लिए कहा था। आप वहां थे नहीं। इस कारण आपको देखने यूनियन के कार्यालय में जा पहुंची। वहां मोटर खड़ी होते ही पथराव होने लगा। मैंने समझा कि कर्मचारियों ने लालाजी की गाड़ी में लालाजी को समझ ही पथराव किया है। अतः मैं गाड़ी से निकल अपने-आपको दिखाने लगी। परन्तु पथराव चलता रहा। जब एक पत्थर मेरे माथे पर लगा तो मैं वहां से भागी और यहां आ पहुंची हूं।"

कान्ति ने उसी समय रुई और मर्करी क्रोम अलमारी में से निकाला और मोहिनी को गुसलखाने में ले जा घाव धो डाला। तदनन्तर घाव पर मर्करी क्रोम लगा पट्टी बांध दी।

जब मोहिनी के घाव में पीड़ा कुछ कम हुई तो पुनः विचार होने लगा कि उक्त घटना का अर्थ क्या करना चाहिए।

यह स्वीकार करने की इच्छा न रखते हुए भी कि वे दोनों अब दल और यूनियन से त्यक्त व्यक्ति हैं और उनका जान-माल भय में पड़ गया है, वे वस्तुस्थिति से इन्कार नहीं कर सके। दोनों इस विषय पर सहमत थे कि अब वे न तो यूनियन के कार्यालय में जाएंगे और न ही वे बंगाल के किसी भाग में रहेंगे।

परन्तु प्रश्न धन का था। उनके पास इस समय दिल्ली जाने के लिए थर्ड क्लास का भी भाड़ा नहीं था। मोहिनी ने यह सुझाव दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि घर की तलाशी ली जाए। कदाचित् माताजी तथा रजनी बहिन का भूल-चूक से कुछ छूट गया धन मिल जाए। इस विचार के आते ही वे पिताजी और माताजी तथा रजनी और बिहारीलाल के कमरों की बारी-बारी से तलाशी लेने लगे।

इसमें उनको आशातीत सफलता मिली। पिताजी की मेज़ की दराज में बैंक की पास बुक में पांच सौ-सौ के नोट रखे थे। रजनी बहिन के कमरे से तो कुछ रेज़गारी ही निकली। हां, माताजी के कमरे में, कपड़ों की अलमारी में दो सौ रुपये से ऊपर के नोट और कुछ रेज़गारी प्राप्त हुई। बिहारी के कमरे से कुछ प्राप्त नहीं हुआ।

सब मिल-मिलाकर सात सौ तीस रुपये और दो रुपये की रेज़गारी थी। अपनी इस कारणगुज़ारी से प्रसन्न हो उन्होंने भोजन किया और यह निश्चय कर कि प्रातः मोटर से वे दिल्ली के लिए चल पड़ेंगे, ड्राइ-वर को बुला उसे प्रातः चलने के लिए तैयार रहने के लिए कहा। इस-पर ड्राइवर ने मोहिनी के माथे पर बंधी पट्टी की ओर देखते हुए कहा, "अभी क्यों नहीं चलते?"

"नहीं, महावीर! अब हम आराम करना चाहते हैं। तुम भी पांच-छः घण्टे आराम कर लो प्रातः चार बजे यहां से चल देंगे।"

ड्राइवर गया तो पति-पत्नी दोनों अपने सोने के कमरे में चले गए। मोहिनी ने अपना निश्चित मत बता दिया, "मैं अब दल वालों का मुख नहीं देखूंगी।"

"मैं भी इस क्षेत्र में आने पर पश्चात्ताप कर रहा हूं।"

"मेरा तो समाजवाद से ही विश्वास उठता जाता है।"

"ठीक है, अब धन मिल ले तब पूंजीवाद का भी रस लेने का यत्न करेंगे।"

मोहिनी वस्त्र बदलने लगी थी और कान्ति अपना और मोहिनी का सूटकेस तैयार करने लगा था। इसमें आधा घण्टा लगा। मोहिनी नाइट ड्रेस पहन अपने पलंग पर लेट गई थी और उत्सुकता से पति की प्रतीक्षा करने लगी थी।

आखिर मोहिनी ने कहा, "अब जल्दी करिए। बहुत देर हो गई है।"

"अभी आया रजनी।" इतना कह उसने दोनों सूटकेस कमरे के एक कोने में रखे और अपनी रात की पहनने की पोशाक ले कपड़े बदलने गुसलखाने में चला गया। मोहिनी पति के स्वागत के लिए अवस्त्र हो चादर ओढ़े पड़ी थी कि तीन व्यक्ति सोने के कमरे में घुस आए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मोहिनी की चीख निकल गई। तीन आने वालों में से एक ने पूछा, "कहां है कान्ति?"

यह आवाज़ गुसलखाने में से कान्तिलाल ने सुनी तो उसने तुरन्त गुसलखाने के द्वार को भीतर से चिटखनी चढ़ा दी। गुसलखाना बेड रूम के साथ जुड़ा हुआ था। इसका एक अन्य द्वार था। वह भंगी के सफाई के लिए आने के लिए रखा हुआ था। कान्ति सोने की पोशाक पहन चुका था। वह किसी भी क्षण आने वालों के द्वार तोड़ भीतर आ जाने की आशा करता था। अतः अविलम्ब भंगी के आनें वाले द्वार को खोल बाहर निकल गया।

यह द्वार कोठी के पिछवाड़े में खुलता था। कोठी की दीवार के साथ-साथ मार्ग था। कान्तिलाल अंधेरे में दीवार के साथ लगकर बैठ गया और आक्रमण करने वालों के चले जाने की प्रतीक्षा करने लगा। रात के बारह बज रहे थे।

जहां वह बैठा था वहां से कोठी का फाटक दिखाई देता था। फाटक के पास तीन आदमी खड़े थे। अतः कान्ति के लिए भाग जाने के लिए स्थान नहीं था। लगभग एक घण्टे के उपरान्त तीन आदमी कोठी से निकले और द्वार पर खड़े आदमियों से कुछ बताते हुए चले गए।

उनके जाने के कितने ही पीछे कान्ति अंधेरे से बाहर आ सका और कोठी के मुख्य द्वार की ओर जाने का साहस कर सका। उसको यह समझ आया था कि मोहिनी की हत्या हों चुकी होगी।

जब वह द्वार पर पहुंचा तो उसने देखा कि चौकीदार के हाथ-पांव बंधे हुए थे और वह द्वार के एक ओर सिकुड़ा पड़ा था। उसके मुख में कप ठूंसा हुओ था जिससे अपनी सहायता के लिए किसीको वह बुला न सके।

कान्ति ने चौकीदार को दयनीय दशा में देखा तो उसके मुख से कपड़ा निकाला और हाथ-पांव खोल दिए। चौकीदार ने छोटे बाबू को रात की सोने की पोशाक में कोठी के पिछवाड़े से आते देखा तो पूछ लिया, "बाबूजी, कहां थे आप?"

"क्यों? क्या हुआ है?"

"मैं तो समझा था कि कोठी को आग लगाने आए हैं, परन्तु वे भीतर गए थे। आधा घण्टा-भर रहे। मेरा विचार है कि वे घर की तलाशी लेते रहे हैं और अब वे चले गए हैं।"

"कितने लोग थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"छः थे। तीन द्वार पर खड़े थे और तीन भीतर गए थे।"

"देखो, रसोईघर में जाकर एक प्याला चाय पी लो। मैं देखूं कि वे क्या लूटकर ले गए हैं।"

कान्तिलाल ने नहीं बताया कि वह अपनी पत्नी को अकेला छोड़ भाग गया था। साथ ही वह यह जानने के लिए उत्सुक था कि मोहिनी जीवित है अथवा मार डाली गई है। चौकीदार रसोईघर में चला गया। वहां सीताराम पण्डित मज़े में सो रहा था। चौकीदार ने बत्ती जलाई और स्टोव जला फनी गरम करने के लिए रख दिया।

कान्तिलाल के बेड रूम का द्वार खुला था। भीतर बत्ती जल रही थी और मोहिनी के पलंग पर कोई चादर में लिपटा हुआ गोल हुआ पड़ा था। कान्ति ने चादर उतारनी चाही तो मोहिनी ने और भी यत्न से वह लपेट ली। कान्ति ने आवाज़ दी, "मोहिनी!"

मोहिनी ने मुख चादर से बाहर निकाला और पति को देखा तो पूछ लिया, "वे गए क्या?"

"कौन थे?"

"मुहम्मददीन था और दो अन्य कर्मचारी थे। कदाचित् उनमें एक कोई बाहरी व्यक्ति था।"

"क्या कहते थे?"

"मुहम्मददीन के हाथ में पिस्तौल था और उसे मेरी ओर कर पूछने लगा कि कहां हैं आप?

"मैं अवस्त्र लेटी थी और चादर से मुख निकाल बोली, 'मैं नहीं जानती।'

"इसपर वह बोला, 'बताओ, नहीं तो तुम्हें मार डालूंगा।'

"मैंने छाती तान कहा, 'मारो। यह सवाब भी कमा लो।'

"मेरी नंगी छाती देख वह एक क्षण तक देखता रहा। फिर नरम पड़ गया। उसका पिस्तौल वाला हाथ झुक गया। उसने अपने साथियों को कहा, 'द्वार बन्द कर दो।' और तब बारी-बारी तीनों ने मुख काला किया और यह कहते हुए लौट गए, 'कान्ति को लेने दिन के समय आएंगे।'"

कान्ति विवर्ण मुख यह सब घटना की बात सुनता रहा और फिर एकाएक पूर्ण बात समझ उसने कहा, "वस्त्र पहन लो और दिन निकलने से पूर्व भाग चलें।"

"मैं बहुत थक गई हूं।"

"कार में सो जाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहिनी लपककर उठी और बाहर जाने के वस्त्र पहनने लगी। कान्तिलाल ने भी वस्त्र पहने और मोटर का प्रबन्ध करने बाहर निकल आया।

पांच मिनट में ही वह आया और चौकीदार द्वारा सूटकेस बाहर मोटर में रखवा, दिल्ली के लिए चल दिए।

9

मोहिनी एक अति निर्धन परिवार की लड़की थी। इसका पिता डाकघर में क्लर्क था और अढ़ाई सो रुपया महीना वेतन पाता था। घर में सात बच्चे थे और माता-पिता मिलाकर नो प्राणी थे।

दिन-प्रतिदिनग जीवन-यापन कठिन हो रहा था और पूरी की पूरी आय चावल और मछली में ही व्यय हो जाती थी। मां पड़ोस के किसी धनी के घर में काम करती थी और पति की आय में पचास रुपये प्रति मास की वृद्धि करती थी।

मोहिनी बच्चों में सबसे बड़ी थी। जब उसने मैट्रिक की परीक्षा पास की तो पिता ने कह दिया, "मोहिनी, कहीं नौकरी ढूंढ़ लो। हम तुम्हें आगे पढ़ा नहीं सकते।"

"बाबा, यदि मैं स्वयं पढ़ने का प्रबन्ध कर लूं तो?"

"तो खाने को भोजन मिल जाएगा।"

मोहिनी ने ट्यूशन करते हुए पढ़ाई जारी रखी। वह बी० ए० में पढ़ती थी और एक चौधरी विश्वास चटर्जी की लड़की की ट्यूशन करती थी कि चोधरी साहब के सुपुत्र ने उसे धनी भर निर्धन की श्रेणियों की मीमांसा समझानी आरम्भ कर दी। पिता बंगाल गवर्नमेण्ट में सेक्रेटरी था और लड़का निर्मल चटर्जी मोहिनी से एक श्रेणी ऊपर पढ़ता था। उसे मोहिनी एक सुन्दर और सभ्य लड़की समझ आई। वह उसकी धन से सहायता करने लगा।

मोहिनी ने बी० ए०-पास किया तो निर्मल ने एम० ए० सेकेण्ड ईयर में प्रवेश लिया। निर्मल ने उसे टीचर्ज़ ट्रेनिंग क्लास में प्रवेश पाने में आर्थिक सहायता कर दी। परिणाम यह हुआ कि मोहिनी और मास्टर चटर्जी में सम्बन्ध घने हो गए। चटर्जी ने उसे वचन दिया कि एम० ए० पास करने पर वह उससे विवाह कर लेगा।

मोहिनी के पतन में एक कारण यह हुआ था कि उसके माता-पिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के घर में सोने के लिए एक ही कमरा था और माता-पिता तथा बच्चे सब एक ही कमरे में बैठते, पढ़ते और सोते थे। इसका प्रभाव उसके मन पर बहुत प्रबल हुआ। वह अब सज्ञान थी और माता-पिता के व्यवहार को देख वह उत्तेजित हो उठती थी। इसी उत्तेजना के अधीन वह निर्मल चटर्जी के प्रस्ताव का विरोध नहीं कर सकी।

इसके उपरान्त निर्मल उसे एक लेडी डाक्टर के पास ले गया और उसे लूप चढ़वा दिया। डाक्टर को निर्मल ने प्रसन्न कर दिया और मोहिनी निर्मल को समय-समय पर प्रसन्न करने लगी थी।

मोहिनी बी० एड० हो गई, परन्तु तब तक उसकी मित्रता कम्यु-निस्ट दल के कुछ सदस्यों से हो गई। उन्होंने उसे दल का टिकट होल्डर सदस्य बना लिया और परीक्षा से पूर्व ही उसे दल के कार्यालय में आकर रहने का निमंत्रण मिल गया। इसमें भी घर पर स्थानाभाव ही प्रेरक हुआ।

दल में वेतनधारी कार्यकर्ता बन जाने से उसका सम्पर्क निर्मल चटर्जी से छूट गया। निर्मल कम्युनिस्ट दल का सदस्य तो नहीं था, परन्तु वह उनका सहयात्री अवश्य था। उसीने मोहिनी का सम्पर्क दल के अधिकारियों से कराया था वह अपने विचार से मोहिनी को अपने लिए सुरक्षित कर रहा था, परन्तु जब मोहिनी को दल की ओर से वेतन, कार्य और रहने को स्थान मिला तो उसे निर्मल भूल गया और वह दल के कार्य में ही लीन हो गई।

निर्मल एम० ए० में पास हुआ और अपने पिता की सिफारिश से एक अच्छी नौकरी पा गया तो वह मोहिनी से मिला और उसे अपने पिता के पास चलकर विवाह के प्रस्ताव की बात बताने लगा। उसने कहा, "मोहिनी, मैं तो अपने पिताजी से इस बात की स्वीकृति ले आया हूं कि तुमसे विवाह कर लूं। अब यदि तुम अपने माता-पिता से चलकर कहो तो विवाह की तिथि निश्चित हो जाए।"

मोहिनी ने बात टालने के लिए कह दिया, "पिताजी बहुत निर्धन हैं। वे आपके बरातियों का भली भांति स्वागत भी नहीं कर सकेंगे।"

"विवाह की स्वीकृति दे दें तो शेष सब प्रकार का व्यय मैं करूंगा।"

मोहिनी के मस्तिष्क में क्रांति के बवण्डर उठ रहे थे। उसने निर्मल का उस समय तक मिली सहायता के लिए धन्यवाद कर दिया और विवाह से इन्कार कर दिया। निर्मल निराश हो अपने पिता को विवाह का प्रबन्ध करने के लिए कहने लगा। विश्वास चटर्जी ने मुस्क-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राते हुए कह दिया, "जब तुमने बताया था कि सिद्धेश्वरी की मास्टराइन कम्युनिस्ट दल के कार्यालय में रहती है, तो मैं समझ गया था कि तुम्हारा उससे विवाह नहीं होगा। इस कारण मुझे तुम्हारी बात सुन विस्मय नहीं हुआ।"

"परन्तु आप यह सब कैसे समझ गए थे?"

"इसलिए कि कम्युनिस्ट विचारधारा वाले न केवल अर्थ-व्यवस्था में अपना विशेष दृष्टिकोण रखते हैं, वरंच सभ्यता, संस्कृति और धर्म-कर्म में भी अपना पृथक दृष्टिकोण रखते हैं। जहां तक मैं समझता हूं वह यह कि कम्युनिस्ट दृष्टिकोण के लोग तो यह समझते हैं कि बहिन-भाई में भी यौन-सम्बन्ध हो सकता है। और यह किसीसे भी विवाह कर अथवा बिना विवाह के भी हो सकता है। यह शारीरिक आवश्यकताओं में से एक है।

"वे यह समझते हैं कि जैसे एक समाज में सबका पेट भरना चाहिए, उसी प्रकार यौन-तृषा की तृप्ति भी होनी चाहिए। जहां स्त्रियां कम हों अथवा पुरुषों से अधिक शान्तचित्त हों, वहां कुमारों से स्त्रियों का काम लेना चाहिए।

"देखो, निर्मल! इंग्लैंड में समाजवादी सरकार बनी है तो वहां 'सॉडोमी' को कानून से वर्जित न रखने का अस्ताव होने लगा है। इसके स्पष्ट अर्थ ये हैं कि दूर दल तृप्ति एक शारीरिक आवश्यकता है और जिस किसीसे भी यह पूरी हो सके, क्षम्य है।

"यही बात तुम्हारी मोहिनी करती प्रतीत होती है।"

निर्मल कम्युनिस्ट विचारधारा की यह व्याख्या सुन कांप उठा। उसे भयभीत और मौन देख विश्वास बाबू ने कह दिया, मैं उस लड़की की रूपरेखा और प्रत्यक्ष व्यवहार को पसन्द करता था और जब तुमने बताया कि वह दल के कार्यालय में जा रहने लगी है, तो मैं यह समझ उसे घर में लाने के लिए तैयार हो गया था कि कदाचित् उसका मन अभी उतना कलुषित नहीं हुआ जितना कि उसका शरीर हुआ है।

"परन्तु यह मेरी भूल थी। मैं अब समझ गया हूं कि गीता में भगवान कृष्ण ने कर्मों को ठीक रखने के लिए मन और बुद्धि श्रेष्ठ रखने की बात व्यर्थ नहीं कही और यह कहा है कि मन ही मनुष्य को उलटे मार्ग पर ले जाता है। भगवान कहते हैं:

"असंशयं महावाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।

"अर्थात्—निस्सन्देह मन चंचल है और कठिनाई से नियंत्रण में आने-वाला है। इससे मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि तुम्हारी मोहिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का मन ही अनियन्त्रित हो रहा है।"

निर्मल मोहिनी के जीवन से निकला तो मोहिनी और भी स्वच्छन्द व्यवहार बना बैठी। इस समय कान्तिलाल यूनियन का सेक्रेटरी होने से दल में आने-जाने लगा। उसे एक नये टट्टू की भांति सिधाने के लिए मोहिनी को 'चाबुक सवार' का काम दिया गया। दोनों में सम्पर्क बना तो कान्ति भी पार्टी का सदस्य बन गया।

जब बंगाल की सरकार कम्युनिस्टों के 'डाइरेक्ट ऐक्शन' को क्षम्य मानने वाली बन गई तो 'भागीरथलाल एण्ड ब्रदर्ज़' का दिवाला पिटवाने की योजना बन गई। जहां सैकड़ों अन्य उद्योग और व्यापार संस्थानों पर घेराव, पथराव इत्यादि ऐक्शन लिए गए वहां भागीरथ-लाल एण्ड ब्रदर्ज़ पर गहरा आघात करने के लिए कारखाने को आग लगाने का निश्चय हो गया।

कान्ति परिवार की मीटिंग में दिल्ली गया हुआ था। कम्युनिस्ट अधिकारियों ने यह देख कि मोहनलाल और उसकी पत्नी को घेराव से गवर्नर ने छुड़ाया है, इसका बदला लेने के लिए कारखाने को जला देने का आदेश दे दिया। इसका मोहिनी ने विरोध किया तो दल उसके विरुद्ध हो गया। कान्तिलाल आया तो उसने भी मोहिनी के कथन का समर्थन किया। उसी मध्याह्न दोनों को समाप्त कर देने की योजना बन गई और यूनियन द्वारा यह काम करवाने का आयोजन था।

मोहिनी के सौन्दर्य ने दोनों की जान बचा ली अथवा यह भी कहा जा सकता है कि मुहम्मददीन को अपने दल के प्रति कर्तव्य की अपेक्षा वासना-तृप्ति की अधिक महिमा समझ आई।

ड्राइवर महावीर कई दिन से लाला मोहनलाल के घर में अव्य-वस्था देख रहा था। वह घर का पुराना नौकर था और घर के प्रत्येक प्राणी से सहानुभूति रखता था। वह स्वयं कलकत्ता में मोटर ड्राइवरों की यूनियन का सदस्य रह चुका था। तब वह कार्पोरेशन की बस चलाया करता था और उस समय के यूनियन के व्यवहार से ही वह वर्तमान हड़ताल और अग्निकाण्ड की घटना से यही चाहता था कि परिवार का कलकत्ता में रहना ठीक नहीं।

जब वह लाला मोहनलाल को इस बार हवाई अड्डे पर छोड़ने गया था तो उसने लालाजी से कहा था, 'कहें तो आपको मोटर से ही दिल्ली पहुंचा दूं?' परन्तु लालाजी जे कह दिया, 'मुझे दो घंटे में वहां पहुंचना है। इस कारण अभी तो ऐसा ही रहेगा, परन्तु तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिल्ली बुला लूंगा। मोटर की वहां भी आवश्यकता रहती है।

सायंकाल उसने कान्तिलाल को भी कहा था कि मोटर से दिल्ली चले चलें। कान्तिलाल ने भी कहा था कि उसे तैयार रहना चाहिए। किसी समय भी यहां से चल सकते हैं। अतः जब रात के दो बजे उसे बुलाकर चलने के लिए कहा गया तो वह तैयार हो गया।

प्रातः आसनसोल में कुछ घंटे आराम कर वे सायंकाल मुगल-सराय जा पहुंचे। रात वहां रह, अगले दिन सायंकाल दिल्ली में जा पहुंचे।

मार्ग-भर मोहिनी मौन धारण किए रही। कान्ति ने समझा कि यह उसपर किए गए दुराचार की प्रतिक्रिया है। प्रतिक्रिया तो थी, परन्तु यह उससे विपरीत दिशा में थी जिसमें कान्ति विचार कर रहा था। मोहिनी दल के व्यवहार से विक्षुब्ध तो थी ही, साथ ही वह कान्ति के व्यवहार से भी प्रसन्न नहीं थी। वह अपनी जान बचाने के लिए भाग गया था अ उसकी सहायता अथवा उसके साथ हुए दुर्व्यवहार का बदला लेने का उसके मन में विचार भी नहीं आया था।

सबसे बड़ी बात, जिसने उसे गम्भीर विचार में डाल दिया था यह थी कि उन्होंने परिवार से दगा किया था और परिवार का पुरखा उसे भी परिवार की सम्पत्ति में से भाग दिलाने का प्रस्ताव कर रहा था। उस वृद्ध पुरखा को कान्तिलाल बूढ़ा, गले-सड़े विचारों वाला मानता था।

वह मन में विचार कर रही थी कि वह किसके साथ सम्बद्ध हो हो गई है। इस समय उसे निर्मल चटर्जी की बात स्मरण आ गई थी। वह विचार करती थी कि यदि उससे विवाह स्वीकार कर लेती तो आज एक प्रतिष्ठित परिवार की सदस्या बन वह अपना कल्याण करती और अपने माता-पिता के परिवार की भी सहायता कर सकती थी।

दिल्ली पहुंचते-पहुंचते वह एक परिणाम पर पहुंच गई थी; वह यह कि कान्तिलाल से विवाह नहीं करेगी। जिस रात के आठ बजे मोहनलाल बिना सूचना के दिल्ली पहुंचा, उसके तीसरे दिन मध्या-ह्नोत्तर चार बजे कान्तिलाल अपनी पत्नी मोहिनी के साथ दिल्ली जा पहुंचा।

ब्रजलाल अभी दिल्ली में ही था कि यह दम्पती आ पहुंचा। आते ही घंटा-भर आराम कर कान्ति अपने परिवार में भाग के विषय में बातचीत करने लगा।

भागीरथ से कान्ति मिला तो उसने कह दिया, "कान्ति, अभी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम आए हो। रात-भर आराम करो। कल परिवार का मुंशी जगदीश भट्टाचार्य यहां आ रहा है। उसका तार आया है कि वह हड़ताल और अग्निकाण्ड का पूर्ण विवरण जान गया है। अतः हमने उसे यहां बुला लिया है।"

कान्ति को इतने से सन्तोष नहीं हुआ। वह बाबा के कमरे में जा पहुंचा। वहां वह अपने साथ मोहिनी को भी ले गया। ब्रजलाल मकान की ऊपर की छत पर एक कमरे में रहता था। ब्रजलाल ने एकान्त में यह कमरा ले रखा था। नीचे कोठी में आने-जाने वाले मह-मानों की भरमार थी। बंटवारा कमेटी भिन्न-भिन्न स्थानों से सदस्यों को बुला-बुलाकर उनसे बातचीत तथा हिसाब-किताब कर रही थी।

ब्रजलाल एक आरामकुर्सी पर बैठा अपने वापस पाण्डीचेरी जाने पर विचार कर रहा था। दिल्ली में वहां से अधिक गर्मी थी।

कान्तिलाल मोहिनी को लेकर वहां पहुंचा तो ब्रजलाल समझ गया कि वह बहू को लाया है। उसने कह दिया, "तो आ गए हो?"

"जी। आपने जब आज्ञा की तो कैसे इन्कार कर सकता था!"

ब्रजलाल ने नज़र भरकर मोहिनी की ओर देखा तो स्त्री-सुलभ स्वभाव से वह भूमि की ओर देखती हुई खड़ी रही। ब्रजलाल ने कहा, बैठो, बेटी।"

दोनों बैठ गए। कान्ति ने बैठते हुए कहा, "बाबा, मैं इसे आपके समक्ष विधिवत विवाह करने के लिए लाया हूं।"

ब्रजलात ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो यह मान गई है?"

"जी।"

"इसे बताया है कि विवाह से इसे सम्पत्ति में भाग मिल सकता है?"

"जी, यह तो बताना ही पड़ा है। अन्यथा यह तैयार न होती।"

"पर यह तो तुम इससे वेश्यावृत्ति कराने लगे हो। रुपये के लिए यह तुम्हारे साथ विवाह करने पर तैयार हुई है न? यह तो ठीक नहीं हुआ।"

कान्ति इसका अभिप्राय न समझ मुख देखता रह गया। उसे मौन देख ब्रजलाल ने मोहिनी से पूछना आरम्भ कर दिया, "क्यों बेटी, क्या नाम है तुम्हारा?"

मोहिनी अपनी वर्तमान मनःस्थिति में धन के लोभ से विवाह का अर्थ समझते ही कांप उठी। वह विचार कर रही थी कि वासनाभिभूत हो तो वह कइयों से सम्बन्ध बना चुकी है, परन्तु क्या धन के पाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिए विवाह उससे भी बुरा है? मोहिनी ने आंखें उठाकर सामने बैठे शरीर से वृद्ध, परन्तु मन से युवा व्यक्ति को अपनी ओर मुस्कराते हुए देखा तो वह चकित रह गई। इस वृद्ध व्यक्ति की आंखों में अभी भी तेज था। उसने उत्तर में कहा, "जी, मेरा नाम मोहिनी है।"

"मोहिनी बेटी, तुम इस छोकरे से विवाह करोगी?"

"विचार कर रही हूं।"

"देखो, विवाह करना है तो धन को बीच में लाए बिना विवाह कर लो। जब इसे मैंने तुम्हें परिवार में भागीदार बनाने की बात कही थी तब से परिस्थिति बदल गई है। कदाचित् तुम्हें इस विवाह के प्रतिकार में कुछ न मिल सके। अब बताओ, क्या विचार है?"

"बाबा!" अब मोहिनी ने निस्संकोच भाव से कहा, "अब तो मैं यह विचार केर रही हूं कि धन मिलता भी हो तब भी इनसे विवाह करूं अथवा नहीं।"

"ओह!" ब्रजलाल के मुख से अनायास ही निकल गया, "तो तुम इससे मार्ग में लड़ती हुई आई हो?"

"हाथों अथवा वाणी से तो नहीं, परन्तु हां, मन से लड़ाई करती ही आई हूं। अभी मेरा मानसिक युद्ध समाप्त नहीं हुआ। इसी-कहा है कि विचार कर रही हूं।"

"तो ऐसा करो, विचार कर लो। मान लो कि कान्तिलाल भी एक निर्धन युवक है; तो तब भी इससे विवाह करोगी क्या?"

बाबा के बार-बार धन बीच में लाने पर वह अति लज्जित हो रही थी। मन ही मन वह विचार करती थी कि वह दिल्ली इसी कारण आने वाली थी, परन्तु जब वह कलकत्ता से चली थी तो यह विचार करती हुई ही चली थी कि धन को लात मारकर इस दुर्बल मन वाले प्राणी को भी लात मार दे। परन्तु वह विचार करती थी कि इसे भी त्याग दे तो जाए कहां? दल, अब आश्रय नहीं रहा था। उसे दल और दल के नेताओं का इतना भरोसा था कि वह निर्मल चटर्जी को छोड़ बैठी थी, परन्तु अब तो वह भी आश्रय नहीं था।

उसने बाबा को कहा, "यह धन की बात तो पहली बार आपसे ही पता चल रही है कि बदली परिस्थिति में वह नहीं मिल सकेगा, परन्तु इनसे विवाह न करने का विचार तो मैं इस सूचना से पहले ही कर रही हूं।"

"क्यों कान्ति? क्या किया है तुमने इस भली लड़की से?"

"बाबा, अपनी जानकारी में तो कुछ नहीं किया। मैंने आपसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताई विवाह की बात इसे बताई थी और यह दिल्ली चलने के लिए तैयार थी। एकाएक दल से मेरा झगड़ा हो गया है। मेरा दल में रह सकना असम्भव हो गया है। कदाचित् इसी कारण यह मुझसे पृथक होना चाहती है।"

"कौन-सा दल?"

"बाबा, एक कम्युनिस्ट दल है। आप उसके विषय में कुछ नहीं जानते।"

"यह डांगे और जवाहरलाल का दल न?"

"हां, डांगे का, परन्तु जवाहरलाल का नहीं। दोनों पृथक्-पृथक् हैं।"

"पर जवाहरलाल और डांगे तो एक ही दल के हैं।"

"नहीं, बाबा, दोनों का परस्पर झगड़ा था।"

"नहीं, कान्ति, झगड़ा नहीं था। जवाहरलाल का झगड़ा हिन्दुओं से था, कम्युनिस्टों और मुसलमानों से नहीं था।"

"पर बाबा, कम्युनिस्ट तो मुसलमानों के घोर विरोधी हैं।"

"तुम तत्त्व की बात नहीं समझे। इसी कारण तुम्हारा अपने दल से भी झगड़ा है।"

कान्ति समझ नहीं सका था कि बाबा को, जो अंग्रेज़ी समाचारपत्र पढ़ नहीं सकता, कैसे समझाए? इस कारण वह चुप रहा। ब्रजलाल ने बात बदल दी और लड़की से बोले, "अच्छा, सुना है कि तुम कलकत्ता से मोटरगाड़ी में आए हो। तुम आराम करो, फिर किसी समय बात करेंगे।"

"मैं आपसे पृथक् में मिलना चाहती हूं।"

"जब चाहो, मिल सकती हो।"

"तो अभी यहां ठहर जाऊं?"

10

इसपर तो ब्रजलाल आंखें मूंद विचार करने लगा। तदनन्तर उसने आंखें खोल कान्ति से पूछा, "तुम क्या कहते हो?"

"जब यह आपसे मिलना चाहती है तो मैं मना कैसे कर सकता हूं? अच्छा बाबा, मैं नीचे चलता हूं, आप इसे समझा दो। यह अकारण मुझसे परसों रात से रूठी हुई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ब्रजलाल ने कुछ नहीं कहा। कान्तिलाल उठकर नीचे चला गया। जब वह गया तो मोहिनी ब्रजलाल के पूछे बिना स्वयं कहने लगी, "बाबाजी, मैं एक अति निर्धन माता-पिता की लड़की हूं। निर्धनता में पली, परिश्रम से पढ़ी और परिश्रम से ही जीवन-यापन कर रही थी। जीवन-यापन के साथ लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित कम्युनिस्ट दल में चली गई थी। दल का सिद्धांत है कि सम्पत्ति संसार के झगड़ों का मूल कारण है। इस कारण व्यक्तिगत सम्पत्ति रखने की स्वीकृति न दी जाए। सम्पत्ति का मालिक और संचालक राज्य हो। राज्य उन लोगों का प्रतिनिधि हो जो इस सिद्धांत को मानते हैं।

"बाबा, ये बातें मन को बहुत भली प्रतीत हुई और साथ भूखे प्राणी को खाने-पहनने की सुविधा मिली तो दल में सम्मिलित हो गई थी। उसी दल के प्रागण में मुझे ये, आपके परिवार के एक जीव, मिल गए और हमने निश्चय कर लिया कि पुरुष-स्त्री का व्यवहार रखते हुए जीवन व्यतीत करेंगे। उस समय मेरे मन में केवल दो बातें थीं—वासना और आश्रय। दल के आश्रय से एक व्यक्ति का आश्रय अधिक सुखकर समझ आया था। दल का एक अन्य सिद्धांत, कि व्यक्ति से समष्टि अधिक भरोसा करने योग्य है, मिथ्या सिद्ध हुआ। अनुभव से एक स्त्री के लिए समष्टि से व्यक्ति अधिक भरोसे के योग्य सिद्ध हुआ।

"स्त्री एक सम्पत्ति की वस्तु है। धन-दोलत की भांति यह भी पुरुष की एक आवश्यकता पूर्ण करती है। इस सम्पत्ति पर समष्टि का अधिकार अति कष्टप्रद और दुःखकारक अनुभव हुआ था। अतः एक के अधिकार में चली आई।

"इस प्रकार दल के एक सिद्धांत पर सन्देह उत्पन्न हुआ और उसके विपरीत आचरण किया तो दल के लोग रुष्ट हो गए, परन्तु दल ने मेरे उस प्रबन्ध में एक लाभ समझा। ये, मेरे पुरुष, अपनी फैक्टरी की कर्मचारी यूनियन के मंत्री थे। मुझे दल की ओर से इनपर अंकुश के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। मैंने दल की ओर से इनपर अंकुश का काम किया और कारखाने में हड़ताल कराई। इनके माता-पिता पर घेराव डलवाया, उनपर ईट-पत्थर चलवाए।

"मेरा दल से दूसरा मतभेद हुआ, जब दल का यह आदेश कि कारखाने को फूंक दिया जाए। मेरा विचार था कि के फूंके जाने से कर्मचारी-वर्ग का अधिक अहित होगा और मालिकों का कम। मैंने बताया कि मालिक तो इससे तबाह नहीं होंगे, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मज़दूर बरबाद हो जाएंगे। दल-सचिव ने बताया कि यह क्रांति का समय है। इस समय व्यक्तियों के हानि-लाभ को छोड़ समष्टि के लाभ को प्राथमिकता देनी चाहिए।

"मुझे न तो क्रांति होती दिखाई दे रही थी और न ही इस कृत्य में समष्टि का हित।

"मेरा बुर्जुआ पति की बुर्जुआ पत्नी कहकर तिरस्कार किया गया और अन्त में उन्होंने बताया कि हड़ताल के नोटिस से लेकर आग लगने और फिर आवश्यकता पड़े तो मालिक और उसके परिवार को जीवित अग्नि में फूंक दिए जाने का सब कार्यक्रम इस मेरे पति की अनुमति से हो रहा है।

"जहां मैं दल से तिरस्कृत हुई, वहां ये भी दल से उदासीन हो गए। उस समय ये दिल्ली आए हुए थे और मैं दल के कार्यालय में रह रही थी। मैं उत्सुकता से इनके लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी। ये आए और मैं दल के कार्यालय को छोड़, पुनः इनके पिता के घर में चली आई। उसी समय इन्होंने आपके कहने पर विवाह का प्रस्ताव किया और मैं मान गई। दल के समष्टिगत सम्पत्ति पर अधिकार को मैं अहितकर मान चुकी थी। दल के क्रान्ति के कार्य को मैं असामयिक समझ चुकी थी और असंसदीय कार्यों को मैं व्यर्थ समझने लगी थी। इस कारण लाखों की सम्पत्ति पाने के लोभ को मैं सवरण नहीं कर सकी। मैं दिल्ली आ विवाह के लिए तैयार हो गई।

"परन्तु उसी रात एक घटना घटी, जिसने मेरे मन में दोहरा प्रभाव उत्पन्न किया। एक यह कि आपके परपोते अति भीरु हैं और ये पत्नी की भीर के समय रक्षा करने के अयोग्य हैं। दूसरे यह कि मानव-प्रवृत्ति सामाजिक बन्धनों से अधिक प्रबल है। मनुष्य में सुख की इच्छा समाज के कृत्रिम नियमोपनियमों से भी ऊपर है। दल के सदस्य एक जघन्य कार्य करने आए थे, परन्तु स्त्री-भोग की इच्छा से वह दल का कार्य भूल गए।

"इन दो बातों ने मेरे मन में हतचल मचा रखी है और पिछले दो दिन से मैं अपने जीवन के पूर्ण व्यवहार पर पुनरावलोकन करने पर विवश हुई हूं। एक समय मैं एक बहुत ही भले विचार के परिवार में प्रतिष्ठित स्थान लेने के लिए आमन्त्रित हुई थी। मैं अपनी सुख-सुविधा का त्याग कर दल और निर्धन जनों के हित की भावना से दल में सम्मिलित हुई थी, परन्तु वहां का व्यवहार देख मैं जीवन से निराश हो रही थी और समझ नहीं सकी थी कि क्या करूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबा, स्त्री जाति में होने से निराश्रय घूमने की सामर्थ्य नहीं रखती प्रकृति ने कुछ रूप और लावण्य दिया है और संसार में लुटेरे बहुत घूमते हैं; अभी तक समझ नहीं सकी कि क्या करूं?

"आपकी आंखों में सहानुभूति देख, मन के पट खोल आपको उसका दर्शन करा दिया है। मैं आपके पोते के पास रह नहीं सकती।"

"तुम्हारी समस्या तो अति विकट है।" ब्रजलाल आंखें मूंद सामने बैठी लड़की की बातें सुन रहा था। जब वह सब कुछ कह चुप कर गई तो उसने अपनी सम्मति प्रकट कर दी, "इसपर भी निराशाजनक नहीं। तुम एक साहसी लड़की प्रतीत होती हो। इसीसे कहता हूं की भविष्य उतना अन्धकारमय नहीं है जितना कि तुम समझ रही हो।

"यह बताओ, कुछ पढ़ा-लिखा भी है अथवा नहीं?"

"बी० एड० हूं।"

"वह क्या होता है?"

"मैंने बी० ए० पास करने के उपरान्त कुछ वर्ष तक बच्चों को पढ़ाने का ढंग सीखा है। उसका प्रमाण-पत्र बी० एड० कहलाता है।"

"तो मेरी बात मानो। सबसे पहले कहीं अध्यापिका की नौकरी ढूढ़ लो। इससे तुम स्वतंत्र हो सकोगी। यह स्वतंत्रता का प्रथम चरण होगा।"

"पर प्रश्न तो यह है कि यदि आपके पोते की पत्नी बनना स्वीकार न करूं तो वह धक्के दे-देकर घर से निकाल देगा। तब कहां जाऊंगी? मेरा तो यहां कोई परिचित नहीं है।"

"एक तो है।"

मोहिनी ने समझा कि बाबा अपने विषय में कहने वाला है। इस कारण उत्सुकता से पूछने लगी, "बाबा, कौन है? आप तो हैं, परन्तु क्या···"

ब्रजलाल ने बात बीच में ही काटकर कहा, "मैं तो एक-दो दिन में यहां से पाण्डीचेरी जाने वाला हूं, परन्तु मेरा अभिप्राय था, परमात्मा। वह तुम्हारी सहायता कर सकता है। केवल उससे किसी प्रकार का छल-कपट नहीं करना होगा।"

"बाबा, उस बहरे, गूंगे, अंधे से मुझे कुछ अधिक आशा नहीं।"

"ऐसा मत कहो, बेटी। वह देखता है, सुनता है, अनुभव करता है और फिर बोलता भी है। देखो, हमारे परिवार का प्रबन्धक है भागीरथ, कान्ति का चाचा। कल उससे मिल लेना, वह तुम्हारा प्रबन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर सकता है। तुमने जो कुछ कहा है, यदि सत्य है तो परमात्मा उसको तुम्हारी सहायता के लिए कह देगा। वह परमात्मा की बात को न नहीं कर सकता।"

मोहिनी के माता पिता परमात्मा में विश्वास खो चुके थे। उनकी निर्धनता ने उसे परमात्मा से विद्रोह करने पर तैयार किया था। प्रत्येक विद्रोह ईश्वर से विद्रोह में आरम्भ होता है। ईश्वर से विद्रोह कर शैतान की शरण में जाना केवल एक पग ही होता है। यह पग मोहिनी ने उठाया था और अब शैतान उससे कुछ ऐसा कार्य करने को कह रहा था जो वह ठीक नहीं समझ रही थी, परन्तु शैतान के आश्रय से निकल पुनः परमात्मा की शरण में जाते संकोच, लज्जा और अस-म्मान प्रतीत हो रहा था। इस कारण उसने कह दिया, "बाबा, मैं तो आप पर आशा लगा रही थी।"

"पर बेटी, मैं भी तो उसीसे सम्मति करने वाला हूं। देखो, मेरा कहा मानों। कल भागीरथजी से मिल लेना। आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का यत्न करो। शेष ईश्वर पर छोड़ो।"

मोहनलाल, स्नेहलता, रजनी और बिहारीलाल तो पहले ही दिल्ली पहुंच गए थे। मोहतलाल ने यह समझा था कि कलकत्ता में रहने पर भी वह तो प्रबन्ध कर नहीं सकेगा और व्यर्थ का भय मोल लेगा। उस समय नक्सलबाड़ी का अभियान चल रहा था और पैसे वालों के लिए बंगाल एक जल रही भट्ठी हो गया था। अतः उसने दिल्ली बैठकर प्रबन्ध करने का विचार कर लिया।

ऐयरोड्रॉम पर जाने से पूर्व मोहनलाल अपने मुंशी भट्टाचार्य से भी मिला था। मुंशी ने आग लगने के विषय में कर्मचारियों का विचार बताया था। वे अब अपना भविष्य जानने के लिए उससे मिलने आ रहे थे। भट्टाचार्य ने बताया था, "कर्मचारियों का यह विश्वास है कि आग लगाने की आज्ञा कान्तिलाल ने दी थी और अपने को इससे पृथक् रखने के लिए उन दिनों वह दिल्ली चला गया था। पूर्ण कार्यवाही उसकी अनुमति से हो रही है।"

इसपर मोहनलाल कह आया था, "सरकार ने हमारा सब कुछ फ्रीज़ कर लिया है और तुम कान्तिलाल का सब कुछ फ्रीज़ कर लेना। उसे अब एक पैसा नहीं देना।"

मोहनलाल ने जब मुंशी की सूचना भागीरथ को दी तो मुंशी को तार दे दिया गया कि वह अविलम्ब दिल्ली चला आए। मुंशी ने सूचना भेज दी थी कि वह आ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्तिलाल और मोहिनी के इतने जल्दी मोटर गाड़ी में दिल्ली पहुंच जाने पर सबको विस्मय हुआ था। सबसे अधिक रोष था स्नेह को। उसका विचार था कि पूर्ण विपत्ति और विनाश की जड़ मोहिनी ही है। उसीने कान्ति की मति भ्रष्ट कर रखी है, परन्तु मां पुत्र की वहां से निकल जाने के लिए नहीं कह सकी और कान्ति को स्वीकार करने का अर्थ था, मोहिनी को भी स्वीकार करना।

मोहनलाल ने भागीरथ से भी सम्मति ली थी। उसने भट्टाचार्य की बात बताकर पूछा था, इसे यहां टिकने दूं अथवा धक्के दे-देकर यहां से निकाल दूं?"

भागीरथ ने कहा था, "वह भाभी का प्रिय पुत्र है। इस कारण वह ही बता सकती है कि अपने पुत्र के साथ उसका स्नेह कितना है। जहां तक परिवार की सम्पत्ति का प्रश्न है, वह बंटवारा कमेटी निश्चय करेगी। और जहां तक परिवार का अंग होने की बात है, भाभी उसे पुत्र मानेगी तो हम उसे अपना बच्चा मानेंगे ही।"

मोहनलाल समझ गया और उसने स्नेह से कह दिया कि वह इससे पुत्र का नाता समझती है तो पुत्रवत् व्यवहार कर सकती है। सम्पत्ति का प्रश्न पृथक् है। वह बंटवारा कमेटी निश्चय करेगी।

स्नेह ने कांति को अपने बगल के कमरों के सेट में ठहरा लिया। उस समय कान्ति और मोहिनी बाबा ब्रजलाल से मिलने ऊपर गए थे। कान्तिलाल अकेला नीचे आया तो मां ने पूछ लिया, "बहू को कहां छोड़ आए हो?"

"वह बाबा से मेरी चुगली खाना चाहती थी। इस कारण उसे ऐसा करने के लिए छोड़ आया हूं।"

"तो अब चुगली खाने तक की स्थिति आ गई है?"

"मां, मैं उससे विवाह करने के लिए यहां लाया था, परन्तु अब वह विवाह से इन्कार कर रही है।"

"धन नहीं मिल रहा, इसलिए?"

"मैं समझता हूं कि दल मेरे विरुद्ध हो गया है। इस कारण वह भी विरुद्ध हो गई प्रतीत होती है।"

"तो उसे साथ किसलिए लाए हो?"

"पत्नी तो वह मेरी ही है। हां, विधिवत् विवाह नहीं कर रही।"

"तो उसे अपने कमरे में रखो। उसने हमें बहुत हानि पहुंचाई है।"

कान्ति चुप रहा और अपना कमरा देखने चला गया। आधे घण्टे के उपरान्त मोहिनी आई तो स्नेहलता ने उसे कह दिया, "तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पति-पत्नी के लिए वह साथ का कमरा है। तुम अपना सामान इत्यादि ठीक कर सकती हो।"

"मांजी, मैं आपसे एक निवेदन करना चाहती हूं।"

"करो।"

"मुझे बहिन रजनी के साथ ठहरा दी।"

"क्यों?"

मोहिनी ने कुछ उत्तर नहीं दिया और भूमि की ओर देखती रही। इसपर स्नेह ने कह दिया, "यह तुम रजनी से पूछ लो। उसने अपने चाचाजी से स्वीकृति ले कोठी की ऊपर की मंज़िल वाला कमरा ले लिया है।"

"तो रजनी अपने कमरे में है?"

"नहीं, वह अपने मामा के लड़के के साथ कहीं गई हुई है।"

"तब तक मैं यहां रहूंगी।"

"देखो, मोहिनी, तुम मेरी कुछ हो तो कान्ति के द्वारा ही हो। यदि तुम उससे लड़ पड़ी हो, तो उससे भी लड़ाई समझो।"

मोहिनी भीगी बिल्ली की भांति उस कमरे में जा पहुंची जो उन्हें मिला था। कान्ति वहां पहले ही एक आरामकुर्सी पर बैठा था। मोहिनी ने देखा कि दो पलंग लगे हैं, उनपर बिस्तर भी लगाए हुए हैं और पंखा भी चल रहा है। वैसे कमरे में खिड़कियां थीं और प्रकाश तथा हवा खूब आ रही थी।

मोहिनी ने खिड़की में से झांककर देखा तो कोठी की लॉन दिखाई दे गई। फूलों की क्यारियां थीं और खिड़की के साथ दीवार पर बेल चढ़ रही थी। उसे वह कोठी और कमरा बहुत पसन्द आया था।

वह अभी खिड़की में खड़ी बाहर की शोभा देख ही रही थी कि कान्ति ने आवाज़ दे पूछ लिया, "है पसन्द कोठी?"

"जी, बहुत अच्छा स्थान है।"

"यह तुमको मिल सकता है—यदि मुझसे विधिवत् विवाह कर लो।"

"मैं आपको तलाक देने का विचार कर रही हूं।"

"क्यों? मैंने क्या अपराध किया है?"

"तलाक बिना अपराध बताए ही होगा। वास्तव में दोनों अपराधी हैं। हम इकट्ठे थे, क्योंकि अपराध करते हुए इकट्ठे रहना सुविधाजनक जान पड़ा था। अब मेरा विचार किसी प्रकार का अपराध करने का नहीं है। अतः आपके साथ इकट्ठे रहने में भी कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथ्य नहीं रहा।"

"तो फिर यहा इस कमरे में क्यों आई हो?"

"मांजी ने आज्ञा दी है कि मैं यहां रहूं।"

"पर उन्होंने मुझे भी तो यहां रहने का आदेश दिया है।" कान्ति ने मुस्कराते हुए कह दिया।

"तो यहां आप भी रहें। यहां दो पलंग तो हैं ही। किसीको कष्ट नहीं होगा।"

कान्ति चुप रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा परिच्छेद

रजनी, जब से विधवा हुई थी, संसार से विरक्त हो रहने का विचार रखती थी। पति के निधन के उपरान्त वह कुछ काल तक तो ससुराल में रही, परन्तु एक दिन उसने अपनी सम्पत्ति, जो उसे पिता के परिवार से मिली थी, वापस पिता के परिवार में ही जमा करा दी।

इसका अर्थ उसकी सास ने यह समझा कि वह अपनी कुमारी की स्थति प्राप्त कर रही है और वह नवीन विवाह करने के पहले अपनी वही आर्थिक स्थिति बना रही है जो प्रथम विवाह के पूर्व थी। अतः उसने अपनी बहू के मनोभावों को जानने के लिए उसके कमरे में जाकर पूछ लिया, "बहू, सुना है कि तुमने अपनी पूर्ण सम्पत्ति पुनः पिता के परिवार को वापस कर दी है?"

"हां, मांजी।"

"क्यों?"

"यहां बैंक में पड़ी हुई वह अपने किसीको लाभ नहीं दे रही थी। वहां परिवार में इसका उद्योग-धन्धे में निवेश होगा तो लाभ बढ़ जाएगा।"

"तो वहां क्या ब्याज मिलेगा?"

"मांजी, ब्याज के लिए उनको नहीं दी, वरंच उनके परिवार में पुनः भागीदार बनने के लिए दी।"

"तो तुम फिर विवाह करोगी?"

"अभी ऐसा कोई विचार नहीं।"

"तो फिर पिता के परिवार में भागीदार किसलिए बन गई हो?"

"मैं उनके परिवार का अंग तो हूं ही। आपके परिवार में कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कड़ी नहीं बन सकी। वहां ऐसी कड़ी बने बिना भी सदस्य रहूंगी।"

"तो यह आय बढ़ाने से क्या लाभ है? तुम्हारी अकेली का निर्वाह तो बहुत कम में भी चल सकता है।"

"मैं गीता में पढ़ रही हूं कि सबको यज्ञरूप काम करना चाहिए। मैं द्रव्य-यज्ञ करूंगी और उसके लिए अपनी सामर्थ्य को बढ़ाने की योजना बनाई है।"

"क्या यज्ञ करोगी?"

"अभी निश्चय नहीं किया। एक वर्ष का लाभ-हानि का चिट्ठा निकल जाए तो वह योजना भी बना सकूंगी।"

इसके उपरान्त वह पिता के घर में आने-जाने लगी। अभी वर्ष समाप्त नहीं हुआ था कि कलकत्ता के कारखाने में हड़ताल हो गई और परिवार में बंटवारे का आयोजन हो गया।

मोहिनी भाभी जब आई थी तब वह विधवा के रूप में अपनी सास के घर में रहती थी। वह जब अपनी मां के घर में आने-जाने लगी थी तो मोहिनी से उसका सम्पर्क बना था। उसे मोहिनी एक हंसमुख, उदार और स्वतंत्र विचार की स्त्री समझ आई थी। उसे उसमें किसी प्रकार का दोष प्रतीत नहीं हुआ था।

परन्तु यह सहचारिता कुछ अधिक काल तक नहीं रह सकी थी। कारखाने के कर्मचारियों ने हड़ताल का नोटिस दिया तो कान्ति और इसकी बहू घर छोड़ दल-कार्यालय में चले गए थे। इसके उपरान्त जब उसका पिता दिल्ली जाने लगा तो उसकी मां भी जाने को तैयार हो गई। स्नेह को अपने भाई और भावज से मिले कई वर्ष हो चुके थे। उसने दिल्ली चलने का विचार बना लिया। रजनी ने सुना तो वह भी तैयार हो गई। उसका विचार था कि यदि बंटवारा हुआ तो वह अपना धन दिल्ली में ही कहीं लगा देगी और वहां रहती हुई उससे किसी प्रकार के यज्ञ की योजना बनाएगी।

जब सब चलने लगे तो मोहनलाल ने बिहारीलाल को भी साथ ले चलना चाहा। उसके कालेज में भी छात्र हड़ताल करने का विचार कर रहे थे।

बिहारीलाल मां के साथ उसके कमरे में टिक गया तो रजनी ने अपने लिए पृथक् कमरा लेने की इच्छा परिवार के कर्ता के सामने उपस्थित कर दी। भागीरथ ने उसकी मांग सुनी तो पूछ लिया, "रजनी, मां से पृथक् किसलिए रहना चाहती हो?"

"मैं यहां एक लम्बे काल के लिए रहने आई हूं। यदि तो बंटवारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है तब भी और यदि नहीं होता तब भी। मैं अपनी सम्पत्ति से किसी प्रकार का धर्मार्थ कार्य करना चाहती हूं। इसके लिए यहां दिल्ली में रहकर आपकी सम्मति से ही कुछ करूंगी।

"साथ ही मैं एकान्तवास कर रही हूं और उसके लिए सबसे ऊपर की मंज़िल के कमरे में रहना ठीक ही प्रतीत हो रहा है।"

"वहां गर्मी-सर्दी अधिक होगी।"

"मैं उसमें अपने को गरम और ठण्डा करने का प्रबन्ध कर लूंगी।"

"तो ठीक है।"

बंटवारा होने से पूर्व ही रजनी ऊपर की मंज़िल पर कमरे में चली गई थी।

यहां पहुंचने के दूसरे दिन ही वह अपनी मामी भगवती से मिलने गई तो वहां उसे मामा का इकलौता लड़का कमलकिशोर मिल गया। वह उसे कई वर्ष के उपरान्त मिली थी। अब उसे वह समझदार और सभ्य-सुशील समझ आया।

कमलकिशोर एम॰ ए॰ फिलॉसफी की परीक्षा दे चुका था और परिणाम घोषित होने की प्रतीक्षा में था। वह रजनी के विषय में जानता था कि विधवा हो चुकी है। इससे उसके मन में फूफी की लड़की, बहिन, के लिए भारी सहानुभूति थी।

"कमलजी, आजकल क्या करते हैं?"

"मक्खियां मारता हूं। कुछ काम नहीं। परीक्षा-फल की प्रतीक्षा में हूं।"

"पीछे क्या करने का विचार है?"

"विचार है कि कुछ न करूं। एक 'थीसिस' लिखा है। उसे ठीक-ठाक कर पी-एच॰ डी॰ के लिए उपस्थित कर दूं। पिताजी का विचार है कि बहुत अच्छा काम हुआ है और मुझे डॉक्टरेट की उपाधि अवश्य मिल जाएगी।"

"तो आपने एम॰ ए॰ की परीक्षा के पहले ही 'डाक्टरेट' के लिए कार्य आरम्भ कर दिया था?"

"हां।"

"यह उलटी गंगा बहाई है?"

"मां कहती है कि मेरे जन्मकाल से ही ऐसा हो रहा है। वह कहती थीं कि मैं पैदा भी उलटा ही हुआ था। इसी कारण मां के 'ऑपरेशन' हुआ था और परिणाम यह हुआ कि घर में केवल मैं ही हूं; कोई सगा बहिन-भाई नहीं हुआ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो डॉक्टर बनने तक बेकार रहोगे?"

"नहीं, मां का विचार है कि तब तक परिवार का कार्य करूं।"

"परिवार का कार्य? वह क्या है? मामांजी तो प्रोफेसरी करते हैं; साथ ही कुछ व्यवसाय भी करने लगे हैं?"

कमल हंस पड़ा। भगवती इनको हंसते देख बाहर इनके पास आ बैठी। उसने कहा, "मैं ललिता से कह आई हूं कि गरम-गरम पकौड़े बना चाय ले आए। उससे पहले वह कोका कोला ला रही है।"

"वाह मां," कमल ने कह दिया, "बस कोका कोला ही?"

"तो और क्या कहते हो?"

"रजनी आई है। कुछ आइसक्रीम, फ्रूटक्रीम, कुछ बढ़िया वस्तु बनवातीं।"

"विचार तो आया था, परन्तु आइसक्रीम बनने में घंटाभर लग जाएगा। तब तक कोका कोला तो घर पर फ्रिज में रखा हुआ है। पर हंस क्यों रहे थे?"

इसपर तो कमलकिशोर फिर हंसा और बोला, "मैंने इसे बताया है कि मां परीक्षा-फल के उपरान्त परिवार का कार्य करने को कह रही है। इसपर रजनी पूछने लगी है कि क्या पिताजी ने कोई व्यवसाय कर रखा है जिसे मैं चलाऊंगा? अब तुम आ गई हो तो तुम ही इसे बता दो कि क्या कार्य करने को कह रही हो।"

इसपर तो मां भी हंसने लगी। रजनी इसका अर्थ न समझते हुए प्रश्नभरी दृष्टि से उनकी ओर देखती रही।

भगवती ने बताया, "इसके पिता कहते हैं कि इसका थीसिस सर्वथा नवीन पद्धति पर है। इसने, भारतीय दर्शनशास्त्रों की एकता पर प्रबन्ध लिखा है। वह बहुत सुन्दर है। वे चाहते हैं कि उनको अब दर्शनशास्त्रों पर कुछ एक ग्रंथों की रचना करनी चाहिए। इसके लिए इस नौकरी की आवश्यकता नहीं। इसके खाने-पहनने के लिए इसके पिता ने पर्याप्त जमा कर रखा है।

"पर मैं कह रही हूं कि इसके अतिरिक्त एक कार्य इसे करना चाहिए।"

"मामी, वही तो पूछ रही हूं कि वह क्या काम है?"

"मैंने इसको कहा है कि एक साध मेरी भी पूरी कर दे। घर में किसी बच्चे की चीं-चीं सुने बहुत वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। मैं चाहती हूं कि यह शीघ्र विवाह कर ले और दो-चार बच्चे उत्पन्न कर दे।"

अब तो रजनी भी हंसने लगी। फिर एकाएक कमल से पूछने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लगी, "भैया, है कोई भाभी दृष्टि में?"

"अभी तके तो कोई नहीं। यह काम तो मां ने कल ही बताया है। मैं अभी तक तो पुस्तकों के पृष्ठ ही उलटता रहा हूं। अब विचार कर रहा हूं कि अपने आसपास की लड़कियों को भी देखने लगूं।"

"पर यह काम तो मामी के करने का है।"

"ये क्या करेंगी? मैं स्वयं यत्न करूंगा और मां से जल्दी और अच्छी लड़की ढूंढ़ सकूंगा।"

अब तीनों हंसने लगे। जब रजनी चाय इत्यादि लेकर जाने लगी तो बोली, "कमलजी, अब आप कोठी पर आइएगा।"

"आपके चाचाजी से तो मिला हूं। वे भी एक विचित्र जीव हैं।"

"क्या विचित्रता है उनमें?"

"वे एक व्यवहार-कुशल दार्शनिक हैं। यह संयोग विरलों में ही होता है।"

"यह बात तो है कि वे व्यवहार-कुशल हैं। उन्होंने बीस वर्ष में तीन लाख की सम्पत्ति को आठ करोड़ बना दिया है।"

"आठ करोड़!"

"हां, बीस वर्ष में! और हम सबके खाने-पहनने, सुख-सुविधा-पूर्वक रहने का व्यय निकालकर।"

"कितने लोग परिश्रम करते रहे हैं?"

"कार्य करने वालों की संख्या भी बढ़ती गई है। आरम्भ में बीस व्यक्ति थे। अब चालीस हैं। ये तो परिवार के सदस्य हैं और हमारे कार के विभिन्न कामों में दो सहस्त्र से अधिक कर्मचारी कार्य करते हैं।"

"मैं तो उनकी कनाट सरकस वाली हवेली देखने गया था। जब हवेली की लागत और आय का वृत्तान्त पूछा तो उन्होंने सब गिनकर सुना दिया। एक व्यापारी की भांति सब कुछ उनकी ज़बान पर था। गिनगिनाकर पता चला कि अढ़ाई प्रतिशत लाभ से अधिक नहीं होगा। इसपर मैंने पूछ लिया, 'इतने कम लाभ की वस्तु बनवाने में क्या गुण देखा है आपने?'

"वे बोले, किसी युवती के कानों में कर्णफूल और उनमें हीरा लगा देखा है अथवा नहीं?"

"वे तो माताजी के पास भी हैं। कभी विवाह अथवा सभा-समारोह में जाती हैं तो पहनकर जाया करती हैं।'"

"'पहनने से क्या होता है?' उन्होंने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"'माताजी के मुख की शोभा बढ़ जाती है।'

"'तो बस, उन पांच हज़ार की लागत के हीरों का यही लाभ है? इसी प्रकार परिवार के गले में मैंने तीन करोड़ रुपये का हीरे से जड़ित हार पहना दिया है। इससे परिवार का मुख देदीप्यमान हो उठेगा।'

"इतना बताते-बताते लालाजी की आंखों की ज्योति दुगुनी हो गई थी। मैं समझ गया कि लालाजी व्यावहारिक व्यापार के क्षेत्र से निकल दार्शनिक क्षेत्र में जा पहुंचे हैं।"

रजनी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो भूषण पहनना दार्शनिकों का स्वभाव है?"

"पहनना नहीं, रजनी, पहनने की अनुभूति दार्शनिकों की है। मैंने अपना थीसिस लिखा और पिताजी को सुनाया और जब वे मेरी युक्तियां सुनते हैं तो उनकी अआंखों में भी वही चमक उत्पन्न हो उठती है जो भागीरथलालजी की आंख में हवेली की बात बताते हुए थी।

"हम जब कोई गूढ़ बात करते हैं और उसे अपने विपक्षी को समझा सकते हैं तो हमारे मन में अत्यानन्द अनुभव होता है। मैं समझता हूं कि वह किसीके लाखों पैदा करने से कम नहीं होता।"

रजनी को कमल की सब बातें जनसाधारण से विलक्षण प्रतीत हुईं। इसपर भी वह विलक्षणता दुःखद नहीं थी; आनन्दोत्पादक ही लग थी।

रजनी उस दिन कोठी को लौटने लगी तो कमल उसे पिताजी की मोटर में छोड़ने चल पड़ा। मोटर स्टार्ट की तो उसे एक बात स्मरण आ गई और उसकी हंसी निकल गई।

"'अब कमल भाई किसलिए हंसे हैं?"

"यह याड़ी मुझे मिल गई है।"

"किसलिए?"

"विवाह के अर्थ 'गर्ल हंटिग' के लिए।"

"तो किसी लड़की का अपहरण करिएगा?"

"अपहरण नहीं। बात यह है कि दिल्ली एक बहुत बड़ा नगर है। बिना सवारी के इसमें एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना बहुत समय लेता है। मैंने माताजी से कहा, 'तो कोई लड़की ला दो। मैं विवाह कर सन्तान उत्पन्न करने का यत्न करूंगा।'

"इसपर वे कहने लगीं, 'अपने मनपसंद की ढूंढ लो।'

"इसपर मैंने कहा, 'तो माताजी, एक मोटर गाड़ी ले दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली जैसे विशाल नगर में उपयुक्त लड़की ढूंढ़ने के लिए भाग-दौड़ तो करनी ही पड़ेगी।'

"माताजी ने पिताजी से कहा और उन्होंने अपनी गाड़ी मुझे दे दी है। कभी-कभार ही वे इसे अपने प्रयोग में लाते हैं। प्रायः मैं ही इसे दौड़ाता फिरता हूं।"

गाड़ी चल पड़ी थी। विश्व-विद्यालय-क्षेत्र से अलीपुर रोड समीप ही है। कोठी का मार्ग मोटर से चार-पांच मिनट का था। रजनी कमल के साथ मोटर की अगली सीट पर बैठी थी। उसने पूछ लिया, "कब से भाग-दौड़ कर रहे हो?"

"गाड़ी तो कल ही मिली है और अभी भाग-दौड़ आरम्भ नहीं हुई। तनिक ऋतु ठीक आ जाए तो अपना कार्य आरम्भ कर सकूंगा।"

वे कोठी में पहुंचे तो मोटर को एक ओर खड़ी कर कमल फूफी एवं फूफा से मिलने गया।

इस समय तक रजनी ने भागीरथ चाचाजी से सबसे ऊपर की छत पर कमरा ले लिया था। कमरा लेते ही उसने कमरे के बाहर हाथ से लिखकर लगा दिया था, 'पुरुषों का आना वर्जित'।

कमल रजनी का कमरा देखने के लिए उसके साथ चलने लगा तो रजनी ने पूछ लिया, "माताजी से मिलिएगा?"

"नहीं, पहले तुम्हारा कमरा देखना चाहता हूं।"

"क्या करेंगे देखकर?"

"कभी मिलने के लिए आया तो बिना किसीको कष्ट दिए बहिन के कमरे में पहुंच जाया करूंगा।"

"हां, देख सकते हैं।" वह उसे ऊपर की मंज़िल पर ले गई और कमरे के बाहर 'पुरुषों का आना वर्जित' लिखे पट्ट के सामने खड़ा कर दिया। कमल उस पट्ट को पढ़ अभी मतलब समझ ही रहा था कि रजनी ने कहा, "यह मेरा कमरा है और आपकी जाति के लोग यहां तक ही आ सकते हैं।"

कमल देखता रहा और एकाएक समझ बोला, "ठीक है। मैं बिना स्वीकृति भीतर नहीं आऊंगा।"

"तो चलिए। आपको माताजी के कमरे में ले चलूं।"

कमल उसके साथ नीचे की मंज़िल पर फूफी के कमरे में जा पहुंचा। इसके उपरान्त कमल प्रायः नित्य ही आने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2

कमल को आते हुए एक सप्ताह के लगभग हो चुका था कि मोहिनी कान्ति के साथ दिल्ली आ पहुंची। उस रात को वह रजनी से मिल नहीं सकी। रजनी कमल के साथ सायंकाल के शो में पिक्चर देखने गई थी। तत्पश्चात् वे नई दिल्ली के रेस्टोरां में रात का भोजन कर ही घर पर आए थे। रजनी आई और मां से मिलने गई तो उसने बताया था, "कान्ति और मोहिनी भी आ गए हैं।"

"क्यों?"

"कलकत्ता उनको भी गरम प्रतीत होने लगा था।"

"पर वे तो शासक दल के सदस्य हैं?"

"कान्ति बताता है कि दल उसके विपरीत हो गया है।"

"हो सकता है। परन्तु यहां पर चाचाजी कह रहे थे कि बट-वारा कमेटी भी उसके विपरीत हो रही है।"

"तो धोबी का कुत्ता न घर का, न घाट का।"

"यह स्थिति तो बहुत भयंकर होगी।"

"अभी मैंने उनको साथ के कमरे में ठहरा दिया है। मेरा विचार है कि वे सो गए हैं। मोटर गाड़ी से आए हैं और बहुत थके होने से शीघ्र ही सो रहे हैं।"

अगले दिन कान्ति अभी सो ही रहा था कि मोहिनी स्नानादि से निवृत्त हो भागीरथजी से मिलने चली गई।

भागीरथ, जब से बंटवारे का कार्य आरम्भ हुआ था, अपने व्यव-साय का काम प्रातःकाल देख लेता था। उसने अपने भाग की सम्पत्ति से हवेली लेने का विचार किया हुआ था। वह तीन करोड़ रुपये की लागत की थी। उसके परिवार में पांच भाग थे। तीन बच्चे थे और दो पति-पत्नी थे। इतने से काम नहीं बनता था। इस कारण वह कुछ अन्य सदस्यों को अपने साथ मिलाने वाला था। रजनी तैयार हो गई थी। मोहनलाल स्नेह और बिहारीलाल भी सम्मिलित हो गए थे। अभी भी चार भागीदार और चाहिए थे। वह यत्न कर रहा था कि सोमदेव तथा परमानन्द के परिवार के लोग भी मिल जाएं। सोमदेव के पांच भाग थे। उसकी पत्नी और एक लड़की तथा दो छोटे लड़के थे।

अतः वह एक पार्टनरशिप की कम्पनी बनाने वाला था और उसके नाम कनाट सरकस वाली हवेली लेने का विचार रखता था। इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के प्रबन्ध के लिए उसने प्रातः छः बजे से आठ बजे का समय रखा हुआ था। उसमें कुल व्यापार योग्य फ्लैट बीस थे। वे फ्लैट वह दो-दो सहस्र रुपये मासिक पर भाड़े पर दे रहा था और पांच-पांच वर्ष का भाड़ा अग्रिम ले रहा था। इनके अतिरिक्त ऊपर की मंज़िल पर दस फ्लैट छोटे और व्यापार के लिए थे। इनका भाड़ा डेढ़-डेढ़ हज़ार रुपया प्रति मास भी वह पांच-पांच वर्ष के लिए पेशगी ले रहा था। बीस घरेलू फ्लैट थे। ये पांच-पांच सौ रुपया महीना पर दे रहा था और इनका एक-एक वर्ष का भाड़ा अग्रिम ले रहा था। इस प्रकार वह भाड़े की अग्रिम रकम बटोर रहा था और उसका विचार था कि इस प्रकार वह लगभग पचास लाख रुपये से ऊपर एकत्रित करने की योजना रखता था। उस पर आय कर देकर दस लाख के लगभग बचने वाला था और उससे वह फरीदाबाद में बिजली की मोटरों का कारखाना चालू करना चाहता था। इसके लिए लाइसेंस इत्यादि लेने का प्रबन्ध हो रहा था।

उस दिन भागीरथ प्रभी कुछ फ्लैट भाड़े पर लेने वालों से बातचीत कर अवकाश पाया ही था कि मोहिनी आ गई। उसकी आंखें सूजी हुई थीं और माथे पर मर्करी क्रोम लगी पट्टी बंधी हुई थी।

भागीरथ ने उसे देखा तो पूछ लिया, "यह क्या हुआ है, बहू?"

"चाचाजी, आपके पुत्र ने पीटा है।"

"पर क्यों?"

"तो बाबाजी ने आपसे कुछ नहीं कहा?"

"कहा है कि तुम यहां किसी प्रकार की नौकरी की खोज करना चाहती हो और जब तक तुम्हारे रहने का अपना प्रबन्ध नहीं हो जाता, तुम कोठी में ही रहना चाहती हो।"

"तो आपकी क्या आज्ञा है?"

"बाबाजी ने तुम्हारी सिफारिश की है और मैं उनकी बात टाल नहीं सकता।"

"चाचाजी, मैं आपकी जीवनभर कृतज्ञ रहूंगी। मैं चाहती हूं कि मुझे रजनी बहिन के साथ रहने की स्वीकृति दी जाए।"

"यह तो तुम रजनी से ही पूछ सकती हों। वह कमरा दो के रहने का है और उसने कमरे के बाहर लिखकर लगा रखा है कि पुरुषों का आना वर्जित है।"

"यही मैं चाहती हूं।"

"तो कान्ति से लड़ पड़ी हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"लड़ाई का सर्टिफिकेट यह कनपटी पर मुक्के की चोट है।"

"ओह! तो उसने पीटा है?"

मोहिनी मुस्कराते हुए बोली, "पर चाचा जी, पहल मैंने की थी और यह तो मेरी पहल का प्रतिकार ही है। इसका बदला मैं नहीं ले सकी। मैं उनसे न त दुर्बल सिद्ध हुई हूं। अब पुनः यह युद्ध खुद चलाने की सामर्थ्य नहीं। इस कारण रजनी के साथ जाकर रहना चाहती हूं।"

"यह तुम स्वयं उससे पूछ लो। मुझे इसमें कुछ भी अनुचित प्रतीत नहीं हो रहा।"

मोहिनी उसी समय मकान की ऊपरी मंज़िल पर रजनी के कमरे में जा पहुंची। रजनी एक चौकी पर पालथी मारे ध्यानावस्थित बैठी थी। मोहिनी वहां पहुंची तो भी रजनी का ध्यान भंग नहीं हुआ। वह री को पूजा में लीन देख उसकी चौकी के समीप भूमि पर ही बैठ गई।

रजनी को पूजा में पन्द्रह मिनट और लगे। उसने आंखें खोलीं तो वह मोहिनी को समीप भूमि पर बैठे देख चौकी से उठ बोली, "भाभी, कुर्सी पर बैठो। भूमि पर बैठी शोभा नहीं देतीं।"

रजनी उठी और उसके साथ कमरे में रखे सोफा पर जा बैठी।

"भाभी, यह क्या हुआ है?"

"तुम्हारे भाई साहब से झगड़ा हो गया है। इसी कारण रजनी बहिन से भीख मांगने आई हूं।"

"राम! राम!! यह क्या कह रही हो? भाभी, कहो क्या चाहती हो?" रजनी का विचार था कि कुछ व्यय के लिए रुपये मांगने आई है। कदाचित् कलकत्ता लौट जाने के लिए मांगती होगी।

परन्तु मोहिनी ने कहा, "बहिन, दो बातें चाहती हूं। एक तो मुझे अब भाभी मत कहा करो। मैंने तुम्हारे भाई साहब को तलाक दे दिया है।"

"कैसे तलाक दे दिया है?"

"जैसे विवाह किया था। एक दिन दल के कार्यालय में अपने कमरे में बैठी मैं आपके भाई साहब को कुछ समझा रही थी कि उनकी आंखों में काम-लालसा दिखाई दी। मैं बताती-बताती चुप कर गई और हमारा विवाह-सम्बन्ध हो गया।"

रजनी हंस पड़ी। मोहिनी ने पूछ लिया, "हंसी क्यों हो, रजनी बहिन?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"यह तो पशुओं का-सा व्यवहार लगा था, परन्तु तुम वैसी कभी दिखाई दी नहीं थी।"

"वास्तव में मैं थी सर्वथा पशु ही, परन्तु जो रात हुआ वह भी सुन लो। कलकत्ता से चलते समय कुछ ऐसी घटना घटी थी कि मैं जीवन में एक मोड़ पर आ खड़ी हुई अनुभव करने लगी थी। पूर्ण मार्ग में मैं विचार करती आ रही थी कि मेरा आपके भाई साहब से क्या सम्बन्ध होगा? दो दिन के मनन पर भी निर्णय नहीं कर सकी थी। कल आने पर मैं आपके घर के पुरखा बाबाजी से मिली। उनसे आधा घण्टाभर बातचीत हुई और मैं मन में निर्णय करने में सफल हो गई कि मुझे आपके भाई साहब को ,तलाक देना है।

"मैं नहीं चाहती थी कि रात उनके कमरे में सोऊं, परन्तु अन्य कोई स्थान नहीं था। रात के भोजनोपरांत मैं थके होने के कारण सो गई थी। रात के दो बजे के लगभग आपके भाई साहब मेरे पलंग पर आए तो झगड़ा आरम्भ हुआ और फिर मुक्का-मुक्की में समाप्त हुआ। वे मुझे पीटने में सफल हुए और मैं उनके पंजे से बाहर भाग लॉन में जा खड़ी हुई। शेष रात वहां लॉन में अंधेरे में बैठी और मुख से कपड़ा गरम कर इस चोट पर सेंक करती हुई व्यतीत की है। प्रातः पांच बजे माताजी के कमरे का द्वार खुला तो मैं वहां जा पट्टी बांध सकी थी।"

"माताजी ने पूछा नहीं कि यह क्या हुआ है?"

"पूछा था। मैंने सब बात ठीक-ठीक बता दीं है। वे बोलीं कि मैं चाचा भागीरथजी से कोठी में पृथक् कमरे के लिए पूछ लूं। मैं चाचा-जी के पास गई थी। बाबाजी ने मेरी सिफारिश की है और मुझे वे पृथक् कमरा देने के लिए तैयार थे, परन्तु मैंने बहिन रजनी के साथ रहने की स्वीकृति मांगी तो वे बोले कि उनकी ओर से आपत्ति नहीं, पर स्वीकृति रजनी बहिन ही देंगी।"

रजनी ने कहा, "कमरा दो प्राणियों के लिए है। यदि बाबा और चाचा भागीरथजी आपत्ति नहीं करते तो तुम आ सकती हो।"

मोहिनी जब से इस कोठी में आई थी, वह इस परिवोर के सदस्यों के व्यवहार पर चकित हो रही थी। बाबा ब्रजलाल ने उसको कोठी में रह सकने की स्वीकृति दिलवाई है। चाचा भागीरथलाल ने कहा है कि बाबाजी का कहना उसके लिए प्रमाण है। स्नेहलता, उसकी सास, ने भी पिछले सायंकाल तो यह ही कहा था कि वह अपने पति की पत्नी बने बिना उसकी कुछ नहीं, परन्तु प्रातः उसकी कनपटी को सूजा हुआ देख वह द्रवित हो उठी थी और बोली, "वह ऐसे पुत्र को जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देने पर लज्जित है जो औरतों को पीटने में शौर्य दिखाता है।"

अब रजनी ने कह दिया कि बाबा और चाचा कहते हैं तो वह उसे अपने कमरे में रखने को तैयार है। वह समझ रही थी कि परिवार में संसक्ति है। ये परस्पर अपने को सम्बद्ध पाते हैं। इसपर उसे अपनी मां की बात स्मरण आ गई। वह उस समय पार्टी कार्यालय में जाकर रहने लगी थी। मां उसका पता पा उसे मिलने गई थी। जब मोहिनी ने मां को बताया था कि वह यहां रहेगी तो उसने भी एक बात कही थी, "यद्यपि हम तुमसे बहुत आशा करते थे, परन्तु मेरा तुमको आशीर्वाद ही होगा कि जहां रहो, सुखी रहो।"

वह मन में विचार करती थी कि यह अपनी लड़की से स्नेह और सहानुभूति क्या बुर्जुआ प्रवृत्ति की सूचक है? कभी वह इसे ऐसा ही समझती थी, परन्तु अब कम्युनिस्ट विचारधारा की धूरि झड़ जाने से उसे परिवार के इस व्यवहार में तथ्य प्रतीत होने लगा था।

रजनी मां से अपनी एक बात बताने जा रही थी, अतः वह उठी और नीचे चलने को तैयार हो गई। मोहिनी ने कहा, "तो मैं अपना सूटकेस ले आऊं?"

"हां। मैं समझती हूं कि मोहिनी भाभी के लिए यह ही ठीक है।"

मोहिनी ने उसके साथ-साथ नीचे उतरते हुए पूछ लिया, "तो अब भी मैं भाभी हूं क्या?"

रजनी ने मुस्कराते हुए कहा, "हां। इतना अन्तर हो गया है कि रूठी हुई भाभी हो।"

मोहिनी को परिवार की इस भावना से सुख मिल रहा था इस कारण शब्दों पर विवाद न करते हुए मौन रही।

नीचे स्नेह के कमरे में ऊंचे-ऊंचे झगड़ा हो रहा था। कान्तिलाल मां को रक्त से लथपथ रूमाल दिखाकर बता रहा था, "पहले उसने मुक्का लगा मेरी नाक फोड़ी थी।"

मां कह रही थी, "तुमने अवश्य उसकी इच्छा के विपरीत उसका प्रयोग करना चाहा होगा।"

"पर मां, वह इसी मतलब के लिए तो है।"

"वह कोई मेज़-कुर्सी थी क्या? वह भी तुम्हारी भांति आत्मा रखती है।"

"वह क्या होती है?" अनायास ही उसके मुख से निकल गया।

"तुम्हारा सिर होता है। कैसी मूर्खों की-सी बातें करने लगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो?"

इस समय रजनी और मोहिनी कमरे में प्रविष्ट हुईं। मां-पुत्र दोनों चुप कर गए। बात रजनी ने कही, "सुना है कि चाचाजी ने भाभी को मेरे कमरे में रहने की स्वीकृति दे दी है।"

"उनको यह बताकर पूछो कि पति-पत्नी दोनों लड़ पड़े हैं।"

"माताजी, मैंने यह बता दिया है। यह भी बताया है कि किस कारण झगड़ा हुआ है?"

"मैं भी इसे यह बता रही थी कि काल में परिवर्तन हो गया है। लड़कियां अब घर की फर्नीचर नहीं रहीं। वे घर का सजीव अंग हैं। पर इस जड़बुद्धि कम्युनिस्ट को मेरी बात समझ आती ही नहीं।"

"पर रजनी बहिन," कान्ति ने उससे पूछ लिया, "चाचाजी से पूछा भी है अथवा इस झूठी औरत के कहने पर विश्वास कर लिया है?"

रजनी ने प्रश्नभरी दृष्टि से मोहिनी की ओर देखा तो मोहिनी ने कह दिया, "रजनी बहिन पूछ सकती हैं। मैं झूठ नहीं कह रही।"

इस पर स्नेह ने कहा, "रात भागीरथ ने मुझसे पूछा था, 'भाभी! मोहिनी बाबा की स्वीकृति ले आई है कि इस कोठी में रहे।'

"मैंने कहा था, 'वह कान्ति की पत्नी है। उसके साथ ही रहेगी। जब तुम कान्ति को यहां से निकालोगे तब ही वह जाएगी।"

"'नहीं, भाभी, उसने बाबा से बताया है कि वह कान्ति से लड़ पड़ी है।'

"'पर इस समय वह उसके कमरे में है।'

"'कान्ति के कमरे में रहे अथवा कमरे से बाहर रहे, यह उसके विचार करने की बात है। पर जहां तक इस कोठी का प्रश्न है, बाबा का कहना है कि उसे रहने दिया जाए।'"

कान्ति चुप हो गया। वह एक-दो क्षण तक मां का मुख देखता रहा। तदनन्तर वह कमरे से निकल गया। वह भागीरथ चाचा के कमरे की ओर चला गया था। मोहिनी कान्ति के कमरे में अपना सूटकेस लेने चली गई। रजनी ने मां को बताया, मां, मैं एक विशेष बात तुमसे करने आई हूं।"

"हां, तुम भी बताओ।"

"जिस दिन से मैं मामांजी के घर गई हूं, कमल मुझसे ऐसे मिल रहा है मानो कि वह मुझसे विवाह की इच्छा करने लगा है।"

स्नेह स्तब्ध बैठी रह गई। रजनी इस सूचना की प्रतिक्रिया मां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के मुख पर देखने लगी थी। वह चुप थी। आखिर मां ने पूछ लिया, "उसने प्रस्ताव किया है?"

"मुख से तो नहीं, परन्तु उसका पूर्ण व्यवहार ऐसा है मानो कि वह 'कोर्टशिप' कर रहा है। किसी भी दिन वह प्रस्ताव कर सकता है।"

"और तुम क्या समझती हो कि तुम्हें क्या करना चाहिए?"

"वह मामा का लड़का है। प्रथा में वह भाई कहलाता है। अब उसने बहिन कहना छोड़ केवल नाम से सम्बोधन करना आरम्भ कर दिया है। मुझे यह बुरा प्रतीत नहीं हो रहा।" रजनी भूमि की ओर देखते हुए कह रही थी।

स्नेहलता मौन रजनी का मुख देखती हुई बैठी रही। मोहिनी कमरे से अपना सूटकेस उठाए हुए आई और रजनी से वोली, "मैं ऊपर कमरे में जा रही हूं।"

"भाभी, इसे रख नीचे आ जाओ। प्रातः के अल्पाहार का समय हो गया है।" मोहिनी गई तो रजनी ने मां से कहा, "मां, इसे ठीक नहीं समझती न?"

अब स्नेह ने कह दिया, "मैं देख रही हूं कि पारिवारिक बन्धन ढीले हो रहे हैं। परस्पर वह स्नेह नहीं रहा जो पहले हुआ करता था। घर के पुरखा का यह कहना है। यों तो भाई-भाई में सम्पत्ति पर झगड़े पहले भी होते दिखाई देते थे, परन्तु बहिन-भाई तथा पति-पत्नी में सदा स्नेह का व्यवहार रहता था। साथ ही झगड़ा अपवाद होता था, नियम गहीं। अब तो झगड़ा नियम बन गया है और परस्पर स्नेह अपवाद।

"इसी प्रकार मामा के लड़के को भाई मानना अपवाद ही मानना पड़ेगा। देखो, रजनी! हमने तुम्हारा विवाह किया था। भगवान को वह स्वीकार नहीं था। अब तुम विचार कर प्रबन्ध कर सकती हो अपने मन की बात विचार कर लो। जो ठीक समझ आए करो।"

स्नेह ने घड़ी में समय देखा। नौ बज गए थे। वह उठी और रजनी के साथ अल्पाहार लेने के लिए खाने के कमरे की ओर चली गई।

मोहिनी भी वहां आ गई थी। कान्ति और भागीरथ वहां पहले ही बैठे थे। अन्य परिवार के सदस्य वहां आ रहे थे। बच्चे तो खा-पीकर स्कूल और कालेज जा चुके थे। बड़ी आयु के लोग ही अल्पाहार ले रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3

सोमदेव, बंटवारा कमेटी का एक सदस्य, बम्बई नवलकिशोर से हिसाब-किताब लेने गया था। यहां नवल उसे हिसाब की किताबें दिखा नहीं रहा था। नवल का विचार था कि वह भी भागीरथ की भांति उसकी बात का विश्वास कर लेगा। वह विश्वास करता प्रतीत भी हो रहा था।

नवल ने उसे पिछले वर्ष के आय-व्यय का चिट्ठा दिखाया था। साथ ही कह दिया, "मैं आज की तारीख तक आय-व्यय का चिट्ठा तैयार करा रहा हूं।"

"मैं चाहता हूं," सोमदेव ने कहा, "कि आज की तारीख तक किताबों पर हस्ताक्षर हो जाएं जिससे आज तक का हानि-लाभ तो परिवार का हो और उसके उपरान्त का तुम्हारा।"

"और यदि यह बम्बई वाला काम मैं न लूं तो?"

"तो जो भी लेगा, उसका। उस अवस्था में बंटवारा कमेटी इस पर अधिकार कर लेगी।"

"मैंने अभी निश्चय नहीं किया कि मैं यह काम लूंगा अथवा नहीं।"

"तो निश्चय कर लो। कितनी देर में निश्चय करोगे? तुम्हें तो निश्चय करने में देर नहीं लगानी चाहिए। तुम इसके विषय में सब कुछ जानते हो।"

"जी, जानता हूं। वह सब कुछ बता दिया है। यह वर्ष मन्दी का चल रहा है और मैं बता नहीं सकता कि वर्तमान काल में क्या स्थिति होगी।"

"यदि तुम वर्तमान स्थिति को नहीं जानते तो मुझे जान लेने दो। मैं तुम्हारी केशबुक, बैकबुक और लेजरबुक देखना चाहता हूं।"

"किताबें ऑडिटर के पास गई हैं। जब आएंगी तब ही दिखा सकूंगा।"

सोमदेव समझ गया कि यह व्यक्ति सीधे हाथ वश में, नहीं आएगा। अतः उसने कह दिया, "देखो नवल, मैं यहां बहुत दिन तक बैठा नहीं रह सकता। यदि तुम नहीं दिखाओगे तो मैं दिल्ली लौट जाऊंगा।"

"दादा, यह तुम्हारे विचार करने की बात है। मेरा विचार है कि जैसा-कैसा काम यह है, इसे इसी प्रकार मुझे दे दो। इससे पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वर्ष की आय-व्यय का चिट्ठा और सम्पत्ति और देय का सन्तुलन-पत्र दिखा दिया है। उसी से कीमत लगा लो।"

"उससे तो इस काम में लगी सम्पत्ति तीस लाख रुपये हैं। पर मैं इस काम में लगी सम्पत्ति आंकता हूं साठ लाख रुपया। बताओ इतना दे सकोगे?"

नवल विचार करने लगा। उसने कुछ देर तक विचार किया और कह दिया, "यह बहुत अधिक है।"

"तो तुम बताओ, क्या देते हो?"

"मैं इसकी कीमत पचीस लाख देने का विचार रखता हूं।"

"तब ठीक है। मैं दिल्ली अन्य लोगों से विचार कर लूं। तब ही बता सकता हूं।"

"तो कर लो।"

सोमदेव उस होटल में चला आया जहां वह ठहरा हुआ था। उसने दिल्ली भागीरथ को टेलीफोन पर वहां की स्थिति का वर्णन कर कहा, "मेरी सम्मति है कि काम को ताले लगवा दूं। उसके लिए आवश्यक स्वीकृति मांग रहा हूं।"

भागीरथ का विचार था कि न्यायालय में गए बिना निर्णय होना चाहिए। उसने कहा, "मैं नवल को टेलीफोन करता हूं। तब तक तुम किसी अच्छे वकील से सम्मति कर लो कि यदि वह न माने तो क्या किया जाना चाहिए।"

सोमदेव को इस व्यवस्था से सन्तोष नहीं था। उसने बताया भी कि वह मान नहीं रहा। भागीरथ ने उसे शान्त रखने के लिए कह दिया, "मैं रात आठ बजे के उपरान्त टेलीफोन करूंगा। तुम होटल में ही रहना।"

नवल से टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित होते ही बात हो गई। भागीरथ ने कहा, "नवल, हिसाब-किताब क्यों नहीं दिखाते?"

"बिना दिखाए फैसला नहीं हो सकता क्या?"

"हो सकता है। तुम दिल्ली चले आओ। यहां कुछ लोग हैं जो तुम्हारा काम लेना चाहते हैं। वे बिना कागज़-पत्र देखे बोली-करने तैयार हैं। बताओ, तैयार हो?"

"कौन हैं वे?"

"तुम यहां आ जाओ। आने पर देख लोगे।"

"परिवार के हैं अथवा परिवार से बाहर के?"

'बाहर के भी हैं और परिवार के भी। इस पर भी प्राथमिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
परिवार वालों को और दाम निश्चय हो जाने पर प्राथमिकता तुमको दी जाएगी। परन्तु दाम बोली से निश्चय होगा।"

"भागीरथ, तुम सोम को बुला लो। मैं भी सायंकाल के हवाई जहाज़ से आ रहा हूं।"

"सोम दिल्ली आ रहा है। वह तुम्हारे काम पर अधिकार पाने के लिए दिल्ली में अदालती कार्यवाही करना चाहता है। पर यदि तुम आ जाओ तो बात घर पर ही निश्चय हो जाएगी।"

नवल दिल्ली आया, परन्तु सोम वहां ही डटा रहा। उसे विश्वास था कि नवल नहीं मानेगा और किसी प्रकार की धोखाधड़ी हो रही है। सोम ने एक के० मनचरजी वकील से बात की और अगले दिन दस बजे सब-जज के यहां दावा दायर कर दिया। उसमें उसने यह मांग की कि परिवार की सम्पत्ति के बंटवारे के लिए भागीरथलाल एण्ड ब्रदर्ज़ फर्म के मुद्रण, प्रकाशन और पुस्तक-विक्रेता विभाग को ताले लगा दिए जाएं।

इस पर अदालत से नवल को नोटिस जारी हो गया कि वह अगले दिन अदालत में उपस्थित होकर यह बताए कि क्यों ताले न लगाए जाएं?

नवल दिल्ली में टाल-मटोल कर रहा था। वह पचीस लाख दाम देने पर तैयार था, परन्तु सोमदेव का लड़का युधिष्ठिर दिल्ली आया हुआ था और वह बम्बई के किताबों वाले पूर्ण काम का साठ लाख देता था। भागीरथ का छोटा भाई कश्मीरीलाल तो पैंसठ लाख दाम लगाता था।

नवलकिशोर काम लेने में प्रतिस्पर्द्धा करने वालों से बातचीत कर रहा था। वह युधिष्ठिर से मिला और उसके साथ सांझेदारी में काम लेने की योजना बनाने लगा। इसी प्रकार वह कश्मीरीलाल से पृथक में बात करने लगा।

अगले दिन वह अभी भागीरथलाल को यह बता रहा था कि वह कश्मीरीलाल और युधिष्ठिर से मिलकर यह काम ले लेगा और वह उनसे शर्तें निश्चय कर रहा है। इस समय नवल को उसकी पत्नी के भाई नीलकण्ठ आयंगर का टेलीफोन आया कि बैंकों के खाते फ्रीज़ हो गए हैं और उसे नोटिस आया है कि वह अगले दिन सब-जज के समक्ष उपस्थित होकर यह बताए कि क्यों न उसके काम को ताले लगाए जाएं?

पहले तो नवल बहुत छटपटाया। क्रोध में वह भागीरथ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सोम को गालियां देने लगा, परन्तु शीघ्र ही वह शान्त हो गया और सोमदेव के लड़के युधिष्ठिर से मिलकर पैंसठ लाख पर काम मोल ले बैठा। अतः दोनों ही बम्बई इकट्ठे गए।

नवल को कोर्ट का समन नहीं मिला था और वह उपस्थित नहीं हुआ था। कोर्ट ने दो दिन उपरान्त की तारीख डाल दी। इसपर भी बैंकों के खाते बन्द कर दिए। तीसरे दिन युधिष्ठिर और नवल बम्बई भरा पहुंचे और दोनों में सांझेदारी का वचन-पत्न लिखा गया और सोमदेव को दावा उठा लेने पर विवश किया गया।

सोमदेव अपने लड़के के नवेल की सहायता पर आ जाने से निराश तो हुआ था, परन्तु वह चुप रहा। सोमदेव ने अदालत में उपस्थित हो बयान दे दिए कि नवलकिशोर ने काम परिवार से पैंसठ लाख में मोल ले लिया है। अतः वह हिसाब-किताब को ताले लगाने की मांग वापस लेता है।

सोमदेव दिल्ली लौट गया और युधिष्ठिर बम्बई ही रहा। सोम के मुकदमा वापस लेते ही नवल ने आंखें बदल लीं। वह "पार्टनरशिप डीड' की शर्तों में हील-हुज्जत करने लगा। लगभग पन्द्रह दिन के विवाद के उपरान्त उसने कह दिया कि उसकी पत्नी काम को देना नहीं चाहती और वह सब काम अकेला ही लेगा।

युधिष्ठिर दिल्ली लौटा तो सोमदेव हंस पड़ा। नवलकिशोर ने युधिष्ठिर के दिल्ली पहुंचने से पूर्व ही सूचना भेज दी थी कि वह अकेला ही यह काम लेगा और काभ का दाम पैंसठ लाख रुपया वह अपने, अपनी पत्नी रुक्मिणी और लड़के सुधीर के परिवार की सम्पत्ति के भाग से देगा। उसे बताया जाए कि उसे सम्पत्ति में से कुछ मिलेगा अथवा उसे देना पड़ेगा?

युधिष्ठिर ने पिता के हंसने का अर्थ नहीं समझा और पूछ लिया, "पिताजी, हंसे क्यों हैं?"

"इसलिए कि नवल हम सबसे अधिक चतुर सिद्ध हुआ है।"

"मैं समझता हूं कि मैंने परिवार की सम्पत्ति में चालीस लाख की वृद्धि की है।"

"पर मैं उसे परिवार से धोखा करने में कैद कराने वाला था।"

"मैंने परिवार को व्यर्थ की मुकदमेबाज़ी में फंसने से बचाया है। यदि सबसे मुकदमेबाज़ी होने लगी तो परिवार का रुब कुछ मुकदमों में ही समाप्त हो जाएगा। पिताजी, आप चाचा भागीरथजी से बात कर लीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु युधिष्ठिर भूल में बड़ा सिद्ध हुआ था।

दिल्ली में मोहनलाल के कलकत्ता वाले कारखाने की बात पर विचार हो रहा था। मोहनलाल का मुंशी जगदीश भट्टाचार्य कलकत्ता से आया था और कान्तिलाल के कम्युनिस्ट दल के द्वारा आग लगाने की सहमति के प्रमाण लाया था। कान्तिलाल को मुंशी के सामने बुलाकर पूछ-ताछ की गई।

भट्टाचार्य ने ऐसे प्रमाण उपस्थित किए कि उन्हें कान्तिलाल अस्वीकार नहीं कर सका। अतः बंटवारा कमेटी ने यह निश्चय किया कि कान्तिलाल के जान-बूझकर कारखाने और परिवार को हानि पहुंचाने के सिद्ध होने पर उसे परिवार की सम्पत्ति से वंचित कर दिया जाए। हां, जीवनयापन के लिए उसे पांच सो रुपया मासिक वजीफा दिया जाए। परिवार की ओर से ऐसे वजीफे परिवार की दो विधवाओं को पहले भी मिलते थे।

कान्तिलाल इससे निराशा अनुभव कर रहा था। वह अपने भाग के लिए दावा करना चाहता था, परन्तु साधन न होने से चुप था।

मोहिनी को रजनी के कमरे में रहते हुए अभी दो सप्ताह ही व्यतीत हुए थे कि कमलकिशोर अपनी बूआ के पास आया और बताने लगा, "बूआ! मैं एम० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया हूं।"

"बहुत खुशी की बात है। अब क्या करोगे?"

"बूआ! मैं विवाह करूंगा।"

"और कोई काम नहीं करोगे?"

"वह भी करूंगा। परन्तु पहले विवाह करने का विचार कर रहा हूं।"

"किससे विवाह करोगे? कौन ऐसे बेकार युवक से विवाह करेगी?"

"बूआ, एक है। मैं आज उससे अन्तिम बात कर आपको विवाह के भोज पर आमन्त्रित करूंगा।"

"अच्छी बात है। हम उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करेंगे। भाभी भगवती को तुम्हारे पास होने की बधाई देने तो मैं आज जाऊंगी ही।"

"रजनी कहां है?"

"कहीं गई हुई है।"

"अच्छा बूआ, उसको मेरे उत्तीर्ण होने की सूचना दे देना और कहना कि मैं उसकी पांच बजे वैंगर रेस्टोरां में प्रतीक्षा करूंगा। उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ठीक समय पर मुझे बधाई देने आना चाहिए।"

"कह दूंगी।" स्नेहलता समझ रही थी कि वह रजनी के सामने विवाह का प्रस्ताव करने वाला है। इस पर भी वह चुप थी।

वह समझती थी कि यह विवाह ठीक नहीं, परन्तु नये ज़माने में सब बन्धन ढीले पड़ रहे थे। इस कारण वह चुप थी। उसने इस विषय में भागीरथलाल और बाबा ब्रजलाल से भी सम्मति की थी। कान्ति का पिता तो मुंशीजी के साथ ही कलकत्ता लौट गया था। बंगाल में गवर्नर का राज्य हो गया था। बंगाल की विधान सभा भंग कर दी गई थी और नया चुनाव करने की घोषणा हो चुकी थी।

भागीरथलाल और ब्रजलाल इस बात पर सहमत थे। वे समझते थे कि यद्यपि रजनी और कमल का विवाह प्रथा से मान्य नहीं, परन्तु यह कानून से वर्जित नहीं। प्रथाएं देश, काल और स्थिति के अनुसार बदल जाती हैं। इनकी सम्मति से असन्तुष्ट होते हुए भी स्नेह कुछ नहीं कह सकती थी। रजनी इस समय विधवा होने से माता-पिता के अधिकार से बाहर थी और स्वेच्छा से विवाह करने का अधिकार रखती थी। वैसे उसने यह संकेत रजनी को दे रखा था कि मामा के लड़के से विवाह हिन्दू समाज में पसंद नहीं किया जाता। रजनी ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया था। कारण यह था कि अभी तक कमल-किशोर ने रजनी को प्रस्ताव नहीं किया था।

उस दिन कमलकिशोर कोठी से जाने लगा तो मोहिनी बरामदे में कहीं जाने को तैयार खड़ी थी। कमलकिशोर अपनी मोटर गाड़ी में बैठने लगा तो मोहिनी ने आगे बढ़ पूछ लिया, "आप किस ओर जा रहे हैं?"

कमलकिशोर जानता था कि मोहिनी कोठी में रहती है और रजनी के साथ आती-जाती है। उसे मोहिनी और कान्तिलाल के सम्बन्ध का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं था। उसने नज़र भरकर मोहिनी की ओर देखा और उसके प्रसन्न बदन से प्रभावित हो बोला, "कनाट प्लेस की ओर।"

"मुझे भी वहां तक ले चलेंगे?"

"आइए।" कमल ने कहा और स्वयं मोटर-चालक के स्थान पर बैठ मोहिनी को अपने समीप बैठाने के लिए सामने का द्वार खोल दिया।

मोहिनी ने धन्यवाद किया और बैठ गई। गाड़ी चल पड़ी। कमल ने कुछ बात करने के लिए पूछ लिया, "आपका शुभ नाम क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है?"

"मोहिनी सान्याल।"

"तो आप बंगाली हैं? आप रजनी की सहेली प्रतीत होती हैं?"

"वे मुझे बहिन मानती हैं।"

कमल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और आप उसे क्या मानती हैं?"

मोहिनी हंस पड़ी। उसने कह दिया, "कमलजी, बहिन मानने वाली को बहिन ही माना जाता है।"

"ओह, हां। परन्तु कभी-कभी भाभी भी कहा जाता है।"

मोहिनी ने बात टालते हुए कह दिया, "यह तो आप रजनी बहिन से ही जान सकेंगे।"

"आपको कहां उतार दूं?"

"मैं गोल मार्केट के समीप बंगाली स्कूल जा रही हूं। वहां की 'हेड मिस्ट्रेस' मेरा इण्टरव्यू ले रही हैं।"

"तो आप नौकरी पाने का यत्न कर रही हैं?"

"जी, आशा कर रही हूं कि स्कूल में अध्यापिका का कार्य मिल सकेगा।"

"आपकी शिक्षा कहां तक है?"

"मैं कलकत्ता विश्वविद्यालय की बी० एड० हूं।"

"मेरी शुभ कामना आपके साथ है।"

इसी प्रकार की अर्थहीन बातें करते हुए कमल मोहिनी को नई दिल्ली गोल मार्केट के पास ले गया। वहां मोटर खड़ा कर उसने पूछा, "अब तो आप मार्ग पा जाएंगी?"

"कमलजी, बहुतृ-बहुत धन्यवाद।" इतना कह मोहिनी स्कूल की ओर चल दी। कमल वहां से भवनानी एण्ड सन्ज़ की दुकान पर कुछ नई आई पुस्तकें देखने चला गया।

4

मोहिनी का इण्टरव्यू हुआ और वह स्कूल में अध्यापिका नियुक्त हो गई। अगले ही दिन उसे काम पर उपस्थित होने की आज्ञा हो गई। स्कूल से घह लगभग तीन बजे लौटी। वह कोठी में पहुंच सबसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहले भागीरथलाल के कार्यालय में पहुंची। उसने खड़े-खड़े ही बता दिया, "आपके आशीर्वाद से मुझे काम मिल गया है। मैं नई दिल्ली बंगाली स्कूल में अंग्रेज़ी पढ़ाने के लिए अध्यापिका नियुक्त हो गई हूं।"

"मैं आपतो इस पर बधाई देता हूं। कुछ दूर है, परन्तु समीप कोई स्कूल था भी तो नहीं।"

"कुछ दूर नहीं। बस से चली जाया करूंगी।"

"और किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो बताना।"

"आपकी कृपा का ही यह परिणाम है। मैं बाबाजी के पास भी धन्यवाद करने जा रही हूं।"

"हां, जा सकती हो।"

मोहिनी बाबा ब्रजलाल से मिलकर अपने कमरे में गई तो रजनी को आज मध्याह्नोत्तर साढ़े तीन बजे ही पूजा के आसन पर बैठे देख चकित रह गई। जब-जब भी रजनी पूजा के लिए बैठती थी, मोहिनी उसके मनोद्गारों के आदर हेतु स्वयं भी भूमि पर बैठ जाया करती थी। वह ऐसे समय उससे ऊंचे स्थान पर बैठने में संकोच अनुभव करती थी।

रजनी विचारमग्न थी। कुछ देर तक दोनों बैठी रहीं। रजनी ने आंखें खोलीं और मोहिनी को पुनः समीप भूमि पर बैठे देख पूछ लिया, "क्या कर आई हो भाभी?"

"नियुक्ति-पत्र ले आई हूं।"

"यह तो बहुत अच्छा हुआ है। मैं इससे प्रसन्न हूं।"

"पर रजनी बहिन, पूजा का कोई समय निश्चित नहीं?"

"निश्चित तो है।"

मोहिनी मुस्कराई और बोली, "क्या समय निश्चित है? आज तो साढ़े तीन बजे ही बैठी हुई थीं।"

"इसपर भी यह उचित समय ही था। देखो भाभी, पूजा का समय तब होता है जब मन किसी गहन विषय पर चिन्तन करने के लिए व्याकुल हो उठता है।"

"तो बहिन रजनी किसी बात पर व्याकुल हैं?"

"हां।"

"क्या मुझे बताने की है अथवा नहीं?"

"हां, यदि भाभी जानने की इच्छा करती हों। सुनो भाभी, मैंने निश्चय किया था कि जीवनभर अविवाहित ही रहूंगी, परन्तु कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनमार्ग काट रहा प्रतीत होता है। मैं उसके आह्वान पर बात करने जा रही हूं। जाने से पूर्व मन ने कहा कि छलांग लगाने से पूर्व विचार करो कि यह ठीक है अथवा नहीं। सो चिन्तन करने बैठ गई थी।"

"तो मन ने क्या कहा है?"

"मन में कुछ संशय उत्पन्न हुआ है। वह संशय प्रस्ताव करने वाले के उद्देश्य पर हुआ है।"

"तो प्रस्ताव हो चुका है?"

"नहीं, आशा कर रही हूं कि आज होगा।"

"तो विवाह में भी कई उद्देश्य हो सकते हैं क्या?"

"हां, वासना, दहेज, पदवी, सन्तान, जीवन-साथी और भी कई उद्देश्य हो सकते हैं।"

"पर बहिन रजनी, इन उद्देश्यों में कोई अनुपयुक्त भी है?"

"हैं। कुछ हैं, यदि एक भी अनुपयुक्त हो तो विवाह न करने में पर्याप्त कारण है। उसकी पूर्ति के लिए विवाह स्वीकार करने योग्य हो सकता है और यदि कहीं एक से अधिक अनुपयुक्त उद्देश्य हो जाएं अथवा सबके सब वैसे ही हों तो महा दुर्भाग्य की बात ही माननी चाहिए।

"मैं विचार करने बैठी थी कि इनमें कोई उद्देश्य दूषित भी है क्या? मन ने कहा है कि है। सबसे बुरे उद्देश्य हैं दहेज और पदवी। यदि गा तो विवाह नहीं होगा।"

मोहिनी इसमें किसी प्रकार की सम्मति देना नहीं चाहती थी। उसका अपना विवाहित जीवन निरर्थक रहा था। इस कारण वह किसी दूसरे के विवाह पर टीका-टिप्पणी करना नहीं चाहती थी।

एकाएक रजनी ने घड़ी में समय देखा। चार बज चुके थे। वह उठी और बोली, "अच्छा भाभी, तुम्हें सायंकाल बताऊंगी कि मेरा जीवन किधर जा रहा है!"

रजनी ने वस्त्र बदले और कमरे से निकल सीढ़ियां उतर गई।

मोहिनी अपनी नौकरी पा जाने पर सन्तोष अनुभव करने लगी थी। वह अपने को सर्वथा निराश्रय न समझ मन में साहस और विश्वास की अनुभूति पाती थी। वह वैसे ही पलंग पर लेट विचार करने लगी तो सो गई। चित्त हल्का हो जाने से उसे गहरी नींद आई थी।

मोहिनी की नींद खुली जब रजनी चाय से लौट आई थी। रजनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रसन्न थी। उसे प्रसन्न देख मोहिनी लपककर उठी और पूछने लगी "रजनी बहिन, दुर्ग विजय कर आई हो?"

रजनी सोफा पर बैठ बाहर के वस्त्र उतार पूजा के वस्त्र पहनने लगी थी। मोहिनी पलंग से उतर उसके पास जा बैठी थी।

"हां, तो अब बताओ। कौन-सा दुर्ग विजय कर आई हो?"

"देखो, भाभी, अरब मेरी पूजा का समय हो गया। नियमित पूजा का समय। इसके उपरान्त ही बता सकूंगी कि क्या विजय अथवा पराजय पाकर आई हूं?"

मोहिनी मुख देखती रह गई। रजनी ने वस्त्र बदले भर गुसलखाने में जा मुख-हाथ धो-पोंछ, बाहर आ आसन पर बैठ गई। मोहिनी स्वभावानुसार उसके समीप जा बैठी। आज उसका चित्त भी धन्यवाद करने को कर रहा था। वह बैठी-बैठी विचार करने लगी थी कि जिस-जिसका आश्रय उसे मिल रहा है, उन सबका धन्यवाद कर चुकी है और अब वह किसका धन्यवाद करे? परमात्मा को वह मानती नहीं थी। भाग्य को वह ठीक ढंग पर किया पुरुषार्थ ही मानती थी। वह अपने मन ही मन में विचार कर रही थी कि अभी भी उसके मन के किसी कोने में परमात्मा तथा देवी-देवताओं का संस्कार छुपा बैठा है। इस कारण उसने बलपूर्वक परमात्मा का विचार छोड़कर अपने जीवन की इस नई करवट पर मनन करने लगी।

मोहिनी के मनन में दिशा बदलती रहती थी। उसने मनन आरम्भ किया था अपने माता-पिता के घर से। वह विचार करती थी कि उसका निर्मल चटर्जी को आत्मसमर्पण परिवार की परिस्थिति के कारण ही था। एक ही कमरे में सोते हुए वह अपने पिता को कई बार मां के बिस्तर में घुसा देख उत्तेजित हो उठा करती थी। ज्यों-ज्यों वह बड़ी होती जाती थी, वह वासनाभिभूत होती जाती थी। उस समय की स्थिति को स्मरण करने पर वह वर्तमान की स्थिति से दुःख अनुभव करती थी। तब वह निर्मल चटर्जी को पा गई थी। आज वह किसको पाएगी। इस विचार से उसे समझ आया कि वह अब अध्यापिका नियुक्त हुई है। उसे इस प्रकार की बातों का चिन्तन नहीं करना चाहिए। अब वह एक अध्यापिका के जीवन पर विचार करने लगी थी। इस जीवन की उपयोगिता ही उसकी सरसता थी। इसके अनन्तर अपने को एक सामाजिक कार्यकर्ता मान समाजवाद की बातें स्मरण करने लगी थीं। समाजवाद के शब्द और इस शब्द के पारिभाषिक अर्थों का ज्ञान उसे कालेज में हुआ था। उसे इसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
व्याख्या में समाज में दो वर्ग और उनके परस्पर संघर्ष का ज्ञान स्मरण हो आया। आज उस ज्ञान की कसौटी पर वह भागीरथलाल और उसके परिवार की बात स्मरण करने लगी थी। जब इस परिवार की बात स्मरण आई तो वह बाबा ब्रजलाल की बात पर विचार करने लगी थी। नब्बे वर्ष के वृद्ध के साथ खुलकर बात करने का अवसर उसे मिला था। वह जब अपनी नौकरी पा जाने का समाचार बताने भर उसकी सहायता के लिए धन्यवाद करने गई थी तो बाबा ने कहा था, "मैं तुमसे इतनी आशा तो करता ही था। तुम जैसी लड़की संसार-सागर में से तैर कर पार जा सकती है, मुझे इसका विश्वास था। इसी कारण मैंने भागीरथ को कहा था कि तुम अपने जीवन में सफल तो होने वाली हो। यदि अपना परिवार तुम्हारी सहायता करता है तो फोकट में वह श्रेय प्राप्त कर सकेगा जिसको तुम अपने गुणों से प्राप्त करने वाली हो।"

इस पर मोहिनी ने पूछा था, "बाबा, तो यह सब तुम पहले दिन ही जान गए थे?"

"दिन नहीं, तुमसे प्रथम भेंट के प्रथम क्षण में ही। तुम्हारी आंखों में दृढ़ता और तेज था। तेज तुम्हारी सामर्थ्य को प्रकट करता था और दृढ़ता तुम्हारे मस्तिष्क की बनावट को।

"मेरे अनुमान को प्रथम प्रमाण तो अगले दिन ही मिल गया था, जब तुम सिर पर पट्टी बांधे यहां भाई थीं। मैं समझ गया था कि मन की बात को करते हुए तुम पीटी गई हो। इस पर भी मन की बात करने में सफल हुई थीं अथवा असफल रही थीं, मैं नहीं समझ सका था। यह तुमने बताया था कि तुम दो-ढाई घण्टाभर कमरे से भाग लॉन में छुपकर बैठी रही थीं। इसका अभिप्राय भी मैं समझ गया था कि तुमने बल-प्रयोग और इन्द्रियों के आवेग पर विजय पाई है। मैंने तुम्हें आशीर्वाद दिया था और भगवान से प्रार्थना की थी कि तुम अपने गुणों का सदुपयोग कर सको।"

इस पर मोहिनी ने कहा था, "बाबा, आप जिस भाषा में बात करते हैं वह आजकल स्कूल-कालेजों में नहीं पढ़ाई जाती। मैं नहीं समझी कि भगवान् से आपका क्या अभिप्राय है और फिर गुणों का सदुपयोग क्या होता है? क्या पति के नाक पर घूंसा मारना अपनी सामर्थ्य का सदुपयोग हो सकता है?"

ब्रजलाल खिलखिलाकर हंस पड़ा और बोला, "यदि तुम कुछ काल तक इस कोठी में और रजनी के कमरे में रह सकीं तो तुम हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भाषा बोल सकोगी अथवा नहीं, कह नहीं सकता। हां, समझ अवश्य सकोगी। इतना तुम अभी समझ लो कि तुम्हारे मन में इतना बल कहां से आया कि बिस्तर पर आए पुरुष द्वारा वासना-तृप्ति के प्रलोभन का तिरस्कार कर सकी थीं? मुक्का मारना तो शरीर की सामर्थ्य से हुआ था। यह सामर्थ्य तो अन्न खाने से उत्पन्न हुई थी, परन्तु वासना का तिरस्कार तो अन्न से उत्पन्न नहीं हुआ। इसका सम्बन्ध तो परमात्मा से दी शक्ति से ही है।"

"पर मेरे साथी कहा करते थे कि यह दृढ़ता तो कार्ल मार्क्स की प्रेरणा का फल है।"

"तुम कार्ल मार्क्स से मिली हो?"

मोहिनी ने मुस्कराते हुए कहा, "उसका देहान्त हुए तो सत्तर वर्ष से अधिक हो चुके हैं। मैं भला उससे कैसे मिल सकती थी?"

"मैं जानता हूं। तुम यह बताओ कि उसकी प्रेरणा कहां से आ गई?"

"उसके लेख पढ़ने से।"

"कलकत्ता में कम्युनिस्ट कितनी संख्या में हैं?"

मोहिनी ने आंखें मूंद अनुमान लगा कहा, "जहां तक मेरा ज्ञान है टिकट होल्डर तीन-चार सौ से अधिक नहीं हैं।"

"तो उस मूर्ख के वक्तव्यों को क्या तीन-चार सौ ने ही पढ़ा है? जहां -तक मैं जानता हूं कि उसके वक्तव्यों को पढ़ने वाले इस देश में करोड़ों नहीं तो लाखों अवश्य हैं। मैं भी एक हूं जो उसके ग्रन्थ पढ़ चुका हूं, परन्तु उन लाखों को तो प्रेरणा मिली नहीं और हमारी बिटिया मोहिनी को उसके वक्तव्यों ने इतनी दृढ़ता प्रदान की कि बिस्तर के नित्य के साथी से नित्य प्राप्त होने वाले सुख की अवहेलना कर साथी की नाक फोड़ सकी थी।

"देखो, मोहिनी, यह सामर्थ्य तो तुममें पहले ही थी। मैं तुम्हारा पूर्ण इतिहास नहीं जानता। इस पर भी अनुमान लगा सकता हूं कि इस दृढ़ता का प्रयोग तुमने कान्ति के साथ ही नहीं किया होगा, अन्य लोगों पर भी इसका प्रयोग हुआ होगा। कदाचित् यह दृढ़ता तब भी तुममें थी जब तुमने काले मार्क्स का नाम भी नहीं ना हीगा।

"काल मार्क्स ने तुम्हारी सामर्थ्य के प्रयोग को दिशा दी थी। वह सामर्थ्य का दाता नहीं था।"

बाबा बता रहा था और मोहिनी के सामने उसके बचपन और फिर कौमार्यावस्था के चित्र स्मृति-पट पर सिनेमा-चित्रों की भांति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाज्वल्यमान हो उठे थे। मोहिनी को गम्भीर चिन्तन में देख ब्रजलाल हंस पड़ा और बोला," तनिक गंम्भीरतापूर्वक विचार करोगी तो समझ जाओगी कि यह मानसिक दृढ़ता, जिसे हमारे यहां मन की निर्मलता का नाम दिया जाता है, तुममें बाल्यकाल से ही उपस्थित थी। यह भगवान ने ही दी थी।

"दुर्भाग्य से तुम कार्ल मार्क्स के मूर्ख शिष्यों के सम्पर्क में आ गईं और उन्होंने तुम्हारी सामर्थ्य को मिथ्या दिशा दे दी थी।"

मोहिनी का चंचल मन अब दूसरे विषय पर जा पहुंचा था। उसने पूछ लिया, "बाबा, आपने अंग्रेज़ी कब पढ़ी थी? मैं यहां कोई समाचारपत्र न देख समझती थी कि आप इस नियामत से वंचित हैं।"

"नियामत?" ब्रजलाल हंस पड़ा था। हंसते हुए उसने पूछ लिया, "अंग्रेज़ी को नियामत मानती हो, बिटिया? और समाचार-पत्रों को पढ़ना उस नियामत के लक्षण समझती हो?"

हा-हा करता हुआ ब्रजलाल हंस पड़ा। उसने कहा, "देखो, बेटी, मैं जब पाण्डीचेरी में जाकर रहने लगा था, उस समय मेरी वयस उनहत्तर वर्ष की हो चुकी थी। डाक्टरों ने कहा था कि मेरा हृदय दुर्वल हो गया है और मुझे अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए सागर-तट के किसी स्थान पर रहना चाहिए। मैं सुखपूर्वक मरने के लिए पाण्डीचेरी में जाकर रहने लगा था। मैंने वहां के किसी आदमी को अपनी सेवा के लिए नौकर रखने का विचार किया तो समाचार-पत्र में विज्ञापन दे दिया। मैंने विज्ञापन दिया था, 'एक सत्तर वर्ष के वृद्ध की टहल-सेवा और उसके साथी का कार्य करने के लिए एक समझ-दार, स्वस्थ और अभावग्रस्त व्यक्ति की आवश्यकता है। वयस पन्द्रह वर्ष से ऊपर और चालीस वर्ष से कम होनी चाहिए। प्रार्थी को अपनी योग्यता और वेतन लिखकर प्रार्थना-पत्र भेजना चाहिए। देने वाले वेतन की कोई सीमा नहीं बांधता। योग्यता के अनुसार वेतन दिया जाएगा।'

"मोहिनी बिटिया, दो सौ प्रार्थना-पत्र आए थे। उन प्रार्थियों में से निर्वाचन करने के लिए मैंने सब प्रार्थना-पत्र भागीरथ के पास भेज दिए और उसने उनमें से दस चुनकर मेरे पास भेज दिए। उनके प्रार्थना-पत्रों का हिन्दी में अनुवाद भी लिख दिया। मैं अंग्रेज़ी नाममात्र की पढ़ा था और वह भी प्रयोग न होने के कारण विस्मरण हो चुकी थी। भागीरथ ने उन सबको पाण्डीचेरी में एक निश्चित दिन आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का आदेश लिख भेजा था। मैंने उनको पत्र भेज दिया और जिस दिन भेंट के लिए उन्हें आना था, भागीरथ मेरे पास आ गया और एक मैट्रिक पास कुमार को चुन मेरी सेवा में रख गया। वह मेरे पास अभी तक नौकर है। उसने मेरी सेवा में रहते हुए विवाह किया और अब चार बच्चों का पिता है। वह मेरे पास एक सौ रुपया महीने पर नौकर हुआ था और अब मैं उसको चार सौ रुपये महीना और रहने का स्थान दे रहा हूं। उसने मुझे अंग्रेज़ी पढ़ाई है। उसी ने मुझे कार्ल मार्क्स की पुस्तकें पढ़-पढ़कर सुनाई हैं। उस सुने के आधार पर ही मैंने उसको मूर्ख और उसको ठीक समझने वालों को गधा कहा है।

"मैं कठिन से कठिन अंग्रेजी भाषा में लिखी पुस्तक पढ़ और समझ लेता हूं। उसी युवक ने मुझे संस्कृत भी पढ़ाई है।"

मोहिनी ने मुस्कराते हुए पूछा था, "तो आप सत्तर वर्ष की आयु में भी पढ़ते थे?"

"पढ़ता, मेरा अभिप्राय यह है कि सीखता तो मैं अब भी हूं। इतना अन्तर पड़ गया है कि मैं अव स्वयं कम पढ़ता हूं और पढ़ाकर सुना अधिक करता हूं।"

"पर यहां तो आपको पढ़कर सुनाने वाला कोई नहीं?"

"वैकटेश्वरम् की पत्नी चौथे बच्चे के समय प्रसूति-गृह में थी और वह उसे छोड़ आ नहीं सका।"

"तो यहां मैं समाचारपत्र इत्यादि पढ़कर सुनाने आ सकती हूं?"

"समाचारपत्र तो सुनने में रुचि नहीं होती। उनमें कभी-कभार महीने में एक-आध बात जानने योग्य होती है। वह भागीरथ मुझे बता दिया करता है। हां, यदि तुम कोई पुस्तक पढ़कर सुनाने का समय और सामर्थ्य रखती हो तो आ जाया करो।"

"कौन-सी पुस्तक सुनेंगे?"

"मैं अपने साथ अरविन्दजी की एक पुस्तक लाया हूं। उसे स्वयं पढ़ा भी करता हूं परन्तु एक घण्टा से अधिक पढ़ नहीं सकता। अब आंखें थक जाती हैं। यदि तुम एक घंटे के लिए आया करो तो तुमसे भी सुन लिया करूंगा।"

"मैं कल से स्कूल से लौटकर आया करूंगी।"

ये सब बातें वह रजनी के समीप बैठी चिन्तन कर रही थी। वह विचार करती थी कि यह वृद्ध पुरुष बुद्धि तो युवकों की-सी रखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5

रजनी ने आंखें खोलीं और आसन से उठ खड़ी हुई। उसके उठने पर मोहिनी भी उठी और पूछने लगी, "हां, अब बताओ, क्या निश्चय कर आई हो? किससे निश्चय कर आई हो, वह कौन है, कहां रहता है और देखने में कैसा है···"

रजनी हंस पड़ी। वह कमरे में रखे सोफे पर बैठ गई और बोली, 'एक ही सांस में इतनी बातें पूछ बैठी हो तो उत्तर भी एक ही सांस में सुनोगी?"

Central Library
167899
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"दे सको तो ठीक है।"

"तो सुनो। कमलकिशोरजी को जानती हो?"

"आपके मामा के लड़के हैं?"

"हां, उन्होंने आज चाय पीते हुए प्रस्ताव किया है और मैं एक प्रश्न कर आई हूं। वे इसका उत्तर नहीं दे सके। अतः विचार के लिए एक सप्ताह का समय निश्चय हुआ है।"

"पर वह अपनी बूआ की लड़की से विवाह करेगा?"

"वह तो तैयार है। उसके विचार में केवल सगी बहिन विवाह में वर्जित होनी चाहिए।

"मैंने पूछा था, 'क्यों? उसे भी क्यों वर्जित होना चाहिए?'

"इसका उत्तर वह नहीं दे सके। सन् 1949-50 में भारत के वैज्ञानिकों की एक गोष्ठी में इस बात पर विचार हुआ था और वैज्ञानिक इसमें कोई तथ्य नहीं समझ सके कि बहिन-भाई का विवाह नहीं होना चाहिए। वे कहते थे कि जब बहिन-भाई के समागम से सन्तान हो सकती है तो विवाह वैज्ञानिक है। इसमें आपत्ति पूर्वग्रहों के कारण ही है।

"मैंने कहा था कि तब तो मैं अपने भाई कान्ति से विवाह कर लेती हूं और आप मामीजी को कहें कि वे आपकी कोई बहिन निर्माण करें जिससे आप विवाह कर सकें।

"मेरी इस विवेचना पर वे फिलासफर महाशय मेरा मुख देखने लगे। इस पर वे बहिन-भाई के विवाह में एक बाधा देख सके। वह थी प्रथा। प्रचलित प्रथा।

"इसपर मेरा कहना था कि प्रथा तो मामा के लड़के को भी भाई मानती है। प्रथा से यह विवाह विशेष रूप में उत्तरी भारत में वर्जित है।

"बहुत विचारोपरान्त यह निश्चय हुआ है कि वे अपनी मां से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पूछ लें और मैं अपनी मां से पूछ लूं। कारण कि प्रथा का प्रभाव तो उन पर ही सबसे अधिक होने वाला है।"

"रजनी बहिन, तुम जब पूजा से पहले आई थीं तो इतनी प्रसन्न थीं कि मैं भ्रम में पड़ गई थी। मैं समझी थी कि कदाचित् तुम विवाह की तिथि निश्चय कर आई हो।"

"यही तो बात है जिस पर चिन्तन करने के लिए मैं पूजा पर बैठना चाहती थी। कमल जी तो पूर्ण वार्तालाप से गम्भीर हो ही घर गए हैं। मैं प्रसन्नचित्त थी। मैं दोनों में इस अन्तर का कारण नहीं जान सकी थी। इसी कारण मैंने कहा था कि पूजा का समय हो गया है, मैं पूजा पर बैठ गई थी।"

"तो पूजा पर बैठ तुम चिन्तन भी करती रहती हो?"

"पूजा तो होती ही चिन्तन है। किसी एक विषय पर ध्यान केन्द्रित कर उसके विषय में चिन्तन करना ही पूजा मानती हूं। कभी परमात्मा का चिन्तन करती हूं, कभी आत्मा का, कभी मन के विषय में चिन्तन करती हूं तो कभी शरीर के विषय पर भी चिन्तन ही करती हूं। जब भी पूजा पर बैठती हूं तो किसी न किसी विषय पर चिन्तन ही करती हूं। आज मेरे चिन्तन का विषय था कि कमलजी को विवाह के विषय पर मामीजी से विचार करने के लिए कहकर मैं प्रसन्न क्यों हूं?"

"तो क्या समझी हो? अपने हो रहे विवाह में लात मारकर उसको असम्भव बना देने में क्या बढ़िया बात की है तुमने?"

"मेरे चिन्तन का यह परिणाम है कि अब हमारा विवाह नहीं होगा और यह ठीक ही है।"

"क्या ठीक है? विधवा बनी रहोगी जीवनभर?"

"मैं समझती हूं कि मेरा विवाह हो जाएगा। पर वह कमलजी से न होकर ठीक ही हो रहा है।"

"क्यों?"

"मेरे अन्तरमन में वह भाई के रूप में ही था और उसके विवाह के प्रस्ताव पर मन में वासना, पत्नी की पदवी और प्रतिष्ठा तथा सन्तान का मोह उत्पन्न होने लगे थे। ये मन के विचार थे। ज्यों ही मैंने प्रथा की बाधा बताई और वे उत्तर नहीं दे सके तो मुझे प्रसनता अनुभव हुई है।"

मोहिनि इसको न समझती हुई मुख देखती रह गई। इस पर रजनी ने कहा, "माताजी जानती थीं कि कमल विवाह का प्रस्ताव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने ही मुझे वेंगर में चाय पर आमंत्रित कर गया है। अतः वे उत्सुकता से इस भेंट का परिणाम जानने के लिए मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। मैं उनको भी यह कह आई हूं कि पूजा के उपरान्त उनको बताऊंगी।"

"देखो, रजनी, मुझे तुम्हारे इस वार्तालाप से बहुत निराशा हुई है। मैं तो अपने मन में वस्त्र, भूषणों से लदी नववधू के रूप में रजनी बहिन का चित्र बना रही थी। वह सब तुमने एक ही झटके में विलीन कर दिया है।"

"तो मेरे पास बैठी तुम मेरे विवाहित जीवन पर ही चिन्तन कर रही थीं?"

"नहीं। इस समय नहीं। हां, जब तुम चाय पर गई थीं तो मैं तुम्हारे विवाह को देखने और उसमें तुम्हें पति के पीछे-पीछे चलते हुए अग्नि के चक्कर काटते हुए दृश्य का चिन्तन करती-करती सो गई थी। जब तुमको प्रसन्न बदन आए देखा तो मैं समझती थी कि मेरा स्वप्न साकार होने जा रहा है। पर, बहिन, तुमने तो एक ही लात मारकर मेरे मन के महल को गिरा दिया है।"

"पर भाभी, तुम तो विवाह को एक व्यर्थ का आडम्बर मानती थीं और पति-पत्नी के इकट्ठे रहने को ही विवाह समझती थीं?"

"हां, मैं ऐसा ही समझती थी। मस्त यह बात कलकत्ता की थी। कुछ हुआ है जिसने मुझे अपनी धारणा के मिथ्या होने का विश्वास दिला दिया है। कलकत्ता से आने के समय तो मेरे मन में संशय ही था। उस समय आपके भाई के प्रति घृणा का भाव था अपने दल के प्रति द्वेष का विचार था, परन्तु यहां आने पर आपके परिवार के सदस्यों की सहृदयता और सहानुभूति देख तो मेरे विचारों के मूलाधार पर ही आघात पहुंचा है। मेरे पूर्वविचार डावांडोल हो गए हैं।"

"तो अब तुम विवाह में सार देखने लगी हो?"

"हां, यौनक्रिया से पृथक्, पति की सम्पत्ति के भोग से पृथक्, विवाह का कुछ अन्य भी महत्त्व दिखाई देने लगा है।"

"वह क्या है?" विस्मय में रजनी ने पूछ लिया। रजनी का विचार था कि मोहिनी सन्तान की लालसा करने लगी है। परन्तु रजनी ने यह बात भी स्पष्ट कर दी।

"मैं देखती हूं कि वह सन्तान भी रही है। वास्तव में वासना, सम्पत्ति का भोग और सन्तान तो उस उद्देश्य की पूर्ति में साधन मात्र है। ये पुरुष-स्त्री को एक स्थान पर इकट्ठे करते हैं और जब इकट्ठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो जाते हैं तो इनके इकट्ठे रहने में सहायक होते हैं, परन्तु विवाह इससे कुछ पृथक् है।"

"भाभी, दूर तो दार्शनिकों की-सी बातें करने लगी हो! भला वह क्या बात है जिसे विवाह कहते हैं? यदि विवाह-सम्बन्ध में से वासनातृप्ति, अर्थ की उपलब्धि और भोग तथा सन्तान-निर्माण और उसका पालन-पोषण निकाल दें तो शेष क्या रह जाता है?"

"देखो बहिन, जब मैं तुम्हारे समीप बैठ जाती हूं तो मैं भी चिन्तन करने लगती हूं। अनायास ही मन में विचार उठने लगते हैं। आज मैं तुम्हारे मुख पर प्रसन्नता,के लक्षण देख यह समझी थी कि तुम विवाह करोगी। इस पर विवाह की बात विचार करने लगी। तदनन्तर अपनी जीवन-कथा पर विचार करने लगी थी। मुझे समझ आया कि मैंने विवाह में उक्त तीनों एषणाओं को पाने की सामर्थ्य रखते हुए भी कुछ नहीं पाया था। अतः मेरा विवाह नह हुआ था।

"परन्तु पूजा का समय समाप्त हो गया और मेरा चिन्तन अधूरा ही रह गया ओर अब तुमने भी मुझको यही बताया है कि तुम भी अनजाने में वैसा ही समझती हो जैसा मैं समझती थी।"

"यही तो पूछ रही हूं कि क्या समझती थी जो मैं अनजाने में समझ रही हूं।"

"यह शेष विचार कर बताऊंगी। अभी तो विचार-श्रृंखला टूट गई है और किसी परिणाम पर नहीं पहुंची।"

रजनी खिलखिलाकर हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "एक बात मैं भी समझती हूं।"

"क्या?"

"तुम भी पूजा करने लगी हो। अब पूजा के साथ पाठ भी किया करोगी तो फिर तुम परमात्मा को मानोगी ही नहीं, वरंच परमात्मा की भक्तिनी बन जाओगी।"

"कदाचित् वह भी अब होगा।"

"सत्य?"

"हां, बाबाजी कहते थे कि वे पाण्डीचेरी में अपने सेक्रेटरी मिस्टर वैंकटेश्वरम् से नित्य कोई न कोई पुस्तक पढ़ाकर सुना करते थे। मैंने कहा कि मैं पढ़कर सुनाया करूं तो वे मुझसे सुनने की इच्छा करने लगे हैं। मैं कल से स्कूल से लौटकर, एक घंटा उनको पुस्तक पढ़कर सुनाया करूंगी।"

रजनी चकित हो मोहिनी का मुख देखने लगी। वह विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती थी कि मोहिनी ने बाबा पर किसी प्रकार का सम्मोहन डालना आरम्भ कर दिया है।

रजनी की अपनी मां से भी बात हुई। जब से कमलकिशोर उसे कहकर गया था कि उसका परीक्षा-फल घोषित हो गया है और उसके उपलक्ष्य में वह रजनी को वैंगर में चाय का निमन्त्रण देता है तब से ही वह आस करने लगी थी कि वह उस दिन रजनी से विवाह का प्रस्ताव करने वाला है।

यद्यपि अपने स्वभाववश वह अपने सज्ञान बच्चों को केवल सम्मति देने का ही अपना अधिकार मानती थी। इस पर भी उनके भले-बुरे का चिन्तन तो वह करती थी। इसी चिन्तन से वह समझ रही थी कि कुछ ठीक नहीं हो रहा।

कान्तिलाल का पिता कलकत्ता लौट गया था। इस कारण उससे वह इस विषय में सम्मति नहीं कर सकती थी। उनके अतिरिक्त इस समय कोठी में दो व्यक्ति ही थे जिन्हें वह सम्मति देने का अधिकारी मानती थी। एक बाबा ब्रजलाल थे और दूसरे भागीरथलाल। भागीरथलाल उसका सगा देवर था और उसे कान्ति के पिता की अनुपस्थिति में वह अपने बच्चों का संरक्षक समझती थी। अतः मध्याह्न के भोजन के समय उसने रजनी को कमल का सन्देश दे दिया और तदनन्तर भागीरथलाल से बात करने लगी। उसने भोजनोपरांत भागीरथ से कहा, "भागीरथ भैया, मैं तुमसे एक अत्यावश्यक विषय पर तुरन्त सम्मति करना चाहती हूं।"

"भाभी, बताओ!"

"पृथक् में बैठकर सुनो तो ठीक रहेगा।"

भागीरथ उसे अपने रहने के कक्ष में ले गया और वहां अपनी बैठक में बैठ उसने पूछा, "अब बताओ, भाभी।"

"देखो, भैया, जब से रजनी दिल्ली आई है तो मेरा भतीजा कमलकिशोर उसके आगे-पीछे चक्कर काट रहा प्रतीत होता है। मुझे सन्देह है कि दोनों में किसी प्रकार की सांठ-गांठ हो रही है। आज उसका परीक्षाफल घोषित हुआ है और वह सबसे पहलें रजनी को सूचना देने आया था। वह घर पर नहीं थी। अत: वह उसको वैंगर पर चाय का निमंत्रण दे गया है। मैं समझती हूं कि वह उसे आज विवाह का प्रस्ताव करने वाला है।"

स्नेहलता कहती-कहती रुक गई। वह इस सूचना पर मन ही मन भागीरथ से पूछने वाले प्रश्न के शब्दों का चयन कर रही थी। कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विचार कर उसने कहा, "मैं तुमसे सम्मति करने आई हूं कि यह संयोग ठीक रहेगा अथवा नहीं। तथा मैं इसमें उसे अपनी सम्मति दूं अथवा न।"

"भाभी, मैं भैया से छोटा हूं और साथ ही इस प्रकार के विषयों में सम्मति देने का अपने को मैं अधिकारी नहीं मानता। यदि मेरा कहा मानो तो बाबा से सम्मति करनी चाहिए।"

"तो चलो, तुम भी चलो। कान्ति के पिता की अनुपस्थिति में मैं तुम्हें ही बच्चों का संरक्षक मानती हूं।"

"भाभी, आओ, बाबा से बात करते हैं।" दोनों ऊपर की मंज़िल पर ब्रजलाल के कक्ष में जा पहुंचे। ब्रजलाल भोजनोपरांत एक आराम कुर्सी पर बैठा कुछ विचार कर रहा था। इन्होंने बैठक के द्वार पर खड़े हो पूछ लिया, "बाबा, हम भीतर आ सकते हैं क्या?"

"कुछ काम हो तो आओ।"

दोनों भीतर जा पहुंचे और भागीरथ कहने लगा, "बाबा, हम सांसारिक जीव, बिना काम के न तो अपना समय व्यर्थ गंवा सकते हैं और न ही आपको कष्ट देने का साहस कर सकते हैं।"

"बैठो और बताओ। देवर-भाभी की क्या समस्या उत्पन्न हो गई है?"

"देवर-भाभी की नहीं, बाबा, भाभी तो तुल्य है और मां पुत्न की समस्या हो सकती ही नहीं। मां पुत्न को सदा क्षमा करती रहती है।

"बाबा, आज तो समस्या बच्चों की हो रही है। कान्ति की समस्या तो आपके आदेशानुसार सुलझ गई प्रतीत होती है। उसकी पत्नी नौकरी के लिए इण्टरव्यू के लिए गई हुई है और मैं समझती हूं कि उसको नौकरी मिल जाएगी। कान्ति भी अपने निर्वाह की रकम में और वृद्धि करने का यत्न कर रहा है। मैंने उससे स्वयं ही कहा है कि यदि वह कहीं नौकरी करने का विचार करता है तो मैं उसे परिवार में ही किसी प्रकार का काम दिलवा दूंगा। वह कहता था कि पांच सौ में उसका निर्वाह नहीं हो सकता है। वह विवाह तो करेगा ही। इस कारण बाल-बच्चे भी होंगे। तब इतने माल से निर्वाह नहीं होगा। अभिप्राय यह है कि मुझे आपसे मिलने वाले स्टाइपेण्ड के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार से आय करनी पड़ेगी।

"परन्तु बाबा, आज तो भाभी और मैं कान्ति की बहिन के विषय में बात करने आए हैं। वह पुनः विवाह करना चाहती है।"

"ठीक तो है। अभी वह बच्ची ही तो है। उसे विवाह कर लेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए।"

"पर वह अपने मामा के लड़के से विवाह करने वाली है।"

"और मामा का लड़का क्या कहता है?"

स्नेह ने कहा, "बाबा, यह वस्तुस्थिति का ठीक वर्णन नहीं। मैं बताती हूं। मेरे भाई विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं। वे दर्शनशास्त्र के आचार्य हैं। उनका लड़का कमलकिशोर भी दर्शनशास्त्र में एम० ए० पास है। वह लड़की के आगे-पीछे घूम रहा है। एक दिन रजनी ने कहा था कि वह समझ रही है कि कमल उससे विवाह का प्रस्ताव करेगा। वह क्या करे? मैंने उस समय तो उसे इतना ही बताया था हे संसार की दृष्टि में वह उसका भाई है। इससे वह स्वयं विचार कर ले।

"आज कमल उसे किसी होटल में चाय का निमंत्रण दे गया है। मैं समझती हूं कि जिस बात की रजनी को संभावना है, वह आज घटने वाली है। मैं यह जानने भागीरथ के पास आई थी कि मुझे उनको मना करना चाहिए अथवा नहीं? भागीरथ कहने लगा कि बाबा से सम्मति करनी चाहिए। इस कारण हम यहां आए हैं।"

ब्रजलाल आराम कुर्सी से ढासना लगाए, आंखें मूंदे विचार करता रहा। यह उसका स्वभाव था। वह जानता था कि मनुष्य के मन पर संस्कार रहते हैं। वे संस्कार शिक्षा और प्रथाओं से पड़ते रहते हैं। वे संस्कार ही मनुष्य के पूर्वग्रहों का निर्माण करते हैं। साथ ही वह यह भी समझ चुका था कि पूर्वग्रहों को बुद्धि की छलनी से चलाते रहना चाहिए। इससे शुद्ध, पवित्र अन्न से भूसा पृथक् किया जा सकता है।

आंखें मूंद वह बुद्धि की छलनी से ही इस समस्या को चला रहा था कि बूआ की लड़की अपने मामा के लड़के से विवाह कर रही है। साथ ही वह रजनी की विशेषावस्था पर विचार कर रहा था।

अपनी व्यवसायी बुद्धि से वह एक निष्कर्ष पर पहुंचा और उसने कहा, "इस स्वतंत्रता के युग में, जो उच्छृंखलता की सीमा पर जा पहुंचा है, किसी को अपने मन की बात करने से रोकना न तो सम्भव है और न ही उचित।

"स्वतंत्रता को उच्छृंखलता के क्षेत्र में जाने से रोकने का समय वह होता है जब कि स्वतंत्रता का ज्ञान कराया जाता है। मेरा अभिप्राय है कि शिक्षा के समय। हमारे स्कूल, कालेजों में स्वतंत्रता का पाठ तो पढ़ाया जाता है, परन्तु इसकी सीमाओं का ज्ञान नहीं कराया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता।

"जब उस कथित स्वतंत्रता का भोग करने का समय आता है तब उनको मना करो तो यह ऐसे ही हो जाएगा जैसे कि मुख में ग्रास डाल रहे व्यक्ति का हाथ पकड़ लिया जाए। ग्रास हाथ में पकड़ने से पहले मनुष्य को ज्ञान होना चाहिए कि वह अमृत है अथवा विष।

"मेरी समझ में तो यह होना चाहिए और कदाचित् यही हो सकता है कि उनको बुद्धि-प्रयोग का अवसर दिया जाए और वे अपना भला-बुरा विचार कर इस भवसागर में छलांग लगाएं। यदि उनकी शिक्षा से उनमें बुद्धि का विकास ठीक ढंग ते हुआ है तो अपने पूर्व-संचित संस्कारों की परीक्षा उससे कर लेंगे और ठीक परिणाम पर पहुंच जाएंगे।

"मुझे सन्देह है कि आजकल के पढ़े-लिखों में बुद्धि का विकास होता भी है अथवा नहीं।"

"तो मौन रहें?" भागीरथ ने पूछ लिया।

"मैं समझता हूं कि बहू ने ठीक ही किया है जो उसे अपनी बुद्धि का प्रयोग करने के लिए कहा है। जब सिपाही युद्धभूमि में जा खड़ा हो तो उसे शिक्षा देने लगना, बुद्धिमत्ता नहीं कहलाती। हम केवल यह ही कर सकते हैं कि कहीं सैनिक युद्ध से घायल हो घर पहुंचे तो उसकी उचित सेवा-सुश्रूषा कर उसे स्वस्थ कर दें।

"जब मैंने रजनी को भाभी मोहिनी को इस कोठी में रहने की स्वीकृति दिलाई थी तो मेरा यही आशय था। वह युद्धक्षेत्र से घायल हो आश्रय के लिए आई थी और मैं समझा था कि उस समय देखना कि वह धर्म के पक्ष में लड़ती हुई घायल हुई है अथवा अधर्म के पक्ष में लड़ती हुई, हमारा कार्य नहीं। घायल की, भले ही वह शत्रुपक्ष का हो, चिकित्सा करना डाक्टर का कर्तव्य है।

"अत मेरा विचारित मत है कि रजनी संसार-संघर्ष में कूदने वाली है। अब उसे समझाना-बुझाना न तो कार्य करेगा और न ही हित। अतः उसे युद्धक्षेत्र में अवतीर्ण होने दो। यदि तो वह सफल हुई तो हमारी चिन्ता करना व्यर्थ है। यदि युद्ध से परास्त और घायल लौट आई तो उस समय उसके मरहमपट्टी कर देंगे।

"मैं समझता हूं कि इस समय शिक्षा-दीक्षा व्यर्थ है।"

अतः स्नेहलता और भागीरथ घटना-चक्र को चलने देने के लिए चुप रहें। इस पर भी स्नेह रजनी से जानने के लिए उत्सुक थी कि कमल ने क्या कहा है और रजनी ने क्या उत्तर दिया है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रजनी ने वही बात मां को बता दी जो उसने मोहिनी को बताई थी। साथ ही यह भी बता दिया कि उन दोनों ने निश्चय किया है कि एक सप्ताह के उपरान्त इस विषय पर बात करेंगे।

मां को इस वार्तालाप को न सन्तोष हुआ था। वह बाबा ब्रज-लाल की बात समझ रही थी कि रजनी अपने मन में संस्कारों की परीक्षा बुद्धि से कर रही है। वह आशा करती थी कि उसकी बुद्धि इस विवाह को अनिच्छित समझेगी।

6

नवलकिशोर ने अपने छापाखाने के मैनेजर नीलकण्ठ आयंगर की छोटी बहिन रुक्मिणी से विवाह किया था। नवल की माता एक मद्रास की रहने वाली लड़की से विवाह पसन्द नहीं करती थी, परन्तु नवल रुक्मिणी के सम्मोहन में फंसा था और नीलकण्ठ नवल के धन-दौलत से प्रभावित था। नवल की माता प्रभावती पुत्र के हठ का विरोध नहीं कर सकी और विवाह हो गया।

जब बंटवारे का निर्णय हुआ था तब नवल के घर एक लड़का उत्पन्न हो चुका था। नवल के सम्पत्ति में चार भाग थे। उसकी माता प्रभावती का, उसका अपना, उसकी पत्नी रुक्मिणी का और लड़के का। नवल का विचार था कि लगभग पन्द्रह लाख प्रति भाग उसके परिवार को मिलेगा। अतएव पांच लाख रुपया उसे देना पड़ेगा। अतः उसने समझा था कि वह लाभ की स्थिति में नहीं है। रुक्मिणी भी इस निर्णय पर प्रसन्न नहीं थी। उसने अपने पति को कह दिया कि उसे मुद्रणालय और पुस्तकों का इतना मूल्य नहीं लगाना चाहिए जितना उसका पति मान आया था।

नवल ने कहा, "मैं अब मान आया हूं। लिखकर दे आया हूं। इस कारण अब बदल नहीं सकता।" इस पर रुक्मिणी ने कह दिया, "मैं आपसे पृथक् दावा करूंगी।"

"क्या लाभ होगा इससे?"

रुक्मिणी ने बताया, "आपके व्यापार की किताबों में सब कुछ का मूल्य तीस लाख रुपया है। वह आप परिवार को दे दीजिए और शेष तो हमारी अपनी मेहनत-मज़दूरी है। वह हम बंटवारे में नहीं लाएंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"और यदि धोखा-धड़ी में पकड़े गए तो?"

"कैसे पकड़े जाएंगे? आप भैया को एक दुकान मद्रास में खुलवा दीजिए और पचीस लाख से अतिरिक्त उसमें डाल दीजिए।"

"यह हो नहीं सकेगा।" नवलकिशोर ने इसको अव्यावहारिक बताया।

परन्तु रुक्मिणी नीलकण्ठ की सम्मति से काम कर रही थी। जिस दिन नवल और युधिष्ठिर ने यह काम सांझेदारी में लेने का निर्णय किया था उसी दिन उक्त वार्तालाप नवल और उसकी पत्नी में हुआ था। उसी दिन से नीलकण्ठ ने अपने नाम पर पृथक् एक व्यापार मद्रास में खोल दिया और जो कुछ भी पुस्तकों में लिख के अतिरिक्त सम्पत्ति थी अर्थात् अनियमित किताबों में थी, वह नीलकण्ठ निकाल-कर ले जाने लगा। इसमें लगभग पन्द्रह दिन लगे। अब नवलकिशोर ने युधिष्ठिर को कह दिया, "मैं समझता हूं कि तुम अपने पिताजी के साथ काम करो और मैं अपने चार परिवार के सदस्यों के साथ यह मुद्रणालय और प्रकाशन विभाग चलाऊंगा।"

युधिष्ठिर को नवल के व्यवहार में लुकाव-छुपाव समझ आया तो उसने भी यही उचित समझा कि वह पृथक् कार्य करे। वह दिल्ली लोट गया। सोमदेव ने उसे कानपुर अपनी कपड़ा मिल का मैनेजर बनाकर भेज दिया। स्वयं वह बंटवारा कमेटी का काम पूर्ण करने के लिए दिल्ली में ही रह गया।

युधिष्ठिर को गए अभी दस-बारह दिन ही हुए थे कि भागीरथ को एक नोटिस रुक्मिणी की ओर से मिला। उसमें रुक्मिणी के वकील भगवत कोठारी ने लिखा था, "मेरी मुवक्किल ने मुझे यह कहा है कि वह बंटवारा कमेटी के इस निर्णय को कि बम्बई के व्यवसाय का पैंसठ लाख दाम है, स्वीकार नहीं करती। उस पैंसठ लाख में परिवार की सम्पत्ति में मेरी क्लायण्ट का भाग भी समंजित किया गया है। इसे वह अपने साथ अन्याय मानती है। इस कारण मेरी क्लायण्ट यह चाहती है कि उसके भाग में जो भी रुपया आए वह उसे नकद अथवा पृथक् सम्पत्ति के रूप में दिया जाए।"

यह ठीक था कि नवल अपनी मां, पत्नी और लड़के की ओर से मुख्तियारनामा ले गया था, परन्तु उससे रुक्मिणी इन्कार करती थी। अब उस मुख्तियारनामा को उचित सिद्ध करना बंटवारा कमेटी का कर्तव्य हो गया था और इस झगड़े में वर्षों लग जाने वाले थे।

सोमदेव ने कहा, "भागीरथ, बंटवारा कमेटी की ओर से मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुख्तियारनामा दो। मैं बम्बई के व्यवसाय में कुछ कार्यवाही करना चाहता हूं।"

"क्या करोगे, दादा?"

"यह अभी नहीं बता सकता। तुम ऐसा करो कि इस नोटिस का उत्तर वकील से लिखाकर भेज दो। उसमें लिखाओ कि बंटवारा कमेटी के विचार में बम्बई के व्यवसाय का मूल्य नब्बे लाख है। पैंसठ लाख तो समझौते का मूल्य था।

"नवलकिशोर रुक्मिणीदेवी की ओर से समझौता करने का अधिकार-पत्र रखता था। इस कारण जो कुछ निर्णय हो चुका है, वह अन्तिम समझना चाहिए। यदि नवलकिशोर से किया यह समझौता रुक्मिणीदेवी को स्वीकार नहीं तो वह और नवलकिशोर दोनों दिल्ली जाएं और बातचीत कर निश्चय कर लें।"

इस नोटिस का उत्तर रुक्मिणीदेवी की ओर से यह आया कि वह मिस्टर नवलकिशोर के समझौते की पाबन्द नहीं। उसने इस काम के लिए अपने पति को किसी प्रकार का मुख्तियारनामा नहीं दिया।

बंटवारा कमेटी ने दिल्ली की अदालत में दावा कर दिया कि बम्बई वाले मुद्रणालय और प्रकाशन पर प्राप्ता बैठा दिया जाए। यहां से बम्बई नोटिस गया और वहां से नवल ने दिल्ली उपस्थित होकर उत्तर दिया कि उसका बंटवारा कमेटी से समझौता हो चुका है और वह मुद्रगालय और प्रकाशन संस्था का मालिक है। इसपर समझौता का कागज़ और उसके साथ रुक्मिणी का नवल के नाम मुख्तियारनामा, उपस्थित कर दिया गया। नवल के समझौते पर रुक्मिणी की ओर से अमान्यता उपस्थित कर दी गई।

अब मुख्तियारनामे के उचित और अनुचित होने पर विवाद होने लगा। इसमें तीन महीने निकल गए।

यह मुकदमा दिल्ली के सब-जज की अदालत में चल ही रहा था कि नीलकण्ठ बम्बई से चोरी किए माल को मद्रास में रखने के अपराध में पकड़ा गया और उस माल को सरकारी अधिकार में किए जाने के उपरान्त नीलकण्ठ से पचास हज़ार की ज़मानत मांग ली गई।

इस सूचना ने दिल्ली के मुकदमे का रंग बदल दिया। नीलकण्ठ पकड़ा गया था। सोमदेव के मद्रास में दावा करने पर कि बम्बई की हा भागीरथलाल एण्ड ब्रदर्ज़ दिल्ली में एक मुकदमे में विवादास्पद और यह माल नीलकण्ठ बम्बई से चुराकर मद्रास ले आया है, इस दावे के साथ मुद्रणालय और दुकान के तीन कर्मचारियों को उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर दिया गया। उनके मजिस्ट्रेट के सम्मुख सौगन्धपूर्वक बयान देने पर नीलकण्ठ पकड़ लिया गया और उसे पचास हज़ार की जमानत उपस्थित करने के लिए कहा गया।

इस बात की सूचना मिलते ही भागीरथ ने दिल्ली सब-जज के न्यायालय में यह प्रार्थना कर दी कि नीलकण्ठ रुक्मिणी का भाई है और उसने चोरी रुक्मिणी की सम्मति और नवलकिशोर के गुप्त सहयोग से की है। यह परिवार को लूटने की भावना से किया गया है। इसपर रुक्मिणी को दिल्ली उपस्थित हो इस आरोप का उत्तर देने के लिए कहा गया।

सोमदेव ने इसी विषय का मुकदमा बम्बई के प्रेजिडेंसी मजिस्ट्रेट के न्यायालय में उपस्थित कर दिया। सोमदेव की मांग यह थी कि नवलकिशोर, रुक्मिणी और नीलकण्ठ परिवार की सम्पत्ति में से चोरी कर रहे हैं। इनको रोकने के लिए सम्पत्ति पर प्राप्ता बैठा दिया जाए। नवलकिशोर ने इसका जवाब दावा यह दिया था कि परिवार की पूर्ण सम्पत्ति पर प्राप्ता बैठना चाहिए। इसका उत्तर परिवार की बंटवारा कमेटी और कर्ता से मांगा जाए।

मद्रास में नीलकण्ठ के कार्यालय से कुछ ऐसे पत्र पुलिस को मिले जिनसे यह सन्देह सकारण प्रतीत होने लगा था कि मद्रास का कार्य नवल ने परिवार की सम्पत्ति में से ही खोला है। इसपर मद्रास न्यायालय ने यह आदेश जारी कर दिया कि नीलकण्ठ की पचास हज़ार की हाज़िर ज़मानत हो जाए।

दिल्ली में सोमदेव नवल पर दो-तीन अन्य मुकदमे करने की सम्मति दे रहा था। भागीरथलाल इस मुकदमेबाज़ी से प्रसन्न नहीं था। वह किसी न किसी प्रकार से घर पर सब बात निश्चय करने के पक्ष में था। सोमदेव भागीरथ की मृदुल प्रकृति को देखकर विक्षुब्ध हो उठता था और उसे धमकी भी देता था कि वह पूर्ण परिवार की मीटिंग बुलाकर उस पर अविश्वास पारित करा उसे बंटवारा कमेटी से निकलवा देगा। इस धमकी पर भागीरथलाल नरम पड़ जाता था।

दिल्ली में रेल विषयों में भी द्रुत गति से परिवर्तन हो रहे थे। अभी नवल के दिल्ली सब-जज की अदालत में अभियोग चल ही रहा था और मद्रास वाले काम का रहस्योद्घाटन नहीं हुआ था कि रजनी और कमल ने अपने सम्बन्ध के विषय में निश्चय कर लिया। बातचीत अलीपुर वाली कोठी के ड्राइंग रूम में हुई थी। नियत दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रजनी और कमलकिशोर मिले थे। यह निश्चय था कि उस दिन वे अपने मन की बात को मूर्त रूप देने के लिए भावी कार्यक्रम बनाएंगे।

रजनी कमल की प्रतीक्षा कर रही थी। कमल कुछ चिन्तित प्रतीत होता था। रजनी प्रसन्नवदन थी। उसके मुख पर प्रसन्नता के लक्षण देखकर कमल यह समझा कि वह विवाह के लिए राज़ी है। इससे उत्साहित हो उसने बैठते हुए कहा, "मेरी माताजी ने हमारे सम्बन्ध को स्वीकार नहीं किया, परन्तु मैं मां को कह आया हूं कि मैं तुमसे ही विवाह करूंगा।"

"पर मेरा प्रश्न तो ज्यों का त्यों ही बना हुआ है कि आपकी यदि कोई सगी बहिन होती तो आप उससे विवाह का हठ करते?"

"नहीं, यह बात विचार ही नहीं सकता।"

"क्यों?"

"यह संसार-भर के देशों में प्रथा है कि बहिन-भाई का विवाह नहीं होता। इससे मेरा चित्त ऐसी बात के लिए तैयार नहीं हो सकता।"

"पर देखिए न, आपके बाबा और मेरे नाना एक ही व्यक्ति थे। आपके पिता और मेरी माताजी नानाजी की सन्तान थे। अतः वे बहिन-भाई हैं। उनकी सन्तान-प्रथा के अनुसार हम भी बहिन-भाई हैं। यह आवश्यक नहीं कि कोई प्रथा सार्वभौमिक हो तो मानने योग्य होती है और कोई एकदेशीय होने से माननीय नहीं होती। प्रथाएं तो स्थानीय होती हैं।"

"तो फिर तुम क्या कहती हो?" कमल ने निराशमन पूछ लिया।

"आपकी माताजी अर्थात् मेरी मामीजी ने इस विवाह को पसन्द नहीं किया। मेरी माताजी ने भी इसे अच्छा नहीं समझा। मैंने बाबा से पूछा था। वे कहते थे कि मनु के धर्मशास्त्र में इस प्रकार के विवाह को वर्जित माना है। इस कारण मैं तो यही कहूंगी कि हमारा विवाह अपने परिवार की प्रथा के अनुकूल नहीं है।"

"पर हम प्रथा को बदल नहीं सकते क्या?"

"हम नई प्रथा डाल सकते हैं, परन्तु यह नई प्रथा अपने और समाज के लिए हितकर तो होनी चाहिए।"

"हित तो इसमें है—रजनी का और मेरा विवाह होगा। हम अपना परिवार चलाएंगे। क्या यह कम हित की बात होगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक तो यह समाज के हित की बात नहीं होगी, देखिए, भगवान कृष्ण ने कहा है कि जैसा-जैसा आचरण समाज के श्रेष्ठ जन करते हैं, अन्य लोग उसका अनुकरण करते हैं। इस कारण पढ़ें-लिखे विद्वानों को ऐसा आचरण करना चाहिए जैसा कि वह सर्वसाधारण के लिए हितकर समझते हैं। एक बार हमारे जैसे पढ़े-लिखे युवकों ने मामा-फूफी की सन्तान में विवाह की प्रथा डाली तो कम शिक्षित लोग बहिन-भाई में भी सम्बन्ध करने लगेंगे।

"देखिए, कमलजी, मैंने बाबाजी से भी सम्मति की है। वे मुझसे पूछने लगे, 'क्या कमल को संसार में अन्य कोई लड़की ही दिखाई नहीं दी जो बहिन पर दृष्टिपात की है?'

"मैंने कहा, कदाचित् कमलजी को अन्य कोई दिखाई नहीं दी।'

"'हां।' वे कहने लगे, यूरोप के कुछ समाजवादियों को यूरोप में लड़कियों का अभाव दिखाई देने लगा है और वे कुमारों से विवाह की इच्छा करने लगे हैं।

"'पर रजनी, मैं ऐसा नहीं समझता। यूरोप में अभी भी लड़कियों की संख्या लड़कों से अधिक है और उनको अपना मुख किसी लड़के से काला करने की आवश्यकता नहीं। वे 'सॉडोमी' को कानून से क्षम्य निश्चय करा रहे हैं तो इसलिए कि लड़कियों से विवाह करने पर लड़कियां सन्तान की इच्छा करने लगती हैं और सन्तान का उत्तरदायित्व न तो युवक अपने सिर लेना चाहते हैं और न ही समाजवादी सरकार। अतः वे ऐसा चाहने लगे हैं। वहां की सरकार उनके इस चाहने को क्षम्य मानने पर बाध्य हो रही है। कारण यह कि सरकार ने मनुष्य समाज के सब बच्चों के पालन का उत्तरदायित्व उनके माता-पिता के कन्धों पर न डाल अपने पर ले रखा है।'"

"पर मैं तो यूरोप में नहीं रह रहा।" कमल ने उद्विग्न हो कहा, "और मैं इतना मूर्ख भी नहीं जो उन, जैसी अस्वाभाविक प्रक्रिया में रत हो सकूं। मुझे तो हिन्दुस्तान में ही रहना है।"

"मैं समझती हूं कि आप किसी अन्य लड़की के पीछे अपनी मोटर भगाएं। यह स्थान लड़कियों से भरा पड़ा है। मैं इस प्रकार के राष्ट्र-घातक कार्य के लिए अपने मन को तैयार नहीं कर सकी।"

"और यह राष्ट्र किस बला का नाम है?"

"इस देश में रहनेवाले समाज के धर्म और संस्कृति तथा यहां के लोगों के रीति-रिवाज, परम्पराओं और आचरण के सामूहिक रूप को राष्ट्र कहते हैं। मुझे भय है कि हम पढ़े-लिखे लोग किंचित् मात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी राष्ट्र भंग करने का यत्न करेंगे तो अनपढ़ इसकी धज्जियां ही उड़ा देंगे। भारत समाज का बना-बनाया महल गिरकर भूमिसात् हो जाएगा।"

"तो ये प्रथाएं बदलनी नहीं चाहिए?" कमलकिशोर ने रजनी की बात को कोरी भावुकता ही समझा था।

"बदलनी चाहिए। परन्तु प्रत्येक परिवर्तन में कुछ उद्देश्य तो होना चाहिए। निरर्थक और भविष्य में उच्छृंखलता उत्पन्न करने-वाले परिवर्तन लाना तो पाप हो जाएगा।"

रजनी ने बात समाप्त करने के विचार से उठते हुए कहा, "कहिए तो मैं आपकी किसी लड़की से विवाह में सहायता कर दूं? अब तो दिल्ली में मेरा परिचय बढ़ रहा है। चाचा भागीरथलालजी की कृपा से कई परिवारों में मेरा आना-जाना होने लगा है।"

विवश कमल भी उदास चित्त उठा और रजनी पर कटु व्यंग्य कसते हुए बोला, "मैं समझता हूं कि पहले तुम अपने विवाह का प्रबन्ध कर लो। पीछे मेरी चिन्ता करना।"

इतना कह वह ड्राइंगरूम से निकल गया।

7

कुछ दिन से कमलकिशोर अति खिन्न मन था। उसने रजनी से विवाह की बात अपनी मां से की थी। उसने बताया था, "मां, मैंने अपने विवाह का प्रबन्ध कर लिया है। अब तुम आशीर्वाद दो तो मैं विवाह की तिथि निश्चय कर सकता हूं।"

"पहले एक दिन उस लड़की को लाकर दिखाओ तो आशीर्वाद दे दूंगी।"

"लड़की तो तुम्हारी देखी-भाली है।"

"अच्छा? कौन है वह?"

"रजनी को मैंने इस काम के लिए चयन किया है।"

भगवती तो इस विचार को सुन स्तब्ध रह गई। वह कितनी ही देर तक लड़के का मुख देखती रही और फिर बोली, तुमने उससे बात की है?"

"हां।"

"वह क्या कहती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"उसने कहा है कि पहले मामी से पूछ लूं।"

भगवती के मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई। कमल ने समझा कि मां मान रही है। इससे उसने अपने मन के उद्‌गार वर्णन करने आरम्भ कर दिए। मां ने बात बीच में ही काटकर कह दिया, "उसने तुमको अस्वीकार कर दिया है।"

"नहीं, मां, उसने तो स्वीकार कर लिया प्रतीत होता है। केवल तुम्हारी स्वीकृति के लिए कहा है।"

"तुम भी उतने ही सरल चित्त हो जितने तुम्हारे पिता हैं। होने भी चाहिए। दार्शनिक और हो ही क्या सकते हैं?

"तुम संसार की समस्याओं पर विचार करते हुए अपनी पूर्ण विचारशक्ति तो वहीं समाप्त कर देते हो और अपनी निजी समस्याओं को सुलझाने के लिए तुम्हारे मस्तिष्क रूपी दीपक का तेल चुक जाता है।

"देखो, कमल, यदि उस चतुर लड़की ने तुम्हें स्वीकार किया होता तो कहती कि तुम अपनी मां से स्वीकृति ले लो। उसने तो कहा है कि मामी से सम्मति कर लो, अर्थात् वह अभी अपने को मामी की भांज़ी मानती है, अर्थात् तुम्हारी बहिन। मैं तुमको बहिन से विवाह की स्वीकृति नहीं दे सकती।"

"मां, यह बात नहीं है। उसने तुम्हें मामी स्वभाववश कहा है। जब विवाह होगा तो वह तुम्हें अपनी सास ही मानेगी।"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं समझती। मैं इस विवाह की स्वीकृति नहीं दे सकती। पहले उसे बहू बन इस घर में आने की बात मना लो तब ही मैं अपने व्यवहार पर विचार करूंगी।"

इस मनःस्थिति में ही कमल रजनी से बात करने गया था और वहां से अपनी माता के अनुमान का समर्थन पा अति खिन्न मन कोठी से निकला। वह अपनी मोटर में बैठा हुआ अविचारित पथ पर चल पड़ा। वह मोटर का हार्न बजाता हुआ और सड़क की भीड़-भाड़ से मोटर को बचाकर निकालता हुआ चला जा रहा था। इस यत्न में कि मोटर के नीचे किसी राही को कुचल न दे अथवा किसी दिल्ली परिवहन की बस से टक्कर लगा अपनी कार और कदाचित् जीवन को भी चकनाचूर न कर ले, वह पूरे ध्यान से मोटर चला रहा था। इससे वह अपने मन की खिन्नता और दुःख को भूल रहा था, इसपर वह निरुद्देश्य ही जा रहा था।

एकाएक उसे एक बस स्टैण्ड पर खड़ी भीड़ में एक परिचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुख दिखाई दिया। वह जाता-जाता रुक गया। उसे स्मरण आ गया कि वह मुख रजनी के कमरे में रहनेवाली मोहिनीदेवी का है। वह समझा कि कोठी जाने के लिए वह बस की प्रतीक्षा में खड़ी है। इतना स्मरण आते हुए और मोहिनी के वहां खड़े होने का अभिप्राय समझते-समझते वह कुछ दूर निकल गया था। अतः उसने जब गाड़ी रोकी तो वह बस स्टैण्ड से कई सौ गज़ दूर जा पहुंचा था।

उसने गाड़ी घुमाई और सवारी पाने के प्रत्याशियों की पंक्ति के समीप मोहिनी के सामने ला खड़ी कर दी।

"किधर जा रही हैं, मोहिनी जी?"

"कोठी को। आज एक बस आई नहीं और भीड़ कुछ अधिक हो गई है।"

"आइए, आपको लिए चलता हूं।"

"आपको कष्ट होगा। किधर जा रहे थे आप?"

"बैठिए, बताता हूं। अब उधर नहीं जाऊंगा।"

मोहिनी गाड़ी में ड्राइवर के समीप ही बैठ गई। कमल स्वयं गाड़ी चला रहा था। मोहिनी गोल मार्केट बस स्टैंड पर खड़ी थी और कमल उसे ले कनाट प्लेस की ओर चल पड़ा। बात कमल ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "वर्ड्सवर्थ की एक कविता है। 'वेस्टवार्ड हो'। अर्थ है कि निरुद्देश्य जाना। मैं भी वैसे ही जा रहा था।"

"तो रुक क्यों गए हैं?"

"निरुद्देश्य भागने को व्यर्थ समझ लौट पड़ा था। अब उद्देश्य से ही चलूंगा।"

"तो कोई उद्देश्य मिल गया है?"

"हां, अभी मोहिनीजी को कोठी पर पहुंचाना उद्देश्य बन गया है।"

"तब तो मैं अपने को कृतार्थ मानती हूं कि मैंने एक निरुद्देश्य प्राणी का उद्देश्य बना दिया है।"

"हां, अच्छा देखो, हम वैंगर के समीप से जा रहें हैं। यदि कहें तो एक प्याला चाय पीते चलें। समय भी हो गया है।"

"तनिक शीघ्र करना पड़ेगा। इस समय मैं बाबाजी को योगिराज अरविन्द का गीता का भाष्य सुनाया करती हूं।"

"उसमें क्या लिखा है। वह अपने को फिलॉसफर समझता था, परन्तु था वह एक सामान्य दुरूह अंग्रेज़ी लिखनेवाला लेखक।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बातें बहुत मज़ेदार लिखता है।"

"क्या?"

"छोड़िए, इस बात को। एक सामान्य लेखक की बात एक फिलॉसफर को सुनने पर कुछ भी लाभ नहीं होगा। साथ ही मुझे शीघ्र कोठी पर पहुंचना है।"

गाड़ी पार्क कर वे रेस्टोरां पर चढ़ गए। वास्तव में कमलकिशोर को मोहिनी रजनी से अधिक रसमयी प्रतीत हुई थी। मोहिनी में कुछ हास्य रस की प्रवृत्ति भी प्रतीत हुई थी। अतः वह मोहिनी के विषय में अधिक गहराई से जानने की इच्छा बना बैठा था।

मेज़ पर बैठते ही कमल ने मतलब की बात आरम्भ कर दी। उसने पूछ लिया, "क्या मैं आपका पूर्ण परिचय प्राप्त कर सकता हूं?"

"क्यों? पुलिस के हवाले करने का विचार है?"

"तो तुम पुलिस से डरती हो?"

"पुलिस से नहीं। पुलिस के हाथ में दे देने वालों से। मैं पुलिस से पकड़ी गई तो निश्चय छूट जाऊंगी, परन्तु कष्ट तो होगा। इस कारण पुलिस के हाथ में दे देने वालों से अधिक डरती हूं।"

"इस पर भी कुछ बात तो ऐसी होगी ही जिससे आपको पुलिस के हवाले किया जा सकता होगा?"

"वह तो है। मैं कम्युनिस्ट दल में टिकट होल्डर रही हूं।"

"तब तो सत्य ही आप भयंकर जीव हैं?"

"हूं नहीं, थी। अब नहीं हूं। इसी से कहती हूं कि पुलिस को अपना परिचय दूंगी तो छूट जाऊंगी, परन्तु आप परिचय किस उद्देश्य से चाहते हैं?"

इस प्रश्न पर कमल विचार करने लगा कि वह बताए अथवा नहीं और किन शब्दों में बताए? मोहिनी मुस्कराती हुई उसकी ओर देख रही थी। इस समय बैरा आया तो मोहिनी ने ही आर्डर दे दिया। बोली, "फ्राइड फिश और चाय। और देखो, जल्दी करो।"

बैरा चला गया तो कमल ने पूछ लिया, "फिश? ओह, ठीक है। आप बंगाली हैं न, इसलिए।"

"हां, परन्तु आपको परहेज़ तो नहीं?"

"परहेज़ हुआ तो क्या है? आप दो प्लेट भी खा सकेंगी?"

मोहिनी हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "हां, खा तो सकती हूं। पर बाबा प्रतीक्षा करते होंगे।"

"कुछ हानि नहीं होगी। बस मिली नहीं थी। देर होनी स्वाभा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विक है। मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूं। यदि नाराज़ न हों तो पूछ सकता हूं?"

"भला दो-दो प्लेट मछली खिलाने वाले से नाराज़ हुआ जा सकता है क्या? आप पूछिए। यदि आपने कोई ऐसा प्रश्न पूछ लिया जो अप्रिय हुआ तो उत्तर देने से इन्कार कर दूंगी। यदि इन्कार सुनने से आपको रुष्ट नहीं होना है तो पूछ सकते हैं।"

"आपकी आयु कितनी है?"

मोहिनी हंस पड़ी। बोली, "आप कितनी समझते हैं?"

"मैं यह देखता हूं कि आप बी० एड० हैं। इससे कम से कम इक्कीस-बाईस तो होगी ही। अर्थात् आप सज्ञान तो हैं।"

"तो क्या आप मुझसे विवाह का प्रस्ताव करने वाले हैं जो मेरे सज्ञान होने की बात जानने की इच्छा करने लगे हैं?"

"हां, कुछ विचार तो आया है। यदि आपके पति जीवित नहीं हों तो?"

"जीवित तो हैं, परन्तु तलाक हो चुका है।"

"ओह!"

"कितने काल तक विवाह रहा है?"

"एक वर्ष से कुछ ही कम।"

"और वे महानुभाव कहां हैं?"

"यहीं दिल्ली में हैं।"

"क्या काम करते हैं?"

"आजकल बेकार हैं।"

"कहां रहते हैं?"

"दस नम्बर अलीपुर रोड पर।"

इसपर तो कमल बेचैन हो उठा और उसकी ओर अधिक जानने की लालसा जाग पड़ी बैरा मछली की दो प्लेट और चाय ले आया। कमल ने कह दिया, "एक प्याला कॉफी और फ्रूट केक ले आओ।"

जब बैरा चला गया तो मोहिनी ने पूछ लिया, "आप चाय नहीं पीते क्या? उस दिन तो चाय ली थी।"

"आज दिल धड़क रहा है। इस कारण चाय बेचारी से काम चलता दिखाई नहीं देता।"

"हां, तो अब बताइए। क्या आप अब भी विवाह का प्रस्ताव कर रहे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी तक प्रस्ताव करने में कोई बाधा प्रतीत नहीं हुई। इस पर भी आपके पूर्व-पति का नाम-धाम तो जानना चाहूंगा।"

"आप उनको जानते हैं। आपकी बूआ के लड़के हैं। नाम आपको विदित ही है। आपकी बूआ का छोटा लड़का तो कलकत्ता लौट गया है और वे यहां कोठी में रहते हुए अमेरिकन नावल पढ़ा करते हैं।"

"विचित्र बात यह है कि आप तलाक देकर पति के सम्बन्धियों की कोठी में और उसकी बहिन के कमरे में रहती हैं। यह विडम्बना समझ नहीं आई।"

"इसमें कारण है चाचा भागीरथलाल जी और बाबा ब्रजलाल-जी की सज्जनता। साथ ही रजनी बहिन की सहृदयता।"

कॉफी आई तो चुस्की लगा और कुछ साहस पकड़ कमल नें पूछा, "क्या मैं विवाह का प्रस्ताव कर सकता हूं?"

"पहले यह बताइए कि रजनी बहिन ने जवाब दे दिया है अथवा नहीं?"

"दे दिया है। क्या उसने आपसे कुछ बात की थी?"

"हां, वे कह रही थीं कि आपसे विवाह नहीं करेंगी। वे भाई के साथ विवाह करने के लिए मत को तैयार नहीं कर सकीं।"

"तो रजनी तुमसे अपने मन के रहस्य बताती रहती है?"

"हां, मैं समझती हूं कि उन्होंने मुझे अपने मन की ठीक-ठीक बात बताई है।"

"अब बताने में भय नहीं रहा। रजनी ने विवाह से इन्कार कर दिया है। मैं उस इन्कार को सुन निरुद्देश्य अनुभव करता हुआ मोटर भगाता हुआ बुद्ध जयन्ती पार्क को जा रहा था।"

"उधर ही क्यों?"

"यह मैं नहीं जानता। खैर, उधर जाने का कुछ उद्देश्य होता तो मोहिनीजी को पंक्ति में खड़े देख रुक न जाता। इसीलिए कह रहा था कि निरुद्देश्य से उद्देश्ययुक्त हो गया था। और अब तो एक महान उद्देश्य बन गया प्रतीत होता है।"

मोहिनी दोनों प्लेट मछली की खा चुकी थी और उसे गले के नीचे उतारने के लिए दूसरी प्याली चाय पी रही थी। यह सब करती हुई वह सामने बैठे अर्धविक्षिप्त युवक के प्रस्ताव को मन ही मन मनन कर रही थी। वह समझती थी कि इतना पढ़ा-लिखा युवक एक निर्धन अविवाहित विधवा और विजातीय लड़की से विवाह का प्रस्ताव कर किसी प्रकार से भी बुद्धि का परिचय नहीं दे रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाएक दूसरा प्याला चाय का समाप्त कर, सासर में रख, उसने कहा, "हां, तो बताइए। विवाह का प्रस्ताव सत्य मानूं अथवा एक स्त्री से हंसी-ठिठोली का उपक्रम?"

"प्रस्ताव तो सत्य ही किया है, परन्तु एक बात आप समझ लें कि मैं दार्शनिक मन रखता हूं। यदि आप इन्कार कर देंगी तो नाराज़ नहीं हो सकता। किसी अन्य को प्रस्ताव करने के लिए ढूंढूंगा।"

मोहिनी इसपर हंस पड़ी। वह बोली, "बैरा, बिल लेकर आ रहा है। दाम दीजिए, शेष बात मोटर में बैठ करेंगे।"

बैरा सामने आ खड़ा हुआ था। प्लेट में बिल लिए हुए था। कमल ने बिल दिया और चलने को तैयार हो गया।

बात गाड़ी में बैठने के साथ ही आरम्भ हो गई। मोहिनी ने अपना पूर्ण इतिहास बता दिया और बताकर कहा, ऐसा करिए, अपनी माताजी को यह सब बताकर पूछना कि क्या वे आपको इन गुणों वाली लड़की से विवाह की स्वीकृति देती हैं अथवा नहीं।"

"परन्तु उनसे पूछने की क्या आवश्यकता है? हम दोनों सज्ञान हैं। कचहरी में चलकर विवाह के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।"

गाड़ी दरियागंज की भीड़-भाड़ वाली सड़क पर चल रही थी। इस कारण कमल ने बातें बन्द कर दी थीं। मोहिनी कह रही थी, "आवश्यकता इस कारण है कि आप विवाह उनके कहने पर कर रहे हैं। अतः उनकी पसन्द की लड़की से ही विवाह होना चाहिए।"

"पर विवाह तो मुझे करना है।"

"तो आप चौबीस घंटे घर पर मेरे साथ बैठे रहा करेंगे क्या? जब आप काम-काज के लिए घर से बाहर होंगे तब मुझे आपकी माताजी के पास ही तो रहना होगा।

"आप उनसे पूछ लीजिए। तब आप बता दीजिएगा और आशा कर सकते हैं कि मैं स्वीकार कर लूंगी।"

"अच्छी बात। कल मैं आपको सकल बन्द होने पर लेने जाऊंगा और वहां से चाय के लिए ले चलूंगा।"

"आ सकते हैं। मुझे साढ़े तीन बजे छुट्टी होती है। साथ गाड़ी स्कूल से कुछ अन्तर पर खड़ी रखिएगा। जब तक विवाह का निश्चय नहीं होता मैं स्कूल में अपना आदर और मान बनाए रखना चाहती हूं।"

"ठीक है।"

वे कोठी पर पहुंचे तो कमल ने मोटर कोठी से दो सौ गज़ इधर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही सड़क पर खड़ी कर दी और कहा, "मैं आपकी मान और प्रतिष्ठा में अभी सुरंग लगाना नहीं चाहता। आप उतरकर शेष मार्ग पैदल ही जा सकती हैं।"

8

आज मोहिनी बाबा ब्रजलाल के कमरे में गीता सुनाने के लिए आई तो वहां भागीरथलाल और एक अन्य प्रौढ़ावस्था की स्त्री बैठे थे। वह उस स्त्री को पहचानती नहीं थी। अत: एक अपरिचित स्त्री की बातों में उसके द्वारा विघ्न होगा अथवा नहीं, यह न जानते हुए द्वार के समीप ही खड़ी हो गई। ब्रजलाल ने उसे देखा तो बुला लिया, "आओ, मोहिनी, आ जाओ। तुम्हें परिवार के एक अन्य सदस्य का परिचय करा दूं।"

मोहिनी भीतर आकर उस स्त्री के समीप ही बाबा के सामने बैठ गई। भागीरथलाल बाबा के समीप बैठा था। ब्रजलाल ने कहा, "नवलकिशोरजी को जानती हो?"

"जी, सुना है, बहुत झगड़ालू व्यक्ति हैं। परिवार पर मुकदमे कर रहे हैं।"

"यह उनकी माताजी हैं। अपने पुत्र के पास ही रहती थी। कभी पहले अपने पति के बाबा से मिलने नहीं आई। आज बीस वर्ष के उपरान्त आई हैं।"

नवल की माता प्रभावती विस्मय में उस लड़की की ओर देख रही थी। वह उसकी रूप-राशि से तो प्रभावित हुई थी, परन्तु वह नहीं जानती थी कि यह कौन है। ब्रजलाल ने मोहिनी का परिचय दे दिया। उसने कहा, "मोहनलालजी को तो जानती हो? उनका एक लड़का कान्तिलाल है। वह इस लड़की को कलकत्ता से भगा लाया है। अब यह उसके साथ आने पर पश्चात्ताप कर रही है और उस पापकरम का प्रायश्चित्त कर रही है। नित्य इस समय मुझे गीता सुनाने आया करती है।"

अब प्रभावती ने कहा, "बाबा, मैं भी तो प्रायश्चित्त ही करने यहां आई हूं।"

"ठीक है। तुम भी अभी यहां रहो। अपने पुत्र के विषय में कचहरी में सत्य बात बता दोगी तो प्रायश्चित्त पूर्ण हो जाएगा। शेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बात तो उसके पीछे ही विचार की जा सकेगी।"

प्रभावती नवल से लड़ पड़ी थी। वह नवल के परिवार के प्रति व्यवहार को ईमानदारी का ही जानती थी। बीस वर्ष में पचास हज़ार की लागत का कार्य अब पचास लाख से ऊपर का हो गया था। वह यही जानती थी।

जब रुक्मिणी ने झगड़ा आरम्भ किया तो उसे पता चला कि उसका पुत्र परिवार के साथ दगा करता रहा है। रुक्मिणी ने बताया था, "मांजी, किताबों में पैंतीस लाख की सम्पत्ति लिखी है। आपके पुत्र इसका पैंसठ लाख देना मान आए हैं, भला मैं कैसे मान सकती हूं?"

मां ने आवेश में पूछ लिया, "नवल, इधर आओ तो। सुनो, बहू क्या कह रही है?"

"मां, तुम इसकी बातों में मत जाओ। यह सब बात नहीं बता रही।"

"बहू, सब बात बता दो। तभी तो नवल को मना सकूंगी।"

रुक्मिणी बताना नहीं चाहती थी। इस कारण चुप हो गई। परन्तु प्रभावती को झगड़ा समझ नहीं आया। उसने नवल को रुक्मिणी की बात समझाते हुए कहा, "नवल, यह कहती है कि तुम पैंतीस लाख की वस्तु का पैंसठ लाख देना स्वीकार कर आए हो।"

आखिर नवल ने बात स्पष्ट कर दी। उसने कहा, "मां, पिछले पन्द्रह वर्ष से कुछ ऐसा व्यापार भी करता रहा हूं जिसको मैं किताबों पर नहीं लिखता रहा।"

"किसलिए?"

"टैक्स से बचने के लिए।"

"पर भागीरथ को तो बताया होगा?"

"नहीं मां, न सरकार को बताया है और न भागीरथ को।"

"तो फिर यह अपनी बीवी को क्यों बता दिया है?"

"यह अपने भाई से जान गई है। सोमदेव यहां आया था। उसे कुछ सन्देह हो गया था। इस कारण मैं दिल्ली गया और भागीरथ से समझौता कर आया हूं कि सब पैंसठ लाख दाम की सम्पत्ति है।

"परन्तु यह कहती है कि मुझे किताबों में लिखा ही वीकार करना चाहिए था।"

"नहीं, बहू, सत्य बात हो गई है तो हानि नहीं हुई।"

इस पर नवलकिशोर और रुक्मिणी दोनों हंसने लगे। रुक्मिणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने अपनी सास को समझाते हुए कहा, "मांजी, सत्य तो पैंसठ लाख भी नहीं। यह उससे भी अधिक है।"

प्रभावती अवाक् बैठी रह गई। वह समझ नहीं सकी थी कि आगे क्या हो? रुक्मिणी समझी थी कि मांजी को सन्तोष हो गया है। नवलकिशोर बात को वहीं समाप्त करना चाहता था। वह मां को सब बात बताना नहीं चाहता था कि भविष्य में वह क्या करने वाला है।

अब फुसर-फुसर कानों-कान बातें होने लगीं। नीलकण्ठ मद्रास में दुकान करने चला गया था और बम्बई से कागज़, किताबें, मशीनें मद्रास भेजी जाने लगी थीं। मां घर में हो रही भाग-दौड़ को समझ नहीं सकी। रुक्मिणी के चक्कर मद्रास लगने लगे थे।

उक्त घटना के डेढ़ मास उपरान्त मद्रास से यह समाचार आया कि नीलकण्ठ हवालात में है। उसकी पचास हज़ार की ज़मानत मांगी गई है। पचास हज़ार की ज़मानत प्रभावती ने दी। उसने नकद इतना रुपया रिज़र्व बैंक में जमा कराकर कागज़ अदालत में उपस्थित कर दिए थे। इस पर भी नीलकण्ठ को छुड़ाने में एक सप्ताह लग गया। वह हवालात से छूटते ही बम्बई आया और फिर नवल और रुक्मिणी से गुप्त गोष्ठियां होने लगीं।

यह सब देख प्रभावती ने नवल से कहा, "बेटा, अब तो मुझे बताओ कि क्या हो रहा है? अब तो मैं नीलकण्ठ की ज़ामिन भी हूं।"

"रुपया तो मैंने दिया है मां! तुमको चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

"पर तुम करने क्या जा रहे हो?"

"हम परिवार को बदनाम कर देंगे। सोमदेव समझता है कि वह बहुत चतुर है। हम उसको मज़ा चखा देंगे।"

"पर क्यों? मुझे यह पता चला है कि नीलकण्ठ यहां का बहुत-सा माल चोरी ले गया था और छापेखाने के कुछ कर्मचारियों ने मुखबरी कर दी है।"

"वह सब झूठ सिद्ध हो जाएगा।"

"पर है तो सत्य?"

"मां, एक बात तुम नहीं समझतीं। पिताजी इतने वर्ष इस काम पर खून-पसीना एक करते रहे हैं। मैंने भी पिछले पांच वर्ष इस पर बहुत परिश्रम किया है, इस कारण हम अपने परिश्रम का ही प्रति-कार ले रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और दो सहस्र रुपया महीना जो भत्ता लेते रहे हो?"

"परिश्रम उससे अधिक का है।"

"और उसका परिवार में भाग भी तो है?"

"नहीं, हम इसे पर्याप्त नहीं मानते।"

बात प्रभावती की समझ में नहीं आई और वह इस शरारत को समझने और रोकने का विचार करने लगी।

एक दिन रुक्मिणी ने बताया, "मांजी, एक बहुत अच्छा समाचार आया है।"

"क्या और कहां से?"

"दिल्ली से। सुधीर के पिता कल प्रात:काल दिल्ली जा रहे हैं।"

"तुम्हें किसने बताया है?"

"उनका कार्यालय से टेलीफोन आया है कि उनके कपड़े तैयार रखूं। वे प्रातः छः बजे के हवाई जहाज़ से जा रहे हैं।"

मां ने पूछ लिया, पर हुआ क्या है?"

"आशा है कि पूर्ण परिवार की सम्पत्ति पर प्राप्ता बैठ जाएगा।"

"सत्य?"

"जी।"

"तो यहां भी प्राप्ता का अधिकार हो जाएगा?"

"पर हमने दस वर्ष के खाने-पीने और के लिए निकाल लिया है।"

प्रभावती चुप कर रही। उसे यह सब भी भारी छलना प्रतीत हो रही थी। एक बात प्रभावती को समझ आ गई थी कि उसकी बहू ही सब खराबी की जड़ है। उसे विदित था कि नीलकण्ठ अपनी विधवा मां और कुमारी बहिन के साथ बहुत ही निर्धनता का जीवन व्यतीत करता हुआ रह रहा था। जिस समय नवल की दृष्टि रुक्मिणी पर पड़ी और नीलकण्ठ उसे एक पंजाबी युवक के साथ विवाह देने पर राजी हुआ था, उसी दिन से नीलकण्ठ की छापाखाने में उन्नति होने लगी थी। वह प्रूफरीडर के रूप में छापाखाने में नियुक्त था। प्रूफरीडर से उन्नति करता-करता वह मैनेजर बना और उसकी बहिन नवल की पत्नी बन अब बच्चे की मां बन गई।

डबल लेखा की किताबें तो नवल के पिता के समय से ही रखी जा रही थीं। परन्तु जब नीलकण्ठ मैनेजर बना तो उसको पता चल गया कि किस प्रकार लाखों की सम्पत्ति, हिसाब-किताब के बाहर रखी जा रही है। यह सब सम्पत्ति मशीनरी, छापी पुस्तकों और सोने-चांदी में रखी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब बंटवारा होने लगा तो नीलकण्ठ ने यह सुझाव दिया था कि नियमित किताबों के बाहर की पूर्ण सम्पत्ति हजम की जा सकती है। नवल बंटवारे के निर्णय के उपरान्त जब बम्बई लौटा तो रुक्मिणी और नीलकण्ठ को पता चल गया कि क्या हो रहा है। अतः नीलकण्ठ ने सब सम्पत्ति जो लिखत-पढ़त में नहीं थी, मद्रास पहुंचाने की योजना बना दी थी। वह योजना अभी चालू नहीं हुई थी कि सोमदेव बम्बई आ पहुंचा और एक घण्टे के वार्तालाप में ही वह समझ गया कि दाल में कुछ काला है।

सोमदेव तो सब कुछ पर अगले दिन ही ताले लगवाने की योजना बना चुका था कि भागी रथलाल ने नवलकिशोर को दिल्ली बुला लिया। अतः अदालत के समन नवल को नहीं मिले और दो दिन की देर हो गई। इन दो दिनों में नीलकण्ठ ने नकद सम्पत्ति मद्रास के बैंकों के लॉकरों में ले जाकर रख दी। नीलकण्ठ ने उन मशीनों को उखाड़ने और खोलने की आज्ञा दे दी जो किताबों में दर्ज नहीं थीं।

जब नवल युधिष्ठिर को साथ लेकर बम्बई आया तो छापाखाने में बहुत उथल-पुथल मची हुई थी। अतः नवल ने युधिष्ठिर को घर में ही रखा और उससे सांझदारी की शर्तों पर मतभेद बना पन्द्रह दिन व्यर्थ गंवा दिए। वास्तव में उस समय तक सब कुछ, जो हटाया जाना था, हटाकर मद्रास के लिए रवाना हो चुका था। अब नवल ने युधिष्ठिर को यह कहा कि दोनों की मति एक नहीं, इस कारण उनमें सांझेदारी में काम चल नहीं सकेगा।

इसके उपरान्त नीलकण्ठ मद्रास गया और रुक्मिणी ने बंटवारा कमेटी को नोटिस दे दिया और सोमदेव को पुनः बम्बई आना पड़ा। इस बार वह चोरी-चोरी आया और नवल के कर्मचारियों से मेल-जोल उत्पन्न करने लगा। इसमें वह सफल हो गया। एक मराठा ओंकारनाथ रानाडे था जो कि छापाखाने में असिस्टेण्ट मैनेजर के रूप में काम करता था और मैनेजर बनने का अधिकारी था। मालिक के साले को साधारण प्रूफरीडर से उन्नति करते-करते उसके सिर पर से लांघ मैनेजर बनते देख वह असन्तुष्ट था। सबसे पहले वह ही मालिक से बागी हुआ और उसने सब रहस्य बता दिया।

दो अन्य कर्मचारियों को धन के लोभ से रानाडे ने अपने साथ मिलिया और बम्बई में नीलकण्ठ को चोरी के आरोप में पकड़वा दिया।

प्रभावती को घर में मची भाग-दौड़ का सब रहस्य पता चला तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह घबरा उठी थी। आज से बीस वर्ष पूर्व जब देश-विभाजन के परिणामस्वरूप पूर्ण परिवार दिवालिया हो गया था तब उसने अपने पति को परिवार में ही रहने के गुण बताकर विवश किया था कि वह भागीरथलाल के साथ परिवार में सम्मिलित हो जाए। वह देख रही थी कि उसका अनुमान ठीक था।

जहां भागीरथ का पिता डिप्टीलाल भी बम्बई में जाकर अपने पन्द्रह हज़ार की सम्पत्ति से व्यवसाय करता हुआ सर्वथा उजड़ गया था और पीछे निर्धनता में बहुत ही बुरी अवस्था में उसकी मृत्यु हुई थी, वहां उसका पति नवल का पिता परिवार की पूंजी के बल पर व्यापार में उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा था।

आज परिवार पर रुक्मिणी और उसके भाई को प्रहार करते देख उसे यह सर्वथा अनुचित प्रतीत हुआ था।

रात उसने लड़के से पूछा, "दिल्ली जा रहे हो?"

"हां, मां।"

"क्या है वहां?"

"बंटवारा कमेटी ने कुछ नया झगड़ा उत्पन्न कर दिया है।"

"क्या झगड़ा कर दिया है?"

"कान्तिलाल को बेदखल कर दिया गया है।"

"क्यों?"

"उसने एक बंगाली लड़की से विवाह किया है और परिवार के लोग नाराज़ हो गए हैं।"

प्रभावती को यह समझ आया कि जैसे एक पंजाबी परिवार में मद्रासी लड़की ने हलचल मचा रखी है वैसे ही वह बंगाली लड़की भी कुछ कर रही होगी। इसपर वह अपने व्यवहार पर मनन करते हुए बोली, "नवल, परिवार की हिमायत करनी चाहिए, परिवार के विरोधियों की नहीं।"

"पर परिवार अन्याय जो करने लगा है।"

"जैसे हमारे साथ कर रहा है। यही न?"

"हां।"

"तब तो ठीक है। तुम और कान्तिलाल एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो। तुम्हारी मद्रासी बहू तुमको पापकर्म की प्रेरणा दे रही है और वह बंगाली लड़की कान्ति से कोई पापकर्म करवा रही होगी।"

"नहीं, मां, तुम कुछ समझती तो हो नहीं और व्यर्थ में बहू की निन्दा करने लगती हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर परिवार से झगड़ा तुमने किया है अथवा नहीं?"

"परिवार मुझे लूटने जा रहा था।"

"तुमसे चोरी का माल वापस लेना, लूटना समझते हो?"

"वह चोरी नहीं थी। मेरी अर्जित सम्पत्ति थी।"

मां चुप कर रही। वह समझ गई थी कि विचार की दिशा में ही भेद है। अतः तर्क व्यर्थ है। उसके मन में आया कि उसे भी दिल्ली चलना चाहिए और वहां किसी प्रकार परिवार से वह अपने पुत्र की सुलह करवाने का यत्न करे।

अगले दिन प्रातःकाल नवल हवाई जहाज़ से दिल्ली गया और उसी दिन सायंकाल प्रभावती जनता ऐक्सप्रेस से दिल्ली चली गई। रुक्मिणी पति और भाई की अनुपस्थिति में छापाखाने और दुकान का काम देखने घर से गई हुई थी। केवल सुधीर की आया ही घर पर थी। आया ने मांजी को बिस्तर और सूटकेस ले जाते देखां तो पूछ लिया, "कहां जा रही हैं, मांजी?"

"मैं परिवार के पुरखा के पास पाण्डीचेरी जा रही हूं। बहू से कह देना कि वहां जाकर पत्र लिखूंगी।"

वह जनता ऐक्सप्रेस से बारह बजे दिल्ली पहुंचने वाली थी, परन्तु गाड़ी तीन घण्टे से ऊपर देर से पहुंची थीं और वह कोठी पर चार बज के उपरान्त पहुंच सकी थी।

कोठी में पहुंच उसे पता चला कि नवल परिवार में नहीं आया। इस पर भी उसने पहुंचते ही भागीरथलाल को पूर्ण परिस्थिति से अवगत कर दिया।

"और चाची, तुम किसलिए आई हो?"

"तुम लोगों को सचेत करने और अपने को पुत्र से पृथक् करने।"

"परन्तु जब तक नवल से झगड़ा है तब तक तुमको पृथक् में कुछ मिलेगा नहीं।"

"मैं कुछ लेने नहीं आई। मैं अपने पति के परिवार में रहने आई हूं और पुत्र को छोड़ आई हूं। वहां पाप हो रहा समझ आया है।"

भागीरथ उसे बाबा के पास लेकर पहुंच गया। ब्रजलाल का स्पष्ट कहना था कि पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त से ही पाप से मुक्त हुआ जा सकेगा।

"बाबा," प्रभावती ने कह दिया, अपनी जानकारी में मैंने कोई पाप नहीं किया। अतः मुझे अपने किसी कर्म पर पश्चात्ताप नहीं हो रहा। इस पर भी एक मूर्ख और पापी पुत्र उत्पन्न करने का प्रायश्चित्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूंगी। जैसे बाबा कहेंगे वैसा ही करूंगी।"

"अपने पुत्र के विरुद्ध साक्षी दोगी?"

"यदि प्रायश्चित्त में यह आवश्यक हुआ तो यह भी करूंगी।"

"भले ही उसे इसमें लम्बा-कठोर दण्ड मिलने वाला हो?"

"बाबा, दण्ड तो न्यायाधीश देगा। मैं तो सत्य बात बताने का वचन देती हूं।"

अभी योजना बन ही रही थी कि मोहिनी आ गई। मोहिनी के परिचय के उपरान्त बाबा ने गीता-पाठ सुनने की इच्छा की तो प्रभावती को मोहिनी और कान्ति के सम्बन्ध से कान्ति की बात स्मरण आ गई। उसने कहा, "बाबा, एक बात और है। इस बार नवल के कार्य में कान्तिलाल भी सम्मिलित है। मुझे यह बताया गया है कि तुम सब लोग कान्ति के विरुद्ध इस कारण हो कि उसने एक बंगाली लड़की से विवाह कर लिया है। तुम नवल के विरुद्ध भी इसी कारण हो कि नवल ने एक मद्रासी ब्राह्मण की लड़की से विवाह किया है।"

इस पर भागीरथ, मोहिनी और ब्रजलाल हंस पड़े। ब्रजलाल ने कहा, "यह तुमने ठीक ही किया है कि कान्ति की बम्बई में चर्चा का वर्णन कर दिया है। भागीरथ इस विषय में उचित कार्यवाही करेगा। रही बात हमारे किसी बंगाली अथवा मद्रासी लड़की के विरुद्ध होने की, उसकी बात तुम इससे पूछ लेना। यही यह बंगाली लड़की है जिसे कान्ति की पत्नी कहा जाता है।"

प्रभावती समझ गई कि रुक्मिणी ही सब फसाद की जड़ है। वह बाबा के चरण-स्पर्श कर उठी और भागीरथ के साथ नीचे चली गई। मोहिनी ने गीता पर अरविन्द की टीका निकाली और पढ़कर बाबा को सुनाने लगी।

9

रजनी कमलकिशोर से सब बात स्पष्ट कर देने के उपरान्त मन से एक बोझा उतर गया अनुभव करने लगी थी। अतः वह अपने कमरे में पहुंच अपने को पुनः स्वतंत्र और स्वच्छ व्यवहार रखने के योग्य पा सुख और हल्कापन अनुभव करती हुई पलंग पर लेट अपने कल्पना-क्षेत्र में जा पहुंची।

वह विचार कर रही थी कि वास्तव में उसकी अन्तरात्मा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वासना का उद्रेक हो आया था और वह उस बाढ़ में बह चली थी। अब उससे बच किनारे पर नहूंच गई अनुभव करती हुई असीम सुख अनुभव करने लगी थी। यह करती-करती वह सो गई।

उसकी जाग खुली जब मोहिनी बाबा को गीता-पाठ सुनाकर आई थी। कमरे में 'खड़ाक्' हुआ तो उसकी जाग खुल गई। मोहिनी ने उसे देखा तो पूछ लिया, "रजनी बहिन, स्वास्थ्य तो ठीक है?"

"हां।" वह पलंग से उठी और लपक कर नीचे खड़ी हो अंगड़ाइयां लेने लगी। मोहिनी ने कह दिया, "तो कमल जी से मुक्ति पा गई हो?"

"हां। तुमने कैसे जाना?"

"इस कुसमय में तुम्हारे सोने से।"

"हां, यह सोना उसी का परिणाम है। मैं उसे कह चुकी थी कि मैं इतनी प्रगतिशील हूं कि मामा के लड़के को भाई नहीं मानती। पीछे मुझे यह समझ आया था कि मैं नितान्त मूर्खता की बात कह आई थी और उसको वापस लेना चाहती थी। आज उसका अवसर मिला था और मैं उसे बता सकी हूं कि मैं उसकी वही बहिन हू जो पिछले मास थी।

"मैं अपने मन में यह अनुभव करने लगी थी कि अब मैं अधिक उन्नत मनस्थिति में हूं। जिसे मैं प्रगतिशीलता समझ रही थी वह विगतिशीलता ही थी। किसी को भी भाई समझना उन्नत मन का सूचक है, पिछड़े मन का नहीं। अतः मन से हल्कापन अनुभव करती हुई पलंग पर लेटी तो सो गई थी।"

"आज पूजा नहीं करोगी?"

"करूंगी क्यों नहीं, मैं समझती हूं कि यह पूजा के समय किए गए चिन्तनों का ही प्रभाव है कि मैं गढ्ढे में गिरती-गिरती बची हूं।"

मोहिनी ने कुछ नहीं कहा। अब वह भी पूजा करने में रस लेने लगी थी। उसे रजनी की पूजा की व्याख्या से यह सुखकर प्रतीत होने लगी थी। बाबा ने कहा था और अरविन्द बाबू ने भी गीता-भाष्य में लिखा था, "चिन्तन ज्ञान का स्रोत है।" और वह पूजा में चिन्तन का लाभ अनुभव करने लगी थी।

दोनों ने मुख-हाथ धोए और आसनों पर बैठ गई। पन्द्रह मिनट तक मौन, निश्चल और ध्यानावस्थित बैठ उठीं तो मोहिनी ने कहा, "रजनी बहिन, एक बात बताऊं?"

रजनी ने मोहिनी की चमकती हुई और शरारत से भरी चंचल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आंखों में देखते हुए पूछा, बताओ, भाभी, क्या कहती हो?"

"आज कमलकिशोर मेरे साथ विवाह का प्रस्ताव कर गया है।"

"सत्य? कहां मिले थे वे, तुमको?"

"गोल मार्कट के समीप बस स्टैण्ड पर क्यू में खड़ी थी कि वे मोटर भगाते हुए बिरला मन्दिर की ओर जाते दिखाई दिए थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने भी मुझे वहां खड़े देखा होगा। वे कुछ दूर जा गाड़ी लौटा लाए और मुझे गाड़ी में बैठा वैंगर रेस्टोरां में ले गए। वहां चाय पीते हुए प्रस्ताव कर गए हैं।"

"और तुम स्वीकार कर आई हो?"

"नहीं। मैंने उनको अपनी पूर्ण कहानी सत्य-सत्य सुना दी है और कहा है कि यह कहानी सुना अपनी मां से पूछ आएं कि मेरे जैसी लड़की को वे बहू बनाएंगी क्या? तब मैं विचार करूंगी।"

रजनी हंस पड़ी। हंसकर बोली, "ऐसा प्रतीत होता है कि यह फिलॉसफर का बेटा किसी लड़की की संगत के लिए व्याकुल हो रहा है।"

"मैंने उसमें व्याकुलता नहीं देखी।" मोहिनी ने गंभीर हो कहा, "मैंने वासनाभिभूत युवकों को देखा है। उनके अनुभव के उपरान्त मैं यह निश्चय से कह सकती हूं वह विवाह के लिए व्याकुल तो नहीं था। मुझे कुछ ऐसा समझ आया है कि उसे किसी ने कुछ काम बताया है और वह शीघ्रातिशीघ्र उस काम को कर उत्तरदायित्व से मुक्त होना चाहता है।

"ऐसा मेरे साथ कई बार हो चुका है। मुझे दल ने यह काम सौंपा था कि मैं आपके भाई को ऐसा उल्लू बनाऊं कि उससे अपने परिवार के साथ द्रोह करने पर तैयार कर दू। जैसी मैं उस समय अपनी मनःस्थिति पाती थी वैसी ही इनकी मुझे समझ आई है।

"अभी पूजा में बैठी हुई मैं उनके व्यवहार पर ही चिन्तन कर रही थी और मुझे अपने उस समय के व्यवहार तथा आपके भाई के वर्तमान व्यवहार में समानता दिखाई दी है।"

रजनी देख रही थी कि चिन्तन की शक्ति में मोहिनी उससे आगे निकल रही है। वह इससे चकित थी और प्रसन्न भी। उसने एक बात और पूछ ली, "अच्छा यह बताओ भाभी, यदि उसकी मां ने तुम्हारे पर आपत्ति न की तो तुम विवाह के लिए मान जाओगी?"

"मैंने इस विषय पर भी चिन्तन किया है। मैं इस परिणाम पर पहुंची हूं कि मेरे सब दुर्गुण जानते हुए यदि वे और उनकी माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुझे स्वीकार करेंगे तो मैं मान जाऊंगी। मैं इन्हें आपके सगे भाई साहब से श्रेष्ठ मानती हूं।"

"पर एक बात समझ लो। कदाचित् कमल की माताजी तुम्हें शीघ्रातिशीघ्र मां बन दो-तीन पुत्रों को जन्म देने के लिए कहेंगी।"

"यह बात अवश्य विचारणीय है। मैं कोई गाय-बकरी नहीं जो नवीकरण के लिए किसी नर-पशु के पास भेजी जा रही हूं।"

रजनी हंस पड़ी। हंसती हुई बोली, "मैं जानती हूं कि मामी परिवार चलाने के लिए बहुत उत्सुक हैं।"

"देखूंगी कि क्या करना होगा और मुझमें क्या करने की सामर्थ्य हैं।"

इस पर नवल के माता जी के आने की बात चल पड़ी। रजनी ने कहा, "नवल चाचा और कान्ति दादा दोनों परिवार रूपी महल को भूमिसात् करने पर कटिबद्ध हो रहे हैं। यह महल तो अब गिरेगा ही। इसके मलबे के नीचे कौन-कौन दबकर मरेगा, कहा नहीं जा सकता।"

"आपके कान्ति भैया की बात तो मैं समझ रही हूं। वे कम्युनिस्ट हैं और कम्युनिस्टों का यह सिद्धांत है कि सब प्राचीन वस्तुओं को तोड़-फोड़ दें जिससे नवनिर्माण हो सके। परन्तु नवल चाचा की बात समझ में नहीं आ रही। वह तो प्राचीन के विरोधी नहीं। फिर वह इस प्राचीन प्रथा का विरोध क्यों कर रहे हैं?"

रजनी हंस पड़ी और बोली, "देखो, भाभी, तुम्हारा प्रश्न ठीक है। एक प्राचीन का विरोधी और एक प्राचीन का उपासक। परन्तु व्यवहार में दोनों एक समान हैं। यह क्यों?

"मैं तो यह समझती हूं कि दोनों का समान व्यवहार एक ही बात बताता है कि दोनों में मानव एक समान हैं। मानव में दो अंग बहुत महत्त्व के हैं। एक मन और दूसरा बुद्धि। दोनों में, मेरा अभिप्राय है कि प्राचीन और नवीन के उपासकों में, ये दोनों अंग एक जैसे हैं। उनमें विकार भी एक ही ढंग से उत्पन्न होते हैं और वे विकार एक समान ही काम करते हैं।"

"क्या विकार हैं जो दोनों में समान रूप से काम कर रहे हैं?"

"एक सांझा विकार तो है अज्ञान। अर्थात् सत्य ज्ञान का अभाव। ज्ञान मन का विषय है। दोनों के मनों में ज्ञान का अभाव है। अर्थात् मन मिथ्या ज्ञान से आच्छादित है।

"जहां तक मुझे समझ आया है कि दोनों की बुद्धि भी कुण्ठित है और वह उनके मनों में संचित ज्ञान का विश्लेषण कर बता नहीं सकती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि उनका ज्ञान मिथ्या है।

"यह प्रतीत होता है कि दादा कान्ति के और चाचा नवल के मिथ्या ज्ञानों में भेद है। मिथ्या बातें तो प्रायः भिन्न-भिन्न होती हैं। जैसे दस छात्र एक ही गणित के प्रश्न का गलत उत्तर निकालते हैं तो दसों के उत्तर भिन्न-भिन्न होते हैं। यदि बीस छात्र प्रश्न का ठीक उत्तर प्रस्तुत करते हैं तो बीस के बीस उत्तर ही एक समान होते हैं। यही बात ज्ञान की है। मिथ्या ज्ञान अनेक हैं। सत्य एक है।

"मिथ्या ज्ञान भिन्न-भिन्न होने पर भी बुद्धि निर्मल हो तो उनका सत्य ज्ञान से भेद बता सकती है, परन्तु दोनों में बुद्धि मलिन है।"

"और बुद्धि निर्मल कैसे होती है?"

"चिन्तन से।"

"अब इनको चिन्तन करने के लिए कौन कहे? वे किसी की मानेंगे नहीं।"

"देखो, भाभी, यदि इनके भाग्य ठीक हैं तो कोई पारस पत्थर की भांति इनको मिल जाएगा और उसके स्पर्श मात्र से इनकी बुद्धि निर्मल होने लगेगी। परन्तु यह संयोग भाग्य से होता है।"

"जैसे रजनी बहिन मुझे मिल गई हैं?" मोहिनी ने मुस्कराते हुए कह दिया।

"हमारा समागम भी भाग्य का खेल ही है। इससे किसीको लाभ होने वाला है अथवा हानि होने वाली है, अभी कहना कठिन है। मैं निरन्तर चिन्तन में लीन हूं। इसका फल होता है। परन्तु वह ठीक फल हो रहा है अथवा नहीं;—जब कार्य होगा और फल निकलेंगे तब ही कुछ कहा जा सकेगा।"

"अच्छा, रजनी बहिन, यह बताओ कि तुम अब कमल से स्पष्टीकरण के उपरान्त क्या विचार कर रही हो?"

"सत्य बताऊं? पर किसी से कहना नहीं।"

"यदि बहिन कहती है कि न बताऊं तो नहीं बताऊंगी।"

"देखो, मैं विचार कर रही थी कि मामी, मोहिनी भाभी को स्वीकार करेंगी अथवा नहीं। बहुत विचारोपरान्त मैं इस परिणाम पर पहुंची हूं कि वे स्वीकार कर लेंगी। जो कुछ दोष भाभी ने बताए हैं वे भाभी में नैसर्गिक नहीं, कृत्रिम थे और अब नहीं हैं। मामी भाभी से मिलेंगी और उसे स्वीकार कर लेंगी। वे कदाचित् माताजी से पूछेंगी और माता जी अब भाभी को निर्दोष मानती हैं।"

मोहिनी चिन्तत के इस परिणाम को सुन बहुत प्रसन्न हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दोनों सोफा पर बैठी थीं। अपनी प्रसन्नता को अपने ही मन में सीमित न रख सकने के कारण मोहिनी ने रजनी की कमर में हाथ डाला और उसे अपनी ओर खींच गले से लगा लिया और उसका मुख चूम लिया।

रजनी इस मनोद्‌गार को देख हंस पड़ी। उसने उसके गले लगाने का विरोध नहीं किया। जब मोहिनी अपने मनोद्‌गारों का प्रदर्शन कर चुकी तो रजनी ने पूछ लिया, "इसका अभिप्राय यह है कि तुम कमल भैया से विवाह के लिए लालायित हो?"

"रजनी बहिन, मैं भी आज इसी विषय पर चिन्तन करती रही हूं और यह समझती हूं कि मुझे विवाह कर लेना चाहिए। यह अविवाहित जीवन सदा के लिए चल नहीं सकेगा। जब विवाह करना ही है तो कमल जी कुछ बुरे आदमी नहीं हैं। अति सरल चित्त, एक अंश में विक्षिप्त और मोटर चलाते समय अति ज्ञानवान, सतर्क तथा सावधान हैं। मुझे विश्वास हो रहा है कि यदि मैं उनकी गाड़ी में जीवन-यात्रा आरम्भ करूंगी तो वे गाड़ी को टक्कर नहीं लगाएंगे और जीवन-यात्रा में गाड़ी वृद्धावस्था तक सुख-सुविधा से चला सकेंगे।"

"मुझे तुम्हारी यात्रा पुनः आरम्भ होती देख बहुत प्रसन्नता होगी।"

"और बहिन रजनी की यात्रा?"

"मैंने यह बात तो अब समझ ली है कि मुझे भी पुनः गृहस्थी में प्रवेश कर लेना चाहिए। परन्तु मुझ मेरी गाड़ी का कोई चालक मिला नहीं। मैं अपनी बस की प्रतीक्षा में खड़ी हूं।"

अगले दिन कमलकिशोर मोहिनी को गोल मार्केट के समीप बस स्टैण्ड के समीप खड़ा मिला। उसे वहां देख मोहिनी का हृदय आशा और उत्सुकता से गेंद की भांति उछलने लगा। वह स्थिति को स्थिर करने के लिए खड़ी हो गई। कुछ क्षण तक वह खड़ी रही। कमल ने आते-आते उसे खड़े हो जाते देखा तो गाड़ी से निकल आया और उसकी ओर चल पड़ा। अब मोहिनी भी चली और मुस्कराती हुई उसके सामने खड़ी हो गई।

"क्यों, आती-आती खड़ी क्यों हो गई थीं?"

"मैं समझ रही थी कि कल वाली कहानी सुन आप नहीं आएंगे। आशा के विपरीत आपकी गाड़ी को प्रतीक्षा में खड़ी देख सिर को चक्कर आने लगा था। उसे ठीक करने के लिए ठहरना आवश्यक था, अन्यथा वहीं गिर पड़ती।"

"तुम गिरती तो मैं भाग कर तुम्हें उठा लेता। खैर, तुम नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गिरी। देखो, मैंने तुम्हारी सब बात माता जी को सुनाई है। वे सुन कुछ देर तक गम्भीर भाव में विचार करती रहीं और फिर बोलीं, 'उसे यहां ले आओ। मैं उसे देखूंगी और उससे बात करूंगी। पीछे ही कुछ सम्मति दे सकूंगी।'"

"सत्य? तब तो मैं चलूंगी।"

"माता जी घर पर प्रतीक्षा कर रही हैं। हमें आज चाय वहां पर ही लेनी है। कदाचित् पिता जी भी वहां होंगे।"

"तो चलिए। परन्तु..."

"परन्तु क्या?"

"मैं बहुत भद्दी पोशाक में हूं। दिन-भर की स्कूल में मेहनत के उपरांत कुछ क्लान्ति भी अनुभव कर रही हूं।"

"हां, बंगाली लड़की होने से कुछ रंग भी मैला है। थोड़ा पाउडर के छींटे दे उसे कुछ तो उज्ज्वल कर लेना चाहिए। ठीक है न?"

दोनों गाड़ी में बैठे तो कमल गाड़ी विश्वविद्यालय क्षेत्र की ओर ले चलने लगा।

"तो ऐसा करिए। दो मिनट के लिए अलीपुर दस नम्बर पर चलिए। मैं वहां कपड़े तो बदल लूं। और पाउडर..."

कमल हंस पड़ा और बोला, "पर उन वस्त्रों में तो मैंने-तुम्हें पसन्द किया ही नहीं। जैसी को पसन्द किया है वैसी ही माता जी को दिखा दूंगा। यदि उस मोहिनी को वे भी पसन्द करेंगी तो ठीक, अन्यथा नहीं।"

"यह तो बहुत कठोर परीक्षा में डाल रहे हैं आप!"

"नहीं, मोहिनी, मैं तुम्हें सरलता से उत्तीर्ण होने का उपाय बता रहा हूं।"

10

"कहां गई थीं भाभी?" रजनी ने मोहिनी से पूछा था। मोहिनी रात आठ बजे कोठी में पहुंची थी। जब वह गीता का पाठ करने ब्रजलाल के कमरे में नहीं पहुंची तो उसने रजनी से पूछ भेजा था कि मोहिनी आज पाठ करने क्यों नहीं आई? रजनी जानती नहीं थी। वह बाबा को बताने स्वयं जा पहुंची। यह बता कि मोहिनी आई नहीं, उसने कह दिया, "बाबा, मैं पाठ सुना दूं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, तुम सुनाओ। देखें, तुम कसा पढ़ती हो?"

रजनी ने चौकी पर रखी गीता की पुस्तक ली और पढ़ने लगी। बीच-बीच में जहां भाषा अथवा भाव समझ नहीं आते थे तो ब्रजलाल पुनः पढ़ने के लिए कहता रहता था। अभी पाठ समाप्त नहीं हुआ था कि भागीरथ आ गया। जब तक पाठ होता रहा वह भी मौन बैठा सुनता रहा। एक घंटे और के पाठ के उपरान्त बाबा ने कह दिया, "बस बेटा, एक दिन के लिए यह पर्याप्त है।"

रजनी उठकर जाने लगी तो भागीरथलाल ने कह दिया, "रजनी, तुम भी सुनती जाओ। आज हमें नोटिस मिल गया है कि क्यों न पूर्ण सम्पत्ति को मुहरबन्द कर दिया जाए? बंटवारा कमेटी कान्तिलाल का भाग नहीं दे रही।"

बाबा ने कहा, तो इसका उत्तर तैयार कर दे दो। देखो, भागीरथ, आज देश के पूर्ण वायूमंडल में मूर्खता और स्वार्थ आ रहा है। इसका विरोध जब तक सामर्थ्य है, करते जाना चाहिए।"

"वह तो बाबा, करेंगे ही। मैं अभी-अभी वकील से बात करके आया हूं और उसे इस प्रकार का उत्तर तैयार करने को कह आया हूं।

"पूर्ण सम्पत्ति को मुहरबन्द करने की आवश्यकता नहीं। कान्तिलाल ने सम्पत्ति में अपना भाग बीस लाख रुपया आंका है। हम इतना रुपया बैंक में जमा करा देते हैं। यदि अदालत कान्ति को रुपया मिलना स्वीकार करेगी तो उस जमानत के रुपये में से दे सकेगी। परिवार की बंटवारा कमेटी का यह निर्णय है कि कान्तिलाल को सम्पत्ति में से कुछ नहीं मिलना चाहिए। इस निर्णय को कोर्ट में चुनौती दी जा सकती है। हम उस चुनौती का अदालत में विरोध करेंगे।"

"ठीक है। परन्तु इतनी रकम बैंक में नकद जमा करा सकोगे?"

"बाबा, आपके आशीर्वाद से करा सकूंगा।"

"मैं समझता हूं कि मुकदमा चलना चाहिए। नवल ने यह आघात मद्रास में किए आघात के प्रतिकार में किया है।"

"रजनी," भागीरथ ने कह दिया, "अपनी माताजी से कह देना कि यदि हम सफल हो गए तो कान्तिलाल को आग लगाने के अपराध में कैद करवाना आवश्यक हो गथा है। मैं तुम्हारे पिता जी को लिख रहा हूं कि वे कान्तिलाल पर कारखाने को आग लगवाने का षड्यन्त्र करने का दावा दायर कर दें।"

रजनी ने कह दिया, "चाचा जी, मां अब भैया में रुचि नहीं रखतीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बात दूर तक जा रही है। कान्ति के भाग को न देना उचित सिद्ध करने के लिए उसे कैद करवाना आवश्यक हो गया है।"

"चाचा जी, अब मैं जाऊं?" रजनी ने पूछ लिया।

"हां, तुम्हें यही बताना था। अपनी माता जी से भी बता देना।"

रजनी चली गई। उसे कान्तिलाल के व्यवहार पर लज्जा लग रही थी। जब वह चली गई तो ब्रजलाल ने कहा, "अब तो मोहिनी भी कान्तिलाल के विपरीत साक्षी भरेगी।"

"हमें अब अपनी पूर्ण शक्ति से इन दो विद्रोहियों को कुचल डालना होगा।"

"मैं इसमें कोई हानि नहीं समझता। परिवार तो अब रहेगा नहीं। मैं समझता हूं कि सांझेदारी की कम्पनियां जो तुम बना रहे हो वे भी नहीं चलेंगी। शीघ्र ही इस एक परिवार के बीस परिवार बनेंगे। पति-पत्नी ही का रूप रह जायेंगे। बच्चे भी जब तक वे सज्ञान नहीं हो जाते परिवार में रहेंगे। सज्ञान होते ही वे पृथक् होना चाहेंगे।

"और देखो, यदि अमरीका और यूरोप का चलन चला तो पति-पत्नी का भी परिवार नहीं रहेगा। मोहिनी सुना रही थी कि अमेरिका और फ्रांस में प्रायः प्रत्येक सज्ञान प्राणी को नौकरी करनी पड़ती है। पति-पत्नी प्रातः उठते हैं, नित्य कर्म से निवृत्त हो जल्दी-जल्दी प्रातः का अल्पाहार ले अपने-अपने कार्यालय को चले जाते हैं। पति का कार्यालय पत्नी के कार्यालय से प्रायः दूर होता है। अतः मध्याह्न का भोजन वे अपने-अपने कार्यालय के समीप किसी होटल से ले लेते हैं। दिन-भर काम कर सायं को वे किसी चाय पीने के स्थान पर मिल जाते हैं; कभी तो वे रात के खाने के पश्चात् सोने के लिए घर पर आ जाते हैं। मैं इसका यह अर्थ समझता हूं कि परिवार पति पत्नी तक भी सीमित नहीं रहेगा। इसका और विश्लेषण होकर प्रत्येक व्यक्ति स्वयं ही अपना परिवार होगा।

"मोहिनी बता रही थी कि देश को एक परिवार बनाने का यत्न हो रहा है, परन्तु उसका ही यह कहना है कि देश के परिवार में तो देश के राजा को अति क्रूरतापूर्वक शासन करना पड़ेगा। परिवार में तो सहानुभूति और मधुरता रहती है, परन्तु समाज में शासन रखने के लिए तो दण्ड विधान अति संकीर्ण और कठोर करना पड़ेगा।

"अन्त में एक बात हो रही प्रतीत होती है कि जितनी स्वतंत्रता अधिक पनपेगी उतने ही मानव के बन्धन कड़े होते जायेंगे। हम एक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दूसरे से स्वतंत्र होंगे, परन्तु अपनी आवश्यकताओं की दासता में जकड़ते जायेंगे।"

"ठीक है बाबा, यह काल की प्रवृत्ति है। अब एक परिवार के सदस्यों को परिवार से अधिक सहानुभूति और न्याय अदालत से मिलता दिखाई देने लगा है। यह मृगतृष्णा ही सिद्ध होगी।"

रजनी को अपने भाई की इस नई करतूत से अति दुःख हुआ था और वह अपने कमरे में जा हाथ-मुह को धो पूजा के आसन पर बैठ चिन्तन में लीन हो गई थी। पूजा समाप्त हो गई। रजनी की मनः-स्थिति चिन्तन से कुछ ही ठीक हुई थी। अभी भी उसके मन पर बोझा था। वह माता के कमरे में गई और उसे चाचा भागीरथलाल का सन्देश देकर अपने मन की बात बताने लगी। उसने कहा, मां, कदाचित् यह सोने की लंका भी जलकर भस्म हो जाएगी। तब हम उत्तरी लंका के निवासी त्याग और तपस्या का जीवन व्यतीत करने पर विवश हो जायेंगे।"

"बेटा रजनी, निराश होने की आवश्यकता नहीं। हमको जो भी सहायता परिवार को चाहिए, देनी चाहिए। तुम्हारे पिता जी को यहां की पूर्ण स्थिति से अवगत करा दिया गया है। वहां कर्मचारियों को उनके वेतन और भत्ते का भुगतान करने में कठिनाई हो रही है। भागीरथ का यह आदेश है कि सबके साथ न्याय और सहानुभूति से व्यवहार किया जाएं। इससे धन अनुमान से अधिक व्यय हो रहा है। इस पर भी ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए।"

"चाचा जी कह रहे थे कि बीस लाख नकद बैंक में जमा कराना पड़ेगा।"

"इसमें कठिनाई तो होगी, परन्तु मुझे भागीरथ की कार्यकुशलता पर विश्वास है। वह इस कठिनाई से भी पार पा जाएगा।"

रजनी और स्नेहलता दोनों नवल की मां के कमरे में पहुंचीं। उसे समाचार मिल चुका था कि कान्तिलाल ने क्या किया है। वह चाहती थी कि पता किया जाए कि नवल इत्यादि कहां ठहरे हैं। भागीरथ ने बताया था कि यह कल पता चल जाएगा।

रजनी कुछ काल तक वहां बैठ अपने कमरे में गई, परन्तु मोहिनी अभी भी नहीं आई थी। वह उस दिन की घटना को मन से निकालने का यत्न कर रही थी, परन्तु सफल नहीं हो रही थी। इससे वह पुनः सोफा पर बैठी हुई ही विचारों में निमग्न हो गई।

रात के आठ बजे मोहिनी आई। कमल उसे अपनी मोटर गाड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में कोठी पर छोड़ गया था। वह सबसे पहले बाबा से गीता पाठ के लिए न आ सकने के लिए क्षमा मांगने चली गई।

"कहां गई थीं तुम?"

"बाबा, एक नये बन्धन में बन्ध रही प्रतीत होती हूं। कदाचित् शीघ्र ही बाबा से आशीर्वाद लेने आऊंगी।"

"बंधनों में बंधने के लिए आशीर्वाद चाहोगी?"

"बाबा, आपने ही तो कहा था कि प्रेम के बंधन स्वतंत्रता के सूचक होते हैं।"

"हां, यह तो है। इसका अर्थ यह निकला कि तुम प्रेम के बन्धनों में बंधने जा रही हो?"

"हां, बाबा।"

"देखो बिटिया, विधिवत् विवाह कर लेना। पहले की भांति मत करना।"

"पर बाबा, विधियां तो अनेक हैं। कौन-सी विधि आप चाहते है?"

"कोई भी विधि जिसे समाज ने स्वीकार किया हुआ हो। जो प्रत्यक्ष हो। लुकाव-छुपाव वाली विधि न हो।"

"बाबा, यत्न करूंगी।"

"हां। मन से इन्द्रियों पर शासन करोगी तो सब कुछ सम्भव हो जाएगा।"

मोहिनी बाबा से छुट्टी ले अपने कमरे में गई तो रजनी ने देखते ही पूछ लिया, "कहां गई थीं, भाभी?"

मोहिनी ने रजनी के समीप सोफा पर बैठते हुए कहा, "रजनी बहिन की मामी जी के दर्शन करने।"

"तो हुए दर्शन?"

"हां। आपके भैया अपनी मां के पास ले गए थे। उनको मेरी जीवन-कथा पहले ही बता दी गई थी। अतः मुझे मुख से कुछ नहीं कहना पड़ा। वहां पहुंचते ही चाय पर जा बैठे। आपके मामा जी भी आ गए। चाय पर इधर-उधर की बातें होती रहीं। राजनीतिक विषय पर, समाज कल्याण के विषय पर और समाजवाद के विषय पर। जो विशेष बात समझ में आई, वह यह थी कि आपके मामा जी बातों का विश्लेषण बहुत ही सरलता से करते जाते थे।

"बोले, 'उद्योग और व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण वास्तव में समाजवाद से सर्वथा पृथक् बात है। सिद्धांत से समाजवाद है समाज के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समष्टिगत हितों को व्यक्ति के हितों से ऊपर समेझना। राष्ट्रीयकरण में यह बात नहीं आती। इसमें तो पूर्ण जातीय परिश्रम और उससे निर्मित सम्पत्ति पर कुछ एक की तानाशाही स्थापित करना है। यदि तानाशाही राजनीतिक शक्ति होगी तो भयंकर परिणाम उत्पन्न कर सकती है। यदि आर्थिक तन्त्र में राजनीतिक तानाशाही होगी तो और भो अधिक भयंकर परिणाम उत्पन्न करेगी।'

"इस पर मैंने पूछ लिया, तो समाजवाद क्या है? डिक्टेटरशिप आफ दि प्रोलिटरियट ही तो समाजवाद कहलाता है?'

"'नहीं। यह कम्यूनिज़्म है। समाजवाद और कम्युनिज़्म में यही अन्तर है। एक डिक्टेटरशिप नहीं और दूसरी डिक्टेटरशिप है।'

"'परन्तु सभी समाजवादी यह मानते हैं कि पूर्ण समाजवाद आने पर डिक्टेटरशिप हो जाएगी।'

"'वह इस कारण कि आज के प्रायः समाजवादी मन से कम्यु-निस्ट हो चुके हैं। वे या तो स्वयं धोखे में पड़े हुए हैं अथवा जान-बूझकर दूसरों से छलना खेल रहे हैं। एक समाज के हितों को व्यक्ति के हितों से ऊपर समझना है और दूसरा कुछ एक धूर्तों की तानाशाही स्थापित करना है।'

"'तो समाजवाद सर्वथा एक निरीह सिद्धांत है?'

"वे मुस्कराकर बोले, यह तो मैंने नहीं कहा। राम और श्याम दो व्यक्ति हैं। एक तानाशाह है और दूसरा दासता में रत। इस विश्लेषण से यह परिणाम कैसे निकला कि एक श्रेष्ठ है और दूसरा दुष्ट?"

"'दोनों में भयंकर दोष है। दासता में रत समाजवादी है। जैसे दास प्रवृत्ति वाला व्यक्ति सदा मालिक ढूंढ़ता रहता है। बिना मालिक उसे अपना मार्ग सूझ नहीं पड़ता। वही बात एक समाजवादी की है। वह समझता है कि व्यक्ति को ठीक मार्ग पर ले जाने के लिए समाज के प्रतिनिधियों अर्थात् नेताओं की आवश्यकता रहती है व्यक्ति बिना नेता के, पथ-प्रदर्शन के अवश्य पथभ्रष्ट होगा। वह सम्पत्ति नहीं रख सकता। कोई कहता है कि अधिक नहीं रख सकता, थोड़ी रख सकता है। कोई कहता है कि व्यक्ति को न तो विवाह करने की बुद्धि है और न भोजन करने की। उसे कपड़े भी नेताओं की सम्मति से बनवाने और पहनने चाहिए। सन्तान भी वह नेताओं की सम्मति से उत्पन्न करे। इस प्रकार व्यक्ति के व्यवहार की सब बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेताओं के अधीन होनी चाहिए।'

"'और यह नेता कैसे बनें? इस पर कोई विधि-विधान नहीं। जो बन गया सो बन गया। जब उसे हटा दिया गया तो हट गया। यह है समाजवाद।'

"इन्हीं बातों में चाय समाप्त हो गई। चाय के उपरान्त रजनी बहिन की मामी जी मुझे अपने कमरे में ले गईं और पूछने लगीं, 'कमल से विवाह करोगी?'

"मैंने कहा, वे कह रहे हैं कि मैं कर लूं।'

"'तुम क्या कहती हो?'

"'मुझे वे एक श्रेष्ठ व्यक्ति समझ आ रहे हैं।'

"'तुम देखने में तो स्वस्थ, सुन्दर और बुद्धिमान प्रतीत होती हो और तुम कहती हो कि कान्ति के घर पर एक वर्ष के लगभग रही हो पर तुम्हारे कोई सन्तान क्यों नहीं हुई?'

"'इच्छा नहीं थी। न मुझे न आपके भांजे को।'

"'तो तुम कृत्रिम उपायों से सत्तान-निरोध करती रही हो?'

"'उनकी स्वीकृति से।'

"'यह स्वीकृति तुम्हें कमल नहीं देगा।'

"'तो वे उपाय प्रयोग में नहीं लाऊंगी।'

"'अर्थात् उसका कहा मानोगी?'

"'मांजी, यह तो परस्पर सहचारिता का विषय है। दोनों ही एक दूसरे का कहा मानेंगे तो विवाहित जीवन चल सकेगा।'

"रजनी बहिन, बस इतनी ही बात हुई और वे बोलीं, 'ठीक है। व्याह के विषय में कार्यक्रम बना लो।'

"हम दोनों कमरे से बाहर आ गईं। ड्राइंग रूम में पिता-पुत्र बैठे थे। मांजी ने कह दिया, 'यह बेचारी तो गाय प्रतीत होती है। कमल दोहेगा तो यह प्रसन्नता से दूध देगी। यदि कमल में दोहने की योग्यता न हुई तो यह लालसा से उसका मुख देखा करेगी। मैंने इसे पसन्द किया है। कमल, इसे घर पर ला सकते हो।'

"'पर मां, यह मुक्का मार नाक भी तो फोड़ सकती है?'

"'तुम अपनी नाक को इसके हाथ की पहुंच से दूर क्यों नहीं रख सकोगे?'

"इसपर आपका मामा और मामी यह कह कि वे प्रोफेसर सुधाकर को मिलने जा रहे हैं, घर से चले गए और हम अपने विवाह का कार्यक्रम बनाने लगे। एक घंटे के विचार-विनिमय के उपरान्त मैं आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दार्शनिक भाई को यह समझा सकी कि मैं अभी स्कूल की नौकरी नहीं छोड़ूंगी। एक मास की 'हनीमून' के लिए छुट्टी लेनी पड़ेगी। वह मैं मुख्याध्यापिका जी से बात कर लूंगी। तब उस छुट्टी के पूर्व विवाह की तिथि निश्चय करेंगे।"

"और एक घंटा में इतना कुछ ही निश्चय हुआ है?"

"नहीं। हम अपने भावी जीवन की रूप-रेखा बनाते रहे हैं। वे कहने लगे, पिताजी कहते हैं कि नौकरी नहीं करनी। कम खर्च पर जीवन चलाओ और लोक-कल्याण का कार्य करो। इस प्रकार करते हुए जो कुछ मिल जाए उसे स्वीकार कर लो। इस कारण एक निर्धन ब्राह्मण का जीवन चलाने के विचार से कार्यक्रम बन गया है। छः मास के सेवाकार्य के उपरान्त मैं भी नौकरी छोड़ दूंगी और उनके साथ लोक-कल्याण के कार्य में लग जाऊंगी।"

"और बस?" रजनी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

मोहिनी इस 'बस' का अर्थ समझ हंस पड़ी और बोली, "हम छ: सात वर्ष के बच्चों की भांति किसी अजायबघर अथवा चिड़ियाघर की सैर करने के लिए कार्यक्रम बनाते रहे और फिर आपके भाई साहब मुझे डॉक्टरेट के लिए लिखे निबन्ध में से कहीं से अंश सुनाते रहे। सायं सात बजे आपके मामा, मामी आए और आपके भाई मुझे अपनी गाड़ी में बैठा यहां कोठी के बाहर छोड़ गए हैं।"

"मैं समझती थी कि नवीन विवाह सम्पन्न हो गया है।"

"मैं इसकी आशा करती थी। उनके माता-पिता गए तो मैं कुछ वैसी ही आशा करती थी जो आपके दूसरे भाई ने प्रथम मिलन के समय किया था। पर रजनी, वे पशु थे और ये दार्शनिक। दोनों में अन्तर स्पष्ट था। हमने हनीमून दक्षिण में किसी सागर-तट के नगर में व्यतीत करने का कार्यक्रम बनाया है। वहां भी दिन-भर में सैर करने की योजना तो बनती रही, परन्तु रात को क्या करेंगे, इसपर चर्चा नहीं हुई।

"वे मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते रहे जैसे अपने किसी युवक मित्र से किसी लम्बी यात्रा पर जाने का कार्यक्रम बना रहे हों।"

"और तुमने भी इच्छा प्रकट नहीं की?"

"मैं किसी प्रकार की उच्छृंखलता करने का साहस नहीं कर सकी।"

रजनी गम्भीर विचार में मोहिनी का मुख देखती रही। वह विचार कर रही थी कि क्या उसे भी कोई ऐसा ही साथी मिल सकेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और क्या वह इसे वाँछनीय मानती है?

11

इसका एक परिणाम यह हुआ कि रजनी को बाबा को गीता का पाठ सुनाने के लिए नित्य जाना पड़ता था। वह अब सायं बाबा की संगत में रहने लगी। बाबा गीता सुनाते, समझते और फिर उसपर चर्चा भी होती थी। कभी मोहिनी वहां आ जाती जब रजनी पढ़कर सुना रही होती थी तो वह बाबा से क्षमा मांग लिया करती थी। वह कहा करती थी, कि रजनी बहिन के भाई साहब अमुक स्थान पर ले गए थे और वहां वे यह दिखाते रहे। अथवा वे उसे पुस्तकालय में ले गए थे और पुस्तकों को पढ़कर उनमें से सार निकालने की विधि बताते रहे।

कभी बाबा पूछ लेते, "मोहिनी, विवाह कब करोगी?"

"जब वे कहेंगे। वैसे मैंने अपनी मुख्याध्यापिका से अपने विवाह की चर्चा कर एक मास की छुट्टी मांगी है। वे कह रही हैं कि मार्च के मध्य में परीक्षाएं आरम्भ हो जायेंगी तब मुझे छुट्टी मिल सकेगी। मैं विचार कर रही हूं कि तब तो मैं स्कूल छोड़ ही दूं सदा के लिए। तब तक मैं इनके भाई साहब के साथ अध्ययन-कार्य में लगने की योग्यता प्राप्त कर लूंगी।"

बाबा ने कह दिया, "विवाह शीघ्र कर लो। हनीमून पीछे जब छुट्टी होगी, मना लेना।"

"बाबा, क्या लाभ होगा इससे?"

"मैं अब पाण्डीचेरी जाने की योजना बना रहा हूं। यदि मेरे यहां रहते तुम्हारा विवाह हो जाए तो मैं आशीर्वाद देकर ही जाना चाहता हूं।"

"कब तक जाने की योजना बन रही है?"

मुकदमे शान्त हो रहे प्रतीत होते हैं। नीलकण्ठ को चार वर्ष का कठोर दण्ड हो गया है। नवल के व्यवसाय पर प्राप्ता बैठ गया है और उसका पांच सौ रुपया मासिक व्यय नियत हुआ है। पांच सौ रुपया महीना उसकी पत्नी को भी मिलेगा।

नवल ने नीलकण्ठ को विवश कर दिया था कि वह बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के मुद्रणालय में से तथा प्रकाशन विभाग में से चोरी को अपने सिर ले ले। नवल ने उसे यह आश्वासन दिया कि जब तक वह बन्दी रहेगा उसके परिवार का पालन-पोषण और उसके भी जेल में सुख-सुविधा का प्रबन्ध वह करा देगा। इस प्रकार नवल ने नीलकण्ठ को अपनी योजना पर बलि हो जाने दिया, परन्तु उसका इसमें उद्देश्य पूर्ण नहीं हुआ।

नवलकिशोर के मुकद्दमे में उसकी माता प्रभावती की साक्षी ने उसके व्यवसाय पर प्राप्ता बैठा दिया। बहुत यत्न करने पर पति-पत्नी को एक सहस्र रुपया मासिक व्यय निश्चय हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि कांतिलाल का फतेहपुरी के रॉयल होटल में रहते हुए भागीरथलाल के परिवार की पूर्ण संपत्ति पर प्राप्ता बैठाने का मुकदमा चल नहीं सका। नीलकण्ठ बन्दीखाने में डाला गया तो कान्तिलाल को व्यय मिलना बन्द हो गया। बम्बई कोर्ट ने पहले नवल के मकान और व्यवसाय पर ताले लगाए और पीछे प्राप्ता बैठा दिया। कान्तिलाल का वह आश्रय भी जाता रहा। बम्बई से खर्चा आना बन्द हुआ तो उसका होटल का बिल रुक गया। बिल एक महीने का हो गया तो होटल वालों ने नोटिस दे दिया कि सायंकाल तक बिल की अदायगी न हुई तो उसका सामान होटल से बाहर फेंक, उसे कमरे से निकाल दिया जाएगा।

इस समय उसे स्मरण आया कि मोहिनी स्कूल में नौकरी करती है। उसे नौकरी करते तीन मास हो चुके हैं। भोजन और मकान का व्यय तो कुछ है नहीं, अतः अवश्य उसके पास पांच-छः सौ रुपया एकत्रित हो गया होगा। इस कारण उसने होटल के मैनेजर को आश्वासन दे कि वह सायंकाल तक बिल दे देगा, मोहिनी से मिलने चल पड़ा।

वह स्कूल में पहुंच कार्यालय के क्लक से मोहिनीदेवी के विषय में पूछने लगा। क्लर्क ने उसके मुख पर देख पूछ लिया, "क्या काम है उनसे आपका?"

"भाई, कुछ काम है जो मैं आपको बताना नहीं चाहता। बताने में कुछ प्रयोजन भी नहीं।"

क्लर्क ने कहा, "तो ठीक है। स्कूल से बाहर जा उनकी प्रतीक्षा कर सकते हैं। वह आधे घंटे में रिक्त हो जाएगी।"

कान्ति भीगी बिल्ली की भांति स्कूल से बाहर निकल आया और स्कूल के फाटक के बाहर आकर एक ओर हटकर एक पेड़ के नीचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खड़ा हो गया। साढ़े तीन बजे ही थे कि कान्ति के मामा का लड़का कमलकिशोर आकर खड़ा हो गया। दोनों ने एक-दूसरे को देखा, पहचाना और फिर परस्पर मिलें। कान्ति को समझ नहीं भाया कि कमल किसलिए वहां आया है।

इस समय लड़कियां स्कूल से निकल रही थीं। कान्ति ने पूछा, "आप इधर किस काम से आए हैं?"

कमल को तो कान्तिलाल के मोहिनी से पूर्व-सम्बन्ध का ज्ञान था। इससे वह सन्देह करने लगा था कि कान्ति मोहिनी से मिलने आया है। पर क्यों? यह वह समझ नहीं सका। उसे ज्ञात था कि कान्ति कोठी छोड़ कहीं प्रन्यत्न रहता है। अत: उसने कान्ति के प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर उससे पूछ लिया, "आप आजकल कहां रहते हैं? आपको दस नम्बर अलीपुर रोड पर कभी देखा नहीं। मैं बूआ जी से प्रायः मिलने जाया करता हूं।"

"मैंने वह कोठी छोड़ दी है।"

"क्यों? क्या हुआ है?" यद्यपि कमल सब जानता था। इस पर भी उसने अपनी अनभिज्ञता ही प्रकट की।

"कुछ हुआ है।" दोनों बिना किसी मतलब की बातें बना, समय निकाल रहे थे। वे किसी भी क्षण मोहिनी के आने की आशा करने लगे थे।

"मेरा मोहिनी से झगड़ा हो गया था और मैंने कोठी छोड़ दी थी।" आखिर कान्ति ने बताया, "मैं अब उससे सुलह करने के विचार मै यहां आया हूं।"

"यह तो आप बहुत ही ठीक कर रहे हैं।"

इस समय मोहिनी फाटक से बाहर निकली और वह अपने भूत और भविष्य को साथ-साथ खड़ा देख एक क्षण के लिए ठिठककर खड़ी रह गई। कमल ने अपने विषय में कान्ति को कुछ बताया नहीं था। वह जानता भी नहीं था कि कान्ति कितना उसके मोहिनी से सम्बन्ध के विषय में जानता है, इस कारण वह बात टालता ही रहा था। अब मोहिनी को खड़ी होते देख वह उत्सुकता से देखना चाहता था कि किस प्रकार ये दोनों जीव सुलह करते हैं अथवा उसके सामने झगड़ने लगते हैं।

मोहिनी एक क्षण तक ही झिझकी और मन में अपने व्यवहार का निश्चय कर वह आगे बढ़ी। कमल भअपने ही स्थान पर खड़ा हिनी की प्रतीक्षा कर रहा था कि कान्ति लपककर मोहिनी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सामने जा खड़ा हुआ। मोहिनी ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछ लिया, "किसलिए यहां आए हैं?" इतना कह वह कमल की ओर चल पड़ी।

कान्ति मोहिनी के साथ चलता हुआ बोला, "मैं तुमसे एक बात कहने के लिए आया हूं।"

"इस समय मुझे काम है।" वे कमल के सामने जा खड़े हुए थे। कान्ति मोहिनी को कमल के सामने जा खड़े हो जाते देख दोनों में सम्बन्ध की बात का सन्देह करने लगा था। मोहिनी ने उसे वहां से विदा करने के लिए कह दिया, "कोठी में चाचा भागी रथ जी के सामने आ जाइएगा। आपकी बात सुन लूंगी।"

"पर मेरा काम तुरन्त का है। उसमें देरी नहीं हो सकती।"

"तो बताइए। मैं सुनने के लिए तैयार हूं।"

"वह प्राइवेट है। किसी के सामने नहीं कहा जा सकता।"

"मेरा अब आपके साथ किसी प्रकार का प्राइवेट काम न है और न हो सकता है। देखिए, ये मेरे भावी पति हैं। मेरा इनसे विवाह निश्चय हो चुका है।"

"विवाह?" कान्तिलाल अवाक मुख देखता रह गया। मोहिनी ने कमल से कह दिया, "आइए, चलें।"

कमल बिना एक भी शब्द बोले मोहिनी के साथ चल पड़ा। कान्तिलाल अनायास ही उनके साथ-साथ चल पड़ा। वह हतबुद्धि समझ नहीं रहा था कि वह क्या कर रहा है।

कमल को मोहिनी के व्यवहार से सन्तोष अनुभव हुआ था। उसके मन में उठ रहे सन्देह कि मोहिनी अपने पूर्व-पति से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखती है, मिटने लगा था। तीनों गोल मार्केट के पिछवाड़े में खड़ी मोटर के समीप जा खड़े हुए थे। कमल द्वार का ताला खोल रहा था।

कान्तिलाल ऐसा अनुभव कर रहा था कि उसकी मुट्ठी में से रेत निकल रही है। वह जो-जो हवाई दुर्ग बनाता हुआ वहां पहुंचा था, सब गिर चुके थे और अब रही-सही कुछ पाने की आशा भी विलीन हो रही थी।

कमल ने द्वार खोल स्वयं ड्राइवर के स्थान पर बैठ आगे की सीट पर मोहिनी के बैठने के लिए द्वार खोला तो कान्ति ने दयनीय दृष्टि से उसकी ओर देखा। मोहिनी ने गाड़ी में बैठते हुए पूछ लिया, "यदि कुछ मतलब की बात हो तो बता दीजिए। शीघ्र करिए।"

कान्ति ने कहा, "तो यहां सड़क पर खड़े-खड़े ही?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल को मज़ाक सूझा। उसने कहा, "भैया, यदि आपत्ति न हो तो गाड़ी में बैठ जाओ। हम स्टैण्डर्ड पर चाय पीने चल रहे हैं। आपको भी एक प्याला मिल जाएगा।"

कान्ति को यह भी गनीमत समझ आया। वह फतेहपुरी से नई दिल्ली गोल मार्केट तक पैदल आया था। उसकी जेब में तीन रुपये और कुछ रेजगारी ही थी। वह उसको बचाकर रखना चाहता था। अतः वह गाड़ी का पिछला द्वार खोलकर पिछली सीट पर बैठ गया। उसने बैठते हुए कहा, "कमल भैया, सुग्रीव और बाली का इतिहास दोहराया जा रहा है? यह ठीक नहीं हो रहा।"

कमल ने गाड़ी स्टार्ट करते हुए कहा, "दादा, भूल कर रहे हो। यह इस प्रकार नहीं, वरंच यह तो कृष्ण द्वारा नरकासुर की कैद से रमणी को छुड़ाने की बात है।"

कान्तिलाल आया था मन में यह खिचड़ी पकाते हुए कि वह मोहिनी से पुनः यौन-सम्बन्ध स्थापित करने की आशा दिला उसके विचारों के अनुकूल रहने का आश्वासन दे, रुपये मांगेगा। अरब कमल को मोहिनी के साथ आगे की सीट पर बैठे देखते हुए उसकी वह पूर्ण कल्पना विलीन हो गई थी। अरब तो वह अपनी अति दयनीय दशा प्रकट कर उससे धन ले होटल का: बिल चुकाने की योजना बनाने लगा था।

गाड़ी स्टैण्डर्ड के सामने खड़ी की गई और तीनों रेस्टोरां के ऊपर चढ़ गए। वहां एक कोने में मेज़ पर बठ कमल और मोहिनी कान्ति-लाल की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखने लगे।

कान्ति को वह काल स्मरण आ रहा था जब उसकी जेबें नोटों से ठसाठस भरी रहती थीं। तब वह भी कलकत्ता के बढ़िया से बढ़िया रेस्टोरां में मित्रों को और मोहिनी को चाय पिलाने ले जाया करता था। उस समय दल के निम्न कोटि के लोग भी ग्रीन होटल इत्यादि में कान्तिलाल के रुपयों के बल पर चाय पीने जाया करते थे। आज बात उलट गई थी। वह एक निर्धन भिखारी की भांति कमल और मोहिनी की दया का पात्र बन रहा था।

कमल ने बात आरम्भ कर दी, "अब बताइए। आपका मोहिनी-देवी से क्या काम है।"

"मोहिनी से कुछ रुपये उधार लेने आया था।"

इस समय बेरा आर्डर ले रहा था। कमल तीन आदमी के लिए चाय और खाने का सामान लाने को कह रहा था। मोहनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कान्ति से कह रही थी, "मेरे पास रुपये कहां से आए?"

"आप नौकरी करती हैं। मुझे इस समय छः सौ रुपये की अत्यन्त आवश्यकता है।"

"छः सौ! मेरे पास इतने रुपये नहीं हैं।"

"कमलजी से मांग लीजिए।"

"ये आपके भाई हैं। आप स्वयं ही मांग लीजिए। मुझे बीच में क्यों लाते हैं?"

"अपने पुराने सम्बन्धों के नाते।"

"वह एक दुःखद स्वप्न था। अब मैं चेतनावस्था में हूं।"

बैरा आर्डर लेकर गया तो कमल ने दोनों में हो रहे वार्तालाप की ओर ध्यान दिया। उसने पूछ लिया, "क्या कह रहे हैं, भैया? मोहिनी से पुराने सम्बन्धों के कारण क्या ऐंठना चाहते हैं इससे?"

उत्तर मोहिनी ने दिया, "ये आज छः सौ रुपया किसी अत्यावश्यक काम के लिए चाहते हैं। इतना रुपया तो मेरे पास है नहीं। यदि होता भी तो देती नहीं।"

कमल ने मुस्कराते हुए पूछा, "क्यों? किसी पर दया नहीं करनी चाहिए क्या?"

"देखिए जी, ज्यों-ज्यों मुझे इनके परिवार वालों की सज्जनता का ज्ञान होता जाता है, मैं इनको अधिक और अधिक दुर्जन समझती जा रही हूं। जो सज्जनों का विरोध करता है और उनको हानि पहुं-चाने लगता है वह तो दुर्जन होता है और ऐसे व्यक्ति के साथ सहानु-भूति होती ही नहीं।"

"देखो, मोहिनी," कान्तिलाल ने अपने परिवार वालों की सज्ज-नता का बखान सुन कह दिया, "यह पकने ही पढ़ाया था कि जहां धन एकत्रित हो जाता है वहां अवश्य बेईमानी, धोखा-धड़ी, अन्याय और शोषण होता है। पता चले अथवा न चले, धन का एक स्थान पर एकत्रित हो जाना महान शोषण का सूचक है।"

"तो रूसी सरकार महान शोषणकर्ता है? कारण यह कि उस देश में सबसे अधिक धन उसके पास जमा है। संसार की अन्य सर-कारों से भी वह अधिक धनवान् है।" यह बात कमलकिशोर ने कह दी।

"पर उसका धन तो जनता के हित में प्रयोग हो रहा है।"

"यह कैसे समझते हो कि यहां धन जनता के अहित में व्यय हो रहा है?" मोहिनी ने पुनः बात में हस्तक्षेप करते हुए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब आप यूनियन के मंत्री थे तो आपके पिता आपकी प्रत्येक मांग पूरी कर देते थे। इस पर भी आपने हड़ताल कराई और कारखाने को फुंकवा दिया।"

"यह बात मिथ्या है कि मैंने आग लगाने का आदेश दिया था।"

"मैं सब जानती हूं। आप अपने परिवार वालों को विश्वास नहीं दिला सके कि हड़ताल में और आग लगवाने में आपका हाथ नहीं है, परन्तु मैं तो यह बात जानती हूं। तब मैं आपके परिवार वालों का स्वभाव न जानती हुई यह समझती थी कि वे धनवान लोग अति दुष्ट होते हैं, परन्तु आप तो इनको मुझसे अधिक जानते थे। फिर आपने परिवार के साथ द्रोह क्यों किया?"

चाय, केक, पेस्ट्री और मोहिनी के लिए दो प्लेट फ्राइड फिश आ गई। कमल ने विवाद बन्द करने के लिए कह दिया, "कान्तिजी से मेरा एक सुझाव है।"

"क्या?"

"वह यह कि मोहिनीजी के कथन की परीक्षा की जाए कि आपके परिवार वाले सज्जन हैं।"

"कैसे परीक्षा करूं?"

"चलो, मैं तुमको अपनी गाड़ी में भागीरथ जी के पास ले चलता हूं। तुम उनको अपनी कठिनाई बताना। यदि वे सत्य ही सज्जन हैं तो यह छः सौ रुपया उनके लिए छ: कौड़ियों के तुल्य है। वे दे देंगे।"

"पर मैंने तो उनके विरुद्ध मुकदमा दायर कर रखा है।"

"तो फिर क्या हुआ? महाभारत युद्ध में भी युधिष्ठिर और भीष्म पितामह दिन के समय लड़ते थे और रात को बैठ सज्जनता की बातें किया करते थे। ऐसे समय में ही तो भीष्म पितामह ने उनको बताया था कि वे किसी स्त्री पर वाण नहीं चलाते।"

"पर कमल भैया, भागीरथ भीष्म पितामह नहीं है।"

"नहीं। यह तो मैं भी जानता हूं। पर मैं समझता हूं कि वे युधिष्ठिर तो अवश्य हैं।"

"मुझे सन्देह है।"

"यह परीक्षा योग्य बात है।"

मोहिनी ने कहा, "हां, यदि ये अपने चाचा से सुलह करना चाहें तो मुझे विश्वास है कि हो सकती है।"

"सुलह इत्यादि तो पीछे विचार कर सकता हूं। मुझे सायंकाल से पूर्व छः सौ रुपया चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12

चाय समाप्त हो चुकी थी। मोहिनी ने चाय का अन्तिम घूंट पीते हुए कहा, "एक सुझाव और भी है।"

कान्तिलाल उत्सुकता से मोहिनी का मुख देखने लगा। मोहिनी ने कहा, "आप अपनी मां से मांग लें। वे कभी इन्कार नहीं कर सकतीं।"

"मुझे आशा कम है।"

कमल ने कह दिया, "कान्ति दादा, यही तो तुममें दोष है। यदि तुमको मां पर भी विश्वास नहीं तो फिर तुमको किसी पर भी विश्वास नहीं हो सकता। देखो, मैं बताता हूं। मैंने जब मोहिनी जी से विवाह का प्रस्ताव किया तो इन्हांने अपनी पूर्ण सत्य जीवन-कथा बताकर कहा कि मैं अपनी मां से पूछ लूं कि वे इस प्रकार की लड़की को बहू बनाएंगी भी अथवा नहीं।

"मैं समझ रहा था कि वे नहीं मानेंगी। उन्होंने एक अन्य लड़की से मेरा विवाह अस्वीकार कर दिया था। मैं तो मोहिनी से विवाह कर एक घट चुकी बात की सूचना ही मां को देने का विचार रखता था, परन्तु ये हठ करती रहीं। मैं मां के पास जा पहुंचा। मैंने सब कथा जैसी इन्होंने बताई थी, मां को जा सुनाई, मां ने कुछ अधिक विचार नहीं किया। केवल इतना पूछ लिया, 'तो उसने यह कहा है कि तुम मुझको यह सब बताकर जान लो कि उसे बहू बनाऊंगी अथवा नहीं?"

"'हां, मां।' मेरा उत्तर था।

"'तो उसको यहां ले आओ। मैं ऐसी साहसी लड़की को तनिक देख लूं। फिर बताऊंगी।'

"अगले दिन मैं इन्हें लेने आया तो ये कहने लगीं कि ये भी यही आशा करती थीं। मैंने पूछा, क्या आशा करती थीं आप?'

"इन्होंने बताया, 'यही कि मेरी कथा सुनकर वे मुझे पसन्द कर लेंगी।'

"'सत्य? भला यह क्यों?'

"तो ये कहने लगीं, 'सब माताएं ऐसी ही होती हैं। वे अपने पुत्र के हित का संवरण नहीं कर सकतीं और साथ ही मां स्त्री भी होती है और स्त्री से सहानुभूति रखती ही है।"

कान्ति को स्मरण आ गया कि उसकी मां भी मोहिनी से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सहानुभूति रखती है। उसके मन में संशय यही था कि परिवार को इतनी बड़ी हानि पहुंचाने वाले से भी उसकी सहानुभूति होगी क्या?

कान्ति को गंभीर विचार में मग्न देख कमल उठ पड़ा। वह बैरा को दाम और टिप दे चुका था। मोहिनी उठी तो कान्ति भी उठा और उनके साथ ही रेस्टोरां के नीचे मोटर तक आया। वहां पहुंच कमल ने मोटर का द्वार खोला और मोहिनी के लिए अगली सीट का दूसरा द्वार खोलते हुए कान्ति से पूछने लगा, "क्या विचार है, कान्ति दादा? चलोगे, कोठी पर?"

"मुझे छः सौ रुपये की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि सायंकाल तक होटल के बिल की अदायगी नहीं हुई तो वहां से धक्के दे-देकर निकाल दिया जाऊंगा।"

"तो चलो। मैं समझता हूं कि मोहिनी जी का सुझाव उपयुक्त ही है।"

कमल ने मोटर का पिछला द्वार खोला तो कान्ति चुपचाप वहां बैठ गया। मोटर अलीपुर रोड वाली कोठी में पहुंची तो सोमदेव और भागीरथलाल कोठी के बरामदे में खड़े कुछ विचार कर रहे थे।

इस समय तक कमलकिशोर और मोहिनी के होने वाले विवाह की बात कोठी में प्रसिद्ध हो चुकी थी और कमल का मोहिनी को लेकर कोठी में आना विस्मय नहीं रहा था। जो बात आज आश्चर्य की थी वह मोहिनी और कमल के साथ कान्तिलाल का आना था।

कान्तिलाल को मोटर से निकलते और मोहिनी तथा कमल के पीछे खड़े देख भागीरथ और सोमदेव चकित हो उनकी ओर देखने लगे। कान्ति भागीरथ को सामने खड़ा देख संकोचवश कमल के पीछे छपने का यत्न कर रहा था। कान्ति को झिझकते देख भागीरथ और सोमदेव बरामदे में निकल मोटर के समीप जा खड़े हुए। भागीरथ ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "कमल जी, इसे कहां से पकड़ लाए हैं?"

कमल ने प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर कह दिया, "ये अपनी माताजी से मिलने आए हैं।"

"क्यों? क्या आवश्यकता पड़ गई है मां से मिलने की?"

कमल ने मुस्कराते हुए कहा, "मां की बात ये मां को ही बताएंगे। वे चाहें तो आपको भी बता सकती हैं।"

इसपर सोमदेव ने बात स्पष्ट कर दी, "कान्ति, होटल के बिल के लिए रुपये का प्रबन्ध नहीं हो सका क्या?"

कमल ने ही उत्तर दिया, "ये गलत स्थान पर प्रबन्ध करने जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहुंचे थे। मैंने ही बताया है कि मां से बढ़कर सहानुभूति अन्य कोई नहीं रखता। उनसे ही इन्हें अपनी आवश्यकता पूरी करनी चाहिए। ये मान गए हैं और मैं इन्हें यहां ले आया हूं।"

"कितना रुपया मांगने मां से आए हो?"

कान्ति तो अपने कर्मों को स्मरण कर भूमि की ओर देखता हुआ खड़ा था। उत्तर कमल ने दिया, "ये कह रहे थे कि यदि सायंकाल तक छः सौ रुपया न मिला तो होटल वाले धक्के दे-देकर वहां से बाहर निकाल देंगे।"

सोमदेव हंसते हुए बोला, "मां ने तुम्हारी सहायता बिना तुम्हारी याचना किए ही कर दी है। मैं आज प्रातः ही बम्बई से आया हूं, वहां की स्थिति देख मैं समझ रहा था कि तुम होटल से निकाले जा चुके होगे। अतः यहां पहुंचते ही तुम्हारी टोह लेने होटल में जा पहुंचा। होटल वालों के बिल की बात सुन आया। होटल वालों ने बताया था कि तुम कहीं बाहर गए हो और आते ही तुमसे बिल की रकम मांगी जाएगी। यदि तुमने रकम नहीं दी तो तुम्हें होटल से निकलना पड़ेगा।

"मैंने कोठी में आकर यह सूचना दी तो भागीरथ बोला कि वह किसी ऐसी बात की ही आशा कर रहा था। इसपर भी इसकी सम्मति थी कि कान्ति को होटल से निकाला गया तो परिवार का भी तो अपमान हो जाएगा। अतः यह रकम होटल में पहुंचा देनी चाहिए और तुम्हें फिर कोठी में ले आना चाहिए।

"मैंने भागीरथलाल से पूछा था, 'मुकदमा लड़ते हुए भी क्या वह कोठी में रह सकेगा?'

"ये बोले, 'दोनों बातें पृथक्-पृथक् हैं। भाई-भाई में मुकदमा होते हुए भी भाई-भाई का सम्बन्ध कैसे छूट सकता है? साथ ही कान्ति की मां भी चिन्तित हैं। उनको भय है कि कान्ति निराश हो कहीं आत्महत्या न कर ले?'

"भाभी की चिन्ता का विषय सुन मैं पुनः होटल में गया और तुम्हारा बिल दे आया हूं। आज रात तक भाड़ा दिया जा चुका है। मेरी सम्मति मानो, तो होटल जाओ और अपना सामान उठा यहां आ जाओ।"

पहले बूआ जी का धन्यवाद तो कर आओ।" कमल ने मुस्कराते हुए कहा।

कान्तिलाल एक भी शब्द बोले बिना कोठी में चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नेहलता को कान्तिलाल की खस्ता हालत की आशंका तो तब से ही थी जब उसे पता चला था कि नीलकण्ठ कैद हो गया है और नवल के काम तथा मकान को ताले लग गए हैं। उसे यह विदित था कि कान्ति को वही भड़का रहे थे और धन से सहायता दे रहे थे। अब वे सहायता देने की स्थिति में होंगे नहीं और यह धनाभाव से अवश्य पीड़ित होगा। अतः उसने अपनी चिन्ता भागीरथ पर प्रकट की थी।

जब सोमदेव वस्तुस्थिति का ज्ञान होटल से प्राप्त कर आया तो उसका स्पष्ट कहना था कि कान्ति को विनाश से बचाना चाहिए। सोमदेव इच्छा न रहते हुए भी होटल गया और उसके बिलों का भुगतान कर आया था।

अतः जब कमल ने बताया कि कान्ति अपनी मां से मिलने आया है तो सोमदेव और भागीरथ सब बात समझ गए और हंसने लगे थे।

कान्ति आश्वस्त मन कोठी में गया और मां के सामने जा खड़ा हुआ। मां अपने पति को कान्ति की अवस्था का वर्णन लिख रही थी। उसने पत्र लिखते-लिखते किसी को सामने आ खड़े होते अनुभव कर सिर उठाया और पुत्र को सामने देख प्रसन्न हो बोली, "तो तुम आ गए हो?"

"तो मुझे आ जाना चाहिए क्या?"

"नहीं आओगे तो क्या करोगे? बम्बई वाले तुम्हारी सहायता अब नहीं करेंगे। वे कर सकेंगे भी नहीं। उन्हें करनी चाहिए भी नहीं।"

"पर मां, अभी मेरा मुकदमा तो चल रहा है।"

"उसे वापिस ले लो।"

"कैसे वापिस ले सकता हूं?"

"यह भागीरथ का वकील बता सकेगा। देखो, तुमने भूल की थी। भूल सुधार लो।"

कान्तिलाल विचार कर रहा था कि क्या सत्य ही उसने भूल की है। वह अभी तक समझ रहा था कि उसके परिवार का अधिकार नहीं कि वह देश की इतनी अधिक धनराशि लेकर भोग करे।

मां ने उसे मौन देख कह दिया, "तुम जिस थाली में खाते थे उसी में छेद करने का यत्न कर रहे थे। तुमको ऐसा करने नहीं दिया गया। इससे तुमको समझ जाना चाहिए कि ऐसा करने से तुम्हारा अपना भी कल्याण नहीं।"

आखिर उसने पूछ लिया, "पर मां, तुम सम्पत्ति-निर्माण में क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
योगदान देती रही हो?"

स्नेहलता ने एक क्षण तक विचार किया और कह दिया, "मैंने सम्पत्ति निर्माण में तो नहीं, वरंच सम्पत्ति-विनष्टि में योगदान अवश्य दिया है। मैंने तुम जैसे मूर्ख पुत्र को जन्म दिया है। मैं उसका प्रायश्चित्त कर रही हूं। प्रायश्चित रूप तुम्हारी सहायता करना चाहती हूं।"

"मैं सम्पत्ति-निर्माण में तो सहायता करूंगा नहीं।"

"तुम्हें कुछ नहीं करना। जो कुछ तुमने अभी तक किया है उसका प्रायश्चित्त ही करना है। यहां चले आओ और नित्य प्रात:काल परिवार के बाबा के चरण-स्पर्श कर उनके पांव दबा आया करो।"

कान्ति मुस्करा रहा था। एक बात वह समझ रहा था कि वर्तमान अवस्था में उसे घर और घरवालों का आश्रय स्वीकार कर लेना चाहिए। शेष वह बाबा के पांव दबाएगा अथवा नहीं, अभी नहीं कह सकता। उसने कह दिया, "मां, यहां ये लोग मुझसे घृणा करेंगे।"

"घृणा? नहीं, बेटा। ये घृणा नहीं करते। हां, ये तुम्हारी बुद्धि पर विस्मय अवश्य करते हैं। जब तुम यहां आकर रहोगे और अपनी भूल स्वीकार कर वैसा कभी न करने के विषय में कहोगे तब यहां भागीरथलाल तुम्हें करने को काम दे देंगे और फिर तुम्हारे धनी बनने का मार्ग खोल देंगे।"

"मैं रहूंगा कहां?"

"आजकल तो यह कोठी खाली पड़ी है। तुम्हारा कमरा भी खाली है। कहीं भी रह सकते हो।"

"अच्छा, मां, इतनी बात तो मान रहा हूं। मैं एक घण्टे-भर में यहां आ जाऊंगा, पीछे की बात विचार कर लूंगा।"

इन दिनों की ही बात थी कि बाबा ब्रजलाल ने मोहिनी को कहा था कि वह अब पाण्डीचेरी लौट जाने की बात विचार कर रहा है और यदि वह विवाह शीघ्र कर ले तो वह उसे आशीर्वाद देकर ही जाना चाहेगा। जब मोहिनी ने स्कूल से छुट्टी न मिलने की-बात कही तो बाबा ने कह दिया, "विवाह के लिए छुट्टी की आवश्यकता नहीं। दोनों का कोई सम्बन्ध नहीं।"

"पर बाबा, वे हनीमून के लिए मुझे ऊटी जाने की बात कह रहे हैं।"

"तो क्या विवाह के दो मास उपरान्त ऊटी का मार्ग अवरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होने वाला है? देखो, मोहिनी। विवाह अभी कर लो और हनीमून पीछे होता रहेगा।"

"बाबा, उनसे कहूंगी मैं।"

"हां, और यदि वह न माने तो उसे यहां ले आना, मैं समझा दूंगा।"

कमलकिशोर को बाबा के सामने लाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। अगले दिन जब दोनों स्टैण्डर्ड में चाय ले रहे थे तो मोहिनी ने बाबा की बात बता दी। इस पर कमल ने पूछ लिया, "बाबा की बात तो ठीक है, परन्तु मोहिनी जी क्या चाहती हैं?"

"मैं तो आपकी संगत के लिए व्याकुल हूं। अपनी बेसब्री को यत्न से दबा कर रखे हुए हूं।"

"ओह! पर तुमने पहले कभी बताया नहीं। मैं तो समझ रहा था कि मैं एक मन से बूढ़ी स्त्री से विवाह कर रहा हूं।"

मोहिनी हंस पड़ी। हंसते हुए उसने कहा, "और मैं समझती थी कि संसार-भर की बर्फ आपके हृदय में भरी पड़ी है जो मेरे हाव-भाव और कटाक्ष उसे पिघलाने में सफल नहीं हो रहे।"

"तो ऐसा करें। अभी मैं तुमको मां जी के पास ले चलता हूं और उनके सामने अपनी इच्छा व्यक्त करेंगे तो वे विवाह की स्वीकृति दे देंगी।"

"परन्तु मेरा उनके पास यह कहने के लिए जाना आवश्यक है क्या?"

"नितान्त आवश्यक है। अन्यथा मुझसे तो बात भी नहीं हो सकेगी। दोनों मिलकर बात कहेंगे तो सब बात सरलता से हो जाएगी।"

भगवती ने कमल की बात सुनी। कमल ने कहा था, "मां, मेरा विचार था कि विवाह के उपरान्त मोहिनी स्कूल छोड़ दे और हम हनी-मून के लिए कहीं दक्षिण में जाएं, परन्तु रजनी के बाबा ने कहा है कि दोनों बातों का सम्बन्ध नहीं। विवाह अभी हो सकता है और हनीमून सुविधा के समय। मैं भी इसे ठीक मानने लगा हूं। मां, तुम बताओ। क्या कहती हो?"

"बात यह है कि जब मेरा विवाह हुआ था तो इस देश और हमारी समाज में हनीमून की प्रथा नहीं थी। मैं इसके लिए गई नहीं। इस कारण इस विषय में सम्मति नहीं दे सकती। हां, मेरा विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। उस समय तुम्हारे पिता लाहौर में रहते थे। बस, विवाह के उपरान्त वे मुझे अपने घर के एक कमरे में ले गए थे। यही मैं तुमसे आशा करती हूं। इससे अधिक तुम स्वयं विचार कर लो।"

"तो हम विवाह कर लें?"

"कुछ हानि नहीं होगी। लाभ अवश्य होगा।"

इस प्रकार विवाह का निश्चय हो गया। विवाह हिन्दू रीत-रिवाज से हुआ और उस समय मोहिनी का कन्यादान बाबा ब्रजलाल ने किया।

विवाह के तीन दिन पीछे ब्रजलाल पाण्डीचेरी चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा परिच्छेद

रजनी को भी कोई मिल गया।

बाबा ब्रजलाल के जाने के उपरान्त कोठी और भी खाली हो गई। अब सोमदेव कानपुर अपने काम पर चला गया। वहां परिवार की कपड़े की मिल थी। सोमदेव ने उसे अपने भाग के धन से ले लिया था। कपड़ा मिल लेने के उपरान्त भी उसके पास कुछ धन बच गया था। वह उसने भागीरथ के कनाट सरकस के महल में लगा दिया। भागीरथ ने दस मंजिला मकान लिया। यह उसके भाग की रकम से अधिक मूल्य का था। इस कारण उसने इसमें सोमदेव और रजनी को भागीदार बना लिया। मोहनलाल ने भी इस मकान के कुछ हिस्से खरीद लिए थे। कनाट प्लेस और चांदनी चौक की दुकानों के काम करने वालों ने अपनी एक कम्पनी बना ली थी और उन्होंने बम्बई में एक पुस्तक प्रकाशन का कार्य खोल दिया था। उनका विचार था कि नवल का मुकदमा समाप्त होते ही वे वहां का पूर्ण व्यवसाय अपनी कम्पनी में ले लें। नवल का मुकदमा च्यूंटी की चाल चल रहा था।

रजनी को कुछ अकेलापन दिखाई देने लगा था। उसने इसे भरने के लिए भागीरथ की लड़की सरस्वती को पढ़ाना आरम्भ कर दिया था। सरस्वती बहुत ही तीव्र बुद्धि रखती थी। उसे स्वयं पढ़ाई में कुछ अधिक सहायता की आवश्यकता नहीं थी। आवश्यकता थी रजनी को अपना खाली समय भरने के लिए।

अत: जब सरस्वती आती थी तो कालेज की पढ़ाई के अतिरिक्त ज्ञान-ध्यान की बातें अधिक होती थीं। सरस्वती हायर सेकेण्डरी की परीक्षा में उत्तीर्ण हो कालेज में प्रवेश पा चुकी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतने काम से सन्तुष्ट न हो अब रजनी लगभग नित्य सिनेमा देखने जाने लगी थी। वह मोहिनी से भी मिलने जाती थी।

मोहिनी पति के साथ ऊटी गई हुई थी और रजनी एक दिन रीगल सिनेमा, एक दिन ओडियन, फिर एक दिन प्लाज़ा और एक दिन रिट्ज़ और मैजेस्टिक में जाने लगी। कभी-कभी वह रिवोली में भी चली जाया करती थी। इस प्रकार भाग-दौड़ करने पर भी जीवन में रस नहीं आ रहा था।

इस जीवन में मोड़ आया। एक दिन वह प्लाज़ा में टिकट खरीद रही थी कि उसे एक ऐसा व्यक्ति अपने पीछे टिकट खरीदने के लिए खड़ा दिखाई दिया जो पिछले दिन ओडियन में उससे अगली सीट पर बैठा था। उसको देखकर वह विस्मित हुई। फिर यह विचार कर कि वह भी कोई उसी की भांति बेकार हो सकता है, चुप रही।

उस दिन वह बैठी तो वह उसकी साथ की सीट पर आ बैठा। रजनी उसकी ओर ध्यान न देते हुए पिक्चर देखती रही। मध्य काल की विश्रांति के समय वह उठकर बाहर गया और फिर लौट आया। पिक्चर की समाप्ति पर वह बाहर निकली तो वह उसके पीछे-पीछे कुछ अन्तर पर आ रहा था। रजनी उससे बचने के लिए बोलगा रेस्टोरां में घुस गई। वह अभी एक सोफा पर मेज़ के सामने बैठी ही थी कि वह महाशय भी वहां आ गए और कुछ विचार कर रजनी की मेज़ पर ही सामने की सीट के समीप खड़ा हो पूछने लगे, "अगर आप इजाज़त दें तो मैं यहां बैठ ही अपनी चाय ले लूं।"

रजनी का सतर्क उत्तर था, "हां, यदि आपको यह बताना हो कि आप मेरे पीछे किसलिए लगे हैं।"

"यह बता सकता हूं, तो बेठ जाऊं?"

रजनी ने मुस्कराते हुए उसकी ओर देखा तो वह बैठ गया। उसने बैठते ही कहा, मैं अपना जीवन-साथी ढूंढ़ रहा हूं।"

"ओह। तो आपको वह में दिखाई दी हूं?"

"मैं आपके विषय में बहुत कुछ जान चुका हूं। आप साथीरहित हैं। अपार धन की स्वामिनी, सब प्रकार के साथी बनाने के योग्य हैं।"

"ओह, परन्तु आप हैं कौन जो एक अपरिचित स्त्री के विषय में जांच-पड़ताल करते रहे हैं?"

"मैं भल्ला हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो पारिवारिक नाम है। इससे तो कुछ पता चला नहीं।"

"देवदत्त भल्ला। एक ऐसे स्थान पर नौकरी मिल गई थी जहां पांच वर्ष में लखपती बन गया था। अब उन पांच वर्ष में पैदा किए धन से जीवन सरलता से चलने लगा है और साथी ढूंढ़ने लगा था। आपको नित्य सिनेमाघरों में जाते देख आपके विषय में जांच कर निश्चय किया है कि आपको साथी बना लिया जाए।"

इस समय बैरा आया तो रजनी ने सामने बैठे व्यक्ति को सम्बोधन कर कहा, "क्या लेंगे आप?"

"चिकन-पेस्ट्री और चाय।"

रजनी ने कह दिया, "और फ्रूट केक तथा कॉफी।"

बैरा गया तो रजनी ने सामने बैठे व्यक्ति के ज्ञान की सीमा जानने के लिए कह दिया, "आपकी मेरे विषय में जानकारी निर्दोष नहीं।"

"क्या दोष है उसमें?"

"मैं धनी नहीं हूं।"

भल्ला भौचक्का हो उसका मुख देखता रह गया। रजनी ने पूछ लिया, "यह बात आपको किसने बताई है?"

"मैंने अपने अनुमान से जानी है। आप नित्य सिनेमा देखती हैं और सदा ऊंचे से ऊंचा टिकट लेकर बैठती हैं। साढ़े तीन रुपये नित्य तो कोई लखपती ही व्यय कर सकता है।"

"यही तो आपकी युक्ति में गलती है। इससे यह सिद्ध होता है कि मैं व्यय करने में सुख अनुभव करती हूं। मेरी पांच सौ रुपये मासिक आय है वह मैं तीन बातों में व्यय कर देती हूं। सिनेमा देखने में एक सौ रुपया। बसों और टैक्सी के भाड़े में डेढ़ सौ रुपया। कपड़े इत्यादि पर एक सौ रुपया और चाय पानी पर एक सौ रुपया। मुझे रोटी और खाने और घर पर रहने की सुविधा मेरे परिवार वाले दे देते हैं। मैं अपने पास कुछ बचाती नहीं। बचाने में लाभ नहीं समझती। व्यय करने में आनन्द अनुभव करती हूं।"

सामने बैठा व्यक्ति बितर-बितर मुख देखता रह गया। वह मन में विचार कर रहा था कि यह स्त्री तो बहुत ही अपव्यय करने वाली है। यदि इससे सम्बन्ध जोड़ लिया तो यह उसकी लाखों की सम्पत्ति कुछ वर्षों में ही व्यय कर देगी। इससे वह उत्साहक्षीण होने लगा था।

उसे चुप देख रजनी समझ गई कि उसे उसके विषय में वास्तविक ज्ञान नहीं। इससे वह उत्साहित हो कहने लगी, "एक बात आप और गलत समझे हैं। वह यह कि मैं साथी रहित हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर आप पिक्चर देखने सदा अकेली आती हैं।"

"मेरे साथी की पिक्चर देखने में रुचि नहीं। उसे पिक्चर बनाने में रुचि है। इस कारण वह मेरे साथ नहीं आता।"

"और वह कौन है?" भल्ला को समझ आया कि वह कोई फिल्म-डायरेक्टर है।

"जब आप इतनी खोज कर रहे हैं तो यह भी पता करिए।"

"तो यह विदित हुआ कि आप वह नहीं जो दिखाई देती हैं?"

"हूं तो वही जो दिखाई देती हूं। परन्तु आपने अनुमान लगाने में भूल की है। देखिए जहां धुआं होता है वहां अग्नि होती है, परन्तु अग्नि होने पर धुआं अवश्य ही होगा, गलत है। इसी प्रकार साथी रहित व्यक्ति अकेला घूमता है। परन्तु जो अकेला घूमता है वह साथी रहित होगा, गलत भी हो सकता है।

भल्ला समझने लगा था कि इस लड़की के साथ चाय पर बैठकर व्यर्थ में छः-सात रुपये का होम कर रहा है। परन्तु अब उठकर भाग जाने में तो भारी भद्द होगी। वह मन में समझा था कि यह किसी धनी बाप की बेटी है। अपने रिक्त तथा नीरस जीवन को भरने के लिए सिनेमाघरों और रेस्टोरां में घूमा करती है। उसके मन में यह विचार आया था कि इससे सम्पर्क उत्पन्न किया जाए। विवाहित हो अथवा बिना विवाह के। जीवन सुलभ हो जाएगा।

परन्तु यहां तो बात ही दूसरी निकली थी। इसपर भी उसने एक बात पूछ ली, "आपको पांच सौ रुपया किसी मकान का भाड़ा आता है क्या?"

"जी, नहीं। मेरे पिता जी ने अपनी सम्पत्ति में से दो शुगर मिलों में इतने शेयर दे रखे हैं कि उनसे पांच सौ रुपये प्रति मास की आय हो जाती है।"

"और आपके पति क्या करते हैं?"

"वे नहीं हैं। उनका देहान्त हो चुका है।"

"और आपके साथी?"

"यह मेरा रहस्य है।"

बैरा खाने का सामान ले आया था। रजनी देख रही थी कि भल्ला अब उसके प्रति उदासीनता का भाव प्रगट करने लगा था। रजनी ने अब उसे उत्साहित करने के लिए पूछ लिया, क्या मैं जान सकती हूं कि वह कौन-सा काम था जहां आप पांच वर्ष में लखपती हो गए थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह एक खुला रहस्य है कि भारत सरकार के कुछ काम हैं जिनमें कर्मचारी धनी-मानी लोगों के सम्पर्क में आते हैं। कर्मचारी की कलम की एक चोट से व्यापारियों के लाखों के वारे-न्यारे हो जाते हैं और उन लाखों में समझदार कर्मचारी अपना भाग बना लेते हैं।"

रजनी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "बस, कलर्क की एक चोट से? यह समझ में नहीं आया।"

"इस बात को समझने में कठिनाई कुछ नहीं। सरकार ने प्रत्येक वस्तु पर नियंत्रण कर रखा है। उस नियंत्रण का प्रभाव उनपर करना होता है जो कर्मचारी को लाभ का भाग देना नहीं चाहते। जो लाभ का भाग देते हैं, नियंत्रण का प्रभाव उनपर नहीं होता।

"इसके साथ यह बात भी है कि नियंत्रित वस्तु सीमित मात्रा में उपलब्ध होती है। इस कारण उसे प्राप्त कराने के लिए कर्मचारी अपना भाग अधिक और अधिक कर सकता है।"

"यह तो बहुत बेईमानी है।"

"नहीं, श्रीमतीजी, सरकार जितनी मात्रा में वह वस्तु बांटना चाहती है उसमें कर्मचारी न्यूनाधिक नहीं करता। शेष रही यह बात कि वह किसको और कब वह वस्तु देता है? बस इसी में लाभ-हानि देख ली जाती है।"

रजनी ने खा-पीकर तृप्ति प्राप्त कर ली थी। मिस्टर भल्ला जान-बूझकर धीरे-धीरे खा रहा था। जिससे वह खाने का बिल देने से बच सके। रजनी ने बैरे को संकेत से बुलाकर कहा, "बिल ले आओ।"

भल्ला इस बात पर प्रसन्न था। अब उसने भी अन्तिम प्याला चाय का बना लिया और चुस्की लगाकर पीने लगा। बैरा ने प्रश्न-भरी दृष्टि से भल्ला की ओर देखा। भल्ला ने उसकी ओर न देख मुस्कराते हुए रजनी को कह दिया, "इसपर भी आपसे परिचय पाने को सौभाग्य ही मानता हूं।"

"पर में एक बात आपको बता देना चाहती हूं।"

"क्या?"

"मेरा पीछा करना भय से रहित नहीं है। मेरा साथी बहुत ही ईर्ष्यालु है।"

"ओह।"

"और आपसे शारीरिक शक्ति में निस्सन्देह अधिक है।"

"और वह धनी भी है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुकदमे लड़ने में बहुत रुचि लेता है।"

इस समय बैरा बिल लाया तो भल्ला ने अपनी जेब की ओर हाथ ले जाते हुए कहा, "मैं देता हूं। आप क्यों कष्ट कर रही हैं?"

रजनी ने अपने बैग से एक दस रुपये का नोट बैरा की ट्रे पर रख दिया और उठ खड़ी हुई।

भल्ला ने उठते हुए कहा, "कितना था?"

"कुछ था।" रजनी ने कह दिया।

भल्ला ने बैरा की ट्रे में से बिल उठाकर पढ़ लिया। आठ रुपये चौदह आने थे।

जब बैरा लेकर चला गया तो रजनी द्वार की ओर चल पड़ी। भल्ला ने साथ चलते हुए कहा, "आपने टिप बहुत अधिक दे दी है।"

"मुझे व्यय करने में प्रसन्नता होती है।"

भल्ला गंभीर मुद्रा बनां कर चलते हुए रजनी के साथ बाहर बरामदे में चला आया। भल्ला ने कहा, कम से कम मेरे भाग का दाम तो आपको ले लेना चाहिए।"

"छोड़िए जी। मैंने लखपती न बनने का निश्चय किया हुआ है।"

"पर मैं देख रहा था कि आपके बैग में एक दस का नोट ही था।"

"पर इसकी चिन्ता आपको नहीं करनी चाहिए।"

"परन्तु आप रहती कहां हैं?"

"अलीपुर रोड पर।"

"तो अब जाएंगी कैसे?"

"पैदल 'क्विक मार्च' करते हुए। समीप ही तो है। आधे घण्टे में पहुंच जाऊंगी।"

"पर मुझे तो यहीं कर्ज़न रोड पर जाना है।"

"अच्छा, आदाब अर्ज़ है।"

आदाब अर्ज़ का शब्द सुन तो भल्ला ठिठककर खड़ा रह गया। फिर कुछ विचार लम्बे पग भरता हुआ कर्ज़न रोड की ओर चला गया।

रजनी कुछ देर तक बरामदे में खड़ी रही। फिर ओडियन की ओर चल पड़ी। वह चली ही थी कि किसी ने साथ चलते हुए कहा, "क्षमा करें, आपको पैदल अलीपुर रोड तक चलने में बहुत कष्ट होगा। मैं आपकी सहायता कर सकता हूं?"

रजनी चलती-चलती खड़ी हो गई और प्रश्नभरी दृष्टि से इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन अपरिचित व्यक्ति की ओर देखने लगी। यह कुर्ता, चौड़ी मोहरी का पायजामा और चप्पल पहने युवक था। वह भल्ला के पीछे-पीछे बरामदे में आ खड़ा हुआ था। रजनी ने कुछ विचारकर पूछा, "पर आप मेरी सहायता क्यों करेंगे?"

"उस मूज़ी ने आपके सब रुपये व्यय करवा दिए हैं। मैं आपकी सब बातें आपके सोफा की पिछली सीट पर बैठा सुन रहा था बहुत रसमयी बातें थीं।"

रजनी विचार कर रही थी कि इस व्यक्ति से भी अपनी सहृदयता छुपाकर रखे अथवा नहीं? फिर कुछ विचार कर उसने कहा था, "वह व्यक्ति तो मूर्ख था।"

"और मैं वह मूर्ख नहीं हूं। आपकी बातों से पता चला है कि आपके बैग में और रुपये नहीं हैं और अलीपुर रोड यहां से बहुत दूर है।"

"जी। मैं बस पर जाने का विचार रखती थी, परन्तु अब तो उसके लिए भी पैसे नहीं रहे। आपके पास अपनी गाड़ी है क्या?"

"जी, नहीं। पर मैं आपको कुछ ऋण दे सकता हूं।"

"बात तो आपकी ठीक है, परन्तु यह ऋण चुकाऊंगी कहां?"

"कभी फिर किसी रेस्टोरां में चाय पीता हुआ मिल जाऊंगा तो मुझे भी पिला दीजिएगा।"

"यह बात तो बहुत मज़ेदार से। आप अपनी किसी भविष्य काल में ली जानेवाली चाय का दाम आज ही दे रहे हैं।"

"यह तो सब करते हैं। लोग अगले जन्म में सुख प्राप्त करने के लिए दान-यज्ञ करते हैं। मैं तो इसी जन्म में आपसे चाय पीने का दाम जमा करा रहा हूं।"

"तो ऐसा करिए। एक दस रुपये का नोट दे दीजिए। इतना तो चाय पर व्यय हो ही सकता है और यदि कुछ बच रहा तो नकद दूंगी।"

"नहीं। मेरा एकाउण्ट आपकी ओर चलता रहेगा।" इतना कहते-कहते उस युवक ने अपने कुर्ते की जेब से पर्स निकाला और उसमें से दस रुपये का नोट निकाल दे दिया।

रजनी ने धन्यवाद किया और दस रुपये का नोट अपने पर्स में रख चल दी। यह नवीन युवक वहीं खड़ा उसे जाते देखता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2

रजनी टैक्सी में कोठी की ओर जाती हुई उस दिन की घटना पर विचार कर रही थी। वह समझ रही थी कि उस दिन किसका मुख देखकर उठी थी कि उसे मरदूद भल्ल्ला मिल गया था। वह किसी युवक की खोज में तो जाती नहीं थी। वह खोज करने की योग्यता अपने में नहीं पाती थी।

उसका प्रथम विवाह भी उसकी अपनी खोज का परिणाम नहीं था। वह अपने पति से भी ढूंढी नहीं गई थी। उसे उसकी सास ने ढूंढ़ा था। कलकत्ता में कपड़े की दूकान पर वह कपड़ा खरीद रही थी और उसे अपने होने वाले पति की मां मिल गई थी। रजनी ने वर्षभर की आवश्यकता के लिए साड़ियां, जम्पर के लिए कपड़ा, अण्डरवियर, अंगियां, शालें, बिस्तरे की चादरें और तौलिये इत्यादि सब आवश्यक सामान जो उस दुकान पर उपलब्ध था, खरीद लिया था। गिरधारी-लाल की मां मधुमती अपनी बारी की प्रतीक्षा करती हुई रजनी को देख रही थी।

दुकानदार कदाचित् रजनी को जानता था। उसे विदित था कि वह कभी-कभी ही दुकान पर आती है, परन्तु जब भी आती है बहुत अच्छी बिक्री करा कर जाती है। अतः वह दत्त-चित्त उसको माल दिखा रहा था। मधुमती के देखते-देखते उसने दो सहस्र रुपये का सामान खरीद लिया था और बोली थी, "यह सब सामान बंधवाइए। मैं साथ की जूते की दुकान से होकर आती हूं।"

"बहिन जी," दुकानदार ने कह दिया, "तनिक इन माताजी को अटैण्ड कर लूं। मैं जूते, जैसे आप चाहती हैं यहां ही मंगवा देता हूं।"

"क्षमा करें, माताजी," रजनी ने साथ बैठी स्त्री की ओर देखकर कहा, "मैं समझी थी कि आपको जल्दी नहीं है।"

"जल्दी तो नहीं है। कोई ऐसा काम नहीं जो तुमसे अधिक रुचिकर हो।" उसने दुकानदार को कहा, "मैं तो एक जम्पर के लिए कपड़ा लेना चाहती हूं।"

दुकानदार ने रंग-बिरंगा, चैक डिज़ायन का, एक टुकड़ा निकाल-कर दिखा दिया। वह उस प्रौढ़ावस्था की स्त्री को पसन्द नहीं था, परन्तु वह कह नहीं सकी कि और दिखाओ। वह देख रही थी कि सहस्रों रुपये का माल खरीदने वाली उसकी प्रतीक्षा कर रही है। रजनी उस स्त्री की समस्या को समझ रही थी। उसने उसकी सहायता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का विचार कर दुकानदार को कहा, "इनको यह पसंद नहीं होता। देखो, वह निकालो।" उसने शेल्फ में लगे एक थान की ओर संकेत कर दिया। दुकानदार को संकेत समझने में समय लगा। वह शेल्फ के समीप जा पूछने लगा, "बहिनजी, यह?"

"नहीं? इससे ऊपर। नहीं, और ऊपर। बस इसके नीचे का।" दुकानदार वह कपड़ा निकालकर ले आया। निर्वाचन ठीक था रेशमी कपड़ा था। सादा, फूल-बूटे नहीं थे। रंग हल्का आसमानी और हल्का, परन्तु पारदर्शक नहीं था। साथ बैठी स्त्री ने बताया, "एक मीटर।" जब दुकानदार कपड़ा नाप, काट और कागज़ में लपेट रहा था तो उस प्रौढ़ावस्था की स्त्री ने कहा, "बेटी, धन्यवाद, क्या नाम है तुम्हारा?"

"मांजी, रजनी।"

"हां, परन्तु पूर्णिमा की रजनी।"

रजनी चुप रही। इसपर उस स्त्री ने कहा, "मैं मधुमती हूं। कहां रहती हो, बेटी?"

रजनी ने अपने घर का पता बता दिया। इस समय तक वह कपड़ा बांधकर तैयार हो गया था। उस स्त्री ने दाम पूछा तो दुकान-दार ने कैशमीमो काट दिया। पन्द्रह रुपये दस आने था।

उस स्त्री ने दुकानदार को दस-दस रुपये के दो नोट देते हुए पूछ लिया, "मालूम होता है कि तुम घर-भर के लिए कपड़ा खरीदने आई हुई थीं?"

"नहीं माताजी यह सब मेरे एक वर्ष की आवश्यकता है। बार-बार आने में समय अधिक व्यर्थ जाता है।"

"पर वर्ष-भर के लिए एकदम? इतने में तो फैशन बदल सकता है।"

"मैं फैशन के लिए नहीं खरीद रही। पहनने के लिए खरीद रही हूं। कुछ दूर तक देखने का मनुष्य का स्वभाव है। मैंने भी कम से कम कपड़ों के विषय में एक वर्ष के अन्तर तक देखने का यत्न किया है।"

दुकानदार ने शेष चार रुपये छः आने वापस किए तो वह स्त्री उठी और रजनी को नमस्ते कर चल दी।

उसके अगले दिन रजनी ने मधुमती को अपनी मां के पास बैठे देखा तो विस्मय करने लगी। इस पर भी उसने सामान्य रूप में नमस्ते कही और अपने काम में लीन रही। इसके कुछ दिन पीछे उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मां ने उसे एक युवक का फोटोग्राफ दिखाया और पूछा, "देखने में कैसा है यह युवक?"

"यह कौन है मां?"

"उस दिन एक स्त्री यहां बैठी थी, जिसको तुमने नमस्ते कही थी और उसने भी तुम्हें आशीर्वाद दिया था, यह उसके बड़े लड़के का चित्र है। तुम्हारे विवाह का प्रस्ताव है।"

"पर मां, फोटो देखने से क्या पता चलेगा?"

"इसके रूप-रंग का। शेष मैं देख और जान आई हूं। लड़का एम० ए० पास है। कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्राध्यापक है। बहुत हंसमुख और समझदार समझ आया है।"

"मां, तुम उसे पसन्द कर आई हो तो ठीक है। कर दो विवाह।"

विवाह हो गया। परन्तु भाग्य का खेल था कि जी० एल० कपूर को कैन्सर का रोग हो गया। बहुत चिकित्सा की गयी पर छः-सात महीने के विवाहित जीवन में ही वह चल बसा।

रजनी की टैक्सी भागी जा रही थी और वह अपने पहले विवाह की बात स्मरण कर रही थी। कदाचित् वही कपड़े की दुकान वाली घटना वोलगा रेस्टोरां में एक नये रूप में प्रकट हो रही थी। इस विचार से वह गुदगुदी अनुभव करने लगी थी। उसके पूर्ण शरीर में रोमांच हो आया था।

वह भल्ला के विषय में विचार नहीं कर रही थी। उसका ध्यान इस कुर्ता, चौड़ी मोहरी का पायजामा पहने युवक की ओर था। इस समय टैक्सी अलीपुर रोड पर पहुंची तो कोठी का नम्बर बता दिया।

आज वह अपने कमरे में पहुंची तो उसे अकेलापन अनुभव नहीं हुआ, जितना वह मोहिनी और बाबा ब्रजलाल के जाने के उपरान्त अनुभव कर रही थी। वह विस्मय कर रही थी कि यह क्या है? वही कमरा है, उसमें वह अकेली बैठी है, परन्तु वह अकेली अनुभव नहीं कर रही। उसके मस्तिष्क में कोई आ बैठा था और उसे उसकी संगत अनुकूल समझ आने लगी थी।

इस समय सरस्वती कमरे के द्वार पर आ खड़ी हुई। उसने उसको देखा तो वह पूछने लगी, "बहिनजी, मैं आ जाऊं?"

"अरे। आज पूछने की आवश्यकता क्यों पड़ गई?"

"एक तो अभी मेरे आने का समय नहीं हुआ। दूसरे आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुख से ऐसा प्रतीत हुआ था कि आप किसी काम में लगी हैं।"

रजनी को सरस्वती के इस रहस्योद्‌घटन पर विस्मय हुआ। उसने सरस्वती को अपने समीप ही बैठाकर कहा, "भला, मेरे मुख पर मेरी व्यस्तता लिखी थी क्या?"

"हां, बहिनजी, मैं भी कभी-कभी इसी प्रकार दूर मन में बैठे व्यक्ति से बातें करने लगती हूं तो मेरा मुख भी ऐसा ही हो जाता है।"

रजनी हंस पड़ी। वह जानती थी कि सरस्वती बातें करने में अति चतुर लड़की है। इस समय वह सोलह वर्ष की आयु की हो गई थी और यौवनारम्भ के काल के स्वप्न लेने लगी थी। रजनी ने बातें बदलते हुए पूछ लिया, "मेरे मुख पर व्यस्तता के लक्षण देख तो तुम कमरे के द्वारं पर ठहर गई थीं, पर आज तुम नित्य से एक घण्टा पहले आई क्यों हो? क्या काम है?"

"मैं आपसे दो बातें करने आई हूं।"

"हां, हां, करो।"

"मैं अपने कमरे में अकेली-अकेली अनुभव करती हूं। क्या मैं अपनी पुस्तक लेकर यहां इस कमरे में नहीं आ सकती? पहले इस कमरे में भाभी मोहिनी रहती थीं। उनका बेड खाली है?"

रजनी इसके अकेले मन की बात सुन चकित रह गई। वह अपने अकेले मन की बात स्मरण कर रही थी। वह समझ गई कि इस कुमारी के मन में अभी कोई आया नहीं। इसी से बेचारी संगत ढूंढ़ने चली आई है।

भागीरथ ने कोठी में पांच कमरे ले रखे थे। तीन बच्चों के लिए, एक अपने निजी बैठक और कार्यालय के लिए और एक अपने सोने के लिए। इसपर भी तीनों बच्चे साथ-साथ के कमरे में रहते थे और यहां तो वह घर भर से पृथक् सबसे ऊपर की मंजिल पर अकेली थी। भला यह लड़की वहां अपने माता-पिता और भाइयों में अकेली अनुभव करती है और यहां मुझ अकेली से यह संगत पाने के लिए आई है?

रजनी समझ रही थी कि इसका मन? किसीकी खोज में चल पड़ा है। उसने उसे केवल यह कहा, "यहां स्थान तो है, परन्तु अपनी माताजी से पूछ लो।"

"माताजी से तो पूछूंगी ही, पर पहले आपसे पूछना चाहती थी।"

"देख लो, यहां पढ़ाई में चित्त लग सके तो मां से पूछकर आ जाओ।"

"पर बहिनजी, एक बात और भी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या है?"

"यदि माताजी को न बताएं तो कहूं।"

"पर यदि ,बतानेवाली बात होगी तो अवश्य बताऊंगी। तुम बता दो तो ठीक, नहीं तो मैं स्वयं जानने का यत्न करूंगी।"

"कैसे यत्न करेंगी?"

"यह अभी नहीं बता सकती। इतना तो अभी कर रही हूं कि तुमको समझा रही हूं कि स्वयं ही बता दो।"

"क्या समझा रही हैं?"

"यही कि जो बात बच्चे अपने माता-पिता को नहीं बता सकते वह पाप होता है।"

"पर वह मेरी बात तो है नहीं।"

"जिस किसी की भी हो यदि वह अपने माता-पिता को बता नहीं रहा है तो वह पाप कर रहा है और जो कोई भी उस पापकर्म में सहायक होता है, वह भी पापकर्म ही करता है।"

"पर मैं उस कर्म में सहायक नहीं हो रही।"

"देखो, सरस्वती, तुम बहुत ही समझदार लड़की हो। इस कारण तुमको समझाती हूं। मान लो कोई व्यक्ति कुछ कर रहा है। वह उस काम को माता-पिता से चोरी रख रहा है, तो वह व्यक्ति पाप कर रहा है।

"तुम उसके उस पापकर्म को जानती हो। तुमको उसके माता-पिता और बड़ों से कह देना चाहिए जिससे वह पापकर्म रोक दिया जाए।"

"देखिए, बहिनजी, वह पापकर्म है अथवा नहीं, मैं नहीं जानती।"

"पर वह चोरी जो कर रहा है। जो बात अपने बड़ों से चोरी हो, वह पाप होती है।"

"पर मैं नित्य कश्मीरी दरवाज़े के भीतर एक दुकान पर चाट खाती हूं। वह मैं किसीको बताती नहीं। मैं समझती हूं कि मैं पाप नहीं कर रही। पाप की व्याख्या वह नहीं जो आप बता रही हैं।"

"सरस्वती, तुम दो बातों को मिला रही हो और एक से दूसरी का मूल्यांकन कर रही हो। एक बात है तुम्हारा चाट खाना; दूसरी बात है तुम्हारा चाट खाना अपने माता-पिता को न बताना। यदि तुम्हारे माता-पिता को चाट खाना पता चले तो क्या वे इसे बुरा मानेंगे? तुमने मुझे चाट खाना बताया है, परन्तु उससे पूर्व मुझसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह वचन नहीं लिया कि मैं कसीको न बताऊं। मैं बता सकती हूं। तुमको इसमें आपत्ति नहीं। इससे तुम इसका माता-पिता को पता लग जाने में हानि नहीं समझती। इस कारण तुम पाप नहीं कर रहीं। यदि मैं भी तुम्हारे चाट खाने को बुरा न मानूं और फिर तुम्हारे माता-पिता को न बताऊं तो पाप नहीं करूंगी।

"परन्तु तुम तो उस बात को किसी को भी न बताने का वचन मांग रही हो। अर्थात् तुम तो मुझे उस बात के किसी दूसरे को पता चल जाने में, अपनी अथवा उस कर्म करनेवाले की हानि होना समझती हो। बताओ, ऐसे कर्म अथवा बात को छुपाकर पाप कर रही हो अथवा नहीं?

"चाट की बात पर ही विचार करो। यदि मैं तुम्हारा चाट खाना तुम्हारे लिए अथवा किसी के लिए हानिकर समझूं और फिर तुमको अथवा किसी अन्य को मना न करूं तो यह पाप नहीं होगा क्या? तब मैं तुम्हारी माताजी के पास जाऊंगी और उनसे कहूंगी कि सरस्वती को खुले पैसे अथवा रुपये मत दें। यह उनसे चाट खाती है और उस चाट खाने से उसको अमुक हानि होनेवाली है। नहीं कहूंगी तो पाप करूंगी।"

सरस्वती समझ रही थी उसने एक बात कह दी, "पर यदि मैं उसको हानिकर न समझूं तो क्या करूं?"

"तब उसको छुपाने के लिए मुझे क्यों कह रही हो? जो बात हानिकर नहीं उसके छुपाने में क्या प्रयोजन है?"

"प्रयोजन यह है कि कोई उसको समाज में प्रचलित बात के विपरीत समझेगा।"

"और तुम तथा दूसरा करनेवाला उसे विपरीत नहीं समझते क्या?"

"वह क्या समझता है? मैं कह नहीं सकती। पर मैं तो प्रथा के विपरीत समझती हूं।"

"प्रथा तो धर्म है। धर्म के विपरीत ही तो पाप होता है।"

"तो प्रथा बदलनी नहीं चाहिए?"

"बदली जा सकती है। यही प्रथा और नियम में अन्तर है कि प्रथा मानना, न मानना व्यक्ति के अपने अधिकार में है, परन्तु नियम तो नियम बनाने का अधिकारी ही बदल सकता है। परन्तु प्रथा चोरी-चोरी तोड़ने से बदलेगी क्या? जब तक यह प्रत्यक्ष रूप में सबके देखते-देखते न तोड़ी जाए, यह बदलेगी कैसे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती ने कहा, "बहिनजी, ठीक बात तो यह है कि मुझे स्वयं यह बात ठीक प्रतीत नहीं हुई, परन्तु मुझे यह ठीक इस कारण प्रतीत नहीं हुई कि यह मेरे मन में उथल-पुथल मचाने लगी है। मैं मन में अशान्ति अनुभव करती हूं। मैं आपको इस कारण बताना चाहती हूं कि मेरे आपके कमरे में आकर रहने का एक कारण वह भी है।

"प्रमोद और भुवनेश्वर की लड़की सुन्दरी परस्पर मिलते रहते हैं। अलिंगन करते हैं और मुख चूमते रहते हैं। कभी-कभी वे कमरे का द्वार भीतर से बन्द भी कर लेते हैं मैं जब भी यह देखती हूं तो मेरे मन में अशान्ति उत्पन्न होती है और मैं अपना मन पढ़ाई में नहीं लगा सकती।"

रजनी इस बात को सुन अवाक् बैठी रह गई। बहुत देर तक वह आंखें मूंदे विचार करती रही। फिर कहने लगी, "सरस्वती, तुम यह बात अपनी मां से मत कहना। मैं चाचीजी से स्वयं बात करूंगी। तुम्हारे यहां मेरे कमरे में आने की बात भी मैं करूंगी। यदि तुम्हें माताजी कहें कि तुम यहां आकर रहो तो चली आना।"

सरस्वती इस बात से सुख अनुभव करती थी। रजनी ने कहा, "देखो, तुमको मेरे कमरे में आकर रहना है तो एक बात करनी होगी। मेरे साथ बैठ पूजा करनी होगी।"

सरस्वती ने पूछा, पर आपके कमरे में ठाकुरजी की मूर्ति तो है नहीं। आप पूजा किसकी करती हैं?"

"ठाकुर तो है। तुम आकर रहोगी तो दिखाऊंगी।"

3

आज रजनी को सरस्वती और ड्राइवर की लड़की की चिन्ता थी और वह पूजा के समय उन्हीं के विषय में चिन्तन करती रही। उसके सामने समस्या यह थी कि ऐसे ढंग से बात करनी चाहिए कि मन में क्षोभ उत्पन्न किए बिना उनकी वासनाओं को दूसरी दिशा दे दी जाए। यह बात दोनों कुमारियों से करा सकना अति कठिन था। किसीको समझा सकना तब ही सम्भव हो सकता था जब उनका वातावरण बदल दिया जाए। सरस्वती के लिए तो कदाचित् सम्भव हो जाए, परन्तु सुन्दरी के लिए यह कैसे सम्भव हो सकेगा? उसे समझ नहीं आ रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा के उपरान्त वह लक्ष्मी से मिलने गई। लक्ष्मी अपने पति भागीरथ के पास उनके कार्यालय में बैठी थी रजनी ने कार्यालय में जाकर कहा, "चाची, किसी आवश्यक कार्य में हो? मुझे आपसे एक बात करनी है।"

रजनी की मां कुछ दिन हुए कलकत्ता अपने पति के पास चली गई थी। गवर्नर का शासन हो जाने से कलकत्ता में पहले से अधिक शांति थी और मोहनलाल कारखाने के टूटे-फूटे तथा जले-अधजले सामान को बेच चुका था। कर्मचारियों को वेतन, भत्ता और प्रावि-डेण्ट फण्ड इत्यादि देकर छुट्टी दी जा चुकी थी। अब वह अपने व्यव-साय के विषय में विचार-विमर्श कर रहा था और उसको अन्तिम रूप देने के लिए उसने पत्नी को कलकत्ता में बुला लिया था।

लक्ष्मी यह आशा करती थी कि रजनी भी कलकत्ता चली जाएगी, परन्तु वह नहीं गई। अब उसे अपनी चाची से बात करने आई देख लक्ष्मी को फिर समझ आया कि वह कलकत्ता जाने के विषय में सम्मति करने आई है।

लक्ष्मी ने कहा, "कान्ति का समाचार मिला है। जब से वह कोठी से लापता हुआ था, उसके विषय में जानने का यत्न किया जा रहा था। हमने कनाट सरकस वाले मकान का एक मैनेजर नियुक्त करने का निश्चय किया है। विचार था कि यदि वह पसंद करे तो उसे एक सहस्र रुपये मासिक वेतन पर मैनेजर नियुक्त कर दिया जाए। तुम्हारे चाचा एक अन्य काम आरम्भ करने वाले हैं।

"परन्तु आज सोमदेवजी का पत्र आया है कि उनकी कपड़ा मिल में पिछले दस दिन से हड़ताल थी और परसों रात हड़तालियों ने मशालें जलाकर जलूस निकालने की घोषणा की थी, परन्तु सोमदेवजी ने पुलिस और लॉयल कर्मचारियों का संगठन इतना सुदृढ़ कर रखा था कि वह जलूस जब शरारत करने लगा तो वह घेरे में ले लिया गया। उन्होंने रुई और सूत के गोदामों को आग लगाने का यत्न किया तो आग लगाते हुए दस व्यक्ति रंगे हाथ पकड़ लिए गए। उनमें उनके नेता कान्तिलाल भी पकड़े गए हैं। सोमदेव ने रुपया पानी की भांति बहाकर इन पकड़े हुओं के विरुद्ध पुलिस को इतना घोर विरोधी कर रखा है कि किसीके भी छूट सकने की आशा नहीं।

"हम कान्तिलाल के विषय में ही विचार कर रहे थे कि तुम आ गई हो,। बताओ, पृथक् में बात करोगी अथवा चाचाजी के सामने ही?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजनी ने कहा, "यदि चाचाजी को अवकाश हो तो इनके भी सामने कह सकती हूं।"

"हां, कहो।" भागीरथ ने कह दिया।

"मैं कुछ कहने से पूर्व यह जानने आई हूं कि भुवनेश्वर की लड़की सुन्दरी किस कारण प्रमोद के कमरे में आती-जाती है?"

इस प्रश्न से तो पति-पत्नी दोनों अवाक् रजनी का मुख देखते रह गए। अपने लड़के की सफाई लक्ष्मी ने दी। उसने कहा, "प्रमोद अब सेकण्ड ईयर में पढ़ता है और सुन्दरी फर्स्ट ईयर में। दोनों की पढ़ाई के विषय एक समान हैं। अतः दोनों में कालेज में भी सम्पर्क होता है और आने-जाने के समय जीप गाड़ी में इकट्ठे आते-जाते हैं। वह पढ़ाई समझने के लिए प्रमोद के कमरे में आया करती है।"

"पर यह ठीक नहीं हो रहा। दोनों में पढ़ाई के काम के अतिरिक्त भी सम्पर्क बन रहा है।"

"हो सकता है। यह लड़की सुन्दर, चंचल और प्रमोद की वयस की ही है। तुमको कैसे पता चला है, रजनी?"

"किसी प्रकार भी समझ लें। परन्तु यह बात है। इसको रोकना चाहिए। कम से कम उनकी पढ़ाई के दिनों में तो उनका विवाह नहीं हो सकता। विवाह नहीं होगा तो वैसा सम्बन्ध तो भारी विस्फोट उत्पन्न कर सकता है।"

"तो क्या कहती हो, रजनी?"

"मैं समझती हूं कि दोनों में सम्पर्क ऐसे समाप्त होना चाहिए जिससे उनको समझ आए कि उनका विरोध नहीं हो रहा। इसके लिए चाचाजी प्रमोद से बात करें और चाची अथवा मैं सुन्दरी से बात करूं।

"इसके साथ ही लड़कियों को कालेज पृथक् गाड़ी में भेजना आरम्भ करें और लड़कों को पृथक् गाड़ी में। प्रमोद का कमरा बदल दिया जाए। उसे सरस्वती के कमरे में जो चाची के कमरे के साथ है, ले आया जाए और सरस्वती को मेरे साथ बरसाती में रहने के लिए कह दिया जाए।"

भागीरथ सब बात समझ गया। उसने पूछा, "तो यह बात सरस्वती ने तुम्हें बताई है?"

"जी, वह कहती है कि कभी-कभी सुन्दरी और प्रमोद कमरा भीतर से बन्द कर अपनी पढ़ाई करते हैं। इससे उसके मन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। वह अपनी पढ़ाई भी शान्त चित्त से नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती।"

भागीरथ की व्यावहारिक बुद्धि सजग और सक्रिय हो गई। उसने कहा, "रजनी, तुम ठीक कहती हो। सरस्वती आज रात ही तुम्हारे ऊपर के कमरे में जो पुरुषों के लिए वर्जित है, चली जाएगी।

"सुन्दरी को भुवनेश्वर द्वारा कहला दूंगा कि यदि उसकी लड़की को पढ़ाई में कुछ कठिनाई अनुभव हो तो वह रजनी से पढ़ने जा सकती है। जब सरस्वती अपना कमरा खाली कर देगी तो प्रमोद को उस कमरे में रहने के लिए कह दूंगा और प्रमोद वाला कमरा मैं अपने किसी कार्य में ले आऊंगा।"

उस रात सरस्वती पढ़ने के लिए आई तो भुवनेश्वर ड्राइवर की पत्नी कीर्ति से अपना बिस्तर और पुस्तकें उठवाए हुए रजनी के कमरे में आ पहुंची।

"तो आ गई हो?"

"हां, बहिनजी, अब मैं यहां ही रहूंगी।"

"कब तक?"

"जब तक आप सब मिलकर घर से निकाल नहीं देंगे।"

"उसमें अभी देर है। कम से कम चार वर्ष लगेंगे इसमें। तब तक तुम एक मानव बन जाओगी।"

कीर्ति मुस्करा रही थी। उसने कहा, "मैंने सरस्वती बीबी से पूछा था कि वह मां का घर छोड़ क्यों रही हैं? तो यह कहने लगी, 'भाभी, छोड़ नहीं रही। छोड़ने की तैयारी कर रही हूं।"

"हां, कीर्ति बहन, पशु से वनमानव और वनमानव से मानव बनने में तैयारी करनी पड़ती है न? यह वही तैयारी कर रही है। इसका और मेरा भी यही विचार है कि यहां मानव बनने में इसे सहायता मिलेगी।"

"तो आप भी यही मानती हैं कि मनुष्य बन्दर से बना है?"

"तो तुम भी इस कहानी को जानती हो? यह कहानी मैं मिथ्या मानती हूं। अपने पूर्वजों को मैं पशु नहीं मानती। मैं तो अपना पशु से मानव बनना स्वीकार करती हूं।

"देखो, कीर्ति बहिन, मैं समझाती हूं। जब मनुष्य बच्चा होता है तो यह जीवन तो रखता है, परन्तु इसका जीवन किसी भी पशु के बच्चे के समान ही होता है। यह बोल नहीं सकता, चल नहीं सकता, अपनी रक्षा कर नहीं सकता। ठीक वैसे ही जैसे किसी भी गाय-भैंस का बछड़ा होता है। पशुओं के बच्चे तो दो-चार दिन में ही चलने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
फिरने और खाना खाने के योग्य हो जाते हैं, परन्तु मनुष्य के बच्चे को अपनी शारीरिक आवश्यकताएं पूर्ण करने के योग्य बनाने में कई वर्ष लग जाते हैं। तेरह-चौदह वर्ष में मनुष्य का बच्चा पशु से वनमानुष बन जाता है। अब इसको मानव बनाने में तो और भी अधिक यत्न करना पड़ता है। प्रायः इस काम के लिए स्कूल-कालेजों में शिक्षा देनी पड़ती है। इसपर भी मनुष्य के सब बच्चे मानव नहीं बन पाते। कई तो कालेज की पढ़ाई समाप्त करने पर भी जंगली ही रहते हैं और फिर संसार में ठोकरें खाते रहते हैं।

"सरस्वती की मां ने समझा है कि यह वनमानव से आगे न तो घर पर और न ही कालेज में उन्नति कर रही है। अअब इसे मानव बनाने मेरे पास भेज दिया है।"

"पर बहिनजी, हम निर्धनों के भी तो बच्चे हैं।"

"ईश्वर की कृपा है कि वे पढ़ रहे हैं। तुम्हारी लड़की किस श्रेणी में पढ़ती है?"

"वह सरस्वती बहिन के साथ ही पढ़ती है।"

"तब तो वह भी अभी वनमानुष तक ही पहुंच पाई होगी। उसकी भी परीक्षा करनी चाहिए।"

"कैसे परीक्षा होगी?"

"उसे भी नित्य रात के सात बजे से आठ बजे तक यहां भेज दिया करो। सरस्वती दो मास से मेरे पास परीक्षा देने आती रही है। इसकी परीक्षा कर मैं यह समझी हूं कि इसे अपने पास यहां रख लेने की आवश्यकता है।"

"सुन्दरी के पिता से पूछूंगी। अभी तक तो वह प्रमोद भैया से पढ़ने जाती है।"

"प्रमोद उसे क्या पढ़ाता है?"

"यह हम क्या जानें? वह कहती है कि प्रमोद भैया भी वही विषय पढ़ते हैं जो वह पढ़ती है। इसीसे उनसे समझने चली जाती है।"

"अच्छा! सुन्दरी के पिता से पूछना और उसे यहां भेजने का यत्न करना।"

इस समय तक सरस्वती ने उस अलमारी पर अधिकार कर लिया था जो मोहिनी प्रयोग करती थी। उसने मोहिनी वाले पलंग पर अपना बिस्तर लगा दिया था।

कीर्ति नीचे गई तो सरस्वती ने बताया, "पिताजी और प्रमोद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैया में बहुत झगड़ा हो रहा है।"

"क्या झगड़ा हो रहा है?"

"यह पता नहीं। कार्यालय का द्वार बन्द कर ऊंचे-ऊंचे झगड़ रहे थे। बाहर मां खड़ी आंसू बहा रही है। मुझे मां ने कह दिया कि अब मुझे रजनी बहिन के कमरे में रहना है।

"मैंने मां से यह पूछा भी था, मां, कब तक?"

"मां ने ही तो कहा है कि जब तक मुझे वे घर से विदा नहीं करते। मैंने वही आपसे कह दिया है।"

दोनों हंस पड़ीं। रजनी ने पूछा, "शंकर की मां को अभी तक अपनी लड़की की बात ज्ञात नहीं?"

"कह नहीं सकती। बहिनजी, आप उसे यहां मत बुलाइए।"

"क्यों?"

"वह अच्छी लड़की नहीं है।"

"और क्या दोष देखा है तुमने उसमें?"

"वह अपनी मां को कहा करती है, 'तुम अनपढ़, गंवार स्त्री भला पढ़े-लिखों की बातें क्या समझती हो?' बहिनजी, यह बन्दर से मनुष्य की बात उसी ने मां को बताई है।"

"और तुम भी इसे सत्य कथा मानती हो?"

"मैं भी बायोलॉजी पढ़ती हूं। सब प्रोफेसर इसीके आधार पर ज्ञान-विज्ञान की पढ़ाई कराते हैं।"

"परन्तु है यह बात गलत। यह मैं मानती हूं कि एक ही जन्म में मनुष्य का विकास पशु से मनुष्य तक हो जाता है, पर यह नहीं मानती कि मनुष्य पशु की सन्तान है और पशु से मनुष्य बनने में लाखों वर्ष लगे हैं।"

"आपकी बात का क्या प्रमाण है?"

रजनी सोफा पर बैठी थी। सरस्वती उसके पास बैठ प्रश्न पूछने लगी थी। वास्तव में यही शिक्षा रजनी सरस्वती को दिया करती थी। अपने कालेज की पढ़ाई में सहायता की आवश्यकता न तो सरस्वती को पड़ती थी और न ही रजनी कुछ अधिक उस दिशा में सहायक हो सकती थी। रजनी इसे सामान्य ज्ञान की शिक्षा कहती थी। सरस्वती को इसमें रस आता था।

"मैं तो," रजनी ने सरस्वती के प्रश्न का उत्तर दिया, "वह बात कह रही हूं जो हम नित्य देखते और अनुभव करते हैं। बच्चे से मनुष्य बनते हैं। इस परिवर्तन का विश्लेषण ही तो मैं तुमको बता रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं। जो देखी बात से विपरीत मानते हैं, प्रमाण तो उनको देना चाहिए।

"इस पर भी मेरे कथन का प्रमाण है।"

"बहिनजी, यही तो पूछ रही हूं। विकासवाद को हमारे प्राध्यापक तो वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध नहीं कर सके। वे कहा करते हैं कि कदाचित् ऐसा हुआ और फिर ऐसा हुआ और कदाचित् उसका हम प्रमाण हैं।

"हमारी श्रेणी के एक विद्यार्थी ने पूछ लिया, 'प्रोफेसर साहब, यह तो वैज्ञानिक भाषा नहीं है। यह तो साहित्यिक कल्पनामात्र है।'

"प्राध्यापक महोदय ने सत्य बात बता दी, 'तुम ठीक कहते हो। हम इस 'कदाचित्' के प्रमाण परीक्षण कर ढूंढ़ रहे हैं। इसी कारण तो हम विकासवाद को अभी 'थ्योरी' कहते हैं।'

"इसपर एक अन्य विद्यार्थी ने कह दिया, 'पर इतिहास के प्राध्यापक तो इसको सत्यसिद्ध सिद्धांत मान मानव-इतिहास लिख रहे हैं।'

"इसपर हमारे प्राणिशास्त्र के प्राध्यापक बोले, 'इतिहास के विद्वान अपने मार्क्सवादी सिद्धांत को सिद्ध करने के लोभ में इस अधकचरे सिद्धांत को सत्यसिद्ध बात मान लेते हैं। उनका उद्देश्य अपने पूर्वग्रहों के लिए प्रमाण ढूंढ़ना है।"

"पर मेरी बात का तो प्रमाण है।"

"क्या?"

"प्रमाण हम किसी ऐसी बात का ही ले सकते हैं जो अति प्राचीन काल से आज तक चली आती हो। एक बात है जो लाखों नहीं तो बीस-तीस सहस्र वर्ष पुरानी हमारे पास है। वह बात अति उन्नत मस्तिष्क की उपज कही जा सकती है।

"वह है संस्कृत भाषा और वेदवाणी। कुछ विद्वान तो इनको कई लाख वर्ष पुरानी मानते हैं। यूरोप के विद्वान भी इसे पन्द्रह-बीस सहस्र वर्ष की पुरानी तो मानते ही हैं।

"संस्कृत भाषा और वेदों में वर्णित बातों का ज्ञान अति उच्चकोटि का है इसका अर्थ यह होता है कि तब से अब तक उन्नति नहीं वरंच ह्रास हुआ है। भाषा विकृत हुई हमारी उच्चारण-शक्ति कमज़ोर हुई है और ज्ञान में कमी हुई है।"

"पर बहिनजी, ज्ञान में तो वृद्धि हुई है? हम तो अब चांद और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्र तक पहुंचने का यत्न कर रहे हैं। पहले तो दिल्ली से कलकत्ता पहुंचना कठिन था।"

रजनी ने हंसते हुए कहा, "यह ज्ञान में उन्नति नहीं; यह ज्ञान के प्रयोग में सफलता कह सकती हो।"

"देखो, यात्रा में सैद्धांतिक रूप में कुछ भी नवीन पता नहीं चला। रेलें पहियों पर चलती हैं, हवाई जहाज़ पतंग की भांति उड़ते हैं अथवा आतिशबाज़ी के 'हवाई' की तरह उड़ सकते हैं। सिद्धांत रूप में तो कुछ पता चला नहीं। हां, उन सिद्धांतों का, जो बहुत प्राचीनकाल में भी ज्ञात थे, अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है।

"सरस्वती, इसे ज्ञान में वृद्धि नहीं, वरंच ज्ञान के प्रयोग में कुशलता प्राप्त करना कहते हैं। इसका मानव-विकास के साथ सम्बन्ध नहीं।

"हम तो यह कहते हैं कि मनुष्य का बीजारोपण होता है। नौ महीने में एक पूर्ण मानव-शरीर बन जाता है और फिर उस निस्सहाय शिशु से एक सामर्थ्यवान मनुष्य चौदह-पन्द्रह वर्ष में बन जाता है। इसी प्रकार सृष्टि के आदि में बीज डाला परमात्मा ने और नौ मास में एक शिशु बना और पन्द्रह वर्ष में एक सज्ञान मानव बन गया यह मानव अपना भला-बुरा विचारने लगा तो आगे उन्नति धीरे-धीरे हुई। परन्तु शरीर नौ मास में पूर्ण बन गया था। यह हम आज भी बनता देख रहे हैं। यह पन्द्रह वर्ष में स्वतंत्रता से जीवन चलाने योग्य और स्वतः उन्नति करने योग्य हो गया था। इसको लाखों वर्ष नहीं लगे।"

4

नीचे सत्य ही बहुत झगड़ा हुआ था। प्रमोद अपनी श्रेणी के लड़कों के साथ फुटबाल खेल ग्राउण्ड से आया था तो वह सरस्वती को अपना बिस्तर, सूटकेस तथा पुस्तकें बण्डलों में बांधते देख उसके कमरे के बाहर खड़ा हो गया।

"यह क्या हो रहा है, सरस्वती?" प्रमोद ने पूछा।

"माता जी ने यह कमरा खाली करने के लिए कहा है।"

"और तुम किस कमरे में जा रही हो?"

"रजनी बहिन की बरसाती में।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर वहां तो गर्मी बहुत होती है?"

"बहिन जी एयर-कण्डीशनर लगवा रही हैं।"

"पर इस कमरे को क्या है?"

"यह प्रमोद भैया के लिए खाली करवाया जा रहा है।"

"पर मैं तो उस कमरे में सुखी हूं।"

"पिता जी से पूछ लो। वही कह रहे हैं कि उनको वह कमरा अपने प्रयोग के लिए चाहिए।"

प्रमोद अपने आप ऐसी बात पूछने नहीं गया जो वह पसन्द नहीं करता था। इस कारण वह इसके कारण पर विचार करता हुआ अपने कमरे में चला गया। वहां वह अपनी पुस्तकों को देख रहा था कि उसे उस दिन क्या पढ़ना चाहिए? इसी समय लक्ष्मी वहां आ गई।

"प्रमोद," उसने कमरे में प्रवेश करते ही कहा, "पिता जी इस कमरे में अपना कार्यालय लाना चाहते हैं। तुम्हारे लिए सरस्वती वाला कमरा खाली करवा दिया है। महावीर को बुला लो और अपना सामान उस कमरे में ले जाओ।"

"पर मां, मैं कमरा बदलना नहीं चाहता।"

"इसमें चाहने और न चाहने की बात नहीं। इसमें उचित और अनुचित की बात है। तुम पिता जी से मिल लो। वे ही यह चाहते हैं।"

प्रमोद वैसे ही खड़ा-खड़ा कमरे से निकल पिताजी के कार्यालय में पहुंच गया।

भागीरथ प्रमोद के आने और कमरा न बदलने पर युक्तियां करने की आशा कर रहा था। प्रमोद आया तो बात भागीरथ ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "आओ, प्रमोद इधर बैठो। मैं यह कमरा मुंशी सदाराम के लिए नियत कर रहा हूं। परिवार का कार्यालय तो अब समाप्त हो गया है। इस कारण कोठी का 'आउट हाउस' खाली कर भाड़े पर उठा दिया जाएगा। अथवा उसका कुछ और प्रयोग किया जाएगा।

"मैं अपना प्राइवेट कार्यालय तुम्हारें कमरे में ले जाना चाहता हूं। तुम्हारे लिए सरस्वती का कमरा खाली करवा दिया है।"

"पर पिता जी, वह कमरा मुझे पसन्द नहीं।"

"क्या खराबी है उसमें?"

"मुझे उसमें सुविधा नहीं। सुन्दरी मेरे साथ बायोलॉजी पर नोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार करने आया करती है। वह वहां आ न सकेगी।"

"क्यों नहीं आ सकेगी? क्या उस कमरे तक पहुंचने में नदी पार करनी पड़ती है?"

इसका उत्तर प्रमोद के पास नहीं था। अतः वह चुपचाप खड़ा रहा।

"जाओ, अपना सामान समेटो। मैं महावीर को बुला रहा हूं। वह सामान बदलने में तुम्हारी सहायता कर देगा।"

"पर पिताजी, मैं वह कमरा नहीं बदलूंगा।"

"बहुत गुस्ताख हो रहे हो? कारण बताते नहीं कि क्यों बदलना नहीं चाहते और इन्कार कर रहे हो।"

"कारण बताना तो चाहता हूं, परन्तु अभी नहीं।"

"तो कब बताओगे?"

"मेरी इच्छा तो अभी चार वर्ष के उपरान्त बताने की है। इस-पर भी कहीं पहले बताने पर विवश हो गया तो बात दूसरी है।"

"वह क्या बात है जो तुम चार वर्ष तक मुझ से चोरी रखना चाहते हो?"

अब फिर प्रमोद मौन हो गया।

इस पर भागीरथ ने कह दिया, "यदि तो कारण बताते हो तो मैं विचार कर सकता हूं कि कमरा न बदलने में कारण उचित है या अनु-चित? और यदि तुम कारण नहीं बताते तो मैं चाहूंगा कि तुरन्त कमरा बदल लो।"

"पिताजी, यह तो मानव की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के विपरीत है।"

"पर तुम मानव हो क्या? मुझे तो तुम्हारे मानव होने में सन्देह हो रहा है।"

प्रमोद ने अब विवशता प्रकट करते हुए कहा, "मैं बता सकता हूं। पर बात ऐसी है कि द्वार बन्द कर ही कही जा सकती है।"

"ओह, अच्छा, द्वार बन्द कर दो।"

प्रमोद ने द्वार बन्द कर दिया और पिता जी की मेज़ के सामने रखी कुर्सी पर बैठकर कहा, "मैंने विवाह कर लिया है और रात को मेरी पत्नी को वहां आने में सुविधा रहती है।"

"पर तुम अभी अल्पवयस्क हो। स्वयं विवाह नहीं कर सकते। कौन है जिसने तुम्हारे साथ विवाह स्वीकार किया है?"

"वह भुवनेश्वर की लड़की सुन्दरी है। मुझे वह बहुत पसन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आई है और वह मेरे साथ विवाह करने के लिए तैयार हो गई है।"

"तो वह रात-भर तुम्हारे कमरे में रहती है?"

"जैसा अवसर हो वैसा करती है।"

"और उसकी मां मना नहीं करती?"

"यह मुझे ज्ञात नहीं। हम परस्पर वचनबद्ध हैं। मैं इस समय सत्रह वर्ष का हूं। मुझे वयस्क होने में चार वर्ष हैं। इसी कारण मैंने कहा था कि चार वर्ष के उपरान्त बताऊंगा।"

"परन्तु इसी बीच में कहीं उसके पेट में बच्चा हो गया तो?"

"अभी तक तो हुआ नहीं। हो जाएगा तो विवाह की घोषणा कर दूंगा। तब आप मान ही जाएंगे, अन्यथा भुवनेश्वर आप पर हरजाने का दावा कर देगा।"

"पर जानते हो कि मैं तब क्या करूंगा?"

"क्या करेंगे?"

"तुमको बेदखल कर दूंगा। घर से निकाल दूंगा। खर्चा बन्द कर दूंगा।"

"यह आप कर नहीं सकते।"

इसपर भागीरथ को क्रोध आ गया। उसने क्रोध में ऊंची आवाज़ में कहा, "निकल जाओ यहां से! बदमाश, सूअर कहीं के!"

"क्यों निकलूं? मेरा इस पैतृक सम्पत्ति में अधिकार है।"

"पैतृक सम्पत्ति के बच्चे! किसी से सम्मति करो तो पता चलेगा कि तुमको क्या मिलेगा?"

"परिवार में पचासवें भाग का अधिकारी हूं। मेरे भाग का धन आपके मकान में लगा है। उस मकान में मैं दसवें भाग का पत्ती-दार हूं। अभिप्राय यह कि तीस लाख रुपये का। आप मुझे बिना इतना दिए बेदखल नहीं कर सकते।"

"ठीक है। तुम भी कान्ति की भांति दावा कर देना, परन्तु अब निकल जाओ।"

"निकलो यहां से!" भागीरथ उठ खड़ा हुआ। प्रमोद भी उठ खड़ा हो गया और बोला, "पिता जी, मैं यह मकान नहीं छोड़ूंगा। यदि किसी को मकान छोड़ना होगा तो आपको छोड़ना होगा, मुझे नहीं।"

भागीरथ ने पुत्र को धक्का दे कमरे से बाहर करने का यत्न किया। पुत्र ने धक्के का विरोध किया। दोनों में हाथापाई होने लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी द्वार के बाहर खड़ी भीतर हो रही बात सुन रही थी। उसने भीतर कुर्सी उलटने की आवाज़ सुनी। तदनन्तर कुछ गिरने की आवाज़ आई। लक्ष्मी का अनुमान था कि पिता-पुत्र भीतर लड़ने लगे हैं और नीचे ऊपर लोट-पोट हो रहे हैं। इस आशंका में कि कहीं कोई दूसरे की हत्या न कर दे, उसने ज़ोर-ज़ोर से द्वार खटखटाना आरम्भ कर दिया।

द्वार खटखटाने का शब्द सुन भीतर खट्-खट् होनी बन्द हो गई। लक्ष्मी द्वार खटखटाती रही। कोठी के नौकर वहां एकत्रित हो गए थे। महावीर घर का पुराना चपरासी था। वह आवाज़ दे रहा था, "बाबूजी! बाबूजी!!"

इसी समय भीतर से द्वार खुला। द्वार प्रमोद ने खोला था। फुटबाल का खिलाड़ी पिता से शारीरिक बल में अधिक निकेला। भागीरथ का सिर फट गया था। वह मेज़ पर गिरा था और सिर मेज़ के कोने से टकरा फट गया था। भागीरथ हांफ रहा था और कुर्सी पर बैठा रूमाल से रक्त का बहना बन्द कर रहा था।

द्वार खुलने पर लक्ष्मी भीतर गई और पति को घायल देख चीखें मारती हुई कहने लगी, "यह क्या किया है, प्रमोद?"

पर प्रमोद तो कमरा खोल बाहर निकल अपने कमरे में चला गया था। लक्ष्मी ने महावीर को कहा, "किसी डाक्टर को टेलीफीन कर दो। शीघ्र बुलाओ।"

महावीर कमरे में रखे टेलीफोन पर डाक्टर का नम्बर घुमाने ही लगा था कि भागीरथलाल ने कह दिया, "ठहरो, महावीर, डाक्टर की आवश्यकता नहीं। तुम सब लोग जाओ, अपना काम करो। लक्ष्मी, तुम उस अलमारी से मर्करी क्रोम की शीशी और रुई निकाल लो।"

नौकर समझ रहे थे कि पिता-पुत्र में झगड़ा हुआ है। यह कोई नहीं जानता था कि झगड़ा क्यों हुआ है? सब एक-दूसरे का मुख देखते हुए कमरे से बाहर निकल गए।

लक्ष्मी ने मकरी करोम और रुई निकाली। रुई को मर्करी क्रोम में भिगोकर घाव पर लगा वह अपने कमरे में से पट्टी बांधने के लिए कपड़ा लेने चली गई।

नौकर प्रमोद के कमरे में चले गए। महावीर पूछने लगा, "छोटे बाबू, क्या हुआ है?"

प्रमोद भी क्रोध रूपी घोड़े पर सवार था। उसने कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"पिता जी बूढ़े हो रहे दिखाई देने लगे हैं।"

"पर बाबू, यह चोट कैसे लगी है?"

"वे मुझे कमरे से निकालने के लिए धक्का दे रहे थे कि उनका पांव कुर्सी से अटका और वे गिर पड़े थे। माथा मेज से टकरा गया और रक्त बहने लगा है।"

"पर वे पुत्र को क्यों निकाल रहे थे और भीतर से द्वार किसने बन्द किया था?"

"तुम सब लोग जाओ। अपना-अपना काम करो। बाप-बेटे की बात में तुमको नहीं आना चाहिए।"

यह सब काण्ड हो गया और रजनी तथा सरस्वती तीसरी मंजिल पर बैठी हुई बातें कर रहीं थीं। सरस्वती ने पूछ लिया, "पर बहिनजी, मनुष्य कैसे बना था?"

"ठीक वैसे ही जैसे अब बनता है?"

"अब "कैसे बनता है?"

रजनी गम्भीर हो विचार करने लगी थी कि कैसे इसे समझाए? एक कुमारी लड़की को प्रजनन क्रिया बताने में अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता थी। परन्तु सरस्वती तो बहुत कुछ जानती थी। वह बायोलॉजी का विषय पढ़ती थी। उसने स्वयं ही रजनी को समझाना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, देखिए, इतना तो हमने वनस्पतिशास्त्र में पढ़ा है। एक फूल में दो अंग होते हैं। एक को 'स्टेम' कहते हैं। इसको पुरुष अंग कहते हैं। इसमें से 'पोलन' जिसे पराग कहते हैं, उड़कर फूल के स्त्री-भाग में जा गिरते हैं। वहां 'ओवम' उपस्थित होता है। दोनों मिल जाते हैं और बीज बन जाता है। इस बीज से पेड़ बन सकता है।"

"ठीक है। ऐसे ही जन्तु बनते हैं। पुरुष-अंग में से 'पोलन' (स्पर्म) उड़कर स्त्री-अंग में जा गिरते हैं। वहां 'ओवम' उपस्थित होता है। दोनों मिलते हैं तो बीज बन जाता है। जिसे प्राणिशास्त्र में 'एम्ब्रियो' कहते हैं। इस 'एम्ब्रियो' से मनुष्य बन जाता है।

"परन्तु सरस्वती, यह 'पोलन' और 'ओवम' कौन बनाता है?"

"बहिन जी," सरस्वती अपनी पढ़ाई का पाठ सुनाने लगी थी, "ये पुरुष और स्त्री-अंग बनाते हैं।"

"परन्तु स्त्री और पुरुष के अंगों में और भी तो कितने ही कोषाणु होते हैं। पर सब 'पोलन' और 'ओवम' नहीं होते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, बहिन जी। ये 'पोलन' और 'ओवम' निर्माण के लिए प्रकृति ने कुछ अंग-विशेष को यह काम नियत कर रखा है।"

"प्रकृति ने नियत कर रखा है? रजनी, प्रकृति क्या होती है? यह तो निर्जीव पदार्थ है। इसमें जान नहीं है, बेजान वस्तु तो कुछ कर नहीं सकती। वह भला एक अंग से कैसे 'पोलन' उत्पन्न कर सकती है जब दूसरे स्थान से नहीं कर सकती? दोनों स्थान एक जैसे कोषाणुओं से ही बने हैं।"

"तो फिर यह कैसे होता है?"

"ये 'पोलन सेल' और 'ओवम सेल' परमात्मा निर्माण करता है। परमात्मा ही उनके संयोग में जीवन डालता है।"

"परन्तु वह ऐसा करता दिखाई तो देता नहीं?"

"प्रकृति करती दिखाई दे गई है क्या? देखो, सरस्वती। तुम्हारी पुस्तक में लिखा है कि 'ओवरी' में कोई-कोई 'सेल' ऐसा बन जाता है जो 'ओवम' कहलाता है। अन्य 'सेल' बसे ही रहते हैं।"

"शास्त्र कहता है कि एक 'सेल' को ही 'ओवम' बनाने में यह भेदभाव जो कोई भी करता है, वह परमात्मा है। अतः आज भी इस प्रकार के 'सेल' जो प्राणी निर्माण कर सकते हैं, परमात्मा की शक्ति से बनते हैं।

"इसी शक्ति से आदिसृष्टि में परमात्मा ने अन्य 'सेल' से विलक्षण 'पोलन' और 'ओवम' बनाए। तदनन्तर उनका संयोग कराया और फिर मानव-सृष्टि उत्पन्न हुई तो विस्मय करने की बात नहीं है।

"नौ महीने वह गर्भ में रहा, तदनन्तर प्राणी हो गया और फिर कुछ वर्ष में ही वह जीवन चलाने में कुशल हो गया।"

बात करने में तो यह सहज ही प्रतीत हुई थी, परन्तु साबित करना कठिन लग रहा था। वर्तमान अवस्था में 'जर्मसेल' बनते हैं प्राणी के विशेष अंगों में। वे परमात्मा किसी अन्य स्थान पर क्यों नहीं बना देता? उसने हंसते जीपान लिया, "देखो, बहिन जी, यह मेरा हाथ है। इसमें सामान्य कोषाणु तो हैं ही। परमात्मा इस स्थान पर वैसे कोषाणु उत्पन्न क्यों नहीं कर देता जिससे यहां पर ही बीजारोपण हो जाए और यहीं बच्चे बन जाएं?"

रजनी भी हंस पड़ी। वह मन में विचार करती थी कि यदि यह हो जाए तो स्त्रियों का बहुत-सा कष्ट निवारण हो जाए। बच्चे के जन्म के समय जो कष्ट स्त्री को होता है, उससे छुटकारा पा जाए। पुरुष और स्त्री हाथ मिलाया करें और बीजारोपण हो जाए। तदनन्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक व्रण की भांति आंवला स्त्री के हाथ पर हो जाए शौर उस व्रण में बच्चा बन जाए। समय पाकर व्रण फोड़ दिया जाए अयवा फूट जाये और बच्चा उत्पन्न हो जाए।

इस कल्पना पर तो वह खूब ज़ोर से हंसी। फिर एकाएक गम्भीर हो बोली, "देखो, सरस्वती, ऐसा प्रतीत होता है कि परमात्मा ने आरम्भ में तो कुछ ऐसा ही किया होगा। किसी पेड़ अथवा किसी अन्य के कोषाणु में से पोलन और ओवम सेल बनाए होंगे, परन्तु इस खुली हवा में धूप भर सर्दी-गर्मी में नव भ्रूण का पालन और रक्षा न हो सकती थी। इस कारण बच्चा बनने का स्थान ऐसा ढूंढ़ा गया जो बहुत सुरक्षित समझा गया।"

"तो···" सरस्वती कुछ पूछने लगी थी, परन्तु कमरे के बाहर भुवनेश्वर की पत्नी कीति आई और बोली, "बहिन जी, आपको माता जी बुला रही हैं।"

"किसको?"

"बड़ी बहिन जी को।"

रजनी समझ गई कि पिता-पुत्र के झगड़े के सम्बन्ध में ही कुछ बात होगी। इस कारण उसने सरस्वती को कहा, "तुम यहां ही ठहरो। मैं अभी आती हूं।"

5

लक्ष्मी ने पति के माथे पर पट्टी बांधी और प्रमोद के कमरे को चली गई। प्रमोद ने कमरा भीतर से बन्द कर रखा था। मां ने खट-खटाया तो प्रमोद ने भीतर से आवाज़ दी, "कौन है?"

"मैं हूं लक्ष्मी। तुम्हारी मां।" लक्ष्मी ने उत्तर दिया।

प्रमोद ने द्वार खोला और मां की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगा। लक्ष्मी कमरे में चली गई और कमरा भीतर से बन्द कर उसके सामने खड़ी हो बोली, "पिता का तो केवल माथा फोड़ा है और मेरा गला घोंटकर सहज ही छुट्टी पा सकते हो।"

"पर मां, तुम मुझसे लड़ नहीं रहीं। भला तुम्हारा अनिष्ट क्यों करूंगा?"

"यही तो कह रही हूं। मैं तुमसे लड़ नहीं रही और तुम मेरा अनिष्ट करने जा रहे थे। मुझे विधवा बनाने का विचार कर रहे थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मां, आज किसी भी स्त्री को विधवा होने से भय करना तो ठीक प्रतीत नहीं होता। तुम्हारे पास अपना धन-सम्पद् है। तुम न तो पिता जी के आश्रय हो और न ही अपने बच्चों के। फिर दूसरा विवाह भी तो कर सकती हो।"

लक्ष्मी को भी इस मूर्ख पुत्र को ऐसा कहते हुए क्रोध आ रहा था। इसपर भी वह झगड़ा करने नहीं आई थी। उसने अपने मन पर नियंत्रण करते हुए कहा, "देखो, प्रमोद, मैं अपना विवाह करने नहीं आई, परन्तु यदि तुम एक-दो बात मानो तो तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करने आई हूं।"

"तो पिता जी ने बता दिया है?"

"पर मैं तो सब बातें पहले ही जान चुकी थी। देखो, सुन्दरी से विवाह करना होगा। यदि उसके माता-पिता न मानें तो उसके वयस्क होने की प्रेतीक्षा करनी होगी, परन्तु यह चोरी-चोरी कर्म तो व्यभिचार कहलाता है। यह बन्द करनां होगा।

"यदि भुवनेश्वर और कीर्ति मान गए तो विवाह आज रात ही हो सकता है, परन्तु तुम्हें पृथक् मकान में जाकर रहना होगा और तुम्हारी सम्पत्ति के भाग की आय तुमको मिल जाया करेगी।"

"तो भुवनेश्वर से पूछ लो। मां, विवाह हो चाहे न हो, मैं अब इस घर में नहीं रहूंगा। मुझे मेरी आय में से खर्च के लिए अभी से मिलना चाहिए।"

"कब जाओगे यहां से?"

"विवाह हो जाए तो प्रातःकाल। नहीं तो अभी।"

"ठीक है। यह बात तुम्हारे पिताजी मान गए हैं। उनसे लड़ने के लिए क्षमा मांग लो।"

"मैंने कुछ अपराध नहीं किया जो क्षमा मांगू। आज वे सब लोग जिनका स्वार्थ वर्तमान अवस्था में निहित है, बिना झगड़ा किए मानते ही नहीं।"

"तो तुम समझते हो कि सुन्दरी से तुम्हारा विवाह न होने देने में हमारा किसी प्रकार का निहित स्वार्थ है? क्या है वह?"

"मां, उससे विवाह तो होगा ही। मैं उसकी बात नहीं कर रहा। मैं तो सम्पत्ति में अपने भाग की बात कर रहा हूं।"

"पर सम्पत्ति में तुम्हारा भाग है भी क्या? उस सम्पत्ति के निर्माण में तुमने क्या योगदान दिया है? अभी तक तो तुम उसके भोग करने वालों में ही रहे हो। उसके निर्माण में तुम्हारा भाग कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दृष्टिगोचर हुआ नहीं।"

"और मां, तुम्हारा इसके निर्माण में क्या योगदान है?"

मां अब कुर्सी पर बैठ गई थी। प्रमोद भी कुर्सी पर बैठा था वह पुत्र की अनर्गल बातों को सुन मन ही मन दुःख अनुभव कर रही थी। उसे दुःख हो रहा था कि यह मूर्ख पुत्र उसके घर में पैदा हुआ कैसे? इसपर भी वह अब पिता-पुत्र में वैमनस्य को दूर करने के विचार से आई थी और प्रमोद के प्रश्न पर उसे उस समय की बात स्मरण आ गई थी जब ब्रजलाल के परिवार की नई व्यवस्था होने लगी थी। उस समय भागीरथ ने परिवार की वर्तमान व्यवस्था करने में अनेक युक्तियां दी थीं। उनमें से एक उसने प्रमोद को बतानी उचित समझी। उसने कहा, "प्रमोद, तुम जानते नहीं कि मैं, मेरा अभिप्राय है सदस्यों की पत्नियां परिवार की सम्पत्ति में क्या योगदान दे रही हैं? सुनो। यही बात नवल के पिता ने आज से उन्नीस वर्ष पूर्व कही थी। तुम्हारे पिता ने इसका उत्तर यह दिया था, 'सदस्यों की पत्नियां परिवार के नये घटक निर्माण करने में सहायक हो रही हैं। ये नये घटक सम्पत्ति-निर्माण में योगदान देंगे। इस कारण ये परिवार के लिए वह कुछ कर रही हैं जो पुरुष कर सकते ही नहीं।' देखो, मैंने भी इस दशा में यत्न किया था और उस यत्न के प्रतिकारस्वरूप ही मुझे लाखों की सम्पत्ति मिली थी, परन्तु अब मैं विचार करती हूं कि तुम्हारे जैसे पुत्र उत्पन्न कर तो मैं सम्पत्ति में से भाग लेने की अधिकारिणी नहीं रही।

"तुम बिना कुछ निर्माण किए ही भाग मांगने लगे हो।"

"पर देखो। यह बात तो उस समय विचार करने की थी जब परिवार के नियमोपनियम बनाए जा रहे थे, अब तो उनका पालन ही करना है। इस कारण तुमको भाग मिलेगा। परन्तु जानते हो कि इक्कीस वर्ष की वयस से पूर्व तो तुमको सम्पत्ति मिल नहीं सकती। तब तक तुम निर्वाह के लिए ही मांग सकते हो। वह तुमको मिल रहा है।"

"तब तो ठीक है। मैं प्रातः यह कोठी छोड़ जाऊंगा। मुझे नया मकान लेने और उसमें सुख-सुविधा का सामान जुटाने में धन चाहिए।"

"कितना चाहिए?"

"अभी दो-तीन सहस्र मिल जाए।"

"देखो, प्रमोद, कोठी के एक कोने में परिवार के व्यवसाय का कार्यालय था। वह मकान रिक्त हो रहा है। बताओ, उसमें रहोगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मां, मैं पृथक् और आप से दूर मकान लूंगा।"

"तो रुपया मिल जाएगा। मैं समझती हूं कि तुम अभी किसी होटल में ठिकाना कर लो और यहां से चल दो।"

प्रमोद उठा और अपनी पुस्तकें बांधने लगा। मां ने प्रमोद को कहा, "अब भोजन यहां नहीं होगा। टैक्सी मंगवा लो और यहां से चल दो अभी पांच सौ रुपया मिल जाएगा। शेष तुम पता बता देना, वहां भेज दूंगी।"

"मां, यह सब पिता जी से सम्मति कर कह रही हो?"

"नहीं, उनसे बात अभी नहीं की। यह सब कुछ तुम्हें अपनी सम्पत्ति में से दे रही हूं। जब तुम वयस्क हो जाओगे तब तुम्हारी पिता जी से सुलह करवा दूंगी।"

"अभी क्यों नहीं?"

"इस कारण कि तुम अपनी अयोग्यता के लिए पिता से क्षमा मांगने के लिए तैयार नहीं हो रहे।"

"पर मैंने कोई अयोग्यता की है क्या?"

"अब मुझसे झगड़ा करोगे?"

प्रमोद को समझ आ रही थी कि वह आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर बहुत भारी उपलब्धि प्राप्त कर रहा है। अतः वह नरम पड़ गया और चुपचाप अपना सामान बांधने लगा।

लक्ष्मी ने कमरे का द्वार खोला। पिता-पुत्र में झगड़े की बात भुवनेश्वर के क्वार्टर में भी पहुंची थी। कीति भी मुख्य कोठी में आ प्रमोद के कमरे के बाहर खड़े नौकर से पता करने लगी थी कि क्या हुआ है। द्वार खोल लक्ष्मी बाहर आई तो उसकी दृष्टि कीर्ति पर पड़ी। उसने उसे कहा, "ऊपर जा रजनी को नीचे बुला लाओ।"

कीर्ति गई तो लक्ष्मी अपने पति के कार्यालय में चली गई। वह कुछ लिख रहा था। लक्ष्मी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, "मैं एक बात प्रमोद से निश्चय कर आई हूं।"

"क्या?" भागीरथ ने दूछा।

"यही कि वह तुरन्त कोठी को छोड़ दे। अभी किसी होटल में चला जाए। तदनन्तर शीघ्र ही कोई पृथक् मकान लेकर उसमें रहने लगे।"

"ओर भुवनेश्वर की लड़की?"

"मैंने उसे कहा था कि यदि भुवनेश्वर और उसकी पत्नी मानते हैं तो उसका विवाह अभी किया जा सकता है, परन्तु उसे आपसे अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नालायकी के लिए क्षमा मांगनी चाहिए।

"वह क्षमा मांगने के लिए तैयार नहीं हुआ। इस कारण मैंने उसके, विवाह के झगड़े में पड़ना उचित नहीं समझा और उसे कोठी छोड़ने पर राजी कर लिया है। अब वह स्वयं अपने विवाह का प्रबन्ध करेगा।"

"लड़का बिगड़ जाएगा।"

"ठीक है। जब लहलहाते खेत में दूब और सरकण्ड उग पड़ें तो उनको उखाड़ खेत से बाहर फेंक देने में ही कल्याण हो सकता है।"

"पर मैं तो उसे नोटिस लिखकर देने लगा था। मैं चाहता था कि यदि उसको बलपूर्वक कोठी से निकाला जाना पसन्द नहीं तो सूर्य निकलने से पूर्व ही उसे कोठी से चला जाना चाहिए।"

"आपके नोटिस के बिना ही तो मैंने यह कर दिया है।"

"उसे कुछ देने का वचन भी दे आई हो क्या?"

"हां, वह मैं उसे अपने व्यय में से दे दूंगी।"

"क्यों? मैं तो उसे एक पैसा भी देना नहीं चाहता।"

"यही तो आपमें और मुझमें अन्तर है। आप पिता हैं और मैं मां हूं। मां तो अयोग्य से अयोग्य पुत्र को भी भूखा मरने नहीं दे सकती।"

भागीरथ समझ यया। वह मां के मनोदगारों पर कुठाराघात करना नहीं चाहता था। वह चुप रहा। इस समय रजनी आई तो लक्ष्मी ने उसे बैठाकर कहा, "रजनी, यहां तो महाभारत का भीष्म पर्व सम्पन्न हो गया है। तुम्हारे चाचा तुम्हारे भाई प्रमोद से लड़ पड़े हैं और वह कोठी छोड़ जा रहा है। अब तुम सुन्दरी के विषय में क्या कहती हो? क्या प्रमोद का विवाह सुन्दरी से करा देना चाहिए?"

"चाची," रजनी का विचारित मत था, "जब प्रमोद कोठी छोड़ रहा है तो तुम इस विवाह के झगड़े में क्यों पड़ती हो? पीछे दोनों में अनबन हो गई तो लड़की के भले-बुरे का उत्तरदायित्व तुमपर आ जाएगा। मैं समझती हूं कि विवाह को बात प्रमोद पर छोड़ो।"

"मैं समझती हूं कि वह कोठी छोड़कर जाएगा तो कदाचित् सुन्दरी से विवाह नहीं हो सकेगा। उसके माता-पिता तैयार नहीं होंगे। तब लड़का अवश्य बिगड़ जाएगा। इसलिए मेरी एक योजना है। तुम प्रमोद से सम्पर्क रखो और हो सके तो उसका विवाह सुन्दरी से करा दो। इसपर भी यह सब ऐसे ढंग से होना चाहिए जैसे हम बीच में नहीं आ रहे, वरंच प्रमोद ही विवाह कर रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजनी कुर्सी पर बैठ गई और विचार करने लगी। एकाएक वह उठी और बोली, "अच्छी बात है। मैं देखती हूं कि क्या किया जा सकता है? आपका नाम बीच में नहीं आएगा।"

रजनी प्रमोद के कमरे में गई तो वह अपना सामान लगभग बांध चुका था। उसके समीप विनोद खड़ा था। रजनी को आते देख विनोद ने कह दिया, "दीदी, दादा को क्या हो गया है?"

"क्या हो गया है?"

"ये कहते हैं कि ये घर छोड़ रहे हैं।"

"हां, पिताजी से इसका झगड़ा हो गया है।" रजनी ने विनोद को समझाने के लिए कह दिया।

यह सुन तो विनोद बोल उठा, "वाह दादा, भला, पिताजी से भी कोई लड़ता है!"

"चुप रहो 'टर्टेन'! तुम अभी बहुत छोटे हो। कुछ भी समझ नहीं सकते।"

इस समय रजनी ने बात में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "देखो, प्रमोद, तुम कोठी से जा रहे हो, परन्तु तुम्हारा उद्देश्य जाने से पूरा नहीं होगा। मैं तुम्हारी सब कहानी जान गई हूं। इस कारण कहती हूं कि कोठी छोड़ देने से कदाचित् सुन्दरी से विवाह नहीं हो सकेगा।"

"दीदी, तुम नहीं जानती कि बात कहां तक पहुंच चुकी है? में समझता हूं कि बिना विवाह के वह रह सकती ही नहीं।"

"अच्छा, देखो। मैं तो इसलिए आई हूं कि तुममें और कोठी में सम्पर्क बना सकूं। मेरे विचार में अब तुम्हारा विवाह हो ही जाना चाहिए। साथ ही अब पढ़ाई कर नहीं सकोगे। इस कारण तुम्हें किसी उपकारी कार्य में लगवा दूं।"

"दीदी, तुम क्या कर सकोगी?"

"बहुत कुछ। पर वह सब अभी नहीं बता सकती। यदि तो तुम कोठी में रहते हुए विवाह करना चाहो तो पिताजी से क्षमा मांग लो। यदि विवाह के बिना कोठी छोड़ रहे हो तो विवाह करने के लिए किसी सहायक की आवश्यकता होगी, मैं उसके लिए तैयार हूं।"

"पर दीदी, तुम यह सब क्यों करोगी?"

"तुम्हारी बहिन जो लगती हूं। तुम्हारा भला-बुरा मेरे मन पर प्रभाव डालेगा।"

"देखो, दीदी, क्षमा तो मांगूगा नहीं। यह क्षमा आजकल के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
युवकों की भावनाओं के विपरीत है। हमने यह निश्चय कर लिया है कि सब कुछ, जो प्राचीन है, को विनष्ट कर देंगे। उससे खाली हुई भूमि पर नव-निर्माण करेंगे।"

"तो तुम भी कम्युनिस्ट हो?"

"मैं नहीं जानता कि कम्युनिस्ट क्या कहते हैं? मैं तो आज के युवकों की विचारधारा का वर्णन कर रहा हूं।"

"कम्युनिस्ट भी यही कहते हैं। खैर, छोड़ो इसको। तुम जो इच्छा हो, निर्माण करो। इसपर भी यह तो समझ ही लो कि अकेले कुछ भी निर्माण नहीं हो सकता। प्रत्येक काम में कम से कम एक साथी अवश्य बनाना पड़ता है। यह साथी पत्नी हो तो बहुत श्रेष्ठ हैं। नौकर की भांति कोई रखैल भी रख सकते हो, परन्तु वह चोरी कर भाग भी सकती है।"

विनोद समीप खड़ा यह सब सुन रहा था। सुने हुए पर अपनी बुद्धि से जोड़-तोड़ भी लगा रहा था। उसने कुछ समझा और कह दिया, "दादा, विवाह करोगे?"

"हां, तुम क्यों पूछ रहे हो?"

"दादा, मैं सहबाला बनूंगा।"

इसपर रजनी और प्रमोद दोनों हंसने लगे। रजनी ने हंसते हुए कहा, "बताओ, पिता जी से लड़कर इसे सहबाला बना सकोगे?"

"पर मैंने इसको सहवाला बनाने का ठेका लिया हुआ है?"

"यह तुम्हारा छोटा भाई जो है।"

"जब पिता नहीं तो भाई कहां से हो गया?"

अब फिर विनोद बोल उठा, "तो तुम बिना बाप के बेटे हो?"

इसपर प्रमोद चुप हो गया। यह बात उसे पसन्द नहीं आई। रजनी ने उठते हुए पूछ लिया, "तो तुम विवाह करना नहीं चाहते?"

"अब तो नए मकान में जाकर ही विवाह करूंगा।"

"अच्छा, मकान का पता बताना। तुम्हारी बहू के बाप को वहां भेजने का यत्न करूंगी।"

रजनी समझ गई कि अभी मूर्खता की धूरि मस्तिष्क पर बहुत गहरी है। जब तक वह झड़ नहीं जाती तब तक कोई समझ की बात यह सुनेगा नहीं।

प्रमोद बोला, "दीदी, एक बात कर दो। टेलीफोन पिता जी के कार्यालय में रखा है। मेडन होटल पर टैक्सी स्टैण्ड है। वहां टेलीफोन कर टैक्सी मंगवा दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्वयं जाकर क्यों नहीं कर लेते?"

"जा तो सकता हूं, परन्तु पिता जी नाराज होंगे। कदाचित् फिर झगड़ा होने लगेगा।"

"अच्छी बात है। इतनी सहायता तो मैं कर ही देती हूं।" रजनी ने कह दिया।

रजनी भागीरथलाल के कार्यालय में गई। उस समय लक्ष्मी वहां नहीं थी। भागीरथलाल भुवनेश्वर से बात कर रहे थे। भागी-रथलाल ने सब बात बताकर पूछा था; "तुम क्या कहते हो?"

"मैं तो लड़की की हत्या कर दूंगा, परन्तु छोटे बाबू से विवाह पसंद नहीं करूंगा।"

"क्यों? क्या दोष है उसमें?"

"आपसे झगड़कर वह मूर्खता कर रहा है और मैं किसी मूर्ख को अपना दामाद बना नहीं सकता।"

"अच्छा, तुम ऐसा करो। तुम अपनी पत्नी से सम्मति कर मुझे कल बताना। हां, रजनी को भी बता सकते हो। यदि तुम्हारी पत्नी और लड़की को प्रमोद से सम्बन्ध रुचिकर हुआ तो प्रबन्ध कर दूंगा।"

रजनी इस समय टेलीफोन का चोंगा उठा टेलीफोन घुमाने लगी थी कि भागीरथ ने पूछ लिया, "कहां टेलीफोन कर रही हो?"

"टैक्सी स्टैण्ड पर। प्रमोद के लिए टैक्सी मंगवा रही हूं।"

"मैं समझता हूं कि भुवनेश्वर उसे ले जाएगा जहां वह जाना चाहता है।"

इसपर भुवनेश्वर को आज्ञा हो गई कि वह प्रमोद को छोड़ आए।

भुवनेश्वर गाड़ी निकालने चला गया। उसके चले जाने के उप-रान्त रजनी ने कहा, "चाचा जी, प्रमोद अभी क्रोध के अभिभूत हो रहा है। उसे जाने देना चाहिए।"

"मैं समझता हूं कि यह विवाह नहीं होगा।"

"इस अवस्था में और भी आवश्यक हो जाएगा कि प्रमोद से सम्पर्क रखा जाए और उसे डूबने से पहले बचा लिया जाए।"

"यह काम तुम्हारी चाची ने तुम्हें करने को दिया है।"

वह वहां से प्रमोद के कमरे में आई और बोली, "चाचा जी ने भुवनेश्वर को कहा है कि जहां जाना चाहो वह तुम्हें छोड़ आएगा।"

इस समाचार से प्रमोद प्रसन्न था। रजनी ने कहा, "तुम भुव-नेश्वर के हाथ ही अपने ठहरने का स्थान बता देना। तदनन्तर मैं तुमसे सम्पर्क रखूंगी और तुम्हारी सहायता करती रहूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद के भुवनेश्वर के साथ जाने पर अब घर के किसी व्यक्ति की सहायता की आवश्यकता नहीं थी। वह समझता था कि मां से आर्थिक सहायता भी वह भुवनेश्वर के द्वारा ही ले सकेगा। अभी उसके पास कई सौ रुपया था और वह समझता था कि शेष वह अगले दिन माताजी से प्राप्त कर लेगा, परन्तु उसके गाड़ी में सामान रखवाते समय लक्ष्मी आई और उसे और पांच सौ रुपये दे गई।

जब भुवनेश्वर गाड़ी में लिए हुए उसे विश्वविद्यालय-क्षेत्र की ओर ले गया तो रजनी और लक्ष्मी भीतर लौट आईं। दोनों वहां पहुंचीं तो भागीरथलाल ने पत्नी से पूछा, "भोजन नहीं होगा अब?"

"अभी भूख है आपको?"

"तो मैं कुछ खाता रहा हूं जो भूख मिट जानी चाहिए?"

"मैं प्रमोद के विषय में विचार कर रही थी।"

"देखो, लक्ष्मी। मैं तो उसका विचार छोड़ देने वाला था, परन्तु तुम्हें उसके हित में संलग्न देख मैं तुम्हारे मार्ग में बाधा नहीं डालना चाहता। यदि तुम उसके वियोग में रात व्रत रखना चाहती हो तो वह भी रखूंगा। वैसे मुझे नित्य से अधिक भूख लग रही है।"

पाचक कार्यालय के बाहर यह जानने के लिए खड़ा था कि भोजन लगाया जाए अथवा नहीं। लक्ष्मी ने पति की बात सुन कह दिया, "पण्डित, भोजन परोसा जाए।"

रजनी सरस्वती को बुलाने चली गई।

6

रात सोने के समय सरस्वती ने पूछा, "बहिन जी, क्या हुआ है?"

"प्रमोद और पिता जी में हाथापाई हुई है। प्रमोद घर छोड़ गया है।"

सरस्वती अवाक् सुनती रही। रजनी ने आगे बताया, "भुवनेश्वर को कहा था कि जहां प्रमोद को छोड़कर आए, वह बता दे। परन्तु उसने अभी तक बताया नहीं।"

"बहिन जी, एक बात बताऊं?"

"हां, बताओ।"

"जब आप माताजी के बुलाने पर नीचे गई थीं, मैं सुन्दरी से मिलने के लिए चल पड़ी थी। मैंने विचार किया कि सुन्दरी की नोट-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुक मांग लाऊं और उससे अपने नोट ठीक कर लूं। पहले भी लाया करती थी। परन्तु वहां पहुंचने पर मां-बेटी में विवाद होते सुनाई दिया। मैं द्वार के बाहर ही अंधेरे में खड़ी हो सुनने लगी। मां कह रही थी, सुन्दरी, तुमने हमारे सामने यह कहा था कि तुम प्रमोद को विवाह पर राज़ी कर लोगी। अब तो तुम्हारे उससे सम्बन्ध की चर्चा कोठी में होने लगी है और बड़े लाला और बाबू में मुक्का-मुक्की भी हो गई है। बताओ, तुम क्या कहती हो?"

"मां, मैंने यह निश्चय किया है कि मैं छोटे बाबू से विवाह नहीं करूंगी।"

"'क्यों? क्या हुआ है? उसने कुछ कटु वचन कहा है?'

"'नहीं मां। मुझे इससे अच्छा सम्बन्ध एक अन्य स्थान पर मिल गया हैं।'

"'कब मिला है?'

"'आज ही।'

"'उसमें क्या अच्छाई देखी है? क्या वह इससे अधिक धनी है?'

"'नहीं, वह कालेज की अन्तिम श्रेणी में पढ़ता है और अपने पहाड़ी क्षेत्र का रहने वाला है। एक है सुरेन्द्रमोहन पन्त। उसके पिता का तराई में फार्म है और वह पढ़ाई के उपरान्त फार्म पर काम करेगा।'

"'पर ये लखपती हैं।'

"'मुझे प्रमोदजी की मां पसंद नहीं।'

"'परन्तु सुरेन्द्रमोहन की मां को देखा है तुमने?'

"'वे नहीं हैं। उनका देहान्त हो चुका है।'

"'मैं तो प्रमोद को पसन्द करती थी।'

"'ठीक है। पर विवाह तो मेरा होना है, तुम्हारा नहीं।'

"कीर्ति चुप हो गई। मैं बिना नोटबुक लिए ही लौट आई। मैं यह प्रकट होने नहीं देना चाहती थी कि मैंने उनकी बात सुनी है।"

इसने तो एक नई समस्या उत्पन्न कर दी। अगले दिन रजनी ने भुवनेश्वर से पता किया, "छोटे बाबू कहां गए थे?"

"वे विश्वविद्यालय के होस्टल नम्बर पांच में अपने किसी मित्र के पास रहने गए हैं।"

"उन्होंने फिर मिलने के लिए तुम्हें बुलाया है क्या?"

"नहीं। वे कहते थे कि मैं सरस्वती इत्यादि को कालेज में छोड़ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आया करूंगा तो वे मुझसे मिल लिया करेंगे।"

प्रमोद तो हवा में विलीन हो गया प्रतीत होता था। उसका पता नहीं चला। उसने कालेज में भी आना छोड़ दिया था। वास्तव में वह सुन्दरी से निराश हो गया था।

झगड़े वाली रात भुवनेश्वर प्रमोद को होस्टल में छोड़ गाड़ी गैराज में रख जब अपने क्वार्टर में पहुंचा तो सुन्दरी अपने कमरे में बैठी पढ़ रही थी और कीर्ति अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी। भुवनेश्वर कमरे में आया तो कीर्ति ने उसे अपने समीप बैठाकर पूछा, "सुना है, क्या हुआ है?"

"हां, लालाजी ने बताया है कि छोटे बाबू सुन्दरी से विवाह करना चाहता हैं और सुनो है कि हमारी लड़की ने इस विवाह को स्वीकार कर लिया है। इस कारण वे मेरी सम्मति चाहते थे।"

"और आपने क्या कहा है?" कीर्ति ने यह समझ कि दोनों में समागम की बात लालाजी को अभी पता नहीं चली, इससे सुख अनुभव करते हुए उसने पूछा था।

"मैंने तो यही कहा है कि मैं लड़की का विवाह छोटे बाबू से पसंद नहीं करता। उसने अपने पिता से झगड़ा किया है। वह मूर्ख है और मैं अपनी लड़की किसी मूर्ख लड़के के हवाले नहीं करना चाहता।"

"मुझे भी माताजी ने बुलाकर बताया था कि प्रमोद सुन्दरी से विवाह करना चाहता है। मैंने उनको यह कहा था कि हम तो बहुत छोटे आदमी हैं। परन्तु माता जी कहेंगी तो हम इन्कार नहीं कर सकेंगे। साथ ही मैंने कहा था कि लड़की की इच्छा के बिना विवाह नहीं होगा। मैं उससे भी पता करूंगी।

"मैंने सुन्दरी से पूछा है। वह कहती है कि उसने एक अन्य को विवाह का वचन दे रखा है और वह उससे ही विवाह करेगी।"

"वह कौन है?"

"कोई एम० ए० का छात्र है। इस वर्ष परीक्षा पास कर वह अपने पिता के पास फार्म में काम करने और रहने चला जाएगा।"

"तनिक उससे पूछ लो। मैं कल लालाजी को अन्तिम उत्तर देने वाला हूं। वैसे तो मैं प्रमोद को पसन्द नहीं करता था, इस कारण कि वह लड़की से दुर्बल प्रतीत होता है, इसपर भी ये लोग बहुत धनी हैं—शारीरिक दुर्बलता रुपये-पैसे की प्रचुरता में छुप जाएगी।"

"तो ऐसा करिए। पहले दूसरे लड़के को भी देख लें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो उसका नाम-धाम पूछ लो।"

सुन्दरी को वहां ही बुला लिया गया। मां ने लड़की से पूछ लिया, "तुम्हारे पिता उस लड़के को देखना चाहते हैं जिससे तुम विवाह करना चाहती हो।"

"पिताजी; वे हैं प्रमोद के मित्र ही। परन्तु वे पढ़ते हैं एम० ए० में। साथ ही प्रमोदजी से अधिक सुन्दर हैं और मुझे पसन्द हैं।"

"परन्तु तुमने प्रमोद को किसी प्रकार का आश्वासन दिया था।"

"बच्चों की सी बातें होती रही हैं। प्रमोदजी ने इसका गलत अर्थ लगा लिया प्रतीत होता है। सुरेन्द्रमोहनजी से मेरा परिचय तो कई महीने का है, परन्तु उनसे बात आज ही हुई है और हम वचनबद्ध हो गए हैं।"

भुवनेश्वर चुप रहा। लड़की जाने लगी तो कीर्ति उसके साथ ही लड़की के कमरे में चली गई। उसने पूछ लिया, "तुम तो कहती थीं कि तुम्हारी प्रमोदजी से घनिष्ठता हो चुकी और अब तुम कहती हो कि बच्चों की सी बातों में वह समझा था कि तुम उससे विवाह करोगी। क्या अभिप्राय है तुम्हारा इससे?"

"मां, मेरा अभिप्राय वही है जो मेरे कथन से प्रकट होता है।"

अगले दिन भुवनेश्वर ने यत्न किया और सुरेन्द्रमोहन का पता कर आया। उसे लड़की के व्यवहार पर लज्जा लगने लगी थी। उसने घर पहुंच लालाजी से क्षमा के भाव में सुन्दरी की इच्छा एक अन्य से विवाह करने की बता दी। इसपर भोगीरथलाल ने समझा कि प्रमोद को घर आ जाना चाहिए। यह विचार कर कि जब सुन्दरी उसे अपने मन की स्थिति बताएगी तो वह लौट आएगा, अतः घर के लोग प्रतीक्षा करने लगे।

परन्तु प्रमोद नहीं लौटा और अगले दिन रजनी बच्चों के साथ ही कालेज गई और प्रमोद से मिलने का यत्न करने लगी। उसे पता चली कि वह उस लड़के का कमरा छोड़ गया है जिसमें भुवनेश्वर उसे घर से जाने की रात छोड़ आया था। यहां विश्वविद्यालय-क्षेत्र में एक अन्य घटना घट गई।

जब रजनी प्रमोद को ढूंढ़ रही थी तो उसे वह युवक विश्वविद्यालय की एक इमारत से निकल आता हुआ दिखाई दिया जिसने उसे दो दिन पहले वोलगा रेस्टोरां के बरामदे में खड़े-खड़े दस रुपये ऋण दिए थे।

रजनी ने उसे एक ओर को जाते देखा तो खड़ी हो गई। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विचार करने लगी थी कि उससे यहां मिले अथवा नहीं। भुवनेश्वर गाड़ी लिए सड़क के किनारे खड़ा रजनी की प्रतीक्षा कर रहा था। सरस्वती और सुन्दरी अपनी-अपनी क्षेणी में जा चुकी थीं।

उस युवक ने भी रजनी को सड़क के किनारे खड़े देखा और पहचान लिया। वह मुस्कराते हुए रजनी की ओर चला आया और हाथ जोड़ नमस्कार कर पूछने लगा, "यहां आप किसलिए खड़ी हैं? क्या मैं यहां भी सहायता कर सकता हूं?"

"मैं यहां एक प्रयोजन से आई थी। वह काम तो हुआ नहीं। अब लौटने ही वाली थी कि आप इधर को आते दिखाई दिए तो विचार करने लगी थी कि आपका ऋण यहां ही चुकता कर दूं अथवा उसके लिए कनाट प्लेस की यात्रा करनी पड़ेगी?"

"ओह! पर वह ऋण तो वहां पर ही और उसी रूप में लूंगा जैसा मैंने निवेदन किया था।"

"तो आज आप साढ़े पांच बजे दर्शन देंगे?"

"हां, यदि चाय का निमंत्रण हो तो।"

"वह तो अब देना ही पड़ेगा वास्तव में आपके दाम से आपको ही निमंत्रण देना होगा यह।"

"तो ऐसा करिए, आप उस दाम से अपने को भी आमंत्रित कर सकती हैं।"

"अच्छी बात है, आपकी ओर से मैं आपके साथ चाय लेने का निमंत्रण आज वोलगा में साढ़े पांच बजे स्वीकार करती हूं।"

"धन्यवाद है, सायंकाल आपके दर्शन होंगे।"

वह युवक चल दिया। रजनी मोटर की ओर चल पड़ी। वह युवक किसी प्रयोजन से पीछे को घूम देखने लगा तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने रजनी को मोटरगाड़ी में सवार होते देखा। वह विचार करने लगा कि क्या उस दिन की अकिंचनता कृत्रिम थी अथवा उस दिन के दस रुपये की भांति यह मोटर भी ऋण पर ली हुई है।

रजनी उससे दूसरी ओर गाड़ी ले गई जिधर वह युवक खड़ा था। कोठी में भागीरथ और लक्ष्मी उसकी प्रतीक्षा कर रह थे। रजनी ने बताया, "प्रमोद आज कालेज नहीं आया। न ही वह अपने मित्र के कमरे में है जहां भुवनेश्वर उसे उस दिन छोड़ आया था। उसके मित्र का नाम सुरेन्द्रमोहन पन्त है और वह कहता है कि पहले दिन लगभग साढ़े तीन बजे वह कालेज से लौटा और सायं सात बजे तक कुछ करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा। तदनन्तर बिस्तर लपेट पुस्तकों की गठरा बांध और सूटकेस बांध रहा था कि मैं आ गया। मैंने उससे पूछा था कि वह किधर जा रहा है, तो उसने बताया, 'किसी होटल में ठहरूंगा और फिर किसी मकान को खोजूंगा।'

"'मैंने उससे कहा था कि वह अपने पिताजी की कोठी में क्यों नहीं लौट जाता? उसका उत्तर था, पीछे को लौटना प्रगति नहीं कहलाता।

"'मैंने उसे समझाया था—जब जीवन-संघर्ष में मिथ्या दिशा में पग उठाए जाएं तो उन पगों को वापिस कर लेना प्रगति ही होती है।

"'नहीं, मोहन।—उसने कहा—अब वापिस नहीं हूंगा।'

"सुरेन्द्रमोहन ने बताया कि प्रमोद चला गया और वह आशा करता था कि उसने उसकी सम्मति मान ली है। यद्यपि मुख से वह यही कह रहा था कि वह वापिस नहीं जाएगा।"

रजनी के वृत्तान्त को सुन माता-पिता को सान्त्वना नहीं मिली। भागीरथ ने पत्नी को कहा, "यह लापता होना तो हमारे व्यवहार की प्रतिक्रिया नहीं, वरंच यह सुन्दरी के साथी बदलने का परिणाम है। इसकी आशा उसे पहले ही कर लेनी चाहिए थी। जो लड़की पढ़ने के लिए आकर मास्टर को ही सबक पढ़ाने लगती है वह क्या कुछ नहीं कर देगी, यह उसे विचार कर ही आगे पग उठाना चाहिए था।"

परन्तु इन शब्दों में प्रमोद को ढूंढ़ने की कोई योजना नहीं थी। कोई योजना हो भी नहीं सकती थी। रजनी के कहने पर दिल्ली के मुख्य-मुख्य होटलों को टेलीफोन किया गया। प्रमोद का नाम तथा रूपराशि बताकर पता किया गया कि ऐसा कोई युवक उनके यहां ठहरने के लिए आया है। उसका कोई समाचार नहीं मिला।

रजनी प्रमोद और सुन्दरी की घटना पर विचार करती थी। सुन्दरी ने अपने विवाह के लिए निर्वाचित युवक का नाम भी सुरेन्द्र-मोहन बताया था। इससे उसे सन्देह हुआ था कि वह वही सुरेन्द्रमोहन होगा जिसके यहां एक रात तक प्रमोद रहा था। अभिप्राय यह कि प्रमोद के मित्र ने ही उसकी प्रेमिका पर डाका डाला है।

7

मोहिनी एक मास के भ्रमण के उपरान्त अपने पति सहित लौट आई थी। कमल और मोहिनी दोनों अपनी बूआ से मिलते आए तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उनको पता चला कि उनकी बूआ कलकत्ता चली गई है। वे लक्ष्मी से मिले थे और रजनी की माता के विषय में पता कर रहे थे। जब लक्ष्मी ने बताया कि स्नेह बहिन कलकत्ता चली गई है तो मोहिनी ने पूछ लिया, "और रजनी बहिन भी?"

"वह तो यहीं है और इस समय अपने कमरे में होनी चाहिए।"

कमल जानता था कि उसके कमरे में किसी पुरुष का जाना वर्जित है। अतः उसने मोहिनी को रजनी के पास भेज दिया। उसने कहा, "जाओ, रजनी बहिन को कहो कि अपने स्वर्ग से नीचे उतर आए जिससे इस धरती के जीव उनके दर्शन कर सकें।"

मोहिनी ऊपर गई तो सरस्वती को वहां डटकर बैठे देख चकित रह गई। रजनी सो रही थी और सरस्वती कोई कालेज की पुस्तक पढ़ रही थी।

"क्या हो रहा है, सरस्वती?" मोहिनी ने पूछ लिया।

"पढ़ाई।"

"तो तुम रजनी बहिन से पढ़ने आती हो?"

"नहीं, भाभी, मैं तो अब यहीं रहने लगी हूं।"

"अरे! क्यों, मां ने घर से निकाल दिया है क्या?"

सरस्वती और मोहिनी दोनों हंसने लगीं। इससे रजनी की नींद खुल गई। वह लपककर पलंग से उतरी और मोहिनी से गले मिलने लगी।

"कब आई हो, भाभी?"

"बस हम सुबह ग्राण्ड ट्रंक एक्सप्रेस से आए हैं। माता-पिताजी से मिल यहां आपके माता जी तथा आपसे मिलने चले आए हैं। आपके भाई साहब नीचे बैठे हैं और देवीजी के स्वर्ग से नीचे उतर दर्शन देने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

रजनी उठी और कपड़े बदलने लगी। मोहिनी कुछ देर तो उसको कपड़े बदलते देखती रही। फिर विस्मय में पूछने लगी, "रजनी बहिन, तुम्हारे भाई घर से कहीं बाहर बैठे प्रतीक्षा नहीं कर रहे। वे नीचे चाचीजी के पास इसी कोठी के ड्राइंगरूम में बैठे हैं।"

"वहीं तो चल रही हूं। कपड़े तो इसलिए बदल रही थी कि मुझे साढ़े पांच बजे वोलगा में चाय का निमंत्रण है। सो पन्द्रह-बीस मिनट तक आपसे मिल समय पर वहां पहुंच सकूंगी।"

"किसका निमंत्रण है?"

रजनी हंस पड़ी। वह बोली, "चलो नीचे चलकर बताती हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती ने पूछ लिया, "बहिन जी, कब तक आएंगी?"

"देखो, साढ़ पांच बजे चाय है। अधिक से अधिक एक घण्टा चाय पीने में। फिर एक घण्टा आने में। अर्थात् साढ़े सात बजे से पहले आ जाऊंगी। आकर पूजा, तदुपरान्त ढाई। उसके पश्चात् भोजन और फिर सोना। ठीक है न?"

तीनों ही नीचे उतर आईं। सरस्वती आई और मां के पास जा बैठी। मां की आंखें भीगी हुई थीं। सरस्वती ने मां को देखा और कह दिया, "मां, तुम फिर रो रही थीं?..."

"हां, कमल ने प्रमोद के विषय में पूछा तो उसे बताते-बताते आंसू बहने लगे हैं। इन्हें रोकती हूं पर ये रुकते नहीं।"

"मां, तुम भी रजनी बहिन से पूजा का ढंग सीखो। उससे शोक-मोह छूट जाते हैं।"

इसपर सब हंसने लगे। मोहिनी ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "तो सरस्वती बहिन भी पूजा करने लगी हैं?"

"यह तो बहुत सुगम हैं। बहिनजी ने कहा है कि जिस बात का पार पाना हो, उसका विश्लेषण करने के लिए एकचित्त होकर चिन्तन करने से बात समझ आने लगती है।"

लक्ष्मी पूछने लगी, "मोहिनी, चाय मंगवाऊं?"

मोहिनी ने कहा, "हम तो यह विचार कर आए थे कि रजनी बहिन को साथ लेकर वैंगर में चाय पीने चलेंगे और वहां ही उन्हें ऊटी की सैर का विवरण बताएंगे। परन्तु ये कह रही हैं कि इन्हें वोलगा में किसीका निमंत्रण है। इस कारण विचार कर रहे हैं कि चाची के घर से ही पी लें।"

"नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं। भैया और भाभी भी वोलगा में आमंत्रित हो सकते हैं।"

"बिना होस्ट के ही आमंत्रित हो सकते हैं क्या?"

"होस्ट तो मैं ही हूं। देखो, मैं बताती हूं।" इसपर रजनी ने उस दिन की पूर्ण कथा सुना दी। इसे सुन कमलकिशोर ने पूछ लिया, "और इतने दयालु जीव कौन हैं जो बिना जाने-पहचाने दस रुपये ऋण में दे गए हैं?"

"मैंने नाम नहीं पूछा। उन्होंने बताया नहीं। वे आज विश्वविद्यालय क्षेत्र में मिल गए तो मैंने वहां ही उऋण होने का यत्न किया था। वे बोले कि यह ऋण तो चाय पिलाकर ही उतर सकेगा और मैंने उनको आज साढ़े पांच बजे का निमंत्रण दे रखा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो विश्वविद्यालय का कोई व्यक्ति है? कदाचित् मेरा परिचित ही हो, परन्तु हम तुम्हारा निमंत्रण स्वीकार करें अथवा न करें, यह अब विचारणीय हो गया है।" कमल कह रहा था।

"इसमें विचारणीय क्या हो गया है? उसका अधिकार दस पर है। उसके दस के अतिरिक्त भी तो मेरे पर्स में रुपये हैं।"

"भला, कितने हैं?"

रजनी ने अपना पर्स खोलकर बताया, "कम से कम दो सौ रुपये साथ में हैं।"

"तो ठीक है।" कमल साथ चलने के लिए तैयार हो गया।

परन्तु मोहिनी ने गम्भीर हो कहा, "वे महाशय नाराज़ भी हो सकते हैं। उनके दस रुपये में रजनी बहिन से खुलकर वार्तालाप करने के अवसर में हम बाधक हो सकते हैं।"

"तब तो और भी ठीक है। उन महानुभाव को पता चल जाएगा कि मेरा मूल्य दस रुपये से अधिक है। वास्तव में यह रुपयों में आंका ही नहीं जा सकता।"

"ओह! तो यह किस सिक्के में आंका जा सकता है?"

"यह तो मोहिनी भाभी को ज्ञात होना चाहिए। उसे तो मुझसे खुलकर बात करने का अवसर कई मास तक प्राप्त रहा है।"

"मैंने तो उस वार्तालाप का कुछ मूल्य दिया नहीं। भला मैं कैसे जान सकती हूं?"

"दिया तो है। कदाचित् भाभी जानतीं नहीं कि उन्होंने क्या दिया है!"

"तो मुझे बता दो। मेरा भी कुछ ज्ञानवर्धन होगा।"

"चलो, अब चलें।" रजनी ने उठते हुए कहा, "अब चलने का समय हो गया है।"

कमल ने कहा, "इतनी जल्दी चलने की क्या आवश्यकता है, जब गाड़ी पास है। पन्द्रह-बीस मिनट में पहुंच जाएंगे।"

रजनी ने घड़ी में समय देखा और बैठ गई। वह बोली, "बहुत मज़ेदार बात होगी। उसे यह भी ज्ञात हो जाएगा कि मुझे न केवल दस रुपये उधार मिल सकते हैं, परन्तु मोटरगाड़ियां भी उधार मिल सकती हैं।"

"रजनी, एक बात करो। तुम अब एक मोटरगाड़ी अपनी ले लो।"

"क्या होगा इससे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तनिक शान बढ़ जाएगी और फिर···" कमल कहता-कहता रुक गया। उसको समझ आ गया कि सरस्वती सामने बैठी उनकी बातें सुन समझने का यत्न कर रही है।

लक्ष्मी उठ खड़ी हुई और सरस्वती को अपने साथ ले कमरे में चली गई। वह इन प्राणियों की बातों से कुमारी लड़की को पृथक् ले जाने में कल्याण मानने लगी थी।

रजनी, कमल और मोहिनी गाड़ी में सवार हो वोलगा रेस्टोरां के सामने पहुंचे तो रजनी ने देखा कि वह युवक वहां पहले ही खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। उस समय ठीक साढ़े पांच बजे थे। उसे मोटर-गाड़ी से रजनी को एक पुरुष और स्त्री के साथ उतरते देख पहले तो विस्मय हुआ, परन्तु पीछे वह कमलकिशोर को देख मुस्कराया और हाथ जोड़ उसे नमस्ते कहने लगा।

कमल ने हंसते हुए पूछा, "तो आप हैं रजनी बहिन को दस रुपये उधार देकर उसका उद्धार करने वाले?"

"तो ये आपकी बहिन हैं?"

रजनी समीप खड़ी दोनों परिचितों को हाथ मिला मिलते देख मुस्करा रही थी। कमल ने बताया, "मैं पत्नी के साथ ऊटी गया हुआ था। वहां से आज ही लौटा तो हम रजनी बहिन से मिलने गए थे। ये वोलगा रेस्टोरां को आ रहीं थीं। हम इन्हें वैंगर में ले जाने वाले थे। ये बताने लगीं कि इनको अपना ऋण चुकाने के लिए यहां आना है। अतः हम भी इनके साथ यहां ही आ गए हैं।"

"तो आइए, आपके थीसिस का क्या हालचाल है?"

"थीसिस तो लिखा जा चुका है। मैं उसे तनिक 'टोन अप' करने के लिए अपने साथ ऊटी ले गया था। मैं समझता हूं कि अब वह ठीक रूप में आ गया है। अतः उसे अब अपने प्रोफेसर साहब को दिखा सकूंगा।"

सब भीतर चले गए और एक मेज़ के चारों ओर बैठ गए। अब कमल ने रजनी का परिचय करा दिया, "ये हैं रजनी, मेरी बूआजी की लड़की। साथ ही मेरी पत्नी श्रीमती मोहिनी की परम सहेली हैं।"

"और रजनी, ये हैं प्रोफेसर देवेन्द्र। ये इतिहास विभाग में काम करते हैं। मैं इनसे भलीभांति परिचित हूं। ये पिताजी के प्रशंसकों में हैं।"

रजनी ने मुस्कराते हुए कहा, "खैर, एक बात तो हुई। अपना स्वयं परिचय कराने का कष्ट करना नहीं पड़ा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देवेन्द्र ने कहा, "एक कोई रिश्वतखोर भल्ला रजनीजी पर डोरे डालने लगे। मुझे इनपर दया आ गई और मैं इनकी उस भल्ला से बात सुनने लगा। बातें सुनते हुए मुझे इनमें हास्यरस की प्रवृत्ति समझ आई। इन्होंने उसे भगा दिया। वह समझ गया कि यह कोई फक्कड़ लड़की है और उसे ब्लाटिंग पेपर की भांति चूस जाएगी। इन्होंने उसकी चाय का भी दाम देकर उसे अति लज्जित कर दिया, परन्तु इनकी बातों से पता चला कि ये अपने पर्स में सब रुपये व्यय कर बठी हैं। अतः मैंने इनकी सहायता की इच्छा प्रकट की। परन्तु ये ऋण मांगने लगीं। विवश ऋण की अदायगी का प्रश्न उपस्थित हो गया और मैंने इनको मार्ग बता दिया।

"परन्तु आज प्रातःकाल एक अमेरिकन शिवरलेट कार में विश्वविद्यालय का चक्कर काटते देख इनकी उस दिन की अकिंचनता की बात एक अन्य मज़ाक समझ आ रही है।"

"पर आपके दस रुपये की भांति वह गाड़ी भी तो उधार मांगी हुई थी।" रजनी ने मुस्कराते हुए कहा।

"मुझे तो कुछ यह समझ आया था कि आप किसी लखपती की लड़की हैं और दिल्ली के युवक के सामने गुज़ारेदार होने का बहाना बना, उनको मूर्ख बनाती रहती हैं।"

कमल बोला, "देवेन्द्रजी, आप ठीक समझे हैं। वह गाड़ी इनके चाचाजी की है और ये···"

"बस-बस रहने दीजिए।" रजनी ने कहा, "मैं अपना परिचय स्वयं दे दूगी।"

बैरा ने चाय का सामान लगाया तो उसके साथ न्याय किया जाने लगा। रजनी ने बात बदल दी, "भैया, आपका 'हनीमून ट्रिप' कैसा रहा।"

"हनीमून तो वह था नहीं। हां, 'ट्रिप' अवश्य था।"

"मैं भी विचार कर रहा था कि आपके विवाह की चाय-पार्टी तो जनवरी में हुई थी और अब तो जून चल रहा है। क्या अभिप्राय है हनीमून का?" देवेन्द्र ने विस्मय में पूछ लिया।

"बात यह है कि हमारे एक बाबा हैं। ठीक-ठीक कहू तो परबाबा हैं। वे आजकल पाण्डीचेरी में रहते हैं। वे यहां आए हुए थे। उनको भाभी मोहिनी से बहुत स्नेह था। एक दिन भाभी ने बताया कि वह इनसे विवाह करने का निश्चय कर चुकी है, परन्तु वह विवाह परीक्षा के उपरान्त अप्रैल में करेगी। ये स्कूल में काम करती थीं और इनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल से हनीमून के लिए पहले छुट्टी नहीं मिल सकती थी इसपर बाबा ने कह दिया, विवाह तो अभी कर लो और हनीमून छुट्टी मिलने पर मना लेना।'

"उन्होंने यह भी बताया कि उनका विवाह तो हुआ था चौबीस वर्ष की आयु में और पुण्यस्मृति हमारी दादी का देहान्त हुआ था जब वे पैंसठ वर्ष की आयु के थे। इकतालीस वर्ष तक उन्होंने हनीमून ट्रिप नहीं लगाया था। इसपर भी विवाह बहुत ही सुखकर रहा है।"

"भाभी को बात समझ आ गई और विवाह तब हो गया और हनीमून ट्रिप स्कूल से छुट्टी मिलने पर लगा है।"

"खैर, कहावत है, देर आयद दुरुस्त आयद। हमें, अब प्रोफेसर साहब के घर पोता होने की दावत की प्रतीक्षा करनी चाहिए।" देवेन्द्र ने कह दिया।

कमल ने कहा, "ठीक है, आपकी प्रार्थना और प्रतीक्षा फलीभूत हो। मैं यही कह सकता हूं।"

"पर कमल, तुम सुखपूर्वक सहचारिता करते जाओ। शेष तो मतभेद का विषय नहीं। वह स्वयं होगा।"

मोहिनी हंसती रही। पौन घण्टा-भर बहुत सजीव वार्तालाप चलता रहा। आज तो बिल बीस रुपये बन गया था। रजनी ने पूर्ण बिल दे दिया। इसपर देवेन्द्र ने कहा, "यह तो आपने अपने मामा के लड़के और मामा की बहू को चाय पिलाई है। मेरे दस रुपये आपकी ओर ऋण बने रहेंगे। वह मैं किसी अन्य दिन चाय से प्राप्त करने का यत्न करूंगा।"

"तो कब ऋण से मुक्ति होगी?"

"अब तो मैं आपका पता लिख लेता हूं और आपको लिख भेजूंगा कि कब उन दस रुपये की चाय हो सकेगी।"

कमल ने हंसते हुए कहा, "प्रोफेसर साहब, उस ऋण पर ब्याज नहीं लेंगे क्या?"

"यह काम अभी तक तो किया नहीं। कमलजी बता दें कि कितना ब्याज लेना चाहिए तो फिर इनके नाम का खाता खोल दूंगा।"

"मैं समझता हूं कि इस प्रकार बिना लिखा-पढ़ी के और बिना नाम-धाम जाने दिए रुपये का ब्याज तो पठानों वाला होना चाहिए। वे प्रायः एक आना रुपया प्रतिदिन लिया करते थे।"

"तो कमलजी का कभी उनसे वास्ता पड़ा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मुझपर तो पिताजी की सदा कृपा रही है। मेरी जेब कभी खाली नहीं हुई और ईश्वर की भी कृपा मानता हूं जो मेरे सज्ञान होते-होते देश में स्वराज्य हो गया। अब वे पठान रहे नहीं। पर हमारा एक नौकर था। एक बार एक पठान के पंजे में फंस गया था। वह उत्तरप्रदेश के ज़िला सुल्तानपुर का रहने वाला था। उसने एक पठान से दस रुपये उधार लिए थे और दस वर्ष तक वह उसको दस रुपये नहीं दे सका था। इन दस वर्षों में वह उसको ब्याज के दो हज़ार रुपये से ऊपर दे चुका था। प्रति पन्द्रह दिन में पठान आता था और राम-चरण से ब्याज के सवा नौ रुपये ले जाता था। एक-दो बार रामचरण ने देने से इन्कार किया तो पठान ने उसे खूब पीटा था। किसीने उसे बचाने का साहस नहीं किया। विवश रामचरण देता रहा। उसके भाग्य से स्वराज्य हो गया और पठान यहां से भाग गया।"

देवेन्द्र ने कह दिया, "तब तो ठीक है, रजनीजी। मैं तो पठानों वाला ब्याज लूंगा।"

"तो यह समझूं कि एक बहुत बुरे आदमी से वास्ता पड़ा है? इससे तो वह भल्ला ही ठीक आदमी था। वह तो एक बार में ही अपना हिसाब-किताब चुकता कर गया है।"

"वह तो मूर्ख था। यदि वह दस रुपये का लोभ न करता तो एक लखपती चाचा की भतीजी से न जाने कितना कुछ प्राप्त कर लेता।"

इसपर कमल हंस पड़ा। हंसते हुए वह बोला, "पर देवेन्द्रजी, आप···"

बात रजनी ने चलने नहीं दी। उसने कह दिया, "आपको यह तो विदित होना चाहिए कि पठानों के वश में वे पड़ते हैं जो निपट अकिंचन होते हैं। इससे आपको यह अनुमान लगाने में भूल नहीं करनी चाहिए कि लखपती चाचा अपनी भतीजी की जेब भरते नहीं होंगे।"

"भरते होते तो लखपती चाचा की लड़की मुझ-जैसे पठान के पंजे में न फंसती।"

"यह बात नहीं। जेबें तो भरी रहती हैं। केवल भल्ला जैसे लोगों को दिखाने के लिए खाली दिखाई देती हैं।"

"तब तो मेरे रुपये डूब गए।"

"नहीं। आप भी पठानों के से उपाय ब्याज प्राप्त करनें के कर सकते हैं।" कमल का सुझाव था।

"अर्थात् आपकी बहिन को पीट दूं? पर आजकल तो स्वराज्य है और ऋण देने वाले पीठ जाते हैं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस बात की चिन्ता तो आपको करनी नहीं पड़ेगी। आपका वास्ता एक औरत से पड़ा है। वह आपको पीट नहीं सकेगी।"

"इसीसे तो कहता हूं कि रुपये गए।"

इसपर कमल ने कह दिया, "रजनी का ज़ामिन तो मैं हो सकता हूं, परन्तु पठान ज़ामिन मांगे तो फिर एक आना रुपया प्रतिदिन का ब्याज नहीं मांग सकता।"

"मैं तो यह विचार कर रहा हूं कि रुपये ही छोड़ दूं।"

मोहिनी अब बात में हस्तक्षेप करते हुए बोली, "आपके 'डील' से मुझे तो यह समझ आया था कि आपके रुपये तो पहले ही डूब चुके थे। अब चाय ही रह गई है। वह मिल जाएगी। यहां नहीं तो पटरी पर लगे टी-स्टाल पर तो है ही।"

बातें करते हुए सब बाहर आ गए थे। कमल ने कहा, "प्रोफेसर साहब, चलिए, मैं आपको अपनी अम्बेसडर में ले चलता हूं। शिवरलेट तो इनके चाचा की थी।"

"हां, यदि आप मेरे क्वार्टर तक पहुंचाने का वचन दें तो।"

"यह भी हो सकता है। रजनीजी तो हमारे घर चलेंगी। माताजी कह रही थीं कि इन्हें लेता आऊं।"

8

इसके कई दिन पीछे की बात है। मोहिनी रजनी से मिलने आई हुई थी। सरस्वती कालेज गई हुई थी और दोनों ननद-भाभी बरसाती में बैठी अपने-अपने जीवन का लेखा कर रही थीं। मोहिनी की ठोड़ी लटकने लगी थी। रजनी ने उसके पेट के नीचे के भाग में कुछ उभार भी देखा था। उसने मुस्कराते हुए कहा, "भाभी, क्या सौगात लाई हो?"

"कुछ लाई तो थी, परन्तु अब वह रख छोड़ी है। किसी अति शुभ अवसर पर बहिनजी को देने के लिए।"

"और वह अवसर कब तक आने वाला है?"

"बहिनजी चाहें तो कल भी आ सकता है। देवेन्द्रजी अपना वकालतनामा बहिनजी के भाई साहब को दे गए हैं।"

"तो देवेन्द्रजी मुकदमा करने वाले हैं?"

"हां, बहिनजी पर दावा दायर किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो दावे का जवाब तैयार करने के लिए मुझे भी कोई वकील करना होगा?"

"तो उनके दावे का विरोध होगा?"

"दावे का पता चले, तब ही न? वकील दावा स्वीकार करने के लिए भी तो किया जा सकता है।"

"हां, यदि स्वयं अदालत में न जाने का विचार हो।"

"बिल्कुल नहीं है।"

"तो बहिनजी अपनी भाभी मोहिनी को अपना वकील बना सकती हैं।"

"भाभी, फीस क्या लोगी?"

"जो ननदरानी प्रसन्न होकर दे दें।"

"तो पहले दावे की नकल प्राप्त करो। अभी तक तो वह भी प्राप्त नहीं हुई।"

"वह तो मुझे ज्ञात है। देवेन्द्रजी चाहते हैं कि रजनी बहिन उनकी माताजी के लिए एक पोती निर्माण करें। ऐसा करने के लिए वे उनके घर पर चलकर रहें।"

"बहुत बड़ा दावा है।"

"हां, परन्तु उनका कहना है कि इसके लिए उनकी माताजी रजनी बहिन को कुछ देंगी भी।"

"क्या देंगी?"

"बहुत बड़ी वस्तु देने की बात हो रही है।"

"भाभी, बताओ भी, क्या देना चाहती हैं वे इस मेहनत-मशक्कत के लिए?"

"अपना स्नेह।"

"पर पोती क्यों? पोता क्यों नहीं?"

"पोते उनके घर में पर्याप्त हैं। वे स्वयं सात पुत्रों की मां हैं। सात में से अब चार हैं। तीन बेचारे विवाह के पहले ही उन्हें छोड़ गए थे। चार के दस बच्चे हैं और सबके सब लड़के ही हैं। देवेन्द्र की माताजी कहती थीं कि कोई ऐसी बहू लाओ जो एक-दो लड़की दे सके।"

"यह समझ में नहीं आया?"

"क्या समझ नहीं आया?"

"कि लड़की कैसे बनाई जा सकती है और फिर लड़की बनाने में लाभ क्या है?"

"लाभ तो वे बता गई हैं। वे कहती हैं कि कन्यादान लेते-लेते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वे बहुत ऋण में दब चुकी हैं। वे उस ऋण को उसी 'सिक्के' में देना चाहती हैं। वे भी कन्यादान करने का फल प्राप्त-करना चाहती हैं।"

"बहुत पुराने विचार की स्त्री प्रतीत होती हैं।"

"रजनी बहिन से कम ही हैं। इस समय बावन वर्ष की हैं और और होंठों पर लिपस्टिक लगाती हैं।"

कदाचित् उऋण होने के लिए वे स्वयं भी एक-आध लड़की बनाने में यत्नशील हैं।"

"यह तो उन्होंने बताया नहीं। और मैं समझती हूं कि इसका देवेन्द्रजी के दावे से सम्बन्ध भी नहीं।"

"तो भाभी, जवाब-दावा तैयार कर दो।"

"हां, जैसा बहिनजी कहें वैसा तैयार कर दिया जाए।"

"मैंने कुछ दिन हुए एक दानपत्र तैयार किया है। उसमें अपनी पूर्ण सम्पत्ति, जो अब चाचाजी के साथ सांझें में लगी है, दान कर दी है। मैंने अपने जीवन-काल के लिए पांच सौ रुपया मासिक की आय ही अपने पास रखी है। उसमें से मैं लड़की के दहेज के लिए कुछ भी दे नहीं सकूंगी।

"रही बात लड़की अथवा लड़कियां निर्माण करने की, यह तो कोई नहीं बता सकता कि क्या होगा और क्या नहीं होगा। यत्न ही कर सकती हूं।"

"इसपर भी देवेन्द्रजी की माताजी ने यह कहा है कि यत्न तो करना चाहिए। और जब मैंने बताया कि आपकी पूजा का ढंग ऐसा है कि आपकी प्रत्येक समस्या का सुझाव उस पूजा से प्राप्त हो जाता है तो वे कहने लगीं, 'तब तो इस समस्या का सुझाव बहू स्वयं पता कर लेगी।'"

"अच्छा, भाभी, दावा स्वीकार कर लो। पर मेरे दानपत्र की बात बता देना।"

"यह बात देवेन्द्रजी की माताजी के लिए तो असुविधाजनक होगी नहीं। उनके यहां ईश्वर की कृपा है। चार पुत्र कमाते हैं। उन चार के साथ पांच पोते भी धनोपार्जन कर रहे हैं। इस कारण लड़कियों को देने के लिए वे तुमसे नहीं मांगेंगी। पर रजनी बहिन, मुझे तो अपनी फीस की चिन्ता है। कहीं वकालत फोकट में ही न जाए।"

"तो क्या, भाभी की फीस मैं अपने पांच सौ व्यय में से नहीं दे सकूंगी?"

"एक बात कर सकती हूं।" मोहिनी ने मुस्कराते हुए कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रजनी बहिन के लिए फीस की किस्तें बांध दूंगी।"

"तब तो ठीक है। मैं दे सकूंगी।"

"परन्तु, भाभी, अब तो बता क्या सौगात लाई हो मुझे देने के लिए?"

"आपकी मामी के घर एक पोता लाई हूं।"

"यही तो पूछ रही हूं कि पेट में क्या कर लाई हो? यह तो मैं पहले दिन ही समझ गई थी कि कुछ है।"

"कैसे समझ गई थीं?"

"तुम्हारी खाने में अरूचि देखकर।"

"ओह, पर माताजी भी यही कहती थीं। तीन-चार दिन हुए मैं खाते-खाते उठकर शैंक में खाया-पिया निकालने गई तो मेरी पीठ पर प्यार दे कहने लगी, थोड़ी अनारदाने-पुदीने की चटनी चाट लिया करूं।

"पर मैंने अपना इलाज किया है। मछली के सूप में अनारदाना मिलाकर दिन में दो बार खाने से पूर्व लेती हूं। इससे कम खाने पर भी ताकत बनी रहती है।"

"पर मामा-मामी तो मांस-मछली से घृणा करते हैं।"

"घृणा नहीं। हां, आमिष भोजन से अरुचि अवश्य रखती हैं। परन्तु वे कहती थीं कि जो पुण्यकर्म मैं कर रही हूं उससे यह थोड़ा-सा पाप मिट जाएगा।"

"पर उस लूप का क्या हुआ?"

"जब हम ऊटी पहुंचे तो होटल में हमारे पड़ोस के कमरे में एक मद्रासी दम्पती आकर ठहरा हुआ था। उसके सात बच्चे थे। मैं तो यह समझी थी कि वह किसी नर्सरी स्कूल की अध्यापिका है और अपने साथ स्कूल के शिशु ले वहां आई हुई है। जब परिचय हुआ तो पता चला कि सबके सब बच्चे उन्हीं पति-पत्नी के हैं।

"रोहिणी उस स्त्री का नाम था। वह बताने लगी, 'मेरे विवाह के आठ वर्ष हुए हैं और मैं चार बार प्रसव कर चुकी हूं। प्रत्येक बार जुड़वें ही पैदा करती हूं। अभी दो मास हुए मेरे दो लड़के हुए हैं। दोनों गोदी में हैं। मुझे शोक इस बात का है कि दूसरे प्रसव के समय एक बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हुआ था। अन्यथा अब तक मैं आठ बच्चों की मां होती।'

"मैंने हंसी-हंसी में पूछ लिया, 'आज की समाजवादी सरकार तो आपपर बहुत नाराज होगी?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"'क्यों? वह क्यों नाराज़ होगी?'

"सरकार तो सन्तान-निरोध के लिए कहती है और तुम जन-संख्या में द्रुत गति से वृद्धि कर रही हो।'

"परिवार-नियोजन तो निर्धनों के लिए है। समाजवादी सरकार को निर्धनों के बच्चों के लिए डिब्बों के दूध, पढ़ाई के लिए स्कूल, कालेज और फिर नौकरी का प्रबन्ध करना पड़ता है। इस कारण उनको सरकार कहने का अधिकार रखती है कि वे बच्चे कम उत्पन्न करें।

"'मैं अपने साथ दो नर्स रखती हूं। मेरे दो बड़े लड़के जो इस समय छः वर्ष के हैं, पब्लिक स्कूल में पड़ते हैं। हम अपने बच्चों के दूध के लिए घर में गाय रखे हुए हैं और समय-कुसमय के लिए हम दूध जमाकर डिब्बों में बन्द कर साथ ले जाते हैं। हम तो सरकार को प्रतिवर्ष कई लाख का टैक्स देते हैं और उसके बदले में कुछ विशेष उससे मांगते नहीं? फिर भला वह हमको बच्चे पैदा करने से मना क्यों करेगी?'"

"'पर रोहिणी जी,' मैंने पूछ लिया, 'आप जैसी उर्वरा भूमि के स्वास्थ्य का भी तो प्रश्न है?'

"'मैं स्वस्थ हूं। अभी तो मेरी आयु पच्चीस वर्ष की है और इतने बच्चे उत्पन्न करने के उपरान्त भी मैं तुम जैसों से अधिक स्वस्थ हूं।'

"'पर इस सब झगड़े से लाभ क्या है?'

"'यह तो तुम तब समझोगी जब कुछ बड़ी आयु की हो जाओगी। पर मोहिनी,' उसने कुछ गंभीर हो कहा, यदि घर खाने-पीने को नहीं है तो आज ही जाओ, लूप लगवा लो।'"

"मेरी हंसी निकल गई। उसने हंसने का कारण पूछा तो मैंने बता दिया कि वह तो मैंने पहले ही लगवाया हुआ है।

"'इसपर वह विस्मय में मेरे मुंख को देखती रही। मेरे वस्त्र, भूषण और कमरे में साज़-सामान देखकर बोली, मोहिनी बहिन, तुम समाज के साथ छलना खेल रही हो। आज ही डाक्टर के पास जाकर लूप खुलवा लो। तुम तो किसी मजदूर की पत्नी दिखाई नहीं देतीं। भला, तुमने यह मुसीबत मोल क्यों ले रखी है?'

"उसी दिन मैंने आपके भाई साहब को पड़ोस के कमरे वालों की बात बताई तो वे कहने लगे, 'तो क्या विचार है?'

"मैंने पूछा, 'किस विषय में पूछ रहे हैं?'

"तो वे बोले, 'लूप खुलवाने के विषय में।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप क्या कहते हैं?"

"'मैं जो कुछ चाहता हूं उसके लिए तुम्हें विवश नहीं करूंगा। वैसे तो मैं, माता जी और पिता जी घर में बच्चों की चहल-पहल देखने के लिए लालायित हो रहे हैं।'

"'मैं प्रसव-कष्ट से डरती हूं।'

"आपके भाई साहब बोले, 'अपनी पड़ोसिन से पूछना था कि वह कष्ट का निवारण कैसे करती है।'

"'कुछ को कष्ट नहीं होता।'

"इसपर आपके दार्शनिक भाई बोले, "किसी स्वाभाविक क्रिया में कष्ट होना तो नहीं चाहिए। यदि होता है तो अस्वाभाविक जीवन-चर्या ही उसमें कारण हो सकती है। देखो, मोहिनी, तुम इस रोहिणी से पूछ लो कि उसकी दिनचर्या क्या है। बस, वैसा ही करो। फिर कोई कारण नहीं कि तुम्हें कष्ट हो।'

"रोहिणीजी से बात हुई। तो वे कहने लगीं, 'खूब घूमो, फिरो, काम करो, बढ़िया और हल्का भोजन करो और...' वे कहते-कहती रुक गईं।

"जब मैं समझी नहीं तो बोली, 'महीने में एक बार ही पति की सेवा में जाया करो और जब बच्चा बन जाए तो फिर एक वर्ष के लिए केजुअल छुट्टी ले लो।'

"मैं मुख देखती रह गई। आखिर अपने मन का संशय पूछने लगी, यह सम्भव है क्या? और क्या इतनी रसमयी बात को प्रसव-पीड़ा सहने के लिए छोड़ दूं?'

"'करके देखो। मुझे तो यह अधिक रसमय प्रतीत होता है।'

"मेरे मुख से निकल गया, 'बहिनजी, मुझे तो यह पशुपन ही प्रतीत होता है।'

"'हां, यह पशुपन भी हो सकता है, यदि बछड़े-बछड़ियां पैदा किए जाएं तो। परन्तु मैं तो मानव उत्पन्न कर रही हूं। फिर भला पशु क्यों कहलाऊंगीं?'

"कदाचित् रोहिणी की ये सब युक्तियां मुझे प्रेरणा न देतीं, यदि मैं रोहिणी के बच्चों को भागते, खेलते, कूदते और मानवोचित व्यवहार करते न देखती। एक दिन-मैं वहां के स्थानीय डाक्टर के पास गई और साधारण-से आपरेशन से लूप निकलवा आई और यहां आते-आते तोंद फूलने लगी है।"

"तो कष्ट अनुभव कर रही हो, भाभी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी तक तो विशेष नहीं। कभी खाया-पिया निकल जाता है, परन्तु अन्य दिन और समय तो एक प्रकार का मधुर, सुखद और मादक अनुभव होता रहता है।

"मैं नित्य प्रातः सैर करने जाती हूं। आपके भाई साहब भी साथ होते हैं। घर पर हाथ से भी काम करती रहती हूं। हां, पढ़ने-लिखने में कुछ अधिक रुचि नहीं। परन्तु वह अरुचि दुःखद नहीं। आराम-कुर्सी पर बैठी कल्पना-क्षेत्र में भ्रमण करने में सुख अनुभव होता है।

"और सबसे अधिक रसमयता जीवन में तब अनुभव होती है जब तुम्हारी मामी नित्य प्रातःकाल, जब मैं स्नान से निवृत्त होती हूं तो, मेरे पास आ बैठती है और पीठ पर हाथ फेर प्यार दे जाती हैं। उनका यह कहना रोमांच उत्पन्न करता है, 'बहू, जीवनान्त तक सुख और सुविधा भोग करती रहो।'

"अब मैं विचार करती हूं कि नौ मास तक इस प्यार मिलने पर यदि एक-आध घण्टा प्रसव-कष्ट हो भी जाएगा तो सहन करना ही चाहिए।"

"भाभी, तुम अब कम्युनिस्ट नहीं रहीं।"

"वह मूर्खता विस्मरण होती जाती है। कभी उस अतीत काल की बातें स्मरण आती हैं तो अपने पर विस्मय होता है। उस काल के सिद्धांतों में रही-सही प्रतिष्ठा आपके भाई साहब ने विलीन कर दी है। उन्होंने एक ही युक्ति में वह रेत का महल गिरा दिया है। वे कहते थे, क्या रूस का चीफ सेक्रेटरी और इस्पात के कारखाने की भट्ठी में कोयला डालने वाला एक ही स्तर पर रखे जा सकते हैं?

"'जब नहीं तो यह साम्यवाद निरर्थक है। समान अवसर की बात समझ में आती है, परन्तु इस अवसर मिलने पर समान परिणाम की बात असम्भव नहीं है क्या?'

"अब मैं समझती हूं कि समान अवसर भी अनायास ही प्राप्त नहीं हो सकता। न ही यह मिलने पर सबको समान फल देता है।

"हां, यदि साम्यवाद का अर्थ केवल सबके समान अवसर की बात होती तब तो कुछ झगड़े की बात नहीं थी, परन्तु ये तो समानता का शिकंजा बन रहा है।"

"देखो, भाभी, एक बात तुम्हें बताती हूं। देवेन्द्र जी से एक दिन बात होने लगी तो वे कहने लगे, धनी लोग अपनी उदारता का बखान तो करते हैं, परन्तु जब धन आ जाता है तो उसे कोई ,छोड़ नहीं सकता।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे बताने लगे, 'एक बार बम्बई का एक मिल-मालिक गांधी जी के पास आया और बोला कि गांधीजी के कहने पर वह अपनी पचास-साठ लाख की सम्पत्ति देने को तैयार है। गांधीजी ने उसे टाल दिया और कहा कि वह लोकसेवा किया करें।

"पीछे महात्मा जी के सेक्रेटरी ने पूछा कि उन्होंने इस अपने भक्त को त्याग कार्य से रोक क्यों दिया है? तो महात्मा जी ने कहा था, 'धन का वास्तविक त्याग असम्भव है।'

"मैंने जब यह बात सुनी तो कह दिया, 'इसमें उस धनी सेठ का दोष नहीं। इसमें दोष तो महात्मा जी का प्रतीत होता है। कदाचित् वे अपने मन के लोभ को देखकर ही उस धनी के मन का अनुमान लगा सके थे।'

"परन्तु घर आकर मैंने पूर्ण धन का दानपत्र लिखकर चाचाजी को दे दिया और उनसे कहा है कि वे इसका सदुपयोग कर दें।

"उनके कहने पर ही मैंने अपने लिए पांच सौ रुपये प्रति मास रख लिया है। अन्यथा मैं देवेन्द्र जी के घर केवल पहने हुए कपड़ों के साथ जाना चाहती थी।"

मोहिनी रजनी का मुख देखती रह गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा परिच्छेद

रजनी और देवेन्द्रकुमार में अभी मेल-मुलाकात बढ़ ही रही थी कि प्रमोद का पत्र दिल्ली पहुंच गया था। रजनी प्रोफेसर देवेन्द्रकुमार की माताजी से मिलने जाने लगी थी और अपनी प्रखर बुद्धि का प्रभाव उसपर जमा रही थी एक दिन वह देवेन्द्र के क्वार्टर से मध्याह्न का भोजन कर लौटी तो उसे कोठी में आते भागीरथ ने कार्यालय के बाहर आ कह दिया, "रजनी, एक समाचार है।"

"क्या, चाचा जी?"

"प्रमोद का बम्बई से खत आया है।"

"तो चाचा जी से दिया रुपया चुक गया है?" रजनी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"यह तो उसने नहीं लिखा। हां, यह लिखा है कि वह बम्बई में व्यवसाय करेगा और उसके लिए अभी एक लाख रुपया तुरन्त भेज दिया जाए।"

"तो आप क्या करने का विचार कर रहे हैं?"

"मैंने तुम्हारी चाची से सम्मति की है और यह निश्चय किया है कि उसे एक तार तुरन्त भेज दिया जाए। लिखा जाए कि उसका पत्र मिला और रुपये का प्रबन्ध कर रहा हूं।"

"ठीक है, चाचा जी। अभी एक लाख नहीं तो भी थोड़ा-थोड़ा कर कुछ तो भेजिएगा ही। साथ ही उस पर दृष्टि रखनी चाहिए।"

"मुझे भय है कि कहीं नवलकिशोर उसे न मिल गया हो। इस कारण मैं यहां से अपना एक विश्वस्त आदमी रुपया देकर भेज रहा हूं। वह उसके साथ कुछ दिन रहकर उसके व्यवसाय की रिपोर्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भेजा करेगा।"

रजनी को यह प्रबन्ध सन्तोषजनक प्रतीत हुआ था। भागीरथ ने एक बात कही, "यदि वह कुछ और पढ़ लेता तो ठीक रहता। आज संसार में विश्वविद्यालयों के प्रमाण-पत्रों की महिमा है।"

"चाचा जी, कालेज छोड़ गया है तो कुछ हानि नहीं हुई। लाभ की बातें तो उस स्थिति को देखने से पता चलेगा जहां वह गया है, परन्तु जहां रहता हुआ उसने वर्तमान मूर्खता सीखी है उस स्थान को छोड़ देने से लाभ की आशा तो की ही जा सकती है।"

भागीरथ इस सम्मति पर गम्भीर हो गया और फिर एक दीर्घ निश्वास छोड़कर वह अपने कार्यालय में चला गया जहां से वह रजनी को समाचार देने आया था।

एक सिख ओवरसीयर गुलाबसिंह को, जो भागीरथ को ठेकेदारी के कामों में सहायता देता था, बम्बई भेज दिया गया। वहां बैंक में एक लाख रुपया जमा करा उसे खाते का परिचालक नियुक्त कर दिया गया। उसे यह समझा दिया गया कि वह प्रमोद पर खुफिया पुलिस का काम करने के लिए भेजा गया है।

प्रमोद को गुलाबसिंह के हाथ एक पत्र भेजा गया। उसमें भागीरथ ने लिखा, "यद्यपि मैं और तुम्हारी माताजी यह चाहते थे कि तुम कम से कम बी० ए० तक की शिक्षा प्राप्त कर लेते, परन्तु जब तुम्हारी रुचि नहीं तो हम तुमको पढ़ने के लिए विवश नहीं करेंगे। जहां तक सुन्दरी का प्रश्न है वह कहती है कि उसने तुमको बता दिया है कि उसका विवाह कहीं अन्यत्र होने वाला है। अतः यदि तुम अब भी विवाह करने की इच्छा रखते हो तो लिखो। उस दिशा में यत्न किया जा सकता है।

"मैंने गुलाबसिंह को अपना स्थानापन्न बनाकर तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हारी आवश्यकताओं के अनुसार तुमको रुपया देता रहेगा। मैंने उसके पास प्रारंभिक व्यय के लिए पर्याप्त धन दे दिया है।

"बम्बई एक भयानक नगर है। वहां न केवल अपने देश की गन्दगी एकत्रित हो रही है, वरंच विदेशों के भी बहुत-से अवांछित व्यक्ति आते रहते है। इस कारण बहुत सावधानी की आवश्यकता है। गुलाबसिंह बम्बई में दस वर्ष तक रहा है इस कारण मैं इसे एक अनुभवी व्यक्ति समझकर तुम्हारे पास भेज रहा हूं।

"पत्र लिखते रहा करो। देखो, तुम्हारी माताजी तुम्हारे विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में क्या लिखती हैं।"

नीचे लक्ष्मी ने अपने हाथ से यह लिखा था, "बेटा, जहां रहो, सुखी रहो और दीर्घ जीवन तक सुख का भोग करो।"

गुलाबसिंह ने एपोलो होटल में ठहरना उचित समझा। उसने यत्न कर प्रमोद के बगल वाला कमरा ले लिया। उसके कमरे का नम्बर १४ था। अपना बिस्तर रख, स्नानादि से छुट्टी पा वह प्रमोद के कमरे के बाहर जा घंटी बजाने लगा।

प्रमोद ने द्वार खोला तो दिल्ली के एक परिचित पिता जी के कर्मचारी को देख समझ गया कि रुपया आ गया है।

"सुनाइए, सरदार जी, कहां घूम रहे हैं?"

"छोटे बाबू, तुमसे ही काम था। इस कारण तुम्हारे साथ के ही कमरे में ठहर गया हूं।"

गुलाबसिंह ने लाला जी का पत्न दे दिया। प्रमोद ने पत्न पढ़े बिना जेब में रख लिया। दोनों कमरे में गए तो उसने पूछ लिया, "अल्पाहार ले लिया अथवा नहीं?"

"नहीं, अभी नहीं। यहां ही मंगवा लें तो ठीक रहेगा। मुझे आपकी माता जी की यह आज्ञा है कि आपका रहने का, खाने-पीने का तथा अन्य आवश्यक व्यय मैं ही दूं।"

"माताजी ने अथवा पिताजी ने?"

"पिता जी ने तो व्यापार सम्बन्धी सहायता के लिए भेजा है और माता जी ने यह कहा है कि जैसा आप घर में रहते थे और घर पर आपके सुख-सुविधा का प्रबन्ध था, वैसा ही यहां भी होना चाहिए।"

"ओह, और बहिन रजनी ने भी कुछ कहला भेजा है?"

"रजनी बहिन ने तो नहीं; सरस्वती बहिन और विनोद बाबू ने सन्देश भेजे हैं।"

"क्या सन्देश भेजे हैं?"

"विनोद बाबू ने तो कहा है कि दादा जब तक मुझे पत्न नहीं लिखेंगे, मैं भी नहीं लिखूंगा। वैसे तुम्हारे विषय में मन में विचार तो करता ही रहता है और करता रहेगा।"

प्रमोद हंस पड़ा। उसने पूछ लिया, "और सरस्वती बहिन ने क्या कहा है?"

"उसने एक छोटा-सा पत्न दिया है। वह बन्द है। मेरे कमरे में पड़ा है। अभी ला देता हूं।"

"पीछे देख लूंगा।" गुलाबसिंह जाता-जाता रुक गया। "आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह बताइए कि कितना रुपया लाए हैं?"

"आपके पिता जी ने तो बैंक के नाम एक अधिकार-पत्र भेजा है। उसमें रुपया नहीं लिखा। केवल यह लिखा है कि उनके नाम के खाते का प्रचालक मैं हूं।"

"देखो, सरदार जी, मैं यहां पुस्तकें बेचने और पीछे छापने का व्यवसाय करना चाहता हूं। इसके लिए एक दुकान का प्रबन्ध हुआ है। उस दुकान के मालिक बीस सहस्र पगड़ी मांग रहे हैं। एक-दो दिन में बात निश्चित होगी तो इतना रुपया मुझे देना होगा।"

"अच्छी बात है, यदि आप बुरा न मानें तो दुकान को मैं देखकर बता सकता हूं कि पगड़ी की रकम ठीक है अथवा नहीं?"

"अल्पाहार के उपरान्त चलेंगे और दुकान देख लेंगे।"

अभी अल्पाहार नहीं आया था कि एक लड़की ने द्वार धीरे से खोला और भीतर झांक कर पूछा, "मैं आ सकती हूं क्या?"

"यस, कम इन।" प्रमोद ने कह दिया।

लड़की भोतर आई तो प्रमोद ने उसका परिचय करा दिया। उसने कहा, "यह मिस इरीन है। अभी मैंने इसे अपने पत्र-व्यवहार के लिए टाइपिस्ट के रूप में रख लिया है।"

"तो आपने काम आरम्भ कर दिया है?"

"हां देश-विदेश के प्रकाशकों को पत्र लिखने आरम्भ कर दिए हैं। सूचोपत्र और नये प्रकाशनों की सूचना मंगवानी अत्यावश्यक है। इसमें दो-तीन महीने सहज ही लग जाएंगे।"

प्रमोद ने कहा, "मिस इरीन, घंटी बजाकर बैरा को कहो कि तीन आदमियों के लिए ब्रेकफास्ट आ जाए"

इसपर इरीन ने ध्यान से गुलाबसिंह की ओर देखा और फिर मुस्कराती हुई कमरे से निकल गई।

गुलाबसिंह ने प्रमोद की आंखों में देखते हुए कहा, "बहुत बढ़िया लड़की ढूंढी है छोटे बाबू।"

प्रमोद इसका अर्थ समझता था। उसने कह दिया, "मैंने होटल के मैनेजर से एक टाइपिस्ट मांगा था। उसने इसको बुला दिया है।

"तो 'टाइपराइटर' खरीद लिया है?"

"नहीं, एक पचास रुपये महीने का किराये पर मंगवा लिया है। यह प्रबन्ध भी इस लड़की ने स्वयं कर लिया है।"

"और इसे किस वेतन पर रखा है?"

"दस रुपये नित्य पर।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी समय खाना आ गया और तीनों खाना खाने लगे। खाने के उपरान्त गुलाबसिंह ने पूछा, "कब चलेंग दुकान देखने के लिए?"

"अभी एक घण्टे तक।"

गुलाबसिंह होटल के मैनेजर के पास गया और बोला, "कमरा नम्बर पन्द्रह और चौदह दोनों का इकट्ठा बिल बनेगा।"

"कब से?" मैनेजर ने पूछा।

"जब से इस कमरे का बिल ड्यू है।"

"इस बाबू को आए सात दिन हो चुके हैं और हमने इसे बिल अभी नहीं दिया।"

"तो जब भी आप देंगे वह मुझे मिलना चाहिए। मैं दोनों कमरे के बिल की रकम दूंगा।"

"सब व्यय या किराया और खाने का?"

"इसके अतिरिक्त और क्या है?"

"व्हिस्की की एक बोतल आ चुकी है।"

गुलाबसिंह विचार करने लगा। और फिर कुछ विचारकर बोला, "पिछली बोतल का दाम मैं दूंगा। आगे के लिए मुझसे पूछे बिना यह वस्तु नहीं आनी चाहिए।"

"और इस लड़की का बिल?"

"वह क्या है?"

"दस रुपये नित्य तो टाइप के काम के हैं और यदि वह किसी रात यहां रहे तो पचास रुपये अतिरिक्त।"

"तो वह कभी रात को रही है?"

"वह चार दिन से रखी हुई है और उनमें से दो रात रह चुकी है।"

"इसका दाम भी इस लड़के ने अभी दिया है अथवा नहीं?"

"शराब की बोतल और लड़की की भेंट तो हम तुरन्त ले लेते हैं। हां, होटल का किराया और खाने का व्यय प्रति सप्ताह लेते हैं।"

"सब व्यय मैं दूंगा, परन्तु भविष्य में सब कुछ मुझको बताकर प्रबन्ध होना चाहिए।"

यह प्रबन्ध कर गुलाबसिंह ऊपर चढ़ने लगा तो प्रमोद नीचे आता मिला। गुलाबसिंह लिफ्ट की प्रतीक्षा में खड़ा था। लिफ्ट आई तो उसमें से प्रमोद निकला। प्रमोद ने पूछा, "सरदार साहब, कहीं बाहर से आ रहे हैं?"

"नहीं, मैं मैनेजर को कहने आया था कि दोनों कमरों का बिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं दूंगा। उसे आपको कुछ देने की आवश्यकता नहीं।"

"मैं समझता हूं कि मेरे कमरे का बिल मुझे ही आना चाहिए। आप मुझको रुपये दे दीजिएगा।"

"अब तो मैं कह आया हूं। इसपर ऊपर चलकर विचार करेंगे।"

2

गुलाबसिंह तो लिफ्ट से ऊपर चला गया और प्रमोद मैनेजर के सामने काउण्टर पर जा खड़ा हुआ। वह पूछने लगा, "यह आदमी क्या कह रहा था?"

मैनेजर इससे घबराया और पूछने लगा, 'यह आपका क्या लगता है?"

"कुछ भी नहीं।"

"पर यह तो कहता था कि आपका और अपना दोनों का व्यय यह ही देगा।"

"यह कोई ठग प्रतीत होता है। आप इसके चक्कर में न आएं। इसका बिल इसको और मेरा बिल मुझे देना चाहिए इसको इरीन के विषय में कुछ भी मत बताएं।"

मैनेजर टुकर-टुकर मुख देखता रह गया। प्रमोद ने उसे घबराया हुआ देख पूछ लिया, "तो आपने कुछ बता दिया है?"

"बैरा ने कहा था कि वह और आप इरीन के साथ अल्पाहार ले रहे थे और इरीन ने कहा था कि वह आपके 'गार्जियन' प्रतीत होते हैं। मैंने सब बात बता दी है।"

"यह आपने ठीक नहीं किया। खैर, अब आगे से सावधान रहना चाहिए। पीछे की मैं निबट लूंगा।"

प्रमोद अभी गुलाबसिंह से झगड़ा नहीं करना चाहता था। उसके पास जो आठ सौ रुपया था, उसमें से चार सौ के लगभग व्यय हो चुका था और यह लड़की उससे रुपये द्रुति गति से व्यय करा रही थी। अतः वह दिल्ली से आए दूत से पहले सब रुपये निकलवा लेना चाहता था और पीछे ही इससे स्वतंत्र रहने की योजना बना सकता था।

मैनेजर को कुछ घोटाला दिखाई देने लगा। उसने कमरा नम्बर पन्द्रह का बिल उसी समय प्रमोद को दे दिया और कहा, "आपको आए एक सप्ताह हो चुका है। सात दिन का बिल आप दे दें और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भविष्य के विषय में जैसा आप कहेंगे वैसा ही करेंगे। बिल तीन सौ दस रुपये का था। तीस रुपये नित्य के हिसाब से कमरे का किराया था, दस रुपये नित्य के हिसाब से उसके भोजन का व्यय था। तीन दिन से लड़की आ रही थी और वह भी खाना यहां ही खाती थी और दस रुपये नित्य का उसका व्यय था।

प्रमोद ने बिल ले जेब में डाल लिया और टेलीफोन करने लगा। उसने टलीफोन नवल को किया। उसने बताया कि दिल्ली से एक आदमी आया है। वह दुकान देखना चाहता है तो उसे दिखाने ले जा रहा हूं। अभी आधे घण्टे में हम यहां से चल देंगे।

प्रमोद जब से बम्बई पहुंचा था, उसका नवल किशोर से सम्पर्क बना हुआ था। नवल ने ही उसे होटल में ठहराया था और इरीन, टाइप करने वाली लड़की, से उसका सम्बन्ध बनाया था। नवल से प्रमोद की कुछ शर्तें भी निश्चित हो चुकी थीं जिनके अनुसार वह प्रमोद की व्यवसाय में सहायता कर रहा था।

नवल ने कहा, "ठीक है। मैं उस समय वहां नहीं हूंगा। मैं अभी तुम्हारी तस्वीर में नहीं आना चाहता। जब काम जम जाएगा तब मेरा वहां होना प्रकट किया जा सकता है।"

"पर भापा, वह तो मेरे साथ सदा के लिए रहने आया है। कम से कम वह तब तक रहेगा जब तक काम स्वावलम्बी नहीं हो जाता।"

"यह तो बहुत झगड़ा होगा। मेरा नाम बीच में आते ही तुम्हारा व्यय बन्द हो जाएगा और काम के लिए भी धन नहीं मिलेगा।"

"नहीं, भापा, तुम वहां दुकान पर आ जाना और मैं तुम्हारा उससे परिचय करा दूंगा। मैं समझता हूं कि सब बात प्रत्यक्ष हो जाएगी तो आपत्ति समय पाकर विलीन हो जाएगी और यदि तुम अब प्रत्यक्ष में नहीं आए तो कभी भी नहीं आ सकोगे। मेरी सम्मति है कि वहां मिल लेना। और भी कुछ बातें हैं जो मैं फोन पर नहीं बताना चाहता। वह हम किसी अन्य समये करेंगे।"

नवल ने उत्तर नहीं दिया। इसपर प्रमोद ने कह दिया, पिता-जी के स्वभाव को मैं जानता हूं और मेरी सम्मति यह है कि आपके मेरी दुकान पर काम प्रकट करने की बात हो जानी चाहिए। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव तो उनको उद्विग्न कर देगा, परन्तु पीछे वे शान्त हो जाएंगे और फिर काम सुविधापूर्वक चलने लगेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3

दिल्ली में गुलाबसिंह का पत्न आया। उसने लिखा, "प्रमोद यहां प्रसन्न और स्वस्थ प्रतीत होता है, परन्तु वह अवांछित लोगों के हाथ में पड़ गया है। सबसे पहले एक लड़की के दर्शन हुए। वह प्रत्यक्ष रूप में टाइप का काम करने के लिए रखी हुई है, परन्तु वास्तव में वह कभी-कभी रात उसके कमरे में भी सोती है। इसके उपरान्त उसने एक दुकान दिखाई है जो वह पुस्तकों की दुकान के लिए लेना चाहता है। दुकान की पगड़ी बीस सहस्र रुपया मांगी जा रही है। मैं समझता हूं कि वह दस हज़ार होनी चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि दस हज़ार रुपया दलाल ले रहा है और दलाल आपका भाई नवलकिशोर है। तीसरी बात, नवलकिशोर आपके लड़के की नौकरी कर रहा है। उसको प्रमोद ने नियुक्ति-पत्न दे दिया है और उसको पांच सौ रुपया प्रति मास और बिक्री पर दो प्रतिशत कमीशन पर रखा है। चौथी बात यह है कि छोट बाबू को नवल की पत्नी अपने घर में रखना चाहती है।

"अभी तक मैंने उसके किसी भी काम के विषय में सम्मति नहीं दी। मैंने कल तक उसे काम के विषय में बताने की बात कही है परन्तु मैं अपनी सम्मति टालूंगा और आपके उत्तर आने तक कुछ नहीं कहूंगा।

"मेरी सम्मति यह है कि छोटे बाबू के कामों में बाधा डालनी ठीक नहीं होगी। उसके कामों का विरोध करने के स्थान पर उनमें संशोधन का प्रयत्न किया जाए। उदाहरण के रूप में उसे एक अन्य दुकान दिखाने का यत्न कर रहा हूं। वह पहली दुकान अच्छे क्षेत्र में और बड़ी भी है। उसकी पगड़ी कुछ अधिक होगी, परन्तु वहां काम सुविधा से चलेगा। इसी प्रकार लड़की के विषय में मैं सम्मति देना चाहता हूं कि वह उससे विवाह कर ले। ऐसे ही नवल के विषय में मेरी सम्मति यह होगी कि दुकान का कोषाध्यक्ष और लेखाकार मैं हूंगा। कदाचित् वह मेरी सब बातें नहीं मानेगा, तब इनमें समझौता किया जा सकता है। आप अपनी सम्मति लिखें कि मैं अपनी योजना चलाऊं अथवा नहीं? साथ ही समझौता किस सीमा तक करूं?"

भागीरथ नवल के नौकर रखने की बात सुन अति चिन्तित था। उसने लक्ष्मी से सम्मति की। वह ही पिता-पुत्र में मुकदमे बाज़ी रोकने का यत्न कर रही थी। लक्ष्मी ने सब बात सुन कह दिया, "आप गुलाबसिंह को टेलीग्राम कर दीजिए कि वह जितना अच्छे से अच्छा समझौता करा सकता है, उसके लिए यत्न करे और आप पत्न पीछे भेज रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागीरथ ने पीछे लिख दिया, "अपनी योजना पर काम करो, पत्र आ रहा है।"

गुलाबसिंह पहले ही बम्बई में घूम-फिरकर एक दुकान फोर्ट एरिया में देख आया था। परन्तु उसकी पगड़ी पचास हज़ार थी। सायंकाल गुलाबसिंह आया तो प्रमोद ने उसके कमरे में आकर कहा, "सरदार साहब, मैनेजर ने यह बिल दिया है।" उसने सप्ताह का बिल दे दिया।

गुलाबसिंह ने कहा, "यह चार दिन का बिल खाने का अस्सी रुपये है?"

"हां, वह लड़की भोजन साथ ही लेती है।"

"तो वह बीस रुपये नित्य पाती है दस नहीं।"

"यह अच्छा नहीं मालूम होता कि खाने के समय वह सामने हो तो उसे न खिलाया जाए।"

"यह ठीक है। ऐसा तो होना ही चाहिए, परन्तु प्रश्न तो यह है कि वह ऐसे समय में सामने हो ही क्यों? विशेष रूप में रात के खाने के समय वह सामने क्यों आ जाती है? उस समय उसे अपने घर में होना चाहिए।"

गुलाबसिंह ने कुछ विचार कर कह दिया, "बाबू, आपने शराब किसलिए मंगवाई है?"

"आपके लिए।"

"पर मैं तो पीता नहीं।"

"प्रायः सिख लोग पिया करते हैं।"

"मैं उन 'प्रायः' में नहीं हूं। यहां व्हिस्की साठ रुपये की बोतल मिलती है। एक बोतल आपने पिछले रविवार मंगवाई थी। आज बुधवार है और एक आज मंगवा रहे हैं। इसका अर्थ है कि आप बीस रुपये नित्य की शराब पीने लगे हैं।"

"पर मैं अकेला नहीं पीता।"

"तो और पीने वाला कौन आता है?"

"यदि दिल्ली लिखें नहीं तो बता सकता हूं।"

"मैं दिल्ली क्यों बताऊंगा। परन्तु हिसाब तो लिखकर देना ही होगा।"

"क्या आवश्यकता है? आप मुझको रुपये एक ही बार दे दीजिए और उतने की रसीद लिखवा लें।"

"यह ठीक नहीं, बाबू। देखो, व्यापार के लिए रुपया मैं बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बाधा के लगाऊंगा। पर उसकी बात हम दुकान का निर्णय करने के उपरान्त करेंगे। यह तो घर का व्यय है। यह मुझे माता जी को लिखना होगा।"

"बात यह है कि मैं इरीन से प्रेम करने लगा हूं। वह पिछली दो रात से यहां आती है और शराब उसी के लिए मंगवाता हूं। वह ऐंग्लो-इण्डियन लड़की है और शराब पीने की आदत रखती है।"

"बाबू उससे विवाह कर लो। विवाहित पत्नी का दाम नहीं दिया जाता। उसे तो सब कुछ दे दिया जाता है।"

"यही तो मैं देना नहीं चाहता, फिर मेरे पास क्या रह जाएगा?"

"जो कुछ भी उसका होगा, वह आपका ही तो होगा।"

"वह यह मानेगी नहीं। मुझपर तो अधिकार कर लेगी, परन्तु अपने पर हाथ नहीं रखने देगी।"

"तो फिर यह विवाह नहीं होगा। यह तो व्यापार होगा।"

"इसी कारण तो उसे उतना ही देता हूं जितने दाम की उसे समझता हूं।"

"प्रमोद बाबू, यह तुमको ब्लाटिंग पेपर की भांति चूस जाएगी। देखो, मेरी सम्मति मानो। इससे विवाह कर लो। मैं तुम्हारे लिए एक कोठी देख रहा हूं। एक मोटर गाड़ी भी लेना चाहता हूं और एक फोर्ट एरिया में दुकान भी देख आया हूं। नवल स्वयं निर्धन हो गया है। इससे उसके विचार भी संकुचित हो गए हैं।

"तुम एक धनी बाप के बेटे हो। तुमको अपनी दृष्टि विशाल रखनी चाहिए। वह छोटी दुकान, यह तंग कमरा और भाड़े पर रखी हुई औरत ठीक नहीं है।"

प्रमोद के मन में भोग की लालसा उग्र होने लगी थी। वह पूछने लगा, "क्या किराये में कोठी मिल सकेगी?"

"उतनी बड़ी तो नहीं जितनी दिल्ली में है, परन्तु इस कमरे से तो बहुत अच्छा स्थान हो सकता है और लगभग इतने व्यय पर ही।"

"तो सरदार साहब, प्रबन्ध कर दीजिए।"

"मैं आज दिन-भर घूमता रहा हूं और दो-चार दिन में सब ठीक कर दूंगा।"

"और नवल के विषय में आप क्या समझते हैं?"

"इसको इस काम का अनुभव है। इसे नौकर रख लेना एक बुद्धिमत्ता का काम है, परन्तु इसके हाथ में नकद दिया तो सब गड़बड़ हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगा।"

"आखिर हिसाब-किताब रखने के लिए किसीको तो रखूंगा। इसने एक आदमी बताया है। नाम है सुब्रह्मण्यम्। वह कोषाध्यक्ष और लेखाकार रहगा, परन्तु जब काम चलने लगेगा तब।"

"तुम्हारी प्रेमिका का कोई सम्बन्धी भी है?"

"नहीं तो।"

"अनजाने आदमी को नहीं रखना चाहिए। वह चोर भी हो सकता है।"

"पहले परीक्षा कर लेंगे।"

"जब परीक्षा हो जाएगी तब नौकर रखने की बात विचार कर लेना। परन्तु अभी तो मैं यहां हूं। जब मैं जाने लगूंगा तो किसी अन्य आदमी को रखने पर विचार कर लिया जाएगा।"

प्रमोद अभी तो होटल का बिल और शराब की बोतल का दाम प्राप्त करने की चिन्ता कर रहा था।

गुलाबसिंह ने बिल अपनी जेब में रख लिया और कहा, "मैं अभी जाकर दे आता हूं। देखो, में भोजन नीचे खाने के कमरे में करूंगा। तुम इरीन से आज निश्चय कर लो कि वह तुमसे विवाह करेगी तो ठीक है। नहीं तो मैं तुम्हारी, माताजी को तुम्हारे विवाह के लिए लिख दूंगा। गन्दी नाली में स्नान करने से गन्दगी शरीर को चिपक जाती है।"

गुलाबसिंह आज्ञा देता प्रतीत होता था परन्तु प्रमोद की बात का खण्डन नहीं करता था। इससे उत्साहित हो प्रमोद ने इरीन से बात करने का निश्चय कर लिया। वह अपने कमरे में इरीन की प्रतीक्षा करता रहा और गुलाबसिंह होटल के खाने के कमरे में खाने चला गया।

वह भोजन कर होटल का बिल दे आया।

लड़की के गुलाबसिंह की ओर बार-बार घूरकर देखने से वह उस लड़की पर सन्देह करने लगा था कि वह अपने किसी प्रयोजन के सिद्ध होने में बाधा अनुभव करने लगी है। गुलाबसिंह प्रमोद के लड़की से सम्बन्धों पर आपत्ति किए बिना उसके मन में लड़की के प्रति घृणा अथवा अरुचि उत्पन्न करने का यत्न करने लगा था।

उस रात वह टोह लेता रहा था कि लड़की किस समय आती है और किस समय जाती है। रात के बारह बज तक तो प्रमोद का द्वार खुला रहा था। वह इसका अभिप्राय यह समझा था कि इरीन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई। अगले दिन प्रातः चार बजे उठ अपने कमरे का लैम्प बुझा द्वार थोड़ा-सा खोल वह वहां बैठा देखता रहा कि प्रमोद के कमरे से कोई उठकर जाता है अथवा नहीं। प्रातः सात बजे तक न तो प्रमोद का द्वार खुला और न ही कोई उसमें से निकलता दिखाई दिया। अतः अब वह उठा और शौचादि से निवृत्त हो, वस्त्र पहन प्रमोद के कमरे का द्वार खटखटाने लगा।

प्रमोद ने द्वार खोला तो वह चकित रह गया। उसने कमरे में सेण्टर टेबल पर व्हिस्की की बोतल आधी खाली और समीप दो गिलास, सोडे की बोतलें रखी देखीं।

वह समझ गया कि उसे मूर्ख बना वह आई है और अपना पुरस्कार ले चली गई है। गुलाबसिंह ने पूछा, "तो उससे विवाह के विषय में पूछा है ?"

"किससे ?"

"इरीन से।"

"वह तो आई ही नहीं।"

"और ये गिलास, सोडे की बोतलें तथा व्हिस्की की आधी बोतल ?"

प्रमोद हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "सरदार जी, इस नगर में एक से अधिक इरीन रहती हैं।"

"तो यह बात है ?"

"खैर, छोड़ो इस बात को। मुख्य बात यह है कि इरीन नहीं आई और उससे विवाह नहीं हो सकता। स्थान-स्थान पर जाने वाली से विवाह नहीं हो सकता।"

"और इस नवीना को रुपये अपने पास से दिए हैं ?"

"हां, मेरे पास माता जी के दिए रुपयों में से अभी कुछ हैं।"

गुलाबसिंह थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला, "मैं अभी कोई मकान देखने जा रहा हूं। यह होटल बहुत महंगा पड़ रहा है।"

"परन्तु जो सुविधा यहां प्राप्त है वह वहां हो सकेगी क्या ?"

"इस प्रकार तो कठिन है। हां, एक विवाहित पत्नी मिल जाएगी।"

"मैं उसमें रुचि नहीं रखता।"

"परन्तु जो काम वहां बीस रुपये में हो सकता है यहां साठ-सत्तर में भी नहीं हो तो रहा। यह स्थान बहुत छोटा है। व्यवसाय करोगे तो होटल में रहकर नहीं हो सकेगा। उसके लिए बीसियों लोगों से मिलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। कई प्राइवेट कागज़-पत्र रखने होंगे। यहां तो प्राइवेसी है ही नहीं।"

प्रमोद मन ही मन हंस रहा था। वह विचार कर रहा था कि यह सरलचित्त सिख सरदार संसार में अभी बच्चा है। एकाएक उसने कहा, "पर मुझे कुछ जेबखर्च के लिए तो मिल जाने चाहिए।"

"जब तुम कोठी पर चलकर रहोगे तो उस बात पर भी विचार कर लेंगे।"

"पर सरदार साहब, आपको विचार करने के लिए किसने नियुक्त किया है?"

"आपके पिताजी ने, जो आपके वयस्क होने तक आपके संरक्षक हैं।"

"पर मैं गुण और कर्म से तो वयस्क हूं।"

"इसका निर्णय मैं नहीं कर सकता। यह आप अपने पिताजी को समझा लीजिए कि आप वयस्क हो गए हैं अथवा नहीं।"

"वे बुर्जुआ क्या समझेंगे! उनको तो समझाना पड़ेगा।"

"यह क्या गाली दी है पिताजी को?"

"यह गाली नहीं है। यह वस्तुस्थिति का वर्णन है। वे सरमायेदार हैं। निर्धनों का शोषण करते हैं।"

गुलाबसिंह बुर्जुआ का अर्थ तो समझता था, परन्तु प्रमोद के मुख से उसका अर्थ कहलवाना चाहता था जो उसने कहा था। अब यह सुन गुलाबसिंह ने कहा, "पर छोटे बाबू, उसी मज़दूरों के शोषण से प्राप्त सम्पत्ति से आप इरीन जैसियों की परवरिश कर रहे हैं। पचास रुपये नित्य, खाना-शराब पृथक्। इसका अर्थ है कि सौ रुपया नित्य। तीन हज़ार रुपया महीना। गवर्नमैण्ट आफ इण्डिया के सेक्रेटरी का वेतन। यह तो किसी प्रोलिटेरियट की परवरिश नहीं हो सकती।"

प्रमोद वर्तमान युग के पढ़े-लिखों की भांति समाधोषों से मूर्ख बना हुआ नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा है। अभी भी उसके मुख से उन पढ़े-लिखों की स्वाभाविक वाणी निकल गई, "सरदार साहब, आप कुछ नहीं जानते मैं ऊंच-नीच को समतल कर रहा हू।"

"अर्थात् सागर को भरने का यत्न कर रहे हैं। सागर तो भरेगा नहीं। हां, पहाड़ों के से सुन्दर स्थान नहीं रहेंगे। सागर तो गन्दी दलदल बन जाएंगे और जो वर्ष-भर की मेहनत-मज़दूरी से थके लोग मनोरंजन के लिए पहाड़ों पर जाते हैं, वे मनोरंजन से वंचित हो जाएंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद यह व्यंग्य नहीं समझ सका था। वह तो अन्तःचिन्तन की शक्ति नहीं रखता था। वह सरदार साहब की बात को समझने का यत्न ही कर रहा था कि इरीन द्वार पर आ खड़ी हुई। भीतर आने की स्वीकृति ले वह आ गई और पुनः सरदारजी की ओर घूर-घूरकर देखने लगी। गुलाबसिंह ने कहा, "यह देवी भी आपसे कुछ प्राइवेट में बात करना चाहती हैं। इस कारण मैं अब अपने कमरे में चलता हूं। यह कमरा भी साफ नहीं हुआ। आप बैरे से साफ करवाइए और मैं आप दोनों के लिए अल्पाहार अपने कमरे में लगवाता हूं।"

"पर मैंने तो अभी स्नान नहीं किया।" प्रमोद ने कहा।

"तो अल्पाहार एक घण्टे तक लाने के लिए कह देता हूं। इस कमरे में शराब की गंध आ रही है। इस कारण साथ वाला कमरा ही ठीक रहेगा।"

बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए गुलाबसिंह अपने कमरे में चला गया। वास्तव में वह कमरे के बाहर खड़ा हो, उनकी बात सुनने का यत्न कर रहा था।

इरीन ने बैठते हुए पूछ लिया, "तो यह मेज़ अभी साफ नहीं करवाई?"

"मेरी नींद नहीं खुली थी। बैरा बेड-टी लाया होगा। मुझे पता नहीं।"

"तब तो इसे पता चल गया होगा कि मैं यहां आई हूं।"

"मैंने कह दिया कि आपकी सखी-सहेली और भी इस नगर में रहती हैं।"

"पर मैंने सरदार साहब के प्रस्ताव पर पुन विचार किया है।"

"किस प्रस्ताव पर?"

"यही कि मैं आपसे विवाह कर लूं।"

"तो क्या विचार हुआ है।"

"यही कि विवाह ठीक है। पर एक बात ये सरदार कहते थे। वह यह कि विवाह हो जाने के उपरान्त आपका सब कुछ मेरा हो जाएगा।"

"आजकल के काल में यह प्रथा नहीं है। स्त्री और पुरुष अपनी-अपनी पृथक् सम्पत्ति रखते हैं।"

"हां, सुना तो मैंने भी है। परन्तु मैं कभी इस प्रथा पर विचार करता हूं तो इसको इस कारण पसन्द करता हूं कि कल रात का आधा व्यय स्त्री को भी करना चाहिए। मैं सब गिन रहा था। तीस रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे का किराया, बीस रुपये हम दोनों के भोजन का व्यय, तीस रुपये शराब का दाम, सोडा और बैरों का व्यय पांच रुपये, तुम्हारे यातायात का व्यय चार रुपये और पचास आपकी भेंट। सब मिलमिलाकर एक सौ चालीस रुपये बनते हैं।

"इसमें से विवाह होने के उपरान्त आधा आप दिया करेंगी और आधा मैं दूंगा।"

"यह क्यों?"

"आप अपनी आय और व्यय की मालिक और मैं अपने व्यय और आय का मालिक।"

"यही तो मैंने कहीं सुना नहीं। पुरुष कमाते हैं और औरतें खाती पीती हैं।"

"यही तो सरदार साहब कह रहे थे कि विवाह हो जाने पर स्त्री-पुरुष की पूरी सम्पत्ति की मालिक और पुरुष स्त्री की पूर्ण सम्पत्ति का मालिक।"

"यह मैं नहीं मानूंगी। आप विवाह कर लीजिए और मेरे भी कमरे का भाड़ा आप दे दीजिए।"

"तब प्रत्यक्ष रूप में आप मेरे कमरे में रहने लगेंगी।"

"पर इस कमरे में तो एक ही बेड है।"

"मैं एक बड़ी-सी कोठी ले लूंगा।"

इरीन ने सिरहिलाते हुए कहा, "वह तो बहुत महंगी पड़ेगी।"

"सरदार साहब का कहना है कि व्यय कम पड़ेगा।"

लड़की ने बात बदल दी, "आप शीघ्र बाथरूम में हो लीजिए। मुझे तो भूख लग रही है।"

4

बुद्धि ठोकर लगने से जाग्रत् होती है। जाग्रत् होने पर वह स्वप्न देखना छोड़ वास्तविकता देखने लगती है। समस्या यही रहती है कि ठोकर ठिकाने पर लगे जिससे सोई हुई बुद्धि जाग पड़े।

प्रमोद को भी ठोकर लगी। उसने खर्च की गिनती-मिनती की नहीं थी। जब से उसे अपने पिताजी का प्रथम तार मिला था कि रुपये का प्रबन्ध हो रहा है, वह बिना विचार किए व्यय कर रहा था। अतः जब गुलाबसिंह ने कहा कि वह अपनी मिस्ट्रेस पर तीन सहस्र मासिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के हिसाब से व्यय कर रहा है ज्यों केन्द्रीय सरकार के एक सेक्रेटरी का वेतन होता है तो वह विचार करने लगा था कि सत्य ही यह लड़की उसे ब्लाटिंग पेपर की भांति चूस जाएगी।

अब उस लड़की ने विवाह करने में रुचि प्रकट की तो साथ ही यह कहे दिया कि पुरुष कमाते हैं और स्त्रियां खाती-पीती हैं। वे अपनी पृथक् सम्पत्ति रखेंगी और पुरुष पृथक्। उसे ये दोनों बातें परस्पर वरोधी समझ आई थीं। वह शौच इत्यादि करते समय यही विचार कर रहा था कि समानता और असमानता में दो बातें क्यों हैं।

तदनन्तर अल्पाहार लेते समय गुलाबसिंह ने जाटों वाली यह बात कर दी, घरों में पति की सुख-सुविधा का प्रबन्ध स्त्रियां बिना दाम लिए करती हैं और पति स्त्री के सुख-विलास के लिए घर से बाहर परिश्रम करता है। वह स्त्री से दाम नहीं लेता।"

इरीन का सतर्क प्रश्न था, "इससे स्त्री घाटे में नहीं रहती क्या?"

"जो लोग गिनती-मिनती करने की योग्यता रखते हैं, उनका कहना है कि स्त्री भारी लाभ में रहती हैं।"

"ऐसी गिनती करने वाले मूर्ख नहीं हैं क्या?" इरीन का तीखा प्रश्न था।

गुलाबसिंह ने मुस्कराते हुए कहा, "कामों में अदला-बदली करके देखा जा सकता है।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"हो तो सकता है, परन्तु स्त्री वर्ग करने के लिए तैयार नहीं होता। अब प्रमोदजी की बात सुन लो। यदि इनके लिए कोई ऐसी पत्नी ढूंढ़ी जाए जो अपने पिता के घर से पूंजी लाकर परिवार के लिए कारखाना अथवा दुकान करे, प्रातः नौ बजे से सायं सात बजे तक दुकान पर अथवा कारखाने में काम करे और उस समय प्रमोदजी एक धनवान पत्नी का पति होने के कारण अपना बैग हाथ में लिए पत्नी की कमाई से अपने और घर की सजावट को बाज़ार में खरीदते फिरें, कभी बारह बजे का सिनेमा शो देखने चले जाएं और कभी चिड़ियाघर और अजायबघर देखते रहें और कुछ काम न हो तो जल-जन्तुओं का संग्रहालय देखने जा पहुंचें। जब पत्नी घर पर आए तो मोटरगाड़ी का टायर पंचर हो जाने से पति घर समय पर पहुंच न सकें और मोटर गाड़ी के नये टायर खरीदने की मांग पत्नी से कर दें। पत्नी दुकान पर बिक्री ठीक न हो सकने से चिन्तित बैठी हो, परन्तु पतिदेव उसके गले में बांहें डाल तनिक हाव-भावयुक्त भाषा में कह दें, 'डीयर, डीयर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
डीयरेस्ट! कल मुझे क्लब के डिनर पर जाना है और मोटर जाने योग्य नहीं रही। इससे अढ़ाई सौ रुपया तुरन्त दे दीजिए। मैं ग्यारह बजे टायर ले, चढ़वा डिनर के समय क्लब में जा सकूं।

"बताइए, कैसी मज़ेदार बात रहेगी यह?" गुलाबसिंह ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

इरीन तो इसे एक अनर्गल बात समझती थी और उसने उत्तर नहीं दिया। परन्तु प्रमोद के मस्तिष्क की दूसरी अवस्था थी। वह विचार कर रहा था कि सत्य ही इरीन उसे लूट रही है। परन्तु वह विचार करता था कि इस लूट को रोकने का उपाय क्या विवाह के अतिरिक्त कुछ नहीं। इरीन से उसका मन उचाट होने लगा था।

गुलाबसिंह को आए तीन दिन हो गए थे। इस काल में उसने प्रमोद और नवल को फोर्ट एरिया में दुकान दिखायी थी। प्रमोद को वह पसन्द आई थी परन्तु नवल ने यह कहकर बात टालने का यत्न किया था कि दुकान बहुत बड़ी है और उसका व्यय बहुत बैठेगा। गुलाबसिंह ने मातुंगा की सड़क पर नगर के केन्द्रीय स्थान से पन्द्रह मील के अन्तर पर एक कोठी दिखाई थी। गुलाबसिंह ने मोटरकार कम्पनी से एक मोटर का भी प्रबन्ध किया था। साधारण-सी पगड़ी देने पर एक नई कार, जो किसी अन्य के नाम रजिस्टर्ड थी, लेने का प्रबन्ध कर दिया।

प्रमोद देख रहा था कि गुलाबसिंह नवल से अधिक तेज़ी और कुशलता से कार्य कर सकता था। इसपर भी गुलाबसिंह ने न तो नवल के नौकर रखने की बात की थी और न ही उसमें किसी प्रकार का दोष बताया था।

दिल्ली से पत्र आया था। उसमें लिखा था, "केवल एक शर्त है। वह यह कि व्यवसाय का जनरल मैनेजर गुलाबसिंह अथवा कोई अन्य मेरी इच्छा का व्यक्ति होगा। सब व्यय जनरल मैनेजर के अधीन होगा। प्रमोद अपना घर का व्यय बताए कि वह क्या चाहता है। वह उसे उसकी मां देगी। इसपर भी निश्चित राशि होनी चाहिए।"

गुलाबसिंह ने इस पत्र के उपरान्त कहा, "प्रमोद बाबू, अब कोठी किराये पर ले लेनी चाहिए। कोठी का किराया सात सौ रुपये मासिक होगा। देखा है न, उसमें चार बेडरूम हैं, ड्राइंगरूम और डाइनिंग-रूम है, पेंटरी और स्टोर है, मोटर गैराज है और छोटी-सी फूलों की फुलवारी भी है।"

प्रमोद ने बताया, "मुझे माताजी का पत्र आया है कि यदि मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहने योग्य स्थान ले लूं तो वे कुछ काल के लिए यहां आकर रहेंगी। रजनी बहिन ने लिखा है कि वे विवाह कर रही हैं और यदि प्रमोद बम्बई में अपना पक्का निवास-स्थान बना ले तो छुट्टियों में वे वहां आकर रहने का साहस कर सकेंगी।"

"तो फिर क्या विचार है?"

"नवल कहता था कि नगर से बहुत दूर है।"

"मोटरगाड़ी से वहां से यहां आने में इतना ही समय लगेगा जितना कि होटल से फोर्ट एरिया तक पैदल जाने में लगता है।"

"वह कहता था कि दुकान पर चौकीदार रखना पड़ेगा। घर पर भी चौकीदार और चपरासी रखना होगा। बिजली, पानी आदि सबका व्यय इतना हो जाएगा कि दुकान वहन नहीं कर सकेगी।"

"और बड़ी दुकान बड़ा लाभ नहीं देगी क्या?"

"नवल को सन्देह है।"

गुलाबसिंह हंस पड़ा और बोला, "अच्छी बात है। तुम अभी मेरे साथ चलो तो नवल का उद्देश्य उस छोटी दुकान के लेने में पता चल जाएगा।"

"क्या उद्देश्य है?"

"मैं अपने मुख से कहूंगा तो आप मानेंगे नहीं। इससे चाहता हूं कि चलो मैं दोनों दुकानों के मालिकों से बात करा सकता हूं।"

"मैं समझता हूं कि आपको किसीने भ्रम में डाल दिया है। नवलजी से पिताजी का झगड़ा है। इसीसे वे उसको बदनाम करना चाहते हैं।"

"तुम्हारे पिताजी यहां तो हैं नहीं। इससे उनके झगड़े करने का प्रश्न नहीं उठता। तुम नवल की अनुपस्थिति में दलालों को मिलकर पता करो कि मेरे प्रस्ताव को वे स्वीकार क्यों नहीं करते।"

"क्यों नहीं करते? भला, यह भी पूछने की बात है। आप बीस हज़ार तो फोर्ट एरिया की दुकान की पगड़ी कम कर रहे हैं और पांच हज़ार रुपया धोबी तालाब वाली दुकान की।"

"यह बात नहीं। वे इतना कुछ मान गए होते, यदि बीच में नवल अपना कमीशन न मांग रहा होता।"

"यह बात झूठ है।"

"अच्छा, यह बताओ। यदि फोर्ट एरिया की दुकान का सौदा चालीस हज़ार में करा दूं तो?"

"यह असम्भव है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसने मुझसे पचास हज़ार मांगे थे। मैंने चालीस हज़ार देने का प्रस्ताव किया था। वह मान रहा था, परन्तु अगले दिन नवल के बीच में आ जाने पर उसने साठ हज़ार मांग लिए थे। यदि मेरा कहा मानो तो मैं अभी भी चालीस हज़ार में निश्चय करा देता हूं।"

"क्या कहा मानूं?"

"उसको जाकर कह दो कि उसे नवल को कुछ नहीं देना पड़ेगा और अभी रुपया नकद दस-दस रुपये के नोटों में मिल जाएगा; तो देखो, क्या होता है!"

"और रुपया?"

"इसकी चिन्ता क्यों करते हो? मैं सब प्रबन्ध कर दूंगा।"

यह अन्तिम प्रहार था जिसनें प्रमोद की बुद्धि को जाग्रत् किया था। अब वह अपने पग फूंक-फूंककर रखने लगा था।

यह बात सत्य थी कि नवल एक ओर फोर्ट एरिया वाली दुकान की निन्दा करता था और दूसरी ओर एक भारी रकम सौदा कराने के लिए अपने लिए मांगता था। जब प्रमोद को सन्देह हुआ तो वह गुलाबसिंह को साथ लिए बिना दलालों से मिला और पूर्ण रहस्य जान गया।

नवलकिशोर के बिना सब प्रबन्ध हो गया और प्रमोद फोर्ट एरिया वाली दुकान पर काम करने लगा। अब उसने मातुंगा की ओर नगर के बाहर एक कोठी सात सौ रुपया महीना किराये पर ले ली और वहां रहने लगा।

इसके कई मास उपरान्त की बात है। प्रमोद कोठी पर रहता था और फोर एरिया में 'प्रमोद बुक एजेन्सी' के नाम से काम करने लगा था और अब प्रमोद के माता-पिता से पुनः अच्छे सम्बन्ध बन गए। लक्ष्मी ने प्रमोद को लिखा था कि उसने उसके विवाह के लिए एक बहुत ही सुन्दर लड़की ढूंढी है। उसे वह लड़की दिखाने के लिए बम्बई आ रही है।

इन दिनों गुलाबसिंह दुकान के जनरल मैनेजर के रूप में काम कर रहा था। प्रमोद ने गुलाबसिंह से पूछ लिया, "सरदार साहब, माताजी यहां आना चाहती हैं।"

"ठीक तो है।"

"वे विवाह के लिए एक लड़की भी लाना चाहती हैं।"

"तब तो और भी अच्छा है। लिख दो कि लड़की देखकर ही निर्णय करूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु क्या आपका विचार है कि अब मुझे विवाह कर लेना चाहिए ?"

"इसमें हानि नहीं है। इरीन के उपरान्त किसीको तो आना चाहिए। मैं समझता हूं कि माताजी द्वारा किया गया प्रबन्ध अवश्य ठीक होगा।"

"तो मैं लिख रहा हूं।"

परिणाम यह हुआ कि एक दिन लक्ष्मी अपने साथ एक लड़की लिए हुए आ पहुंची। लक्ष्मी लड़की और लड़की की माताजी के साथ कोठी में टिक गई। लड़की इरीन से अधिक सुन्दर थी और प्रमोद को उसे स्वीकार करने में कठिनाई नहीं हुई।

प्रमोद ने मां से पूछा, "मां, कहां से पकड़ लाई हो इसे?"

"बेटा, ये बहिनजी ही इसे लाई हैं। पहले इस संसार में और पीछे हमारे घर में। ये बम्बई में ही एक्साइज़ विभाग के एक उच्च अधिकारी की लड़की है। नाम है प्रमिला। प्रमिला की माताजी दिल्ली मेरे पास पहुंची थीं और कहने लगीं कि उन्होंने और प्रमिला के पिता ने तुम्हें पसन्द किया है और वह लड़की का विवाह तुमसे करना चाहती हैं। मैंने बताया बिना लड़की को देखे और उसके स्वभाव की परीक्षा किए मैं बीच में नहीं आऊंकी। इसपर लड़की को दिल्ली बुला लिया गया। यह मेरे पास दस दिन तक रही है। मैं तो इससे सन्तुष्ट हूं।"

"अच्छा, मां, तनिक मैं भी इसे एक-दो दिन देख लूं?"

"इसीलिए तो इसे यहां लाई हूं।"

"तो ये यहां कोठी में रहेंगी?"

"यह आई तो इसलिए है कि तुम इसे देख लो तदनन्तर यह अपने पिता के घर में चली जाएगी और दो-चार दिन तक तुम मेल-जोल रखना। जब मुझे कहोगे तो तुम्हारे पिताजी अथवा अन्य सबन्धियों को यहां बुला लूंगी और विवाह बम्बई में होगा।"

"और यह यहां ही अपने माताजी के साथ नहीं रह सकतीं?"

"बहिनजी को प्रमिला के पिताजी से पूछना होगा।"

"ठीक है। ये टेलीफोन से पता कर सकती हैं। तनिक इनके पिताजी भी आ जाएं और उनके भी दर्शन हो जाएंगे।"

"बताओ, प्रमिला। क्या कहती हो?" लक्ष्मी ने समीप बैठी लड़की से पूछ लिया। लड़की ने मुख से कुछ उत्तर नहीं दिया। केवल प्रशनभरी दृष्टि से अपनी मां की ओर देखने लगी। मां ने कह दिया, "हमने इसके पिताजी को यह लिखा हुआ है कि हम आज हवाई जहाज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पहुंच रहे हैं। उन्होंने लिखा था कि वे गोआ जा रहे हैं और आज वे बम्बई मध्याह्नोपरान्त बम्बई लौटेंगे। इसी कारण हम एयरोड्रोम से यहां आ गए हैं। मध्याह्नोत्तर तक हम यहां हैं। तब मैं उनको टेलीफोन कर पूछूंगी। जैसा वे कहेंगे, हम करेंगे।"

प्रमोद ने लड़की को प्रथम एकान्त भेंट में ही स्वीकार कर लिया। लड़की की माताजी लक्ष्मी से बैठ बात कर रही थी और लड़की उस कमरे में थी जिसमें उनका सामान रखवा दिया था। वह बैठी भविष्य की कल्पना कर रही थी कि प्रमोद वहां आ धमका। प्रमोद को आया देख लड़की खड़ी हो गई। प्रमोद ने कह दिया, क्यों, भाग कहां रही हो? मैं तो तुमसे पृथक् में बातचीत करने आया हूं।"

इसपर प्रमिला मुस्कराई और बोली, "मैं भाग नहीं रही थी। मैं तो आपके आदर में खड़ी हुई थी।"

"अच्छा, बैठो। मैं आदर नहीं, प्रेम चाहता हूं।"

"सत्य? तब तो मुझे मां के पास भाग जाना चाहिए।"

"क्यों? क्या प्रेम कोई कांटा है जिसके चुभ जाने का भय है?"

"नहीं, यह नहीं। प्रेम की घोषणा के उपरान्त तो पुरुष कुछ ऐसी मांग करने लगते हैं जिसकी स्वीकृति तो विवाहोपरान्त ही हो सकती है।"

प्रमोद हंस पड़ा और बोला, "बैठो, प्रमिला। ऐसी मांग नहीं करूंगा। बताओ, कब विवाह करना चाहती हो?"

"मैं तो यह समझ दिल्ली गई थी कि विवाह वहां होगा पिता-जी इत्यादि भी वहां जाने की तैयारी में थे, परन्तु वहां जाकर पता चला कि विवाह बम्बई में होगा। आपके माताजी के पास दस दिन रही और आशा करती रही कि आप वहां आ जाएंगे और आपके दर्शन कर सकूंगी, परन्तु दर्शनार्थ मुझे ही वापस बम्बई आना पड़ा।"

"तो तुमने मेरे दर्शन किए बिना ही विवाह की आकांक्षा बना ली थी?"

प्रमिला मुस्कराई और बोली, "विवाह की आकांक्षा तो आज से आठ वर्ष पूर्व ही बनी थी और तब से ही अपने एक काल्पनिक पति से विवाह का विचार किया करती थी। बीस-पच्चीस दिन हुए, पिताजी ने माताजी से कुछ बातचीत की और फिर मुझे एक फोटोग्राफ दिखाया। तब से उस कल्पना के कलेवर में आप विराजमान हो गए।"

"तो मेरे चित्त से विवाह कर चुकी हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी, नहीं। आपसे विवाह की कल्पना कर चुकी हूं। उस कल्पना के सत्य होने की अभिलाषा कर रही हूं।"

"तो मेरा आशीर्वाद सुन लो। मेरी भगवान् से प्रार्थना है कि तुम्हारी कल्पना सत्य सिद्ध हो।"

"तो लीजिए, मैं इस आशीर्वाद का समर्थन देती हूं।" इतना कह प्रमिला ने झुककर प्रमोद के चरण-स्पर्श करने चाहे, प्रमोद ने उसे पकड़ अपने अंग लगा लिया।

प्रमिला घबराई और उसके बाहुपाश से छूटेने का यत्न करने लगी। जब नहीं छूट सकी तो बोली, "वही बात करने लगे हो न, जो मैं विवाह के उपरान्त करने के लिए कहती थी।"

प्रमोद ने हंसते हुए कहा, "नहीं, वह नहीं। यह तो केवल वचन-मात्र है कि तुम्हारी कल्पना सत्य सिद्ध होगी।" प्रमोद ने उसे छोड़ दिया और छूटते ही प्रमिला भागकर कमरे से निकल गई। प्रमोद इस सबका अर्थ समझने लगा था। वह समझा था कि वह उससे डरकर नहीं भागी, वरंच अपने से डरी है। उसे अपना स्वप्न साकार हो रहा प्रतीत हुआ था परन्तु वह इसे विवाह से पूर्व साकार करना नहीं चाहती थी।

प्रमिला और उसकी मां परस्पर विचार कर रही थीं कि अपने घर टेलीफोन करें अथवा नहीं। लड़की ने कह दिया, "मां, उनसे पूछ तो लो कि अब मेरे यहां रहने की आवश्यकता भी है अथवा नहीं।"

"तो क्या तुमको नहीं की भी आशा है?"

"मां, पूछ लो।" प्रमिला लज्जा से लाल हो रही थी। प्रमिला की मां प्रमोद की मां से मिलने चली गई। प्रमोद मां को बता रहा था कि वह विवाह शीघ्रातिशीघ्र चाहता है। मां उसे बता रही थी कि शीघ्र करने पर भी एक सप्ताह अवश्य लग जाएगा। मैं अपने सब सम्बन्धियों को बुलाना चाहती हूं।'

इसी समय प्रमिला की मां आई और पूछने लगी, "तो प्रमिला के पिताजी को टेलीफोन करूं कि हम अभी दो दिन यहां ही रहेंगी?"

लक्ष्मी उत्तर के लिए प्रमोद का मुख देखने लगी और प्रमोद ने कह दिया, "माता जी," वह प्रमिला की माताजी को कह रहा था, "मैं समझता हूं कि अब इसकी आवश्यकता नहीं।"

प्रमिला की मां अवाक् मुख देखती रह गई। वह समझी कि बात टूट गई है, परन्तु अगले ही क्षण प्रमोद ने कहा, "मेरी सम्मति मानें तो प्रमिलाजी के पिताजी को यहां बुला लीजिए जिससे विवाह की तिथि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का आज ही निश्चय हो जाए और तब विवाह की तैयारी करने लगें।"

लड़की की मां समझ गई कि लड़की मां से अधिक चतुर सिद्ध हुई है। जो बात वह एक मास में करने में सफल होने की आशा करती थी, वह उसने लड़के से एक ही भेंट में निश्चय करा ली है। इसपर वह प्रसन्न थी। उसके पिछले पन्द्रह दिन का प्रयास सफल हो रहा था। प्रमिला के पिता दीनानाथ को टेलीफोन से बुलाया गया और उसके आने पर वैसा ही निश्चय हो गया जैसा लक्ष्मी की इच्छा थी।

विवाह उस दिन के एक सप्ताह उपरान्त निश्चय हुआ और उसी समय तार द्वारा भागीरथ को तथा अन्य सम्बन्धियों को आने का निमन्त्रण दे दिया गया।

बाबा ब्रजलाल के अतिरिक्त भागीरथ के परिवार के सब लोग आ गए। बाबा ब्रजलाल का तार द्वारा ही आशीर्वाद आ गया। साथ ही दम्पती को विवाहोपरांत हनीमून के लिए पाण्डीचेरी आने का निमंत्रण था।

विवाह बहुत ही धूमधाम से हुआ और विवाह के उपरान्त प्रमिला-प्रमोद पाण्डीचरी चले गए। हवाई जहाज़ से मद्रास तक और शेष यात्रा रेलगाड़ी से की गई।

5

विवाह में रजनी अपने पति देवेन्द्रकुमार के साथ आई थी। देवेन्द्र को रजनी के परिवार वालों के प्रायः सब लोगों का परिचय प्राप्त हुआ और वह भागीरथलाल को खुले हाथ रुपया व्यय करते देख चकित रह गया।

जब दम्पती पाण्डीचेरी चले गये तो देवेन्द्र, जो विवाह पर आए लोगों के साथ एक पड़ोस की कोठी में ठहराया गया था, रजनी से विचार करने लगा कि अब उन्हें कब दिल्ली लौटना है। रजनी ने कह दिया, "चाचीजी ने कहा है कि हमारे लिए कल के लिए हवाई जहाज़ में सीट रिज़र्व करवा दी गई है। कल सायंकाल पांच बजे जहाज़ चलेगा और साढ़े छः बजे हम दिल्ली पहुंच जाएंगे।"

"तुम्हारे चाचाजी ने विवाह पर बहुत धन व्यय किया है।"

"वे समझते हैं कि धन परिवार के सहयोग से एकत्रित हुआ है। अतः परिवार की सुख-सुविधा पर ही व्यय करना इसका सदुपयोग है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु परिवार में तो नवलकिशोर जैसे लोग भी थे?"

"यह ऐसा ही है जैसे कि समाज में कई हैं जो समाज का कोई उपयोगी कार्य नहीं करते, परन्तु सामाजिक सेवाएं तो उनके लिए भी वैसी उपलब्ध हैं जैसीकि उपयोगी काम करने वालों के लिए हैं।"

"तो परिवार एक समाजवादी संस्था है?"

"जी, नहीं। यह एक कल्याणकारी संस्था है। जैसे एक वैल-फ़ेयर स्टेट होता है।"

"दोनों समान नहीं हैं क्या? क्या कोई भी कल्याणकारी राज्य बिना समाजवाद के चल सकता है?"

"जी, नहीं। दोनों में समानता से अधिक असमानता है। समाज-वादी राज्य में समाज की पूर्ण उपज समाज के लिए है। उसमें व्यक्ति का अपना अस्तित्व नहीं रहता। कल्याणकारी राज्य में कुछ सेवाएं हैं जो सबके लिए समान रूप में राज्य देता है। शेष व्यक्ति अपने व्यक्तिगत प्रयास से उपलब्ध करता है।

"उदाहरण के लिए सबको शिक्षित करना राज्य का कार्य नहीं। शिक्षा ग्रहण करना व्यक्ति के अपने प्रयास और योग्यता पर निर्भर करता है। न ही सबको खाने-पीने के लिए देना राज्य का कार्य है। सबके लिए काम उपलब्ध करना भी राज्य का कार्य नहीं।

"परन्तु सबके लिए शुद्ध जल, वायु और निवास-गृह राज्य को देना चाहिए। सबके परिश्रम का उचित फल उन्हें मिलना चाहिए। जो रुग्ण हैं और चिकित्सा के लिए साधन नहीं रखते, उन्हें चिकित्सा की सुविधा मिलनी चाहिए। साथ ही दैवी दुर्घटनाओं से सबकी रक्षा की जानी चाहिए।"

"रजनीजी, और बातें तो विवादास्पद नहीं, परन्तु 'सबके लिए मकान राज्य दे' की बात समझ नहीं आई।"

"यह तो अति सरल-सी बात है। मकान की मूल आवश्यकता दैवी प्रकोप से बचने के लिए ही है। अतः सर्दी, गर्मी, वर्षा, धूप इत्यादि प्राकृतिक प्रकोपों से बचने के लिए समाज के संयुक्त प्रयास होने चाहिए। इनका सम्बन्ध मनुष्य के अपने आलस्य, प्रमाद आदि से नहीं।"

"और देश में बेकारी क्या मनुष्य की अपनी करनी से उत्पन्न होती है?"

"बेकारी का तो बेकार रहने से ही निर्माण होता है। संसार में करने को काम बहुत अधिक हैं। मनुष्य करना नहीं चाहता। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण बेकार रहता है। कभी राज्य द्वारा दी गई शिक्षा उसे वे काम करने नहीं देती जिसके वह योग्य होता है। कभी समाज ने जीवन-स्तर इतना ऊंचा बना दिया होता है कि मनुष्य उपलब्ध काम से उस स्तर पर रह नहीं सकता तो बेकार हो जाता है।

"जीविकोपार्जन मनुष्य की योग्यता, प्रयास और सरलता पर निर्भर होता है।"

एकाएक देवेन्द्र ने बात बदल दी। उसने कहा, "प्रमोद की बीवी अपने माता-पिता से सर्वथा विलक्षण प्रतीत हुई है।"

"क्या देखा है आपने उसके माता-पिता में जो लड़की में नहीं है?"

"वह बहुत सुन्दर है, परन्तु लड़की के माता-पिता दोनों साधारण रूपरेखा के व्यक्ति हैं।"

"तो क्या वह अपने माता-पिता की लड़की नहीं है?"

"यह विश्वास से नहीं कहा जा सकता। जब सुन्दर माता-पिता के घर में कुरूप सन्तान उत्पन्न हो सकती है तो कुरूप माता-पिता के घर में सुन्दर लड़कियां क्यों नहीं हो सकतीं? इसपर भी यह विचारणीय है।

"एक बात यह भी है कि नवलकिशोर लड़की वालों की ओर से कार्य कर रहा था। यह भी विचित्र प्रतीत हुआ था। दूसरी बात यह कि कुछ ऐसे लोग लड़की वालों की ओर से कार्य कर रहे थे जो हिन्दू समुदाय के नहीं थे।"

"वे एक सरकारी अधिकारी के अधीन कार्य करने वाले भी तो हो सकते हैं?"

"यह विचार करने की बात है। बात यह है कि धन-सम्पद् पर लोभ की दृष्टि रखने वाले क्या-क्या षड्यन्त्र करते हैं, यह हम कल्पना नहीं कर सकते। इसे युग में लड़कियां मिलनी सुगम हो रही हैं। इससे उनकी लालसा नहीं रही। धन यद्यपि प्रचुर मात्रा में है तो भी सुलभ नहीं, है। उसके लिए अनेकानेक षड्यन्त्र चलने लगे हैं।"

"तो आपका सन्देह चाचाजी को बता दूं?"

"कुछ निश्चयात्मक तो कहा नहीं जा सकता। इसपर भी संकेत कर दिया जाए तो हानि नहीं।"

रजनी को उस दिन तो अवसर मिला नहीं चाचा और चाची से बात करने का, वे परिवार के लोगों को विदा करने में लीन थे, अगले दिन रजनी की माता स्नेह, रजनी की चाची लक्ष्मी और बिहारीलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिलने आए। रजनी और देवेन्द्र जुहू सागर तट और हैंगिंग गार्डन देखकर आए थे तो ये लोग वहां आ पहुंचे।

रजनी ने विवाह पर अपने माता-पिता को बुलाया नहीं था। विवाह में किसीने कन्यादान भी नहीं किया था। रजनी का कहना था कि माता-पिता एक बार पहले कन्यादान ले चुके हैं। अतः उनको दान की वस्तु को पुनः देने का अधिकार नहीं रहा। साथ ही वह समझती थी कि विवाह में उसने किसीसे सम्मति नहीं ली है, अतः किसीसे किसी प्रकार की सहायता भी नहीं लेगी।

देवेन्द्रजी के भाई, पिता और भावजों तथा उनके बच्चों के अतिरिक्त कोई नहीं आया था। अलीपुर रोड वाली कोठी के लान में साधारण-सा शामियाना लगाकर विवाह कर दिया गया था। भागीरथ, मोहिनी और कमलकिशोर तथा उसके माता-पिता ही इस ओर से थे।

अब प्रमोद के विवाह पर सब सम्बन्धी लोग आए तो सब देवेन्द्र जी से मिले और रजनी तथा देवेन्द्र को अपने-अपने घर आने का निमंत्रण दे गए थे।

सोहनलाल ने झरिया में एक स्टील रोलिंग मिल मोल ले ली थी। पिछले एक वर्ष से भारत के उद्योग में मन्दी चल रही थी। इस कारण स्टील रोलिंग मिल सस्ते दामों पर ही मिल गई थी। मोहनलाल मिल को उन्नत और विकसित करने में संलग्न था

स्नेहलता ने रजनी को उलाहना देते हुए कहा, "रजनी, हमको सूचना भी नहीं भेजी कि तुम विवाह कर रही हो। हम कुछ देते ही। तुमसे कुछ लेने वाले तो नहीं थे।"

"मां जी।" रजनी ने कह दिया, "आपने एक बार विवाह कर विदा कर दिया था। इस कारण आपसे दूसरी बार कुछ लेने की इच्छा नहीं हुई। इसपर भी आपका दिया पहले भी इतना था कि उसके बोझ से निवृत्त होने के लिए विशेष यत्न करना पड़ा।"

"इसपर भी," स्नेह ने कह दिया, तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए कुछ भेजा है।"

"क्या भेजा है?"

"बिहारी, दो न बहिन को।"

बिहारी ने अपनी जेब से एक डिब्बा निकाल मां के सामने कर दिया। स्नेह ने डिब्बे कों खोल उसमें से रत्नजड़ित नेकलेस निकाल रजनी के गले में डाल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवेन्द्र उसे देख हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "माताजी, इसे इतने दाम की वस्तु से विभूषित करने की आवश्यकता नहीं थी। यह तो पहले ही बहुविध विभूषित है।"

रजनी ने बात बदली। उसने कहा, "मां, यहां पीठ पर हाथ फेर आशीर्वाद भी तो दो न?"

"ठहरो, वह तुम दोनों को इकट्ठे ही दूंगी। बिहारी, वह भी लाओ।"

बिहारीलाल ने अपनी दूसरी जेब में से एक अन्य डिबिया निकाली। मां ने उसे, खोल और उसमें से जामुन के बराबर लगे नीलम वाली अंगूठी निकाल देवेन्द्र को बीच की अंगुली में पहना दी और फिर दोनों की पीठ पर हाथ फेरते हुए आशीर्वाद दे दिया।

लक्ष्मी ने एक लिफाफा देवेन्द्रकुमार को देते हुए कहा, "हमने सब सम्बन्धियों, विशेष रूप में दामादों को विवाह के उपरान्त विदाई दी है। यह प्रमोद के पिता आपको दे गए हैं।"

"और वे स्वयं कहां गए हैं?" देवेन्द्र ने पूछ लिया।

"वैसे तो वे स्वयं देने के लिए आने वाले थे, परन्तु दुकान से गुलाबसिंह का टेलीफोन आया है और वे वहां गए हैं। जाते समय कह गए हैं कि मैं उनकी ओर से यह आपको दे दूं।"

लिफाफा बन्द था। देवेन्द्र ने दबाकर देखा। उसे लिफाफे में नोट पड़े समझ आए। देवेन्द्र ने लिफाफा खोलने के स्थान पर रजनी के हाथ में दे दिया।

रजनी ने लिफाफा अपने हैण्डबैग में रख लिया। जब ये आए लोग विदा हो गए तो देवेन्द्र ने कहा, "मैं यहां से विदा होने से पूर्व चाचाजी की दुकान पर जाकर उनको नमस्कार कहना चाहता हूं और किसी प्रकार से अपना संशय बताना चाहता हूं।"

"चलिए, मैं भी चलती हूं।"

"मैं समझता हूं कि यह हार तो उतार दो। यह बम्बई है। कहीं हार के साथ मेरी पत्नी का भी अपहरण न हो जाए!"

दोनों उठे और अपने कमरे में जा भेंट में मिले भूषणों को अपने सूटकेस में रख दिया। वह लिफाफा जो लक्ष्मी ने दिया था, उसे खोलकर देखने लगे तो उसमें सौ-सौ रुपये के सौ नोट थे।

"बहुत रुपये दे दिए हैं?"

"हां, दस सहस्र प्रतीत होते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतना कुछ ले चलना भी तो भारी भय मोल लेना है?"

"अब तो ले ही चलना होगा।" रजनी का कहना था।

देवेन्द्र के मन में यह संशय बना हुआ था कि धन का एक स्थान पर एकत्रित होना हितकर होता है अथवा अहितकर? रजनी ने लिफाफा भी सुटकेस में रखते हुए कहा, "एयरोड्रोम को चलने से पूर्व यह सब हैण्डबैग में रख लेना चाहिए जिससे इसे अपने साथ रख सकें।"

"चलो भागकर दुकान से हो आएं।" दोनों एक टैक्सी में फोर्ट एरिया में दुकान पर गए। वहां गुलाबसिंह मिला। उसने बताया कि लालाजी यहां आए थे और नवलकिशोर के साथ कहीं चले गए हैं।

"पर उन्हें बुलाया तो आपने था?" रजनी ने पूछा।

"हां, नवलकिशोर यहां आया था और बोला कि लालाजी को बुला दो। उसने काम नहीं बताया।"

देवेन्द्रकुमार और रजनी वहां कुछ देर तक बैठे रहे। तदुपरान्त वे गुलाबसिंह को यह कहकर चल दिए कि "लालाजी से कह दे कि हम उनको नमस्ते कहने आए थे। अब 'प्लेन' का समय हो रहा है, इस कारण हम जा रहे हैं।"

वे दोनों चले आए और जिस टैक्सी में वहां आए थे, उसी टैक्सी में वे एयरोड्रोम चले गए।

6

भागीरथलाल गुलाबसिंह के बुलाने पर दुकान पर पहुंचा तो नवलकिशोर वहां पहले ही से उपस्थित था। गुलाबसिंह ने कहा, "नवलजी चाहते थे कि आपको तुरन्त बुला दिया जाए।" भागीरथ-लाल ने नवल के पास बुलाने का कारण पूछा तो उसने कहा, "परि-वार का एक सदस्य जो पब्लिक में नहीं जा सकता, आपसे मिलना चाहता है।"

"कौन है वह?"

"आप मेरे साथ आइए। आपको उससे मिला दूंगा।"

"जब तक बताते नहीं तब तक मैं जाने का विचार नहीं कर सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसपर नवल ने चारों ओर देखकर और विश्वास कर कि कोई सुन नहीं रहा, भागीरथलाल के कान में कहा, "वह कान्तिलाल है।"

"कान्ति? पर वह तो हवालात में है। उसपर आगज़नी का मुकदमा चल रहा है।"

"वह पुलिस की हिरासत से भाग आया है। पिछली पेशी में जो साक्षी हुई थी, उनसे उसे विश्वास हो रहा था कि वह कम से कम पांच वर्ष का कठोर दण्ड पा जाएगा।

"उसकी यूनियन के सदस्य ही उसके विपरीत साक्षी भर रहे थे।"

भागीरथलाल यह सब जानता था। सोमदेव उस मुकदमे के चलाने में रुपया पानी की भांति बहा रहा था। अब यह सुन कि कान्ति हवालात से भाग आया है, वह भौचक्का हो नवल का मुख देखता रह गया। इसपर भी वह नवल के साथ किसी गुप्त स्थान पर जाना नहीं चाहता था। इस कारण उसने पूछा, "वह इस समय कहां है?"

"वह मेरे मकान पर है, परन्तु वह बाहर निकलने से डरता है।"

"वह मुझसे चाहता क्या है?"

"वह भारत को छोड़ स्विट्जरलैंड जाना चाहता है।"

"रूस क्यों नहीं?"

"उसकी यहां की कम्युनिस्ट पार्टी से बनती नहीं। वह ऐक्शन भी उसने कम्युनिस्ट दल की इच्छा के बिना किया था।"

"तो किसकी इच्छा से किया था?"

"वह उसने अपनी इच्छा से किया था। जुलूस तो कम्युनिस्टों का जा रहा था और वह उसमें सम्मिलित हो गया झर जब जुलूस कार-खाने के गोदाम के समीप से गुज़र रहा था तो इसने लोगों को भड़का दिया और लोग गोदाम की ओर लपके, परन्तु वह रक्षा करनेवालों की लपेट में आ गया और पकड़ लिया गया।"

"देखो, नवल, मैं तुम्हारे मकान में नहीं जाऊंगा। साथ ही मैं विचार करता हूं कि ऐसे परिवार-घातक की मैं क्यों सहायता करूं।"

"दादा, वह अति दयनीय स्थिति में है। वह आपको परिवार का बड़ा और स्वभाव का दयालु मान आपसे पांच हज़ार रुपया चाहता है। वह स्विटज़रलैण्ड में पहुंच अपने भविष्य के विषय में प्रबन्ध कर लेगा।"

"अच्छा, उसे मुझे मिलाओ। पर मैं तुम्हारे घर पर नहीं जाऊंगा। मैं तुम्हें अपनी मोटरगाड़ी देता हूं। उसे तुम 'एस्टोरिया' में ले आओ। मैं वहां पहले उपस्थित हूंगा और तुम दोनों के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्थान चाय की मेज़ पर सुरक्षित रखूंगा।"

"वह अति भयभीत है।"

"देखो, नवल, पापकर्म करने से पहले डरना चाहिए। पीछे डरने के क्या अर्थ हैं? साथ ही रुपया तो मैं दे दूंगा, परन्तु विदेशी मुद्रा मैं नहीं दे सकूंगा।"

"विदेशी मुद्रा की आवश्यकता नहीं है। यहां कुछ तो पासपोर्ट दिलवाने वाले को देना है। कुछ हवाई जहाज़ के टिकट के लिए भारतीय मुद्रा चाहिए।"

"तो विदेश में वह क्या करेगा?"

"वहां वह प्रबन्ध कर लेगा।"

भागीरथ इसका अर्थ यह समझा था कि कोई अन्तर्देशीय संगठन उसकी सहायता कर रहा है। यह अवश्य चीन की पार्टी होगी। परन्तु प्रश्न यह था कि वह उसकी सहायता करे अथवा न करे। इस बात का निर्णय वह कान्तिलाल से बात करने के उपरान्त करना चाहता था।

भागीरथ को मौन देख नवल समझ गया कि काम बन गया है। वह भागीरथ के, स्वभाव को और परिवार के लोगों के प्रति उसके कोमल हृदय को जानता था। अतः उसने कहा, "दादा, ड्राइवर को कह दो कि वह मेरे साथ चला जाए और हम पन्द्रह मिनट में 'एस्टोरिया' पहुंचेंगे।"

भागीरथ अभी भी दुविधा में फंसा था। परिवार के लोगों से उसकी सहानुभति सदा बनी रहती थी, परन्तु कान्ति ने तीसरी बार परिवार को हानि पहुंचाने का यत्न किया था। इस दुविधा में ही उसने टैक्सी पकड़ी और 'एस्टोरिया' रेस्टोरां में जा पहुंचा। वहां एक कोने में एक मेज़ पर बैठ उसने बैरा को कहा, "मैं किसीकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। अभी ठहरो।"

देखने में कान्ति की अवस्था सत्य ही दयनीय थी। वह बहुत ही दुर्बल हो गया था। उसके चलने में भी विकृति आ गई थी।

"सुनाओं, भाई। यह क्या हालत बनाई है?" उसके बैठते ही भागीरथ ने पूछ लिया।

"चाचाजी, सोमदेव ने पुलिस को खूब खिलाया-पिलाया है और उन्होंने मेरी बहुत दुर्गति की है। मेरे गुह्य अंगों में ऐसे पीटा है कि मैं चलने में भी कष्ट अनुभव करता हूं। मेरी आंतों से रकतस्राव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होने लगा था। तब मुझे जेल के हस्पताल में भेज दिया गया। नवल दादा की सहायता से और कुछ दल के मित्रों की सहायता से मैं भागने में सफल हो गया हूं। यहां नवल दादा ने पासपोर्ट और हवाई जहाज़ के टिकट का प्रबन्ध किया है। मैं बर्न में पहुंच गया तो दल के मेरे मित्र मेरी सहायता कर देंगे। शेष कार्यक्रम वहां चलकर बनाऊंगा।"

"कान्ति मैं विचार करता हूं कि मैं तुम्हारी किसलिए सहायता करूं ?"

"चाचाजी, केवल परिवार के नाते ही मैं भीख मांग रहा हूं। मेरी और न तो किसी प्रकार की सिफारिश है और न ही कोई दावा है।"

परिवार का नाम भागीरथ के मन पर विशेष प्रभाव रखता था। उसका मत द्रवित हो गया। उसने पूछ लिया, "कितने से काम बन जाएगा ?"

"पांच हज़ार चाहिए।"

"आज सायंकाल तक मिल जाएगा, परन्तु यह गारण्टी होनी चाहिए कि तुम भारत से बाहर जा रहे हो।"

"चाचाजी, विश्वास कर लो। मैंने सुना है कि पुलिस वाले मेरा फोटोग्राफ ढूंढ़ रहे हैं। फोटोग्राफ मिलने और उसके प्रचारित होने से पहले मैं चला जाना चाहता हूं।"

"अच्छा, कान्ति, तुम जानो तुम्हारा धर्म-ईमान जाने। सायंकाल आठ बजे यदि तुम्हारा नवल पर विश्वास है तो इसे भेज देना, रुपया दे दूंगा।"

भागीरथ चाय के उपरान्त पहले निकल गया। वह जाता हुआ कह गया, "मैं दुकान पर जा रहा हूं। गाड़ी वहां भेज देना।"

सायंकाल वह घर पहुंचा तो लक्ष्मी ने बताया, "रजनी और उसका चरवाला आपको बधाई देने आपके पीछे दुकान पर गए थे। आप कहां गए हुए थे ?"

"मैं एक काम से गया हुआ था।"

"वे एक बात कहते थे।"

"क्या ?"

"उनका विचार है कि प्रमोद का विवाह किसी षड्यन्त्र का श्रीगणेश है।"

"क्या षड्यन्त्र हो सकता है ?"

"देवेन्द्र का विचार है कि प्रमिला दीनानाथ की लड़की नहीं। साथ ही नवल का लड़की वालों की ओर होना उनके मन में सन्देह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उत्पन्न करता है।"

भागीरथ ने केवल यह कहा, "धन का लोभी संसार में सब कुछ कर सकता है, परन्तु देवेन्द्र की बातें कुछ सिद्ध नहीं करतीं। मैं बम्बई में ही कुछ मास तक रहने का विचार बना रहा हूं। विनोद और सरस्वती तो दिल्ली जाएंगे। तुम भी जा सकती हो। प्रमोद के आने तक मैं यहां रहूंगा और फिर उसे सावधान कर जाऊंगा।"

यह प्रबन्ध लक्ष्मी को पसन्द नहीं था। परन्तु वह यह समझती थी कि बम्बई नगर में जो कुछ भी हो जाए, संभव है। उसने एक मध्य-मार्ग विचार किया। उसने कहा, "आप अभी तो चलिए। प्रमोद के बम्बई लोटने तक आ जाइएगा। तत्पश्चात् हम एक घर यहां बना लेंगे और एक दिल्ली में रहेंगा। आप और मैं आते-जाते रहेंगे।"

"रजनी के वहां होने पर सरस्वती का प्रबन्ध तो हो जाएगा। विनोद को हम यहां ले आएंगे।"

"यहां हिन्दी स्कूल मिल जाएगा क्या?"

"सुना है कि यहां कई हैं।"

रात नवलकिशोर आया और नकद रुपया ले गया।

अगले दिन तक सब मेहमान जा चुके थे। भागीरथ ने अगले दिन हवाई जहाज़ से दिल्ली जाने का कार्यक्रम बना लिया था। प्रातः-काल प्रमोद का टेलीग्राम मिला कि वह वहां पहुंच बाबाजी का आशी-र्वाद प्राप्त कर चुका है। इससे लक्ष्मी कुछ निश्चिन्तता अनुभव करती थी। भागीरथलाल दुकान पर गया तो वहां नवल उपस्थित था। नवल ने बताया, "कान्तिलाल बारह बजे के प्लेन से चला गया है। इस समय वह बेरूत में होगा। वहां से काहिरा और फिर जेनेवा। सायंकाल तक जेनेवा पहुंच जाएगा।"

"यह तो ठीक हुआ है कि वह चला गया है। परन्तु यदि कहीं सोम को पता चला कि मैंने उसके भागने में सहायता की है तो वह सदा के लिए मुझसे रुष्ट हो जाएगा।"

"पता लगेगा ही क्यों?"

"मुझे भय है कि तुम उसे बता दोगे।"

"नहीं, दादा, मुझमें पहले से बहुत परिवर्तन आ गया है।"

"तो फिर मुकदमे में सुलह क्यों नहीं कर लेते?"

"पहले रुक्मिणी नहीं मानती थी। अरब उसका भाई नहीं मान रहा। मैं उसे लालच दे रहा हूं कि उसे छुड़ाने का यत्न करूंगा और फिर प्रमोद की दुकान पर जनरल मैनेजर का काम दिलवा दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर जनरल मैनेजर तो मैं बनने वाला हूं। मैं अपना हेड क्वार्टर दिल्ली से बम्बई बदल रहा हूं।"

"तब उसे असिस्टैण्ट मैनेजर बना लेना। उसे भी तो जीना है।"

"पहले मुकदमा वापिस ले लो। पीछे विचार किया जा सकता है।"

"दादा, तुम मानो तो मैं उस दिशा में यत्न कर सकता हूं।"

"अच्छा, मैं कल तो दिल्ली जा रहा हूं। प्रमोद के पाण्डीचेरी से लौटने के पूर्व यहां आ जाऊंगा। यदि तुम मुकदमा उठवाने का निर्णय बताओगे तो मैं नीलकण्ठ को दिल्ली में काम दिलवा दूंगा।"

"वह वहां जाना पसंद नहीं करेगा।"

"तुम उससे सम्मति करो। और भी सुविधाएं दे सकूंगा।"

अब नवलकिशोर दुकान पर वक ऑरगेनाइज़र के रूप में रखा हुआ था। गुलाबसिंह जनरल मैनेजर के रूप में काम कर रहा था। दुकान पर एक चपरासी और एक एकाउण्टैण्ट-कम-क्लर्क का काम करता था।

नवल सरकारी कार्यालयों, पुस्तकालयों, स्कूलों, कालेजों और सेना के भिन्न-भिन्न विभागों से सम्पर्क बनाने में लगा था और वहां से 'आर्डर' लाता रहता था। भागीरथ का अगले दिन प्रातःकाल के हवाई जहाज़ से दिल्ली जाने का कार्यक्रम था। अतः उसने गुलाबसिंह को बुलाकर संकेत कर दिया, "मुझे कुछ ऐसी सूचना मिली है कि नवल किसी प्रकार का प्रमोद के विपरीत षड्यन्त्र कर रहा है। इस कारण मैं तुम्हें सतर्क किए जा रहा हूं।"

गुलाबसिंह ने गंभीर हो कहा, दो बातों का तो भय मैंने दूर कर दिया है। एक इरीन से प्रमोद को छुटकारा मिला है और दूसरे नवल पर से प्रमोद का विश्वास उठ गया है। इसपर भी मैं नवल को किताब के कार्य में एक बहुत ही अनुभवी व्यक्ति मानता हूं। इस थोड़े-से काल में उसने दुकान को नगर-भर में विख्यात कर दिया है। हमने इस महीने में लगभग तीस हज़ार रुपये का माल निकाला है। इसका अभिप्राय यह है कि दुकान को एक महीने में ही आय पांच सहस्र रुपये के लगभग हुई है। परन्तु काम अभी तो प्रारंभिक स्तर पर ही है।"

"मुझे भय का संकेत प्रमोद की पत्नी की ओर से दिया गया है। हमें उस ओर से सावधानी की आवश्यकता है।"

"यह एक अति कठिन कार्य है। इसपर भी प्रमोद को उस ओर से सतर्क करने का यत्न करूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भागीरथ को दिल्ली पहुंचे एक सप्ताह से ऊपर हो चुका था कि ब्रजलाल का पत्र आया, "भागीरथ, तुमने समधी ठीक निर्वाचित नही किए। परन्तु बहू पूर्वजन्म के संस्कारों से श्रेष्ठ प्रतीत होती है "अत प्रमोद के सास-श्वसुर की परछाईं उसपर न पड़े, यह यत्न करना चाहिए। मैं उसे उनकी ओर से सतर्क कर रहा हूं। परन्तु बम्बई में उनके समीप रहते हुए वह उनसे बचा रह सकेगा अथवा नहीं, कहां नहीं जा सकता।"

7

मोहिनी के घर लड़का हुआ था और रजनी पांचवें मास में जा रही थी। अपनी शारीरिक अवस्था के कारण कुछ सामान्य कार्य भी वह नहीं कर सकती थी। उसने जो लिखने-पढ़ने का कार्य आरम्भ किया था वह बन्द प्रायः हो चुका था।

कभी-कभी वह कमल भैया की गाड़ी में लक्ष्मी से मिलने जाया करती थी। कभी मोहिनी साथ होती थी और कभी केवल कमल-किशोर ही होता था।

आज वह बहुत उदास हो रही थी और मोहिनी तथा कमल एक कान्फ्रेंस में कलकत्ता गए हुए थे। अत: उसने टेलीफोन से टैक्सी बुलवाई और लक्ष्मी से मिलने चल पड़ी।

भागीरथलाल कई मास से बम्बई गया हुआ था। विनोद बम्बई स्कूल में भरती हो गया था। अत: जब भी रजनी आती थी तो लक्ष्मी को बहुत प्रसन्नता होती थी। घर की गाड़ी बम्बई गई हुई थी। भुवनेश्वर ड्राइवर भी बम्बई में था। उसका परिवार दिल्ली में रहता था।

रजनी कोठी में पहुंची तो वह उस कोठी को जिसमें सदा चहल-पहल रहती थी, अब सब कमरे बन्द देख परिवार की दुर्व्यवस्था से दुःखी मन चाची लक्ष्मी के कमरे के बाहर जा आवाज़ देने लगी।

"चाची, मैं आई हूं।"

"आओ, रजनी।" लक्ष्मी ने ऐसे कहा कि मानो वह किसी प्रकार का आश्रय देख उस ओर लपकी हो, "आओ, तुम भी सुत लो।"

"क्या हुआ है, चाची? अति निरुत्साह बैठी हो।"

"यह तो तुम्हें विदित ही है कि सुन्दरी के प्रमोद से गर्भ ठहर गेया था। इसका पता प्रमोद के नवीन विवाह के उपरान्त हमें चला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यथा हम उसकी प्रमोद से सुलह कराने का यत्न करते। सुरेन्द्रमोहन, जिससे सुन्दरी का विवाह होने वाला था, न तो अपने को बच्चे के बनाने वाला मानता था और न ही सुन्दरी से विवाह करने पर तैयार हुआ था। सुरेन्द्रमोहन की बात का सुन्दरी ने भी अनुमोदन किया था।

"हमने उसे एक नर्सिंग होम में भरती करवा रखा था। उसके एक स्वस्थ लड़का हुआ था, परन्तु सुन्दरी को उन्माद के दौरे पड़ने लगे थे। उसकी चिकित्सा हो रही थी। आज समाचार आया है कि सुन्दरी ने अपनी और अपने बच्चे की हत्या कर ली है। भुवनेश्वर की पत्नी नर्सिंग होम में गई हुई है और इस दुर्घटना को पुलिस में जाने से रोकने के लिए यत्न कर रही है।"

रजनी इस घटना का समाचार सुन अपने आने का उद्देश्य भूल गई। परन्तु बात लक्ष्मी ने ही कर दी, "बम्बई में एक झगड़ा आरम्भ हो गया है। नवल ने अपना पृथक् पुस्तकों का काम आरम्भ कर दिया है। अब बम्बई में परिवार के तीन पुस्तकों के कार्य चल रहे हैं। एक तो परमानन्द के लड़कों ने खोल दिया है। वे इस आशा में बम्बई गए थे कि आखिर नवल के काम की नीलामी होगी और वे उस काम को कौड़ियों के दाम ले लेंगे। एक काम प्रमोद का है। यह काम खोलने के लिए नवल ने प्रमोद को उत्साहित किया था। अब नवल ने स्वयं काम आरम्भ कर दिया है।

"सबसे अधिक घाटे में प्रमोद है। उसके काम में उसका श्वसुर दीनानाथ हस्तक्षेप करता रहता है। वह एक सरकारी नौकर है और व्यापार के विषय में कुछ न जानता हुआ भी अपनी लड़की द्वारा प्रमोद को भड़काता रहता है। गुलाबसिंह से झगड़ा होने लगा है और तुम्हारे चाचा वहां गए हुए हैं।"

बम्बई की स्थिति का आरम्भ तो विवाह के उपरान्त ही हो गया था। प्रमोद का विवाह प्रमिला से रात ९ बजे सम्पन्न हुआ था। साढ़े दस बजे तक भोजन होता रहा और तदनन्तर पाण्डीचेरी जाने की तैयारी हो गई। मद्रास को हवाई जहाज़ रात के बारह बजे चलता था। ये प्रायः तीन बजे मद्रास में पहुंचे। मार्ग में जहाज़ बंगलौर में आधे घण्टे के लिए ठहरा था।

वे हवाई अड्डे के वेटिंग रूम में ही दो घण्टे व्यतीत कर मद्रास से पाण्डीचेरी ऐक्सप्रेस सात बजे पकड़ चल पड़े। सायंकाल वे बाबा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घर में जा पहुंचे। ब्रजलाल ने अपनी मोटरगाड़ी इनको लेने के लिए स्टेशन पर भेजी हुई थी ये आए तो सीधे बाबा के कमरे में उपस्थित हो गए।

ब्रजलाल को पहली ही दृष्टि में पति-पत्नी में अन्तर दिखाई दिया। प्रमोद तो साधारण रूप में हाथ जोड़ प्रणाम कर सामने बैठ गया। प्रमिला ने एक वयोवृद्ध व्यक्ति को बैठा देखा तो उसके सामने भूमि पर घुटनों के बल बैठ माथा भूमि से लगा प्रणाम करने लगी।

"उठो, बेटी।" ब्रजलाल ने कहा, "भगवान तुम्हें चिरायु करे और सदा श्रेष्ठ बुद्धि दे।"

प्रमिला उठी तो ब्रजलाल ने अपने सेक्रेटरी वैंकटेश्वरम् की ओर देखा। यह मोटरगाड़ी में नवदम्पती को लेने गया था और अब पथ-प्रदर्शन करता हुआ बाबा के कमरे मे ले आया था।

ब्रजलाल के देखने पर वह साथ के कमरे में गया और एक थाल में फल और पुष्पमालाएं ले आया ब्रजलाल ने मालाएं तो वर-वधू को पहना दी और फल उनके सामने रख दिए।

इस प्रकार शकुन देकर ब्रजलाल ने पूछ लिया, सुनाओ मार्ग में किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं हुआ?"

"नहीं, बाबा, सब प्रकार से ठीक है।"

"कितने दिन यहां रहने का विचार रखते हो?"

"बाबा, जितने दिन कहोगे।"

"अच्छी बात है। अभी तो यह भी देखना है कि तुम लोग रखने के भी योग्य हो अथवा नहीं? किसी प्रकार का तुमको कष्ट हो तो बताना। यथासंभव उसे ठीक करा दूंगा।"

बाबा अपने कथन का प्रभाव प्रमोद पर देखना चाहता था। उसके मुख पर किसी प्रकार के लक्षण न देख उनको स्नानादि करने के लिए कह दिया।

"रात भोजन के समय पर ब्रजलाल ने उनके माता-पिता के विषय में बात आरम्भ कर दी। उन्होंने पूछा, "सुनाओ, प्रमोद, पिताजी प्रसन्न हैं?"

"बहुत प्रसन्न प्रतीत होते हैं। मेरा अनुमान है कि उन्होंने मेरे विवाह पर एक लाख रुपये से ऊपर व्यय कर दिया है।"

"वह तो अपने सम्बन्धियों को सन्तुष्ट करने के लिए था। अभी तक वे उनके लड़के वालों के विवाह पर जाते रहे थे। यह पहला ही पारिवारिक समारोह था जो उन्होंने अपने घर में किया था यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम्हारे और बहू के प्रति सन्तोष का सूचक नहीं हो सकता।"

"वह तो बाबा, हमारे उनके प्रति व्यवहार से होगा। मैंने कुछ उच्छृंखलता की थी और उसका मुझे पश्चात्ताप है।"

"क्या उच्छृंखलता की थी तुमने?"

प्रमोद अपनी सुन्दरी के साथ सम्बन्ध की बात प्रमिला के सामने बताना नहीं चाहता था। इस कारण उसने अपनी बात बदलकर बता दी, "बाबा, मैं परिवार से बंटवारे से समझ रहा था कि मैं एक धनवान् व्यक्ति हो गया हूं और मुझे अपने माता-पिता की सहायता की आवश्यकता नहीं रही। मैं घर छोड़कर चला आया और मैंने अपने भाग की सम्पत्ति मांग ली।

"मुझे विश्वास था कि पिताजी नहीं देंगे। कम से कम मेरे वयस्क होने तक तो वे उसे अपने पास रखेंगे। साथ ही मेरे उनसे झगड़ा करने पर मुझे वे कष्ट भी देंगे। परन्तु मेरी मांग के उत्तर में न केवल रुपया आया, वरंच उनका स्नेहमय व्यवहार और संरक्षण भी मिलने लगा

"मैंने जिस प्रकार का जीवन स्वीकार किया था, उससे तो मैं अपने भाग की सम्पत्ति दो-तीन वर्ष में समाप्त कर देता, परन्तु उनके पथ-प्रदर्शन और संरक्षण से मैं अब यह समझने लगा हूं कि किस प्रकार सुख और शांति उपलब्ध की जा सकती है। कुछ महीने में ही अपने पांव पर चलने की योग्यता अपने में अनुभव करने लगा हूं।"

"मुझे कुछ ऐसा समझ आया था," ब्रजलाल ने कहा, "कि तुम्हारी उच्छृंखलता देख तुम्हारी मां ने तुम्हारा विवाह तुरन्त कर देना उचित समझा है। यह उनके सन्तोष का सूचक नहीं, वरंच उनकी विवशता का है।

"परन्तु बहू को देख तो मैं समझता हूं कि तुम्हारी मां की विवशता कुछ अच्छे ही परिणाम उत्पन्न करने वाली है। बहू ठीक है, परन्तु···" ब्रजलाल कुछ कहता-कहता रुक गया।

बाबा के अपनी बात पूर्ण करने की प्रतीक्षा में प्रमोद बाबा का मुख देखने लगा। ब्रजलाल कुछ कहना अवश्य चाहता था, परन्तु वह चुप ही रहा। उसने बात बदल दी। वह कहने लगा, "तुम भोजन करने के उपरान्त अब आराम करना। शेष कल बताऊंगा।"

इसपर प्रमोद और प्रमिला भी उत्सुक हो गए कि बाबा क्या जानते हैं और क्या कहना चाहते हैं। प्रमिला के मुख पर उत्सुकता साथ घबराहट भी थी, परन्तु उसने कुछ कहना उचित नहीं समझा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिस्टर वैंकटेश्वरम्, बाबा के सैक्रेटरी, की पत्नी भी सामने बैठी थी। इस कारण बात आगे नहीं चल सकी।

भोजनोपरान्त दम्पती अपने शयनागार में जाने के लिए उत्सुक थे। बाबा ने उन्हें आशीवाद दिया और गिरिजा, मिस्टर वैंकटेश्वरम् की पत्नी, दम्पती को उसके कमरे में ले गई।

वहां गिरिजा ने एक रहस्य का उद्घाटन कर दिया। उसने प्रमिला से पूछ लिया, "प्रमिला बहन, किसी नन्दिनी को जानती हो?"

प्रमिला नन्दिनी का नाम सुन चौंकी। अनायास उसके मुख से निकल गया, "हां, आप उनको कैसे जानती हैं?"

"वे मेरी सगी बहिन हैं।"

"सत्य? तब तो यहां अपने को सर्वथा आश्वस्त पाती हूं। नन्दिनी बहिन मुझे पिछले आठ वर्ष से पढ़ा रही हैं। वास्तव में मैं जो कुछ भी हूं, उनकी कृपा का परिणाम ही हूं।"

"उन्हें जब पता चला कि तुम लोग हनीमून के लिए यहां आ रहे हो तो उन्होंने तुम्हारे विषय में लिखा है।"

"अवश्य मेरी निन्दा की होगी?"

"नहीं, बहिन, निन्दा नहीं, प्रशंसा, बहुत प्रशंसा की है तुम मुझे अपनी उतनी ही हितैषी समझ सकती हो जितनी कि नन्दिनी को समझती हो।"

प्रमिला जितनी भयभीत बाबा के कमरे से आई थी, अब उतनी ही निर्भय अनुभव करने लगी थी।

अगले दिन दोनों सूर्य निकलने तक भी आलिंगनबद्ध पलंग पर लेटे थे। एकाएक प्रमोद को ज्ञान हुआ कि कहीं कोई आ गया और द्वार खटखटा उन्हें जगाने लगा तो भारी लज्जा की बात होगी। इस कारण वह उठा। प्रमिला भी उठ पड़ी।

प्रमोद ने अभी भी उसकी ओर लालसा-भरी दृष्टि से देखा तो वह पति के चरण-स्पर्श करने लगी। प्रमोद ने उसे पुनः अंग से लगा लिया।

रात-भर वह अपने पूर्व अनुभवों से इस अनुभव की तुलना कर रहा था। उसका इस में प्रथम अनुभव सुन्दरी का हुआ था। वह तो उसे कुछ ऐसा समझ आया था कि किसी सरोवर का बांध टूट पड़ा है और वह उस बांध में से इस प्रकार निकली हो जैसे कोई बन्दी बन्दीगृह से छूटता है। उसमें उन्माद था, परन्तु सरोवर का जल चुक जाने पर जैसे प्रवाह बन्द हो जाता है वैसे ही उन्माद शान्त हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गया था। जहां तक उसका अपना सम्बन्ध था वह तो बांध टूटने पर जल-प्रवाह से बहकर कहीं दूर अज्ञात स्थान पर ले जाकर पटक दिया गया था।

"इस दिशा में दूसरा अनुभव इरीन का था। वह सरोवर के बांध टूटने के समान प्रतीत नहीं हुई थी। उसे वह सरोवर में जल-विहार का निमंत्रण समझ आया था, परन्तु सरोवर ऐसा जिसमें जल घुटनों से गहरा न हो। इस छिछले जल में स्नान से वह तृप्ति नहीं पाता था और जल-विहार असन्तोष का कारण ही हुआ था।

यह तीसरा अनुभव पहले दोनों से विलक्षण था। यह न तो टूटे बांध से निकल रहे जल का उन्माद था और न ही छिछले जल में जल-विहार का सा। इसमें तो कुछ ऐसा अनुभव हुआ था जैसेकि एक छोटी-सी नदी है। नदी में जल तो गहरा है, परन्तु इसका पाट छोटा-सा ही है। नदी प्रशान्त और मौन एक बड़े-से नद में बिना होहल्ला किए आ मिली है। नदी और नद का जल ऐसे मिल रहा है कि संगम-स्थान पर भी दोनों में अन्तर प्रतीत नहीं हो रहा है।

रात-भर के हेल-मेल के उपरान्त उठे तो पुनः परस्पर लिपट गए। प्रमोद ने पूछ लिया, "प्रसन्न हो?"

"कह नहीं सकती।"

"क्यों? प्रसन्नता में कुछ सन्देह है?"

"सन्देह करने की सुध नहीं।"

"तो किस बात की सुध है?"

"यह देखने की भी सुध नहीं।"

प्रमोद को समझ आया कि यह बनावट है। इसपर उसने कह दिया, "कुछ उदास प्रतीत होती हो।"

"किसके लिए?"

"मां से मिलने के लिए।"

प्रमिला मौन थी, परन्तु प्रमोद को अनुभव हुआ था कि वह उससे और कसकर लिपट गई है। उसका हृदय धक-धक कर रहा था।

"क्यों, भय लगने लगा है?" प्रमोद ने पूछ लिया। प्रमिला ने प्रमोद के मुख पर देखा। प्रमोद उसे देख चकित रह गया।

"अरे! तुम तो रो रही हो?"

"जी, नहीं। यह प्रसन्नता का उद्रेक है।"

"तब तो ठीक है।"

"पर मैं एक बात उस समय से ही विचार कर रही हूं जब से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैंने आपकी माताजी तथा आपको देखा है।"

"सत्य? तो बता दो, जिससे मैं भी तुम्हारे विषय में विचार करने लगूं।"

"जैसे जब किन्हीं दो वस्तुओं के गुणों में अन्तर अधिक होता है तो तुलना भली भांति हो सकती है, वेसी ही वह बात आपको देखने पर लगी थी। ज्यों-ज्यों मैं समीप आती गई तो आप लोगों की दूसरों से भिन्नता प्रखर होती गई। जैसे काले की तुलना में सफेद अधिक निखरता है वैसे ही आप निखरते प्रतीत हुए हैं।"

"परन्तु किसकी तुलना में?"

"जिनको छोड़ आई हूं।"

"क्या मतलब? तुम मेरी मां की अपनी मां से तुलना कर रही हो।"

"जी। और आप सबकी अपनों से। रात वह मद्रासी स्त्री, जो बाबा के सेक्रेटरी की पत्नी है, मेरी ट्यूट्रेस के विषय में बताने लगी थी। वह कहती थी कि नन्दिनी बहिन ने इसको पत्र लिखा है। इससे मैं अपने को आश्वस्त समझने लगी हूं। एक रहस्य है; बहुत ही काला है, और आप उसकी तुलना में अति उज्ज्वल दिखाई दिए हैं।"

प्रमोद वस्त्र पहनने लगा था और प्रमिला की बात को एक कलाकार के कथन की भांति मुख्यतः श्रृंगार और वस्तुतः सामान्य मान मुस्कराता हुआ उसकी ओर देख रहा था। प्रमिला अभी भी गम्भीर भाव में थी। वह भी वस्त्र, जो पलंग के नीचे गिर गए थे, उठाकर नीचे उतर पहनने लगी थी। प्रमोद उसको अवस्त्र सामने खड़े वस्त्र पहनते देख बोला, "प्रमिला डीयर, तुम्हारे मुख को देख मैं यह समझा हूं कि मैं तुम्हें पूर्ण रूप से सन्तुष्ट नहीं कर सका। अब तो चलना चाहिए। स्नानादि से अवकाश पा तनिक घूम आएंगे। शेष तुष्टिकरण रात के समय ठीक रहेगा।"

प्रमिला मुस्कराई और बोली, "मैं सन्तुष्ट हूं। इससे अधिक सन्तोष क्या होता है, यह मैं जानती नहीं। परन्तु मैं कुछ और ही विचार रही थी। आप उसको गलत समझ रहे हैं।

"अच्छा, कुछ तो बता ही दूं कि जब मैं काले के समक्ष उज्ज्वल की तुलना कर रही थी तो मैं क्या विचार कर रही थी। शेष तो अब गिरिजाजी की बहिन नन्दिनी से ही पता चलेगा। मैं वह कुछ नहीं हूं जो आप सब लोग समझ रहे हैं।"

"ओह।" प्रमोद बाथरूम में जाता-जाता रुक गया, "तो तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लड़की नहीं हो?"

प्रमिला हंस पड़ी और बोली, "रात-भर क्या अनुभव करते रहे हैं?" इतना कह उसने पूछ लिया, "बाथरूम में आप जाएंगे अथवा मैं हो आऊं?

प्रमोद ने उसकी बांह पकड़कर उसे रोक लिया और कहा, "न तुम, न मैं। पहले यह बताओ कि प्रमिला क्या है? मैं तो देखता हूं कि यह लड़की है। मेरी पत्नी है, रसमयी है, सुन्दर है और हंसमुख भी है। क्या यह गलत है?"

प्रमिला हंसती हुई गम्भीर हो गई और बोली, "देखिए जी। मैंने कहा है कि कुछ मैं बता देती हूं। शेष नन्दिनी बहिन को मिलकर पूछिएगा। और मैंने जब यह बताया कि मैं वह नहीं जो आप समझ रहे हैं तो आपको कुछ तो समझ जाना चाहिए।"

"पर मैं कुछ नहीं समझा।"

"अच्छा, थोड़ा और बता देती हूं। मैं आपके सास-श्वसुर की लड़की नहीं।"

"तो किसकी लड़की हो?"

"अब तो आपके पिता और माता की।"

"तो इसमें तुमने बताया क्या है? यह तो मैं पहले भी जानता था।" इतना कहने पर भी प्रमोद गम्भीर हो विचार करने लगा था कि यह विचित्र लड़की है, जो पहली भेंट के उपरान्त ही पहेलियां डालने लगी हैं। इस विचार में उसकी पकड़ ढीली हुई तो प्रमिला भाग बाथरूम में चली गई।"

8

प्रातः के अल्पाहार के उपरान्त प्रमोद और प्रमिला बाबा की मोटरगाड़ी में पाण्डीचेरी और योगिराज अरविन्द आश्रम देखने चले गए। वे लौटे तो मध्याह्न के भोजन के पूर्व प्रमिला गिरिजा के पास नन्दिनी के विषय में और पूछने चली गई और प्रमोद बाबा के पास जा पहुंचा। मिस्टर वैंकटेश्वरम् बाबा को गीता और उसपर अरविन्द की टीका सुना रहा था। जब पाठ समाप्त हुआ तो बाबा ने पूछा, "कैसी लगी है बीवी?"

"बाबा, अच्छी है। पसन्द है। मैं ···"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"देखो, इसकी प्रशंसा इसको शिक्षा देने वाली ट्यूट्रेस ने भी की है। वह इसे पिछले आठ वर्ष से पढ़ा रही है। वह मिसेज़ वैंकटेश्वरम् की छोटी बहिन है और उसको जब पता चला कि तुम यहां आ रहे हो तो उसने एक पत्र लिखा है।

"मैं वह पत्र तुमको पढ़ा देना चाहता हूं। यही मैं रात कहने वाला था, परन्तु उसको मैंने इस समय के लिए स्थगित कर दिया था।"

ब्रजलाल ने अपने समीप रखी सन्दूकची को खोल उसमें से एक पत्र निकालकर प्रमोद के हाथ में दे दिया।

उसमें लिखा था, "मुझे ज्ञात हुआ है कि वह लड़की जिसे मैं पिछले आठ वर्ष से पढ़ा रही थी, आपके यहां हनीमून मनाने आ रही है। मैंने यह ठीक समझा है कि उसका पूर्ण इतिहास और उसके विवाह का वृत्तान्त लिख दूं। मुझे लड़की से स्नेह हो गया है। इस कारण उसके भले-बुरे में रुचि उत्पन्न हो गई है। मैं चाहती हूं कि उसे उस गड्ढे हे बचाने का यत्न किया जाए जिसमें उसके गिर जाने की सम्भा-बना है।

"प्रमिला एक वेश्या की लड़की है। वह जब मां के गर्भ में थी तब मां के मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वह पेशा छोड़ किसी भले व्यक्ति का आश्रय लेने चल पड़ी उसे आश्रय मिला मिस्टर दीनानाथ से। वे उसे अपने घर ले आए और प्रमिला का जन्म हुआ। तदुपरान्त इसका पालन-पोषण होने लगा। लड़की दो वर्ष की थी कि इसकी मां का देहान्त हो गया।

"यह सब कथा मुझे दीनानाथ की पत्नी ने बताई है। जब मैं लड़की को पढ़ाने के लिए नियुक्त हुई तो लड़की दस वर्ष की थी। साधारण पढ़ी-लिखी थी। इसपर भी इसका सौन्दर्य निखरने लगा था। ज्यों-ज्यों यह शरीर से सुन्दर होती जाती थी, यह बुद्धि में भी प्रखर हो रही थी। इसके अभिभावक इसे एक निधि समझ इसको प्रत्येक प्रकार से अच्छी शिक्षा दिलाने लगे।

"लड़की सुशील और बुद्धिमान है। वैसे भी मैंने इसमें धर्म की भावना भरने का यत्न किया है। पतिव्रत धर्म और सभ्य समाज में रहने की बातें इसके मन पर चित्रित करती रही हूं, परन्तु इसके माता-पिता इसके मन पर सदा यह अंकित करने का यत्न करते रहे हैं कि उसे उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। लड़की दीनानाथ और उनकी पत्नी का बहुत आदर करती है। वह अपने जन्म की कथा जान उनके प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृतज्ञता भी अनुभव करती है।

"एक नवलकिशोर है जो, मुझे पता चला था कि आपके बाबा का सम्बन्धी है। वह प्रमिला के विवाह में बहुत रुचि लेता रहा है और उसकी दीनानाथ तथा उसकी पत्नी से हुई बातों को मैं सुन पाई तो मेरे मन में आशंका हुई।

"नवलकिशोर कह रहा था, 'यदि प्रमिला के घर में कोई सन्तान हो जाए तब यह ऐक्शन होना चाहिए। एक बार भागीरथ और उसके सुपुत्र को मार्ग से हटा सकें तो लाखों की सम्पत्ति की स्वामी प्रमिला की सन्तान हो जाएगी। प्रमिला अथवा आपको उसका गार्जियन बनाया जा सकता है और फिर पौ बारह है।'

"दीनानाथ की पत्नी कुछ डर रही थी, परन्तु नवलकिशोर ने कह दिया, 'प्रमिला फंस भी सकती है और फांसी भी पा सकती है। बच्चा तो होगा और उसका अभिभावक होना ही मुख्य बात है।'

"परन्तु यह प्रमिला कर सकेगी?" यह दीनानाथ का प्रश्न था। नवल ने कह दिया, यह तो निर्भर करता है इस बात पर कि आप उसके मन से पति का मोह कैसे दूर कर सकते हैं।

"'विवाह के उपरान्त ही आप प्रमोद के अनिष्ठावान पति होने की बातें बताते रहेंगे और उसको रूप में हीन, शरीर में दुर्बल भर बुद्धि से मूर्ख बताएंगे तो वह उसके मन से उतर जाएगा।'

"बात यह हुई कि मैं गई थी प्रमिला की मां से अपना वेतन लेने और वे अपने कमरे में बैठे उक्त गोष्ठी कर रहे थे। मेरे कान में प्रमिला की सन्तान और ऐक्शन की बात पड़ी तो मैं द्वार से बाहर खड़ी हो सब बात सुन पाई थी। उनकी बात पूर्ण होने से पहले ही मैं दबे पांव वहां से चली आई, जिससे उनके रहस्य की ज्ञाता होने से मेरी जान पर न कुछ बन आए। कम से कम मेरा काम तो वहां से छूट सकता था।

"ये मुझे दो सौ रुपया प्रति मास देते हैं। मैं अभी तक भी उनकी सेवा में हूं। विवाह के उपरान्त वे मेरी आवश्यकता नहीं रखेंगे। तब तक के लिए मैं लड़की के साथ रहना चाहती थी।

"यह पत्र तुम अपने बाबाजी को दिखा देना और मेरा विचार बताकर उनको कह देना कि जो उचित समझें, करें . . ."

जब प्रमोद पत्र पढ़ चुका तो बाबा ने पूछा, "अब बताओ, क्या चाहते हो?"

प्रमोद को अब प्रमिला का उसके अंग लगे हुए आंखें भर लेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और फिर कुछ अपने विषय में संकेत करने की बात समझ आ गई। अभी वह नहीं समझा था कि उसे इस षड्यन्त्र का ज्ञान है अथवा नहीं। अपने जन्म की कथा तो वह जान गई है, परन्तु उसके माता-पिता की यह दुर्भावना भी क्या उसे ज्ञात है? और इसका ज्ञान है तो वह कहां तक अपने माता-पिता की योजना में सम्मिलित है, यह विचारणीय है।

ब्रजलाल ने कहा, "यह पत्र तुम वापिस कर दो। उसे इसके विषय में कुछ मत बताओ। उसके साथ ऐसा व्यवहार रखो जिससे वह यह न जान सके कि तुम उसपर सन्देह करते हो। उसको अपने अनुकूल बनाने का यत्न करो

"बम्बई जाकर तुम उसे अपने माता-पिता से मिलने मत दो और अपने को सावधान रखो। मैं समझता हूं कि यदि तुम कुछ भी बुद्धि रखते हो तो अपनी पत्नी को अपना बना सकोगे। यह प्रकृति का नियम है कि पत्नी पति की होती है, माता-पिता की नहीं। कुछ अपवाद देखे जाते हैं, परन्तु वे नियम नहीं। उनमें भी प्रायः पति की मूर्खता ही मुख्य कारण होती है।

"यह संभव है कि उसे अभी तक इस षड्यन्त्र का ज्ञान ही न हो।

"एक बात और। मैं समझता हूं कि तुम इसकी शिक्षा जारी रखने के लिए नन्दिनी को अपने यहां नौकर रख लो और उसके द्वारा इसको अपने अनुकूल बनाने का यत्न करते रहो।

"नन्दिनी एक बार यहां अपनी बहिन के पास आकर रह गई है। वह एक अच्छी स्त्री है। यदि चाहोगे तो तुम इस षड्यन्त्र से निकल सकोगे।"

"हां, नवल से बचकर रहो। उसपर से मुकदमा उठ जाए तो वह अपना काम-धन्धा करने लगेगा और फिर वह तुम्हारे विपरीत षड्-यंत्र करने का अवसर ही नहीं पाएगा।"

प्रमोद ने बताया, "इतना तो उसने अभी बता दिया है कि वह दीनानाथजी की लड़की नहीं है।"

"देखो, उससे प्रेममय व्यवहार रखोगे तो तुम इस षड्यन्त्र का पता पा जाओगे। यत्न करो कि वह स्वयं ही किसी प्रकार इस षड्यन्त्र का रहस्य जान जाए। कदाचित् नन्दिनी इसमें सहायता करे और फिर तुम दीनानाथ और कम्पनी से छुटकारा पा सको।"

इस दिन कि उपरान्त एक दिन प्रमिला ने अपने जन्म की पूर्ण कथा जो वह जानती थी, प्रमोद को बता दी। उसने अपने विवाह के उद्देश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विषय में कुछ नहीं बताया।

बम्बई पहुंच उसने यह कह कि प्रमिला की शिक्षा अधूरी है, इस कारण वह उसकी शिक्षा उनके घर आकर चलाए नन्दिनी को बुलवाया। एक दिन प्रमोद ने नन्दिनी से कह दिया कि जो पत्र उसने अपनी बहिन को लिखा था, वह उसने पढ़ा है और वह चाहता है कि किसी प्रकार से वह प्रमिला को बता दे और फिर प्रमिला दीनानाथ इत्यादि से मेल-जोल बन्द कर दे।

यह हुआ। इससे प्रमिला के बम्बई लौटने के एक सप्ताह के भीतर ही उसके और दीनानाथ तथा उसकी पत्नी में लकीर खिंच गई। दीनानाथ की पत्नी उसके साथ घनिष्ठता बनाए रखने का यत्न करती रहती थी। वह उसपर यह प्रकट करती रहती थी कि उसने और उसके पति ने प्रमिला के लिए बहुत धन और परिश्रम व्यय किया है।

समय पाकर प्रमिला के गर्भ ठहर गया और दीनानाथ की पत्नी प्रमिला को अपने घर ले जाने का यत्न करने लगी। प्रमिला ने इस बात से इन्कार कर दिया। इसपर वह और दीनानाथ प्रमोद के घर में अधिक और अधिक आने लगे।

जब यह निश्चय हो गया कि प्रमिला गर्भवती है तो लक्ष्मी दिल्ली से उसके पास रहने के लिए आ गई। प्रमोद ने उसे भी अपने रहस्य में सम्मिलित कर लिया। इससे पहले तो लक्ष्मी चिन्ता अनुभव करने लगी, परन्तु फिर प्रमिला के व्यवहार से आश्वस्त हो गई और दीनानाथ तथा उसकी पत्नी से आश्वस्त रहने लगी। उनके घर से आई हुई खाने की कोई वस्तु भी प्रयोग नहीं की जाती थी। अब तो प्रमिला, नन्दिनी और लक्ष्मी भी सतर्क थीं।

इस समय तेक नवल से सुलह हो चुकी थी और उसने अपनी पुरानी दुकान पर काम आरम्भ कर दिया था। गुलाबसिंह अब सपरिवार बम्बई में रहता था और वह पुस्तक-व्यवसाय में सिद्धहस्त हो गया था। वास्तव में नवल का वह स्थानापनन बन गया था, परन्तु नवल अब प्रमोद के काम में बाधाएं खड़ी करने लगा था।

प्रमोद के घर लड़का होने तक लक्ष्मी बम्बई में ही रही। नवल के व्यवसाय में विरोध के कारण भागीरथ ने बम्बई में रहना आरम्भ कर दिया। अब लक्ष्मी दिल्ली में ही रहती थी। सरस्वती कालेज में पढ़ती थी और रजनी स्वयं गर्भस्थिति होने के कारण सरस्वती से मेल-जोल नहीं रख सकी थी। इसी स्थिति में रजनी एक दिन चाचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भागीरथलाल को नवल से तटस्थ रहने के लिए कहने आई थी, परन्तु सुन्दरी की दुर्घटना की बात सुन उस दिन कुछ कहें बिना ही लौट गई थी।

नर्सिंग होम वालों ने सुन्दरी की अपने बच्चे की और अपनी हत्या कर लेने की बात दबा दी थी। यह लिखा गया कि सुन्दरी, एक विधवा, के प्रसव हुआ और बच्चा और ज़च्चा दोनों का देहान्त हो गया। बच्चे को यमुना में प्रवाहित कर दिया गया और सुन्दरी का संस्कार कर दिया गया।

लक्ष्मी प्रतीक्षा कर रही थी कि सरस्वती बी० ए० पास कर ले तो वह तीनों बच्चों के साथ बम्बई में जा रहे और वे अअपना व्यवसाय वहां ही कर लें।

9

"देखो मां, यदि तुमने इस बात पर बहुत बल दिया तो मैं तुम्हारा यहां आना भी बन्द करा दूगी। तुम किसी प्रकार का मेरां अनिष्ट करना चाहती हो, अत: तुम सबके साथ सम्बन्ध-विच्छेद हो जाएगा। आजकल मेरे श्वसुर यहां हैं और उनको यह बात पता चली तो आप सबको सरकारी क्षेत्रों में भी बदनाम करवा देंगे।" प्रमिला अपनी मां को समझा रही थी।

"पर मैं तो तुम्हारे ही लाभ की बात कह रही हूं।"

"मैं सब समझ रही हूं। मुझे यह साधु-सन्तो की विभूतियों की आवश्यकता नहीं। इनके बिना ही वे मेरे सर्वथा अनुकूल हैं।"

"अनुकूल हैं तो वे हमारे घर क्यों नहीं आते और तुम्हें वे वहां जाने क्यों नहीं देते?"

"वह इसलिए कि मैं स्वयं वहां जाना नहीं चाहती।"

"तो तुमने ही उसे हमारे विपरीत कर रखा है? बहुत कृतघ्न हो तुम।"

"मां, तुम यह बताओ कि मेरे पालन-पोषण का तुम लोग क्या मूल्य लगाते हो?"

"यह मूल्य रुपयों में नहीं लगा सकते।"

"तो किस बात में लगेगा?"

"हमारा तुमसे स्नेह है और हम तुमको अपने घर में रखना चाहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं। यह तुम जानती हो कि तुम्हारा कोई भाई नहीं है। अब तुम्हारे लड़का हुआ है और हम उसे गोद लेकर अपने जीवन की रिक्तता भरना चाहते हैं।"

"मां, उसे कुछ बड़ा हो जाने दो। तब तुम उसे अपने घर भी रख सकोगी और यदि ईश्वर ने कोई भर दे दिया तो एक तुम पक्के रूप में अपने घर रख लेना।"

प्रमिला की मां, बिना यह बताए कि वह अपने मन में क्या रखती है और प्रमिला तथा प्रमोद के साथ घनिष्ठता बढ़ाने का यत्न क्यों कर रही है, मिलने आती थी। प्रमिला भी यह बताए बिना कि वह मां तथा पिता पर किसी प्रकार, का सन्देह करती है, व्यवहार रखती थी। मां प्रमिला को निरन्तर पति को अपने वश में करने के लिए यन्त्र, मन्त्र, विभूति इत्यादि देने के लिए लाती रहती थी। प्रायः प्रमिला लेने से इन्कार करती रहती थी। कभी ले भी लेती तो उसे अग्नि में डाल दिया करती थी।

मां ने आज कुछ सदा से अधिक बल दिया था और प्रमिला ने भी बात सबके समक्ष ले जाने की धमकी दी थी। इससे मां अति निराश घर लौटी थी और अपने पति से सम्मति करने लगी थी।

दीनानाथ ने पूर्ण वार्तालाप सुनकर कह दिया, "इससे तो यह पता चलता है कि उसे हमारी नीयत पर सन्देह हो गया है। वह यह समझने लगी है कि हम किसी प्रकार उसके पति को हानि पहुंचाना चाहते हैं।"

"मुझे भी कुछ यही समझ आया है।"

"तो अब वहां मत जाया करो। कभी जाओ भी तो उसके लिए कुछ मत ले जाया करो। मैं अब किसी दूसरी योजना से काम करने का यत्न करूंगा।"

इसके उपरान्त दीनानाथ भागीरथ से मेल-जोल बढ़ाने लगा। स्वाभाविक रूप में उसका मेल-जोल प्रमोद से भी बढ़ने लगा।

प्रमोद सवेथा सतर्क था। वह सास-श्वसुर से मेल-जोल तो रखता था, बहुत आदर से बातचीत करता था, परन्तु सदा सावधान रहता था। एक दिन पिता-पुत्र एक अंग्रेजी पिक्चर देखने रात के दस बजे के शो में गए थे और उनकी अपनी गाड़ी सिनेमा हाल के बाहर प्रतीक्षा में खड़ी थी। चित्र एक रूसी उपन्यास पर आधारित था और स्वाभाविक रूप में भारत के समाचारपत्रों की एक श्रेणी ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उस प्रशंसा से प्रभावित भागीरथलाल और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रमोद भी देखने जा पहुंचे थे।

चित्र देखने नवल भी आया हुआ था, परन्तु वह दूर की पंक्ति कर बैठा था। मध्यावधि विश्राम-काल में वह भागीरथलाल को प्रमोद के साथ बैठा देख उसके पास आ गया। भागीरथ उसके साथ उठकर हाल के बाहर साथ के कॉफी हाउस में चला गया। प्रमोद नहीं आया

कॉफी पीते हुए नवल ने कहा, "दादा, प्रमिला की मां को अपने घर जाने से मना कर दिया है क्या?"

"नहीं तो।"

"वह कहती है कि उसे कह दिया गया है कि वह वहां न आया करे।"

"न मैंने कहा है और न ही किसीको कहते मैंने सुना है। घर कभी इस बात की चर्चा भी नहीं हुई।"

"यह बात प्रमिला ने अपनी मां को कही है।"

"जब मैं इस बार आया ही था तो प्रमोद की बीवी ने मुझसे एक बात पूछी थी: वह पूछने लगी, पिताजी, सुना है कि आप अपने परिवार वालों से अपना विशेष सम्बन्ध मानते हैं और परिवार की बहुओ से भी परिवार की सन्तान का सा ही व्यवहार करते हैं?'

"मैंने कहा था, 'हां। ऐसा ही समझता था, परन्तु ज़माने की ठोकरों ले मेरे विचारों में परिवर्तन कर दिया है। अब मैं यह समझने लगा हूं कि इस काल में आर्थिक सम्बन्धों की महिमा है। परिवार और स्वभाव के सम्बन्ध गौण हो गए हैं।'

"मैंने उसे एक कहानी सुनाई थी । मैंने बताया, 'प्रमिला बेटी, इस शताब्दी के आरम्भ की बात है। मेरे बाबा ब्रजलाल आठवीं श्रेणी तक पढ़े थे और अपनी दुकान पर काम करने लगे थे। उस काल में अंग्रेज़ी शिक्षा की महिमा अभी प्रारंभिक अवस्था में थी। इसपर भी लड़कियों के पिता किसी बाबू दामाद की लालसा करने लगे थे। यह लालसा स्त्रियों में अधिक थी।'

"'बाबा ब्रजलाल का विवाह एक धनी-मानी और सरकारी पदवी पर नियुक्त एक डिप्टी एकाउंटेण्ट जनरल लाला चुन्नीलाल की लड़की से हो गया। इस विवाह से सब चकित थे। यह ठीक है कि बाबा के बाबा की का खूब चलती थी, परन्तु यह तत्कालीन पढ़े-लिखों की अभिरुचि के विपरीत था। बाबा ब्रजलाल बताया करते हैं कि वे एक दिन ससुराल गए हुए थे तो चुन्नीलालजी ने अपने एक मित्र के सम्मुख यह स्वीकार किया था कि वे बिरादरी में लड़की का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सम्बन्ध बनाना अपनी लड़की और उसकी सन्तान के लिए अधिक हितकर मानते हैं। बिरादरी के बाहर लड़की देना वे लड़की को अन्धे कुएं में धकेल देना ही समझते थे।

"'परन्तु, प्रमिला बेटी, यह बात थी सन् 1903 की। इन पैंसठ वर्षों में सागर की बहुत तरंगों ने भारत के किनारों पर ठोकरें मारी हैं और भारत के की रूप-रेखा को बहुत बदला है। अरब तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए बिरादरी से बाहर, परन्तु धनी के लड़के को अपनी लड़की देना स्वीकार किया है।'

"'पर पिताजी। प्रमिला ने कहा, 'आपकी भावना तो अभी वही प्रतीत होती है। सुना है कि नवल चाचा मुकदमा हार रहे थे और आपने उन्हें उनकी पूर्ण सम्पत्ति, जो आपके विचार से उनके भाग की बनती थी, दे दी है।'

"'हां। मेरा जन्म सन् 1928 में हुआ था और ऐसा प्रतीत होता है कि मेरी दीदी, डिप्टी चुन्नीलालजी को लड़की ने अपने माता-पिता की आत्मा मुझमें डाल दी थी। बाबा ब्रजलाल कहते थे कि मैं तो डिप्टी चुन्नीलाल की आत्मा का ही नवीन शरीर हूं।'

"'तो एक बात करिए।' प्रमिला ने भूमि की ओर देखते हुए कहा, 'लाल दीनानाथजी ने एक आवारा मां की लड़की का पालन-पोषण कर आपके घर भेज दी है। आप उस दासी के पालन-पोषण का मूल्य उनको दे दीजिए।'

"मैं समझा नहीं। इसपर प्रमिला ने अपनी जन्मकथा आंखों से आंसू बहाते हुए सुना दी। मैंने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए प्यार दे यह कहा था, 'रोओ नहीं बेटी, अपनी मां से पता करना कि वह कितना मूल्य आंकती है तुम्हारा?'

"उसने सिसकियां भरते हुए कहा कि मैं उसका क्या मूल्य उचित समझता हूं?"

"उसको इस प्रकार व्याकुल देख मैंने कहा था, 'मैं तुम्हें अमूल्य मानता हूं। हमारे धर्मशास्त्रों में सब धर्मों से महान सत्यधर्म को माना गया है। तुम उसका पालन कर रही हो। देखो, प्रमिला,' मैंने उससे कहा था, 'मेरी सम्पत्ति इस समय बीस लाख के लगभग है। वह मैं सब के सब दे सकता हूं यदि इतना लेकर भी तुम्हारे माता-पिता सन्तुष्ट हो सकें।'

"'पिताजी, यह बहुत अधिक है। मैं अपने को इतनी मूल्यवान नहीं समझती। इसपर भी पूछूंगी। यदि इतना लेकर भी वे मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पल्ला छोड़ दें तो मैं अपने को हल्का अनुभव करूंगी।'

"'बेटी प्रमिला,' मैंने कहा, पूछना। मेरे लिए यह सब कुछ देकर भी तुम्हारी जैसी बहू घर में पाना सस्ता सौदा ही है।'

"परन्तु उसने बताया नहीं कि उसकी मां ने क्या उत्तर दिया है?"

इसी समय विश्राम-समाप्ति की घण्टी बजी। भागीरथ ने कॉफी का दाम दिया और हाल में चले गए। हाल में अंधेरा हो चुका था। ज्योंही इन्होंने हाल में पप रखा कि 'हां' की आवाज़ भागीरथ के मुख से निकली और वह वहीं ढेर हो गया।

कोई हाल के बाहर भागा। लोगों ने 'लाइट-लाइट' का शोर मचा दिया। परन्तु इसके पूर्व एक और जोर की चीख की आवाज़ आई और प्रकाश हो गया।

भागीरथ और प्रमोद दोनों के पेट में छुरे घोंपे गए थे। प्रमोद अपनी सीट पर ही घायल पड़ा था और भागीरथ द्वार के समीप। नवल भागीरथ को उठाने और बाहर ले चलने का यत्न कर रहां था।

सिनेमा हाल वालों ने द्वार बन्द कर दिए थे और पुलिस को सूचित कर दिया था। हाल में उस समय तीन पुलिस कान्स्टेबल थे। उन्होंने हाल में घोषित करवा दिया, "कोई बाहर जाने का यत्न न करे। कोई भागता हुआ देखा गया तो पकड़ लिया जाएगा।"

एक व्यक्ति प्रमोद वाली पंक्ति से भागते हुए कुर्सी से पांव अटक जाने से गिरा था और उठते-उठते प्रकाश हो जाने के कारण सन्देह में पकड़ लिया गया था।

भागीरथ की अवस्था शोचनीय थी। प्रमोद पर छुरा पेट में जाने के स्थान पर जांघ पर पड़ा था। यह स्पष्ट था कि हत्यारे दो थे। एक जो प्रमोद की पंक्ति के पास पकड़ा गया था, उसपर प्रमोद की हत्या करने के प्रयत्न का आरोप था और भागीरथ की हत्या करने वाला स्थान पर पकड़ा नहीं गया। गेटकीपर ने बताया कि एक व्यक्ति द्वार खोल भाग गया था। अंधरे में वह उसका मुख नहीं देख सका था।

भागीरथ और प्रमोद को शीघ्रातिशीघ्र हस्पताल पहुंचाया गया। प्रमिला को सूचना भेजी गयी तो बह भागी हुई वहां पहुंची। दिल्ली सूचना की गयी तो अगले दिन हवाई जहाज़ से लक्ष्मी, सरस्वती और विनोद आ पहुंचे।

भागीरथ की अवस्था तीन दिन तक डावांडोल रही। बाहरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त चढ़ाया गया और ऑक्सीजन से जीवन की डोर पकड़ने का यत्न किया जाता रहा।

तीसरे दिन रजनी, देवेन्द्र और मोहिनी देवी बम्बई आ पहुंचे। ब्रजलाल और उसके सेक्रेटरी मिस्टर वैंकटेश्वरम् तथा उनकी पत्नी भी आ गई।

तीन दिन के उपरान्त भागीरथ ने आंखें खोलीं और फिर उसके बचने की आशा बनने लगी।

प्रमोद दो-तीन दिन के उपरान्त हस्पताल से घर पहुंच गया। लक्ष्मी अपने पति के पास हस्पताल में ही रही। पांचवें दिन भागीरथ का बयान हुआ। परन्तु उसके बयान से कुछ सिद्ध नहीं हुआ। प्रमोद ने एक बात कही कि वह व्यक्ति जिसे पकड़ा गया है, नवलकिशोर के साथ की सीट पर बैठा था और नवलकिशोर के पिताजी के साथ हाल से बाहर जाते ही वह व्यक्ति उठकर उसके समीप आ खड़ा हुआ था।

उस व्यक्ति की जेब से जो टिकट निकला था, उसका नम्बर नवल के टिकट के नम्बर के बाद का ही था।

पुलिस ने कई लोगों को पकड़ा था, परन्तु केवल एक को ही रोक रखा था। वह एक घनी दाढ़ी-मूंछ रखे हुए व्यक्ति था और उसकी पहचान कराई गई तो भागीरथ ने देखा कि वह कान्तिलाल था।

10

घटना के समय सिनेमा हाल में बैठे एक व्यक्ति ने यह बयान दिया था कि उसने एक घनी दाढ़ी-मूंछ रखे व्यक्ति को घटना के उपरान्त भागकर बाहर जाते देखा था। कान्तिलाल को पुलिस ने नवलकिशोर के घर से निकलते देखा और उसकी घनी मूंछ-दाढ़ी देख उसे पकड़ लिया। नवल पर पुलिस को पहले भी सन्देह था। भागीरथ के घरवालों ने नवल के भागीरथ तथा परिवार के प्रति द्वेष की बात पुलिस में लिखाई थी, परन्तु पुलिस के पास कोई प्रमाण नहीं था जिससे कि वह नवल पर हाथ रखती। इसपर भी नवल के पीछे खुफिया पुलिस के लोग लगे थे। यह दाढ़ी-मूंछ वाला व्यक्ति पकड़ा गया तो उसकी पहचान के लिए उसे हस्पताल में भागीरथ के सामने लाया गया। घटना को पन्द्रह दिन हो चुके थे और भागीरथ का घाव भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहा था।

जब पुलिस कान्ति को लेकर भागीरथ के सामने आई तब कमलकिशोर और मोहिनी मिलने आए हुए थे। रजनी और देवेन्द्र आने वाले थे और मोहिनी उनकी प्रतीक्षा भागीरथ के कमरे में ही कर रही थी।

पुलिस ने कान्ति को भागीरथ के सामने खड़ा किया तो भागीरथ की आंखों में चमक दौड़ गई। परन्तु शीघ्र ही वह चमक धीमी पड़ गयी और भागीरथ ने कह दिया, "यह किसको लाए हैं मेरे सामने?"

"आप इसे जानते हैं?"

भागीरथ ने सिर हिला उसे पहचान सकने में असमर्थता प्रकट कर दी, "मुझे स्मरण नहीं आ रहा कि मैंने इस व्यक्ति को कहीं देखा हो।" पुलिस वालों ने नोट कर लिया और निकल गए।

जब पुलिस के लोग चले गए तब मोहिनी ने कहा, "चाचाजी, यह तो आपका भतीजा कान्तिलाल है।"

भागीरथ मुस्कराया और चुप कर रहा। मोहिनी के मस्तिष्क में बवण्डर उठा रहा था। वह विचार कर रही थी कि भागीरथ चाचा किसीके साथ अनुचित लगाव रखते हुए दूसरों के साथ अन्याय कर रहे हैं। परन्तु रोगी के सामने वह चुप रही।

एकाएक वह उठी और वहां ही बैठी लक्ष्मी से कहने लगी, "चाची, रजनी ने यहां मिलने के लिए कहा था। वह आई नहीं और अब मैं जा रही हूं। उसे कहना कि उसके होटल में हम सायकाल चाय के समय आएंगे।" इतना कह कमल के साथ वह चली गई।

लक्ष्मी अब अपने पति के समीप अकेली थी। उसने भी कान्ति को पहचाना नहीं था। मोहिनी के कहने पर उसे सन्देह हो गया था। अत: जब वह वहां अकेली रह गई तो उसने पति से कह दिया, "क्या सत्य ही यह कान्ति था?"

"हां।"

"तो आपने उसे पहचान लिया था?"

"हां।"

"फिर भी पुलिस अधिकारी को बताया नहीं और झूठ कह दिया कि आपको स्मरण नहीं आ रहा।"

"लक्ष्मी," भागीरथ ने कहा, "मेरा इन्कार करना एक विचारित बात नहीं थी। यह स्वाभाविक एवं अनायास ही मुख से निकल गया था। अब मोहिनी के कहने पर मैं विचार कर रहा हूं कि परिवार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रति कर्तव्य और सत्य में कौन अधिक कल्याणकारी है? अभी तक मैं परिवार के प्रति कर्तव्य को ही अधिक कल्याणकारक समझ रहा हूं।"

"मैं इसके विपरीत ठीक समझ रही हूं।"

"तो फिर तुम अभी चली जाओ और पुलिस में मुखबरी कर दो।"

लक्ष्मी स्तब्ध रह गई। वह समझी थी कि उसे मुखबरी करनी तो चाहिए, परन्तु इससे उसके पति की भावना को ठेस पहुंचेगी। इस कारण वह बैठी रही और गई नहीं।

कुछ देर ठहरकर भागीरथ ने पूछ लिया, "क्यों, जा क्यों नहीं रहीं?"

"मैं विचार कर रही थी कि क्या मेरे मुखबरी करने से आपको दुःख तो नहीं होगा?"

"फिर क्या समझ आया है?"

"यही कि मैं मौन रहूं। मैं आपको सत्य से भी ऊपर अपना हित समझती हूं।"

"बस, यही बात तुम मेरे परिवार के प्रति भावना की समझ लो।

"देखो, लक्ष्मी! मरना-जीना तथा सुख-दुःख पाना अपने कर्मफल से ही होता है। जिसने कान्ति को मेरे कर्मफल में साधन बनाया है, वह ही उसके कर्म पर भी निर्णय करेगा। मैं क्यों बीच में आऊं?"

लक्ष्मी का समाधान नहीं हुआ और वह मौन रही, परन्तु दूसरे मौन नहीं रह सके। मोहिनी अस्पताल से निकल टैक्सी की प्रतीक्षा करने लगी तो कमल ने कह दिया, "मुझे भागीरथजी का झूठ बोल देना सुहाया नहीं।"

"मैं भी इसे ठीक नहीं समझी। इसी कारण वहां से उठकर चली आई हूं। मैं बाबा ब्रजलालजी से सम्मति करने जा रही हूं। वे आज-कल बम्बई में प्रमोद की कोठी में ठहरे हुए हैं।"

"वे भी पोते की भांति भावुक व्यक्ति हैं। संसार भावुकता से नहीं चलता। इसमें तो कठोर बन रहना पड़ेगा।"

टैक्सी मिली तो दोनों ब्रजलाल के पास प्रमोद की कोठी पर जा पहुंचे। बाबा ने पूछ लिया, "मोहिनी बेटी, कब तक लौटने के विचार कर रही हो?"

"बाबा, कल तक जाने का विचार है। परन्तु आज एक घटना हो गई है। इससे विचार करती हूं कि कल न जाऊं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या घटना हुई है?"

मोहिनी ने कान्तिलाल के पकड़े जाने की बात और चाचा के उसे न पहचानने की बात बताई तो 'ब्रजलाल हंस पड़ा।

कमल भर मोहिनी बाबा के हंसने का कारण न समझते हुए उसका मुख देखते रहे। बाबा ने अपने मन की बात कह दी, "जब परिवार का विनाश होने लगता है तो कुछ इसी प्रकार की घटनाएं होने लगती हैं। मैं समझता हूं कि महाभारत युद्ध में दुर्योधन इत्यादि तो कारण थे ही, परन्तु परिवार के नाश होने में युधिष्ठिर कम कारण नहीं था। भीष्म पितामह तो उससे भी अधिक दोषी था।

"देखो, मोहिनी, जब यादव मूर्खता करने लगे तो कृष्ण ने अपना सुदर्शन चक्र निकाल लिया और सब बचे हुए सम्बन्धियों की हत्या कर दी। कुछ उसी प्रकार का काम मुझे भी करना पड़ेगा।

"तुम टेलीफोन से पुलिस अधिकारियों को तुरन्त सूचना दो कि उस घनी दाढ़ी-मूंछ वाले व्यक्ति को छोड़े नहीं। वे मुझसे मिलें और मैं उनको इस विषय में कुछ बताने को रखता हूं।"

आधे घण्टे में वही पुलिस अधिकारी जो कान्तिलाल को लेकर अस्पताल गया था, उसे लेकर प्रमोद की कोठी में आ पहुंचा। प्रमिला घर पर ही थी। वह और उसकी अध्यापिका बाबा की सेवा-सुश्रूषा में रहती थीं।

कान्ति को ब्रजलाल के सम्मुख उपस्थित किया गया तो उसने कान्ति की पूरी कथा सुना दी और कह दिया कि यह वही है। इस समय प्रमिला ने भी एक रहस्य की बात बताई। उसने पुलिस अधिकारी को कहा, "मैं इस दाढ़ी-मूंछ वाले व्यक्ति को जानती हूं। यह मेरे पिताजी का परिचित है। एक बार नवलकिशोर ने इसका पिताजी से परिचय कराया था और इसके लिए जाली पारपत्न बनवाने के प्रबन्ध करने को कहा था।

"उन दिनों यह व्यक्ति नवलकिशोर के साथ कई बार आया था। इसने एक सहस्र रुपया पिताजी को इस कार्य के लिए दिया था। यह मेरे विवाह के दिनों की बात है। विवाह के उपरान्त मेरे लड़का होने के पीछे यह व्यक्ति मुझे बाज़ारों में घूमता मिला। एक दिन पिताजी मुझसे मिलने आए थे। मैंने उनसे पूछा था कि वह व्यक्ति जिसको उन्होंने पारपत्न बनवाकर दिया था, वह तो यहां ही घूम रहा है?

"'हां।' उन्होंने कहा, 'वह स्विट्ज़रलैण्ड गधा था और वहां से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसे किसी कार्य-विशेष के लिए वापस भेजा गया है।'

"मैंने पूछा कि किस कार्य के लिए? तो वे मुस्कराकर चुप कर गए।"

इस बयान पर तो नवलकिशोर और दीनानाथ भी पकड़ लिए गए। सबसे विचित्र बात यह हुई कि जब कान्तिलाल की पिटाई हुई तो उसने चाचा भागीरथ की हत्या के षड्यन्त्र में दीनानाथ और नवल के अतिरिक्त परिवार के कुछ अन्य सदस्यों को भी सम्मिलित बताया। उनमें सोमदेव का लड़का युधिष्ठिर भी था। सब पकड़े गए और जब मुकदमा तैयार हुआ भागीरथ स्वस्थ हो घर पर आ चुका था।

उसको जब यह पता चला कि नवल और कांति के फंसाने में ब्रजलाल विशेष यत्न कर रहा है तो वह चकित रह गया। इसपर भी वह बोला नहीं, मौन रहा।

●●●

Central Library
167899
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167899

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या............... आगत संख्या...................

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R o 89.9148 आगत संख्या 167899
GUR-G

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारों को आंदोलित करनेवाली कहानी

लोकप्रिय उपन्यासकार गुरुदत्त ने *गिरते महल* में एक बड़े परिवार और उसकी भीतरी उथल-पुथल की कहानी बहुत ही मनोरंजक ढंग से कही है। असल में यह एक परिवार की नहीं, पूरे देश की कहानी है। दो पीढ़ियों के संघर्ष में हमारे परिवार बुरी तरह टूट-बिखर रहे हैं। इन टूटते संबंधों को कैसे बचाया जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर केवल गुरुदत्त ही दे सकते थे। *गिरते महल* में उन्होंने यह उत्तर दिया है। बदलते हुए समाज का इतना प्रभावशाली चित्रण आपने किसी और उपन्यास में नहीं पढ़ा होगा।

आवरण डिज़ाइन : स्केनसेट

FSC

उपन्यास

ISBN 978-0-143-45602-5

9 780143 456025

MRP ₹250 (incl. of all taxes)

www.penguin.co.in

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar